बलिदानों की राह पर...

दण्डकारण्य के वीर शहीदों का जीवन परिचय

2010-12

प्रभात प्रकाशन

दृढ़ संकल्प रखो, कुरबानियों से न डरो और हर तरह की कठिनाइयों को दूर करते हुए विजय प्राप्त करो!

– माओ त्सेतुङ

प्रकाशकः 'प्रभात' प्रकाशन, दण्डकारण्य
प्रकाशनः 2 दिसम्बर 2012
सहयोग राशिः 25 रुपए

जहां कहीं भी संघर्ष होता है वहां कुरबानी करनी पड़ती है और मौत एक आम घटना बन जाती है। लेकिन हमारे दिलों में जनता का हित और लोगों की भारी बहुसंख्या की तकलीफें मौजूद हैं, तथा जब हम जनता के लिए कुरबान हो जाते हैं तो यह एक शानदार मौत होती है। फिर भी हमें गैरजरूरी कुरबानियों से बचने की भरसक कोशिश करनी चाहिए।

– माओ त्सेतुङ

क्रम

	प्रकाशकों की ओर से	.....	8
1.	कामरेड माड़वी रुकमती	.....	15
2.	कामरेड पोड़ियम वागाल	.....	18
3.	कामरेड विज्जाल (उरसा सुधरू)	.....	21
4.	कामरेड सोड़ी इंगाल	.....	22
5.	कामरेड राजू	.....	24
6.	कामरेड सलवम रामाल	.....	24
7.	कामरेड मड़काम मंगू	.....	26
8.	कामरेड रतन	.....	26
9.	कामरेड प्रदीप	.....	27
10.	कामरेड सोमा	.....	28
11.	कामरेड राजाराम मड़ावी	.....	29
12.	कामरेड वीरेश (सूर्यम/प्रकाश/जीवन)	.....	30
13.	कामरेड कल्मा नंदा	.....	34
14.	कामरेड नंदिता (पोटावी पांडरी)	.....	35
15.	कामरेड तामो दय्यो	.....	37
16.	कामरेड शिवचरण मण्डावी	.....	39
17.	कामरेड बण्डू (बारसू कोरसा)	.....	42
18.	कामरेड शंकर (पुनाऊ हलामी)	.....	46
19.	कामरेड रमेश (ओड़ी उंगाल)	.....	48
20.	कामरेड मड़ावी रामक्का (अनिता/शारदा)	.....	49
21.	कामरेड सुखदु आचला	.....	54
22.	कामरेड एमला जिल्ला (मंगू)	.....	54
23.	कामरेड आजाद (चेरुकूरी राजकुमार)	.....	55
24.	कामरेड मनोज	.....	60
25.	कामरेड चैते (ललिता मड़ावी)	.....	63
26.	कामरेड मुचाकी पोदियाल	.....	68

27.	कामरेड मुचाकी कोसा	.....	68
28.	कामरेड वेट्टी हड़मा	.....	69
29.	कामरेड ओयामी बुधराल	.....	70
30.	कामरेड सोड़ी राजाल	.....	71
31.	कामरेड वेको बोज्जाल	.....	72
32.	कामरेड पेंटू हिचामी (कोसा/आयतू)	.....	74
33.	कामरेड नताशा	.....	77
34.	कामरेड राजबति	.....	79
35.	कामरेड अर्जुन	.....	80
36.	कामरेड शामबाई दुग्गा	.....	81
37.	कामरेड लच्छु उसेण्डी	.....	83
38.	कामरेड नागेश (कोवासी जोगा)	.....	85
39.	कामरेड सोड़ी बामन	.....	88
40.	कामरेड ओयाम मंगु (शिवु)	.....	88
41.	कामरेड ओयाम मनकु	.....	89
42.	कामरेड बज्जी	.....	89
43.	जगरगोण्डा (मेट्टागुड़ा) शहीद	.....	90
44.	कामरेड उइका सुक्की (ज्योति)	.....	91
45.	कामरेड ओयम रामाल	.....	92
46.	कामरेड किशोर (आयतू आत्रम)	.....	93
47.	कामरेड विक्रम (बैजू उसेण्डी)	.....	94
48.	कामरेड कोरसा सन्नू	.....	95
49.	कामरेड चन्दना	.....	95
50.	कामरेड तुरसिंग तुलावी	.....	96
51.	कामरेड दसरू (विलास)	.....	97
52.	कामरेड माड़वी मिसड़ाल	.....	97
53.	कामरेड माड़वी सुला	.....	98
54.	कामरेड बाड़से भीमा	.....	99
55.	कामरेड मानु यादव	.....	99

56.	कामरेड मुचाकी गंगा	.....	99
57.	कामरेड विक्रम	.....	101
58.	कामरेड पोड़ियम बण्डी	.....	101
59.	कामरेड कुंजाम कमलू	.....	102
60.	कामरेड प्रभाकर	.....	102
61.	कामरेड रमेश	.....	104
62.	कामरेड नागेश	.....	104
63.	कामरेड मंजू	.....	106
64.	कामरेड मंगल	.....	106
65.	कामरेड महरू	.....	107
66.	कामरेड राकेश	.....	109
67.	कामरेड सुखराम कोर्राम	.....	111
68.	कामरेड मिटकू	.....	112
69.	कामरेड कमलू कुंजाम	.....	114
70.	कामरेड पोड़ियामी मंगडू	.....	116
71.	कामरेड सन्नू (केशा)	.....	118
72.	कामरेड मड़काम हिड़मा	.....	121
73.	कामरेड कुंजाम मनोज	.....	123
74.	कामरेड मंजुला (नागी कोरसा)	.....	124
75.	कामरेड जोगा मुहंदा	.....	125
76.	कामरेड श्यामलाल बारसा	.....	126
77.	कामरेड प्रेमलाल	.....	127
78.	कामरेड पोड़ियम सुकड़ाल	.....	128
79.	कामरेड वंजम केलू	.....	128
80.	कामरेड लिंगु मुन्सी हेडो	.....	128
81.	कामरेड पोटामी बदरू	.....	130
82.	कामरेड गोपी	.....	131
83.	कामरेड आकाश (बहादुर बोगा)	.....	132
84.	कामरेड रामसाय सलाम	.....	134

85.	कामरेड रनिता (रामको हिचामी)	.....	134
86.	कामरेड अवलम बुधरू	.....	141
87.	कामरेड एमला लखू	.....	141
88.	कामरेड सुक्का (जिला)	.....	142
89.	कामरेड विजय (सुखानंद)	.....	144
90.	कामरेड महेश (बोड्डी गंगा)	.....	145
91.	कामरेड जैनी कोर्राम	.....	147
92.	कामरेड मल्लोजुला कोटेश्वरलु (रामजी)	.....	150
93.	कामरेड रवि	.....	154
94.	कामरेड माड़वी उंगाल	.....	155
95.	कामरेड फागू (मीटु)	.....	156
96.	कामरेड सुक्कू (मंगू पद्दाम)	.....	157
97.	कामरेड श्रीकांत (हरक)	.....	159
98.	कामरेड प्रमोद (हेमला सुक्कू)	.....	163
99.	कामरेड गुण्डेटि शंकर (शेषन्ना)	.....	164
100.	कामरेड सुनीता (स्वरूपा)	.....	169
101.	कामरेड गोन्से मंगली	.....	174
102.	कामरेड कुरसम पाकलू	.....	177
103.	कामरेड कोवासी गोविन्द (लच्छु)	.....	178
104.	कामरेड शिवाजी	.....	179
105.	कामरेड सोमारी	.....	181
106.	कामरेड दिनेश धुर्वा (राहुल)	.....	183
107.	कामरेड तीजू (रामलाल यादव)	.....	183
108.	कामरेड समीरा	.....	185
109.	कामरेड अमीला	.....	187
110.	कामरेड अरुणा	.....	187
111.	सारकिनगुड़ा अमर शहीद	.....	188
112.	कामरेड विजय (मड़काम हिड़मा)	.....	193
113.	कामरेड मड़काम हंदा	.....	200

114.	कामरेड पुनेम लच्छु	.....	201
115.	कामरेड सुखराम कौडो	.....	203
116.	कामरेड सुन्दाय	.....	204
117.	कामरेड बत्ती	.....	205
118.	कामरेड शिरवंती	.....	205
119.	कामरेड दसरत कुंजाम	.....	207
120.	कामरेड शंकर कोवाची	.....	208
121.	कामरेड कोरसा लखमू	.....	209
122.	कामरेड दानू	.....	209
123.	कामरेड बत्ती दुग्गा	.....	210
124.	कामरेड लच्छन धुर्वा	.....	211
125.	कामरेड डोलू गावडे	.....	211
126.	कामरेड एमला सुक्कू	.....	212
127.	कामरेड एमला पाण्डे	.....	212
128.	कामरेड मंगली	.....	213
129.	कामरेड कुंजाम लखमू	.....	213
130.	कामरेड कोवासी लखमा	.....	214
131.	कामरेड भीमा	.....	214
132.	कामरेड मुचाकी बुधू	.....	215
133.	कामरेड जयमति कोर्राम	.....	215
134.	कामरेड संदीप	.....	216
135.	कामरेड मंगू (रघु)	.....	217
136.	कामरेड पूनेम सुकराम	.....	218
137.	कामरेड मंगली	.....	220
138.	कामरेड महेश धुर्वा	.....	221
139.	कामरेड मन्सु धुर्वा	.....	222

आइए, आगे बढ़ें बलिदानों की इस राह पर...

दण्डकारण्य आज धधक रहा है। दसियों हजार अर्द्धसैनिक बलों के लौह जूतों से रौंदे जाने के बावजूद इस धरती पर विद्रोह की परम्परा लगातार आगे बढ़ रही है। वैसे तो विद्रोह से दण्डकारण्यवासियों का नाता काफी पुराना है। जबसे उनका जनतांत्रिक गणराज्य खत्म होकर पराया शासन का दौर, यानी शोषण, जुल्म और अन्याय का सिलसिला शुरू हुआ तभी से इन लोगों ने लड़ाई का परचम ऊंचा लहरा दिया। अंग्रेजी उपनिवेशवादियों के खिलाफ दण्डकारण्य की भूमि ने दर्जनों बार बगावत को जन्म दिया। उनमें से 1910 का महान भूमकाल विद्रोह सबसे व्यापक और महत्वपूर्ण था। हालांकि वो सारे विद्रोह अंग्रेजों की भारी सैन्य शक्ति तले कुचल दिए गए थे। कई ऐतिहासिक कारणों से आदिवासियों के लगभग तमाम विद्रोहों की परिणति आखिरकार पराजय में ही हुई थी। फिर भी उन्होंने इस परम्परा से कभी अपना मुंह नहीं मोड़ा।

10 फरवरी 2010 को 1910 के महान भूमकाल संघर्ष की सौवीं वर्षगांठ पूरे जोशोखरोश के साथ मनाई गई। यह सिर्फ सभा–सम्मेलनों का औपचारिक आयोजन नहीं था। उसकी संघर्षमय विरासत को, उसकी गरिमापूर्ण बलिदानी परम्परा को हर कीमत पर जारी रखने के संकल्प को दोहराना था। इत्तेफाक से 2010 में ही दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन के 30 साल भी पूरे हो गए। तीस वर्षों से दण्डकारण्य की जनता एक क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में, यानी सर्वहारा के नेतृत्व में, एक वैज्ञानिक मार्गदर्शक सिद्धांत, यानी मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद की रोशनी में, दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते में लड़ते आ रही है। तीस सालों के कठोर वर्ग संघर्ष की बदौलत आज दण्डकारण्य में जनता की जनवादी राजसत्ता, यानी क्रांतिकारी जनताना सरकार का उदय और विकास हुआ है। 30 सालों से यह संघर्ष कदम–कदम पर बलिदानों की राह पर ही आगे बढ़ता रहा। पेद्दी शंकर से लेकर विजय (मड़काम हिड़मा) तक सैकड़ों साथी और आम लोग इस संघर्ष में प्राण फूंकने के क्रम में अपने प्राणों को न्यौछावर कर गए। उन सबको याद करने का मतलब है उनकी कुरबानियों के बल पर निर्मित इस महान संघर्ष को आगे बढ़ाने के इरादों को दोहराना। उनकी जीवनियों से प्रेरणा ग्रहण करना और उनके उच्च आदर्शों को आत्मसात करना।

दण्डकारण्य के वीर शहीदों की जीवनियों की शृंखला में प्रस्तुत की जा रही इस ताजा किताब में अप्रैल 2010 से जुलाई 2012 के बीच शहीद हुए 140 से

ज्यादा जनयोद्धाओं की जीवनियों को संकलित करने का प्रयास किया गया। कुछ अन्य शहीदों, जिनकी मृत्यु अप्रैल 2010 से पहले ही हुई थी, की जीवनियों को भी इस किताब में इसलिए शामिल किया गया क्योंकि वे 'प्रभात' पत्रिका में या पहले वाली किताब में प्रकाशित नहीं हो पाई थीं।

क्रांतिकारी आंदोलन में 2010 से अब तक का जो दौर जारी है वह अत्यंत चुनौतिपूर्ण और संघर्षभरा कहलाएगा। देश के शोषक शासक वर्गों ने 2006 में पहली बार माओवादी आंदोलन को 'देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा' के रूप में घोषित करने के बाद, खासकर 2009 के मध्य से देशव्यापी, चौतरफा व समन्वित युद्ध छेड़ दिया। इस अन्यायपूर्ण युद्ध को आपरेशन ग्रीनहंट के नाम से बुलाया जा रहा है जो सही अर्थों में जनता पर ही युद्ध है। इसमें अब तक सैकड़ों निर्दोष लोगों समेत कई क्रांतिकारी नेता और कार्यकर्ता शहीद हो गए। अब इस आपरेशन ग्रीनहंट का दूसरा चरण चल रहा है जिसमें अर्द्धसैनिक बलों के अलावा थलसेना और वायुसेना की तैनाती की प्रक्रिया भी शुरू हो गई। 2005 से शोषक–लुटेरों ने सलवा जुडूम के नाम से जो अमानवीय प्रति–क्रांतिकारी हमला चलाया था उसे दण्डकारण्य की जनता ने अपने संगठित व बहादुराना प्रतिरोध के जरिए हरा दिया। इस कड़वे अनुभव को ध्यान में रखते हुए उन्होंने दण्डकारण्य में आपरेशन ग्रीनहंट को और ज्यादा घातक व पाशविक तरीके से शुरू किया। वेच्चापाड़, सिंगनमड़गु–पालचेलमा– गच्चनपल्ली–गट्टापाड़, पालोड़ी, सुरपनगुड़ेम, गोल्लागुड़ा, पूजारीकांकेर, गोम्पाड़, चिंतलनार, गुमियापाल, ताकिलोड़, ओंगनार, सारकिनगुड़ा आदि दर्जनों जगहों में आदिवासियों के नरसंहार किए गए। सैकड़ों घर जला दिए गए। महिलाओं के साथ बलात्कार की असंख्य घटनाएं घटी हैं। हजारों लोगों के साथ क्रूरता बरती गई। सैकड़ों लोगों को झूठे केसों में फंसाकर जेलों में ठूंस दिया गया। मगर यह सारा आतंकी खेल बिना किसी प्रतिरोध के ही नहीं चला।

दण्डकारण्य की जनता ने जिस तरह सलवा जुडूम का मुकाबला कर अंततः उसे परास्त कर दिया, उसी प्रकार आपरेशन ग्रीनहंट के रास्ते में भी कदम–कदम पर प्रतिरोध का झण्डा गाड़ दिया। सिंगनमडुगु, ताड़िमेटला–मुकरम, कोंगेरा, मेट्लाचेरुवु, झारा, गट्टाम, बोरगुड़ा, पूसटोला, किरंदुल, इरुपगुट्टा आदि कई जगहों पर पीएलजीए के लाल सैनिकों ने आतंकी बलों पर वीरतापूर्ण प्रत्याक्रमण किए। कई कार्यनीतिक कामयाबियां हासिल कीं। इन कार्रवाइयों को सफलता दिलाने हेतु कई जनयोद्धाओं ने अपनी जानें कुरबान कीं। रुकमती, वागाल,

विज्जाल, इंगाल, राजू, रामाल, मंगू और रतन – इन आठ साथियों ने 6 अप्रैल 2010 को ऐतिहासिक ताड़िमेटला–मुकरम ऐम्बुश, जिसमें 76 अर्द्धसैनिक बलों का सफाया कर दिया गया, को सफल बनाने के सिलसिले में अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर किया। फिर 29 जून 2010 को नारायणपुर जिले के कोंगेरा के पास सीआरपीएफ के 27 भाड़े के बलों का सफाया कर दिया गया। इसकी कामयाबी की कहानी में भी तीन साथियों की शहादत का पहलू जुड़ा हुआ है। इस शानदार हमले में कामरेड्स बंडू, शंकर और रमेश ने जबर्दस्त पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए वीरगति को प्राप्त किया। फिर मनोज, मंगडू, महरू, राकेश, महेश, प्रमोद, मड़काम हिड़मा (10वीं प्लाटून), मड़काम हंदा (केरलापाल एरिया कमाण्डर–इन–चीफ), पाकलू, मंगली (बटालियन–1) आदि कई अन्य कामरेडों ने अलग–अलग कार्रवाइयों में दुश्मन से लड़ते हुए अपनी जानें दीं। जनता के जान–माल की रक्षा में, जनता की नई जनवादी सत्ता के अंगों की रक्षा में इन तमाम साथियों ने अपने प्राणों की आहुति दी। दुश्मन के आतंकी बलों से आधुनिक हथियार छीनकर उनसे जन सशस्त्र बलों को सुसज्जित करने के बुलंद इरादे से लड़ते हुए मौत को गले लगाया। इसके अलावा कई मुठभेड़ों, फर्जी मुठभेड़ों और नरसंहारों में क्रांतिकारी जनता, जन संगठन कार्यकर्ता और क्रांतिकारी जनताना सरकार के नेता शहीद हो गए। ऐसे तमाम शहीदों की जीवनियों को इस किताब में समाहित करने का प्रयास किया गया। हालांकि कुछ अन्य शहीदों की जीवनियां अलग–अलग तकनीकी कारणों से हम प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं जिसके लिए हमें बेहद खेद है।

साम्राज्यवादियों की एलआइसी रणनीति के अंतर्गत ही भारत के शासक वर्ग आपरेशन ग्रीनहंट को चला रहे हैं। इसके तहत भारी दमन और झूठे सुधार कार्यक्रमों को लागू करने के साथ–साथ माओवादी आंदोलन को कुछ ही इलाकों तक सीमित करने की साजिश रची गई है। इसके जवाब में क्रांतिकारी आंदोलन को नए–नए इलाकों में विस्तारित करने की रणनीतिक योजना के तहत विस्तार का कर्तव्य अपनाया गया। छत्तीसगढ़–ओड़िशा के सीमावर्ती इलाकों में 2010 से पीएलजीए के दस्तों ने क्रांति का संदेश व्यापक जन समुदायों में ले जाकर उन्हें संगठित करना शुरू किया। इन प्रयासों को सफल बनाने के लिए भी हमें अपना काफी खून बहाना पड़ा। 9 अक्टूबर 2010 को छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले में पड़कीपाली गांव के पास दुश्मन के भाड़े के बलों ने पीएलजीए पर घात लगाकर हमला किया जिसमें छह कामरेडों – आयतू, नताशा, राजबति, शामबाई, अर्जुन और लच्छु ने दुश्मन से लड़ते–लड़ते अपनी जानें कुरबान कीं। इस सिलसिले

को आगे बढ़ाते हुए कामरेड्स सुक्कू, मंजुला, समीरा, अरुणा और अमीला ने भी क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार के लक्ष्य को सफल बनाने की राह पर अपना सुर्ख लहू बहा दिया। इन तमाम कामरेडों के बलिदानों की राह पर आज छत्तीसगढ़–ओड़िशा सीमावर्ती राज्य कमेटी के नेतृत्व में जनता संघर्षरत है।

क्रांतिकारी पार्टी के बिना क्रांति नहीं है। इसी तरह पार्टी नेतृत्व की धारावाहिकता के बिना क्रांतिकारी आंदोलन की प्रगति की कल्पना नहीं की जा सकती। यह बात दुश्मन को भी अच्छी तरह मालूम है। इसीलिए पार्टी के उच्च नेतृत्व की हत्या के लिए वह अंतहीन साजिशें रच रहा है। इन साजिशों में अमेरिकी साम्राज्यवादियों का पूर्ण सहयोग या मार्गदर्शन मिल रहा है। हाल ही में सामने आए एक तथ्य के अनुसार भारत की सरजमीं पर उसकी स्पेशल फोर्सेज प्रत्यक्ष रूप से मौजूद हैं। विद्रोही नेताओं की षड़यंत्रपूर्ण हत्याएं करने में बदनाम इज्राएली खुफिया संगठन मोस्साद आदि से भारत के खुफिया विभाग प्रशिक्षण ले रहे हैं। सैकड़ों करोड़ रुपए खर्च करके मुखबिरों, कोवर्टों, स्पाटरों और अन्य तकनीक का इस्तेमाल करते हुए नेतृत्व की हत्या या धरपकड़ की कोशिशें तेजी से की जा रही है। इसी सिलसिले में इन दो सालों में भाकपा (माओवादी) के दो अग्रणी नेता और पोलिटब्यूरो सदस्य कामरेड आजाद (1 जुलाई 2010) और कामरेड रामजी (24 नवम्बर 2011) को दुश्मन ने पाशविकता से कत्ल कर दिया। सोनिया–मनमोहनसिंह–चिदम्बरम–प्रणब मुखर्जी–जयराम रमेश के शासक गिरोह ने एक सोची–समझी साजिश के तहत ही इनकी हत्याओं को अंजाम दिया।

भारतीय क्रांति के महान नेताओं में गिने जाने वाले कामरेड्स आजाद और रामजी ने लगभग तीन दशकों तक जनता की सेवा की। कई जन आंदोलनों का निर्माण किया और नेतृत्व किया। जनयुद्ध की अगुवाई की। इन दोनों की खासियत यह रही कि इन्होंने दुश्मन के खिलाफ क्रांतिकारी प्रचार युद्ध की भी कमान संभाली। दोनों ने ही प्रचार–कार्य में पार्टी के प्रवक्ता के रूप में जबर्दस्त योगदान देकर चिदम्बरम के गोबेल्सी दुष्प्रचार अभियान की धज्जियां उड़ा दीं। इसीलिए दुश्मन हाथ धोकर उनके पीछे पड़ा था। अंततः इन दोनों की हत्या कर भारतीय क्रांति को भारी नुकसान पहुंचाया। आज वो भले ही भौतिक रूप से हमारे बीच न हों पर उनके विचार, आदर्श और उनके द्वारा स्थापित मूल्य कभी मिट नहीं जाएंगे। वो हमें हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे।

वर्ष 2012 में दण्डकारण्य और उत्तर तेलंगाना दोनों गुरिल्ला जोनों के कुछ

अनुभवी और वरिष्ठ नेता शहीद हो गए। 26 फरवरी को डीके एसजेडसी सदस्य कामरेड श्रीकांत की मृत्यु दिल की गंभीर बीमारी से हुई थी। 18 मार्च को एनटी एसजेडसी सदस्य कामरेड शेषन्ना की मृत्यु सांप काटने से हुई थी। 18 मार्च के ही दिन पार्टी की वरिष्ठ कार्यकर्ता कामरेड सुनीता की दुखद मृत्यु तब हुई थी जब वह कैन्सर का इलाज करवा रही थीं। 15 जुलाई को दक्षिण रीजनल कमेटी सदस्य और दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सचिव कामरेड विजय की दुखद मृत्यु एक दुर्घटना से हो गई। इन सभी वरिष्ठ साथियों की असमय मृत्यु से क्रांतिकारी आंदोलन को बड़ा नुकसान हुआ। शत्रु हमले की मौजूदा स्थिति में, उससे उपजी सीमितता के चलते हम उन्हें तुरंत और बेहतर इलाज की सुविधा मुहैया करवा नहीं सके। इस तरह इन साथियों की असमय मृत्यु के लिए दुश्मन ही जिम्मेदार है। उसके खिलाफ जारी लड़ाई को और तेज करने की प्रेरणा इन शहीदों के जीवन और बलिदान से मिलती है।

रुकमति, दय्यो, चैते, नताशा, राजबति, श्यामबाई, मंजुला, समीरा, अमीला, मंगली, ज्योति आदि महिला साथियों ने दुश्मन के साथ बहादुरी के साथ लड़ते हुए अपने अनमोल प्राणों को कुरबान किया। उन्होंने यह बात फिर एक बार साबित कर दी कि संघर्ष के साथ–साथ बलिदानों के क्षेत्र में भी वे पुरुषों से कम नहीं हैं। वहीं कामरेड रनिता की शौर्यपूर्ण लड़ाई की कहानी जनयुद्ध की इतिहास के पन्नों से कभी नहीं मिटने वाली है। न सिर्फ पीएलजीए के लिए, बल्कि देश की तमाम युवा पीढ़ी के लिए कामरेड रनिता के अदम्य साहस और सर्वोत्कृष्ट आत्मबलिदान से प्रेरणा मिलेगी।

दण्डकारण्य में पैदा होकर क्रांतिकारी आंदोलन की जरूरतों के अनुसार पड़ोस के विभिन्न राज्यों में जाने वाले कुछ कामरेड भी इस दौरान शहीद हुए हैं। उत्तर तेलंगाना में काम करते हुए कामरेड मुच्चाकी सुक्का शहीद हुए। महाराष्ट्र के अंतर्गत गोंदिया–बालाघाट डिवीजन में काम करते हुए नागेश, मंजू, मंगल, तीजू (विनोद) आदि साथियों ने अपने प्राणों की आहुति दी। वहीं मीटू, उंगाल, रवि, सुकराम, मंगू, मंगली आदि साथियों ने अपने खून से ओड़िशा की धरती को लाल बनाकर सर्वहारा अंतरराष्ट्रीयवाद का पताका ऊंचा उठाए रखा। एओबी क्षेत्र के विशाखा जिले में कामरेड ज्योति ने शहादत दी जो केशकाल की मिट्टी में पैदा हुई थीं। नव गठित सीओबी क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाते हुए कामरेड्स आयतू, नताशा, राजबति, श्यामबाई, अर्जुन, लच्छु, मंजुला और अन्य ने अपनी जानें कुरबान कीं। इन साथियों की जीवनियों से हमें

क्रांतिकारी संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए सरहदें पार कर जाने की प्रेरणा मिलेगी।

इसी दौर में भारतीय क्रांति ने, दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन ने अपने कुछ महत्वपूर्ण शुभचिंतकों और पक्के समर्थकों को खो दिया। कन्नाबीरन, पत्तिपाटि वेंकटेश्वरलु, आरएस राव, गोरु माधवराव और बीएसए सत्यनारायण को हम इस मौके पर हार्दिक श्रद्धांजलि पेश करते हैं जिन्होंने अस्वस्थता और उम्र के हिसाब से चल बसे। इसके अलावा बिहार, झारखण्ड, आंध्रप्रदेश, ओड़िशा, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, असम आदि देश के विभिन्न संघर्ष केंन्द्रों में शहीद हुए साथियों को भी इस मौके पर विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजलि पेश करते हैं।

साथियो, आज साम्राज्यवादी दुनिया अपनी बदतरीन संकट में फंसी हुई है। इस संकट का बोझ साम्राज्यवादी अपने देशों के मजदूरों और मध्यम वर्ग पर लाद रहे हैं। बेलआउट के नाम से बड़े–बड़े पूंजीपतियों को अरबों डालर की 'सहायता' पहुंचा रहे हैं। इसकी कीमत मजदूरों और मध्यम वर्ग को चुकानी पड़ रही है। उनकी सुविधाओं और वेतनों में कटौतियां की जा रही हैं। गरीबी और बेरोजगारी बढ़ रही हैं। इससे अमेरिका और यूरोप भर में व्यापक असंतोष निर्मित हुआ है। आर्थिक संकट के चलते राजनीतिक संकट भी गहराता जा रहा है। कई देशों में सरकारों का पतन हो रहा है। इसके अलावा, इस संकट से खुद को उबारने के लिए साम्राज्यवादी उत्पीड़ित देशों में भारी लूटखसोट और दुराक्रमणकारी युद्धों पर उतारू हैं। हमारे देश के दलाल शासक वर्ग साम्राज्यवादी शोषण की नीतियों को सिर माथे पर लेकर जनता के जीवन को बद से बदतर बना रहे हैं। बीस सालों से जारी नई आर्थिक नीतियों के विनाशकारी परिणाम साफ तौर पर देखे जा रहे हैं। पिछले 12 सालों में 2 लाख से ज्यादा किसान आत्महत्या कर चुके हैं। आर्थिक सुधारों में और तेजी लाते हुए हाल ही में खुदरा व्यापार में विदेशी प्रत्यक्ष पूंजी को छूट देकर और विभिन्न क्षेत्रों के विनिवेश का फैसला लेकर मनमोहनसिंह सरकार ने देशवासियों के साथ गद्दारी की। दूसरी ओर देश की विभिन्न जगहों में, खासकर आदिवासी इलाकों में मौजूद प्राकृतिक सम्पदाओं का अंधाधुंध दोहन के लिए विभिन्न जन विरोधी परियोजनाओं के समझौता–पत्रों पर दस्तखत किए गए। इससे लाखों जनता पर विस्थापन का खतरा मंडरा रहा है। इसके खिलाफ देश भर में जनता संघर्षरत है। इस संघर्ष की अगुवाई करने वाली ताकतों में भाकपा (माओवादी) सबसे आगे है। दरअसल यही वजह है कि यह पार्टी शोषक शासक वर्गों की नजरों में, उनके आका साम्राज्यवादियों की

नजरों में सबसे बड़े खतरे के रूप में दिखाई दे रही है।

आज दण्डकारण्य की जनता शोषक सरकारों की विभिन्न विनाशकारी योजनाओं के खिलाफ लड़ रही है। विकास के नाम पर जनता के विनाश व विस्थापन की नीतियों को लागू करने वाली शोषक सरकारों के खिलाफ लोहण्डीगुड़ा, रावघाट, चारगांव, पल्लामाड़, बुधियारी, कुव्वेमारी, बोधघाट, आमदायमेट्टा, धुरली–भांसी, सूर्जागढ़ आदि कई इलाकों में जनता विभिन्न संगठनों में संगठित होकर लड़ रही है। इन संघर्षों को कुचलकर अपनी विनाशकारी परियोजनाओं पर अमल करने के लिए सरकारें व्यापक दमन अभियान चला रही हैं। वहीं दण्डकारण्य की विभिन्न गुरिल्ला आधार क्षेत्रों में क्रांतिकारी जनताना सरकार के मातहत जनता विकास के वैकल्पिक नमूने को सामने ला रही है। यह आत्मनिर्भरता पर आधारित नमूना है। इस नमूने में शोषण के लिए कोई जगह नहीं है। यह नमूना आज देश भर में जनता का ध्यान आकृष्ट कर रहा है। यह आज बहुत ही निम्न व प्राथमिक स्तर पर है। और संसाधनों की दृष्टि से बहुत ही कमजोर है। लेकिन यह विकासशील है। प्रगतिशील है। इसका रुख बेहतर भविष्य की ओर है। इसलिए इस नमूने से भी शोषक सरकारें खफा हैं। इसे कुचलने पर आमादा हैं। इसीलिए उन्होंने आपरेशन ग्रीनहंट शुरू किया। इसीलिए जनता पर एक अन्यायपूर्ण युद्ध थोप दिया। इसीलिए इस युद्ध में सेना को उतारने की तैयारियां शुरू कीं।

आज दण्डकारण्य का संघर्ष, या यूं कहें कि पूरे भारत का क्रांतिकारी आंदोलन एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। क्रांति आज प्रति–क्रांति से लोहा लेते हुए जबर्दस्त चुनौतियों से निपटते हुए आगे बढ़ रही है। जल–जंगल–जमीन पर जनता का अधिकार का नारा चारों ओर गूंज रहा है। सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंककर भारत की नई जनवादी राजसत्ता की स्थापना करने के लक्ष्य से, इलाकावार राजसत्ता की स्थापना के रास्ते पर आगे बढ़ते इस आंदोलन को इन महान शहीदों के आदर्शों से प्रेरणा मिलेगी। आइए, इन शहीदों की जीवनियों का अध्ययन करें और प्रचार करें। इनके सपनों का शोषणविहीन नव भारत बनाने के लिए कदम बढ़ाएं।

– प्रभात प्रकाशन

2 दिसम्बर 2012

मुकरम-ताड़िमेटला के वीर शहीदों को लाल-लाल सलाम!

छह अप्रैल की सुबह के 6 बजे हमारी पीएलजीए के करीब 300 बहादुर योद्धाओं ने दक्षिण बस्तर डिवीजन के ताड़िमेटला और मुकरम गावों के बीच एक जबर्दस्त ऐम्बुश किया जिसमें सीआरपीएफ के 76 जवान मारे गए और 6 अन्य घायल हो गए। मारे गए सीआरपीएफ के जवानों में 17 कोबरा कमाण्डो शामिल थे। करीब 3 घण्टे तक चली इस शौर्यपूर्ण लड़ाई के दौरान पीएलजीए ने दुश्मन के 79 हथियार छीन लिए। जब्त हथियारों में 21 एके-47, 42 इन्सास, 7 एसएलआर, 6 एलएमजी, एक स्टेनगन और 2 दो इंची मोर्टार शामिल हैं। इस ऐतिहासिक व अभूतपूर्व हमले को सफल बनाने के दौरान हमारे आठ जांबाज जनयोद्धा भी धराशायी हुए थे। कॉमरेड रुकमति (सेक्शन कमाण्डर, ग्राम मुकरम, पश्चिम बस्तर), कामरेड वागाल (सेक्शन कमाण्डर, ग्राम रेगडगट्टा, दक्षिण बस्तर), कॉमरेड विज्जाल (सेक्शन उप-कमाण्डर, ग्राम पमरा, पश्चिम बस्तर), कामरेड इंगाल (ग्राम करिगुण्डम, दक्षिण बस्तर), कामरेड राजू (सदस्य, ग्राम कोण्डापल्ली, दक्षिण बस्तर), कामरेड मंगू (सदस्य, ग्राम रेंगम, दक्षिण बस्तर), कामरेड रामाल (सदस्य, ग्राम मुरपल्ली, दक्षिण बस्तर) और कामरेड रतन (सदस्य, ग्राम जाड़ंका, इद्रावती इलाका) - बस्तर के इन 8 माटी-पुत्रों ने, जो जनता की मुक्ति के लिए अपने सिर पर कफन बांधकर निकल पड़े थे, अदम्य साहस, अनुपम पराक्रम आर बलिदान की सर्वोच्च स्फूर्तिभावना के साथ अपने प्राणों को न्यौछावर किया। आइए, इन वीर शहीदों की जीवनियों पर नजर डालें।

कामरेड माड़वी रुकमती

कामरेड रुकमती (26) का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन (बीजापुर जिला) के कुटरू के पास मंगापेटा में हुआ था। मध्यम वर्ग के बंजारा परिवार में जन्मी कामरेड रुकमति के पिता का नाम मंगू और मां का नाम चंपा है। जब वह छोटी थीं तब उनके माता-पिता जमीन की तलाश में मुकरम गांव में आकर बसे थे। चौथीं कक्षा तक पढ़ाई के बाद उन्हें घर का कामकाज संभालना पड़ा था। घर में खाना बनाने के अलावा गाय-बकरी चराने के लिए भी जाती थीं। गांव में जब भी पार्टी का गुरिल्ला

दस्ता आकर मीटिंग करता था तो वह ध्यान से सुना करती थीं। गरीब आदिवासियों की परेशानियों से वह पहले से ही परिचित थीं। वह जानती थीं कि महिलाओं पर सरकारी अधिकारियों का जुल्म क्या होता है। उस इलाके में जमीन को लेकर वन विभाग वालों ने जनता को किस तरह परेशान किया था, यह भी जानती थीं। इसी समझ ने उन्हें केएएमएस (क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन) के करीब लाया। केएएमएस में एक साल काम करने के बाद पीएलजीए में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में भर्ती होने की इच्छा उन्होंने पार्टी कमेटी के सामने रखी। पार्टी ने उसे स्वीकार भी किया।

फरवरी 2004 में वह पीएलजीए में भर्ती हो गईं। उस समय उनकी उम्र 20 साल थी। सबसे पहले उन्होंने नेशनल पार्क इलाके में ही काम किया। डेढ़ साल बाद अक्टूबर 2005 में उन्हें नव निर्मित कम्पनी-2 में स्थानांतरित किया गया था। तब तक बर्बर सलवा जुडूम के खिलाफ प्रतिरोधी संघर्ष पूरे जोर पर था। लेकिन जरा भी संकोच किए बगैर वह पीएलजीए के प्रधान बलों में शामिल हो गईं। उसी समय सलवा जुडूम का कहर उनके गांव पर भी टूटा था। उनके माता-पिता को पुराने गांव में भगा दिया गया था। उस समय पुलिस ने यह अफवाह भी उड़ाई थी कि उसने रुकमती को मार डाला। कई दिनों तक उनके माता-पिता काफी दुखी थे क्योंकि उन्हें सच पता नहीं था।

कम्पनी-2 में भर्ती होने के बाद रुकमती जुडूम-पीड़ित जनता की रक्षक बनी थीं। सलवा जुडूम को हराने के लिए कम्पनी-2 द्वारा की गई कई फौजी कार्रवाइयों में उनकी भागीदारी रही। इस तरह जनता के जानमाल की रक्षा करने में उन्होंने अपना योगदान दिया। दिसम्बर 2005 में धान कटाई के समय पहरा देकर लोगों की धान काटने में सहायता की। उस समय रक्षा जिम्मेदारियों को निभाने के साथ-साथ कामरेड रुकमती ने जनता के साथ मिलकर श्रम भी किया। वह फौजी रणकौशल सीखने में काफी उत्साह दिखाती थीं। ग्राउण्ड में नियमित रूप में भाग लेते हुए अपनी क्षमता बढ़ाने की हर दम कोशिश करती थीं। 2006 में उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। सरकारी दमन का मुकाबला करने के दौरान ही पार्टी ने एक नई कम्पनी का निर्माण करने का फैसला लिया था। इस तरह नव गठित कम्पनी-3 में उन्हें शामिल किया गया। 2007 में कम्पनी-3 ने जितनी भी कार्रवाइयां की थीं, उन सभी में कामरेड रुकमती की भागीदारी रही, जोकि पूरे दण्डकारण्य आंदोलन के लिए प्रेरणादायक था। उरपलमेट्टा, ताड़िमेट्ला, बट्टिगुड़ा और अन्य कार्रवाइयों में उन्होंने अपनी फौजी क्षमता का प्रदर्शन किया था। उनके इस विकासक्रम को देखते हुए कम्पनी के पार्टी नेतृत्व ने मार्च 2008 में उन्हें सेक्शन डिप्यूटी कमाण्डर की जिम्मेदारी दी। इसके बाद बढ़ी हुई जिम्मेदारी के साथ

उन्होंने अपने काम को जारी रखा। चुनाव बहिष्कार, टीसीओसी जैसे राजनीतिक-फौजी अभियानों में उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभाई। अप्रैल 2009 में मिनपा के पास हुए ऐम्बुश में और किष्टारम हेलिपैड व पालोड़ में किए गए हमलों में तथा पुलिस के हथियार छीन लेने में उनकी भूमिका रही। एक तरफ फौजी कार्रवाइयों में अनुभव हासिल करते हुए ही दूसरी तरफ अपनी राजनीतिक क्षमता बढ़ाने के लिए भी कामरेड रुकमती ने पूरा प्रयास किया। इसे देखते हुए पार्टी ने उन्हें जून 2009 में प्लटून पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में पदोन्नति दी। उनकी कार्य-क्षमता को देखते हुए उन्हें सप्लाई सेक्शन की कमाण्डर के रूप में नियुक्त किया गया था। इस काम में कामरेड रुकमती ने छह महीनों तक योगदान दिया।

2007 में कामरेड रुकमती ने अपनी ही कम्पनी में काम करने वाले एक कामरेड से प्यार किया और दोनों ने पार्टी की अनुमति से शादी कर ली। दोनों कामरेडों ने वैवाहिक जीवन में आने वाली समस्याओं को आलोचना और आत्मालोचना की पद्धति से दूर करने की कोशिश की। अगस्त 2009 में सैन्य फार्मेशन में विकास करते हुए गुरिल्ला बटालियन गठित करने का फैसला हुआ था। यह वही समय था जब केन्द्र और राज्य सरकारों ने 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के नाम से देश भर में एक व्यापक व विनाशकारी दमन अभियान छेड़ दिया जो दरअसल जनता के खिलाफ युद्ध है। इस तरह कामरेड रुकमती पीएलजीए की पहली बटालियन की सदस्या बन गईं। बाद में बटालियन में उन्हें दूसरी कम्पनी में सेक्शन कमाण्डर की जिम्मेदारी दी गई। बटालियन के गठन के कुछ ही दिनों बाद कोबरा बलों के साथ हुई लड़ाई में कामरेड रुकमती ने बहादुरी के साथ भाग लिया और अपने सेक्शन का नेतृत्व किया। दुश्मन के ऑपरेशन ग्रीन हंट के खिलाफ पार्टी ने टीसीओसी अभियान चलाया जिसके तहत 6 अप्रैल को ताड़िमेटला के पास ऐतिहासिक हमला किया गया। इस हमले को लगभग पूरा करके दुश्मन के सारे हथियार छीन लेने के सिलसिले में जब कामरेड रुकमती जाकर मारे गए दुश्मन बलों से हथियार उठा रही थीं, तभी एक गोला फटने से उनके सिर और गले में गहरी चोटें आई थीं। गंभीर रूप से घायल अवस्था में साथी कामरेडों ने उन्हें उठाकर कैम्प तक लाया था। जब गुरिल्ला डॉक्टर उन्हें बचाने की कोशिश कर ही रहे थे, 7 घण्टे बाद उन्होंने दम तोड़ दिया। दूसरे दिन सभी शहीदों के साथ कामरेड रुकमती का भी अंतिम संस्कार किया गया जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। जब उनकी चिता जल उठी क्रांतिकारी नारों से जंगल-पहाड़ गूंज उठे। आइए, इस बहादुर व नौजवान कामरेड की विरासत को जारी रखते हुए ताड़िमेट्ला जैसी सैकड़ों फौजी कार्रवाइयों में दुश्मन को धूल चटाने और उसके ऑपरेशन ग्रीन हंट को हराने की कसम खाएं।

कामरेड पोड़ियम वागाल

23 साल के नौजवान कामरेड वागाल का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन (जिला दंतेवाड़ा) के कोंटा इलाके के रेगडगट्टा गांव में हुआ था। पोड़ियम लख्मू और लिंगे की पांच संतानों में वागाल चौथी संतान थे। बचपन से ही क्रांतिकारी गीतों से प्रेरित होकर कामरेड वागाल बाल संगठन में शामिल हुए थे। बाल संगठन में रहते हुए उन्होंने कई सभा-सम्मेलनों में भाग लिया था। बड़े होने के बाद क्रांतिकारी प्रचार के अभियानों में भाग लिया करते थे। कामरेड वागाल के दादा और पिता जगदलपुर के नजदीक गांव कुना के रहने वाले थे। वहां से जमीन की कमी के कारण गांव रेगड़ में आ बसे थे। गरीब आदिवासी परिवार में पैदा हुए वागाल के तीन बड़े भाई और एक छोटा भाई हैं। उनका छोटा भाई भी फिलहाल पार्टी में काम कर रहा है।

रेगड़ गांव में सरकारी स्कूल न होने के कारण कामरेड वागाल को पढ़ने का मौका नहीं मिला था। बाल संगठन में रहते हुए उन्होंने जनताना सरकार द्वारा संचालित रात पाठशाला में थोड़ा बहुत लिखना-पढ़ना सीखा था। बाल संगठन में उन्होंने सक्रिय रूप से काम किया था। जनताना सरकार के प्रचार कार्यक्रमों के साथ-साथ कृषि विकास के कामों में भाग लिया करते थे। रेगड़ गांव का इतिहास तीखे वर्ग-संघर्ष से भरा है। इस गांव के जमींदार और प्रतिक्रांतिकारी मुखिया लोग गरीब जनता को दबाकर रखा करते थे। काफी संघर्ष के बाद ही वो झुक गए और जनता खुलकर क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगी थी। बाद में सरकारी दमन के खिलाफ भी इस गांव के लोगों ने काफी प्रतिरोध किया। गांव में छापेमारी कर संगठन के नेताओं को पकड़ने की कोशिश करने पर गांव की महिलाओं और पुरुषों ने कई बार प्रतिरोध कर उन्हें छुड़ा लिया था। कई बार तो थाने में घुसकर भी लोगों ने अपने साथियों को छुड़ा लाया था। कई बार पुलिस के साथ इस गांव की जनता से नोंकझोंक हुई थी। शोषक सरकारों को यह गांव फूटी आंख नहीं सुहाता था। हालांकि उस समय कामरेड वागाल छोटे थे, लेकिन उन पर इस सबका गहरा प्रभाव था।

दो साल तक बाल संगठन में काम करने के बाद कामरेड वागाल की सक्रियता को देखते हुए जनताना सरकार ने ग्राम सुरक्षा दस्ते में सदस्य के रूप में चुन लिया।

उन्होंने इस जिम्मेदारी को बेहिचक अपने कंधों पर ले लिया। सलवा जुडूमी हमलों से अपने गांव और गांव की जनता को बचाने के लिए उन्होंने पहरेदारी, गश्त आदि कामों में हिम्मत के साथ भाग लिया। 2006 में इस गांव पर सरकारी बलों का हमला हुआ था, जैसे किसी दुश्मन देश पर सेना का हमला होता हो। हेलिकॉप्टर से उतरे सशस्त्र बलों ने गांव में 90 साल के एक बूढ़े को गोली मार दी। कई घरों में आग लगा दी। वागाल के घर को भी जला दिया गया था। मिलिशिया में काम कर रहे कामरेड वागाल ने इस बर्बरता को नजदीक से देखा था। जनता को इस हमले से बचाने के लिए सभी को एक सुरक्षित जगह पर ले जाने के बाद अपने परम्परागत हथियारों से मिलिशिया के कामरेडों ने आतंकी बलों पर हमला भी किया था जिसमें वागाल भी शामिल थे। बाद में एर्राबोर जुडूम शिविर पर किए गए हमले में कामरेड वागाल की भूमिका रही। दर्जनों जुडूमी गुण्डों को मार गिराने में उन्होंने वीरता से भाग लिया। दिसम्बर 2005 में भेज्जी थाने से निकट हाट बाजार में एक पुलिस वाले पर हमला कर एक एसएलआर छीन लाने की कार्रवाई में भी कामरेड वागाल की भूमिका रही। सलवा जुडूम के खिलाफ प्रतिरोध के दौरान काफी मुश्किलों का भी सामना किया था उन्होंने। गांव पर सैकड़ों की संख्या में पुलिस व गुण्डे हमले करते थे और सभी ग्रामीण जंगलों में भाग जाते थे। सारे घर जला देते थे। खाने को कुछ नहीं मिलता था। कई दिनों तक भूखे रहना भी पड़ता था। सारी मुश्किलों को प्रत्यक्ष देखने और झेलने के बाद उन्होंने समझ लिया कि इस व्यवस्था को बदलने वाली क्रांति को सफल बनाए बिना इन मुश्किलों से निजात नहीं मिलने वाली है। इसीलिए उन्होंने जून 2006 से पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर सैनिक यूनिट में काम संभाला।

जून 2006 से एक साल तक कामरेड वागाल ने पलटन-4 में सदस्य के रूप में काम किया था। बाद में एक नेतृत्वकारी कामरेड के गॉर्ड के रूप में काम किया। बाद में उनका तबादला कम्पनी-8 में हुआ था। बाद में कम्पनी के नेतृत्व ने उन्हें एलएमजी मैन की जिम्मेदारी दी थी। 2009 अगस्त में बनाई गई पहली बटालियन में कामरेड वागाल को शामिल किया गया। वहां भी उन्हें एलएमजी मैन की ही जिम्मेदारी रही।

फरवरी 2009 में कामरेड वागाल को पार्टी सदस्यता दी गई थी। और उनकी चेतना के स्तर को देखते हुए फरवरी 2010 में पलटन पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। पार्टी के हर निर्णय को अमल करने में कामरेड वागाल आगे रहा करते थे। जो भी जिम्मेदारी सौंप देने पर लगन के साथ उसे निभाने की कोशिश करते थे।

फौजी मोर्चे पर कामरेड वागाल एक उच्च दर्जे के कामरेड रहे। अपनी जान पर खेलते हुए फौजी कार्रवाइयों को सफलता दिलाने को हर दम तत्पर रहते थे। अपनी

फौजी रणकौशल को बढ़ाने पर हमेशा आतुर रहा करते थे। 2007 में उरपलमेट्टा कार्रवाई को सफल बनाने में उनका योगदान रहा। कोंटा इलाके में पीएलजीए द्वारा की गई कई छोटी-बड़ी कार्रवाइयों में उनका योगदान रहा। 2007 में पलटन-4 और स्थानीय बलों ने मिलकर बंडा के पास मिजो बलों पर एक हमला किया था जिसमें 10 आतंकी मिजो जवानों को मार गिराया गया था। 2008 में बंडा के पास दूसरी बार किए गए ऐम्बुश में भी उनकी भागीदारी रही जिसमें 4 एसपीओ का सफाया किया गया और 5 को आत्मसमर्पण करवाया गया था। 2009 में मिनपा में हुए ऐम्बुश में भी उन्होंने बहादुरी का प्रदर्शन किया था जिसमें 12 सीआरपीएफ वालों का सफाया किया गया था और छह हथियार छीन लिए गए थे। किष्टारम के पास किए गए हमले में भी उनकी भूमिका रही।

2009 के मध्य में केन्द्र-राज्य सरकारों ने एक भारी हमला छेड़ दिया जिसे ऑपरेशन ग्रीन हंट का नाम दिया गया। इसमें कोबरा बलों को उतारकर उनके बारे में इतना प्रचार किया गया था मानों वो आकर सबको काट जाएंगे। लेकिन 17 सितम्बर 2009 को सिंगनमड़गू के पास पीएलजीए की बटालियन ने दुश्मन बलों को घेरकर छह को मार डाला जिसमें दो अधिकारी शामिल थे। उनके सारे हथियार भी छीन लिए गए थे। उस हमले में भी कामरेड वागाल ने एलएमजी मैन के रूप में बहादुरी से लड़ा था।

ताड़िमेट्ला की लड़ाई उनकी आखिरी लड़ाई थी जोकि एक ऐतिहासिक लड़ाई थी। इस कार्रवाई को सफल बनाने में शुरू से लेकर आखिर तक उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसमें भी कामरेड वागाल ने अपनी एलएमजी से कई दुश्मनों को मार गिराया। जब दुश्मन को पीछे से घेरकर मेड़ की आड़ लेकर लड़ रहे थे तब एलएमजी के लिए पोजिशन अनुकूल नहीं था। तब उन्होंने अपनी एलएमजी कमाण्डर को देकर उनकी एके-47 लेकर पोजिशन बदला और कई सारे दुश्मनों का खात्मा किया। उसी समय दूसरी ओर पोजिशन लिए हुए दुश्मनों ने निशाना साधकर गोली चला दी जो उनके सिर में जा लगी। इस तरह एक जांबाज योद्धा का शौर्यपूर्ण सफरनामा अचानक समाप्त हुआ।

पूरी कार्रवाई को सफलता के मुकाम तक पहुंचाने के बाद कामरेड वागाल की लाश को उठा ले जाया गया। अगले दिन उनका अंतिम संस्कार किया गया जो सैकड़ों स्थानीय लोगों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। चूंकि उनका परिवार नजदीक नहीं था, इसलिए शव को उनके सुपुर्द नहीं करवा पाए। क्रांतिकारी गीतों और नारों के साथ अंतिम संस्कार संपन्न हुआ।

कामरेड विज्जाल (उरसा सुधरू)

25 साल के आदिवासी नौजवान कामरेड विज्जा का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन के भैरमगढ़ इलाके के ग्राम पामरा में हुआ था। माता-पिता की चार संतानों में वह दूसरी संतान थे। घर पर उनका नाम उरसा सुधरू था। कामरेड विज्जा जब छोटे थे तभी उनके माता-पिता गुजर गए थे। इससे इन चार बच्चों पर जैसे मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। खाने-पीने और कपड़ों के लिए भी उन्हें काफी परेशानी होती थी। इन्हीं तकलीफों ने उन्हें क्रांतिकारी आंदोलन की ओर खींच लाया। बचपन से ही कामरेड सुधरू क्रांतिकारी राजनीति से प्रेरित हुए थे। इसलिए बाल संगठन में वह सक्रिय कार्यकर्ता बने थे। जब बड़े हुए तो सहज ही हथियार उठाया। अपने भाई-बहन को भी पार्टी में शामिल होने का प्रोत्साहन दिया जिससे उनके एक भाई और बहन फिलहाल पार्टी में काम कर रहे हैं।

पार्टी में भर्ती होने से पहले कामरेड विज्जा ने जन मिलिशिया में सक्रिय काम किया था। उसमें काम करते हुए पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने का मन बना लिया था। मई 2005 में उन्हें भर्ती कर लिया गया और एक साल तक वहीं भैरमगढ़ एलओएस में काम किया। लेकिन कामरेड विज्जाल की फौजी क्षमताओं को देखते हुए अगस्त 2006 में कम्पनी-3 में सदस्य के रूप में भेजा गया। उसके बाद फौजी मामलों में उन्होंने ज्यादा ध्यान देते हुए सीखने का पूरा प्रयास किया। घर में रहते समय उन्हें पढ़ाई-लिखाई का मौका नहीं मिला था। लेकिन पार्टी में भर्ती होने के बाद ध्यान लगाकर पढ़ना-लिखना सीख लिया। कम्पनी-3 में जाने के बाद उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई।

कम्पनी-3 में रहते हुए उन्होंने अनेक कार्रवाइयों में भाग लिया। कम्पनी में रहते हुए कामरेड विज्जाल ने शहीद कामरेड चंदू, जोकि पिछले साल अप्रैल में मिनपा ऐम्बुश में शहीद हुए थे, के गॉर्ड के रूप में काम किया था। किसी भी काम को उन्होंने करने से इनकार कभी नहीं किया। खासकर फौजी कार्रवाइयों के दौरान उन्होंने कई बार नेतृत्वकारी कामरेडों को बचाया था। अगस्त 2009 से वह नव गठित बटालियन का सदस्य बन गया। जनता के लिए आखिरी दम तक लड़ने का दृढ़ संकल्प था उनमें। इसीलिए अपनी कमजोरियों को भी पहचानते हुए उन्हें दूर करने की कोशिश करते थे।

बटालियन में काम करने के दौरान उनके अनुभव और चेतना को देखते हुए सेक्शन डिप्यूटी कमाण्डर के रूप में उन्हें जिम्मेदारी दी गई थी।

जहां तक फौजी कार्रवाइयों में उनके योगदान का सवाल है, 2007 में उरपलमेट्टा से लेकर अपनी आखिरी ताड़िमेट्ला लड़ाई तक कई कार्रवाइयों में उनकी जबर्दस्त भूमिका रही। अगस्त 2007 में ताड़िमेट्ला के ही पास एक ऐम्बुश किया गया था जिसमें 12 भाड़े के जवान मारे गए थे जिनमें हेमंत मण्डावी नामक खूंखार पुलिस दरोगा भी शामिल था। उस कार्रवाई में कामरेड विज्जा की बढ़िया भूमिका रही। दिसम्बर 2007 में हुई बट्टिगुड़ा कार्रवाई में उन्होंने गॉर्ड के रूप में रहते हुए नेतृत्व की रक्षा करते हुए ही दुश्मन से लोहा लिया था। 2008 में बंडा के पास किए गए ऐम्बुश में भी वह शामिल थे। 2009 में हुए मिनपा ऐम्बुश में भी उनका योगदान रहा। और 17 सितम्बर 2010 को सिंगनमडगू के पास कोबरा बलों पर किए गए सफल ऐम्बुश में भी कामरेड विज्जा शामिल थे।

ऑपरेशन ग्रीन हंट के खिलाफ चलाए जा रहे टीसीओसी के तहत 6 अप्रैल को ताड़िमेट्ला के पास किए गए शौर्यपूर्ण ऐम्बुश की सफलता में भी उनका अहम योगदान रहा। कई दुश्मनों को मार गिराने में उन्होंने पहलकदमी और बहादुरी का प्रदर्शन किया। फायरिंग के दौरान दुश्मन का हथियार छीनकर उसी से लड़ाई जारी रखी और जब दोनों तरफ से ताबड़तोड़ गोलीबारी होने लगी थी, तब कामरेड विज्जा के सीने में गोली लगी जिससे वह वहीं ढेर हो गए। गोलीबारी के बीचोबीच ही शहीद विज्जा की लाश को साथियों ने उठा लाया और सुरक्षित जगह पर पहुंचाया। पूरा ऐम्बुश खत्म होने के बाद लाश को ले जाकर अगले दिन जनता और पीएलजीए के साथियों ने मिलकर उनका अंतिम संस्कार किया। आइए, अपनी जान को जोखिम में डालकर इस ऐम्बुश की सफलता में पूरा योगदान देने वाले इस वीर शहीद को लाल सलाम पेश करें।

कामरेड सोड़ी इंगाल

कामरेड सोड़ी इंगाल (22) का जन्म दक्षिण बस्तर (दंतेवाड़ा जिला) डिवीजन के किष्टारम एरिया के भूटालगांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। उनकी एक बहन है। माता-पिता उसी समय गुजर गए थे जब वह बहुत छोटे थे। मां-बाप के गुजर जाने के बाद वह अपने सौतेले भाई के पास रहने लगे थे। शुरू से ही गरीबी ने उन्हें जैसे बांधकर रखा हुआ था। थोड़ी सी जमीन तो थी पर बारिश के भरोसे पर चलती थी खेती। बाद में उनके भाई भी खत्म हुए थे।

भूटाल गांव एक ऐसा गांव है जहां क्रांतिकारी वर्ग संघर्ष बहुत पहले ही खड़ा

हुआ था। चूंकि यह गांव आंध्रप्रदेश और छत्तीसगढ़ की सीमा पर बसा है, इसलिए दोनों राज्यों की पुलिस ने काफी दबाव डाला, दमन लादा। फिर भी यह गांव टस से मस नहीं हुआ। कामरेड इंगाल पर बचपन से ही इस संघर्ष का प्रभाव रहा। तभी से वह बाल संगठन में शमिल हुए थे। जवान होने के बाद वह मिलिशिया का सदस्य बन गए। सलवा जुडूम ने जब दक्षिण बस्तर में तबाही शुरू कर दी, तब 2006 में कामरेड इंगाल ने पीएलजीए में पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में भर्ती होने का फैसला लिया। पार्टी की किष्टारम एरिया कमेटी ने उन्हें भर्ती कर 3 महीने तक उसी इलाके में काम सौंपा था। बाद में कम्पनी-3 में उनका तबादला किया गया जिसमें उनके फौजी कौशल विकासित हुए थे। सभी साथियों से वह मिलजुलकर रहते थे। वह हंसमुख कामरेड थे जो अपने सीध ासादापन के लिए जाने जाते थे। और वह मेहनती कामरेड भी थे। फौजी कार्रवाइयों में उनकी भूमिका हमेशा शौर्यपूर्ण रही थी। 2007 के आखिर में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई।

कामरेड इंगाल पीएलजीए में भर्ती होने के बाद ही पढ़ना-लिखना सीख लिया है। पार्टी की पत्रिकाओं को पढ़ने लायक बन गए। बाद में वह बटालियन के सदस्य बन गए। बाद में बटालियन पार्टी कमेटी ने उन्हें सेक्शन उप-कमाण्डर की जिम्मेदारी दी। इस जिम्मेदारी को उन्होंने आखिर तक निष्ठा से निभाया।

फौजी कार्रवाइयों में उनकी भागीदारी का जहां तक सवाल है, कम्पनी-3 द्वारा की गई लगभग सभी कार्रवाइयों में उनकी भूमिका रही। जुलाई 2007 में उन्होंने उरपलमेट्टा ऐम्बुश को सफल बनाने में योगदान दिया था। उसी साल के अगस्त में ताड़िमेट्ला के पास हुए एक और वीरतापूर्ण हमले में भी उनका योगदान रहा। अक्टूबर में तोंगूड़ा के पास किए गए एक और साहसिक हमले में भी उनका जबर्दस्त योगदान रहा। दिसम्बर में बट्टिगूड़ेम के पास किए गए एक और हमले में उनकी भूमिका शानदार रही। 2008 में बंडा के पास किए गए हमले में कामरेड इंगाल की भूमिका रही जिसमें उन्होंने दुश्मनों को पीछे से घेरने का काम किया था। 2009 में मिनपा एम्बुश, किष्टारम हेलिपैड, पालोड़ी और सितम्बर में सिंगनमडुगू में कोबरा कमाण्डों पर किए हमलों में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई थी। ऑपरेशन ग्रीन हंट को पराजित करने के लक्ष्य से

6 अप्रैल 2010 को किए गए ताड़िमेट्ला ऐम्बुश में उन्होंने वीरगति को प्राप्त किया। दरअसल दुश्मन को घेरने के प्रयास के तहत पहले ही चरण में कामरेड इंगाल को गोला लगने वह मौके पर ही गिर पड़े। उस समय दोनों तरफ से भीषण गोलीबारी हो रही थी। उसके बीच ही साथियों ने कामरेड इंगाल की लाश को सुरक्षित जगह पर लाया। इस तरह इस जांबाज नौजवान की शहादत एक ऐतिहासिक ऐम्बुश में हुई है। आइए, कामरेड इंगाल के अधूरे लक्ष्य को पूरा करने की शपथ लें और शोषणविहीन नए लोकतांत्रिक भारत के निर्माण का संकल्प लें।

कामरेड राजू

दक्षिण बस्तर डिवीजन (बीजापुर जिला) के ऊसूर ब्लॉक के गांव कोण्डापल्ली में कामरेड राजू (23) का जन्म हुआ था। शुरू से ही क्रांतिकारी गतिविधियों से

प्रभावित कामरेड राजू ने पहले जन मिलिशिया में काम किया था। सलवा जुडूम के जुल्म-अत्याचारों को प्रत्यक्ष देखने वाले कामरेड राजू ने 2006 में पीएलजीए में भर्ती होने का फैसला लिया था। उन्हें 2007 में रीजनल कम्पनी-2 में स्थानांतरित किया गया था जिसमें रहकर उन्होंने ऐतिहासिक नयागढ़ ऑपरेशन और दामनजोड़ी (नाल्को) हमले में भाग लिया था। कामरेड राजू हंसमुख स्वभाव के थे जो सभी से घुलमिलकर रहते थे। 6 अप्रैल की लड़ाई में उन्होंने अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए जंगेमैदान में अपनी जान कुरबान कर दी। आइए, कामरेड राजू के अधूरे लक्ष्य को पूरा करने तक आराम नहीं करने का संकल्प लें।

कामरेड सलवम रामाल

कामरेड रामाल (26) का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन (दंतेवाड़ा जिला) के जेगुरगोण्डा एरिया के गांव मोरपल्ली में एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। बचपन से ही रामाल अपने माता-पिता के साथ मिलकर सभा-सम्मेलनों में भाग लिया करते थे। जब भी उनके गांव में गुरिल्ला दस्ता का आगमन होता तो वह वहां जरूर अपनी उपस्थिति देते थे। सरकारों की घोर लापरवाही के कारण गांव में कोई स्कूल नहीं थी। इसलिए कामरेड रामाल को घर में रहकर पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला था।

माता-पिता के साथ खेतों में जाकर काम करना ही सीखा था। छोटी उम्र से ही उनका लगाव क्रांतिकारी गीतों की तरफ पर था। सहज ही, वह गांव में बाल संगठन का सदस्य बन गया। बड़े होकर पीएलजीए में भर्ती होने का सपना उन्होंने बचपन से ही पाले रखा था। बड़े होने के बाद उन्हें जन मिलिशिया में शामिल किया गया था। मिलिशिया में रहकर उन्होंने कई बार दुश्मन को हैरान-परेशान करने वाली कार्रवाइयों में भाग लिया था। पार्टी द्वारा बुलाए गए बंद, हड़ताल आदि कार्यक्रमों में वह बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। जेगुरगोण्डा इलाके में 2006 में सलवा जुडूम ने बर्बरता का नंगा प्रदर्शन किया था। गांवों को जलाना, लोगों को मारकर फेंक देना, आदि दुश्मन की क्रूर कार्रवाइयों को कामरेड रामाल ने प्रत्यक्ष देखा था।

घर में रहते हुए कामरेड रामाल की शादी हुई थी। और उनकी एक बच्ची भी थी। लेकिन जब उन्होंने यह समझा कि वर्तमान व्यवस्था को जड़ से बदले बिना गरीबी, शेषण और जुल्म-अत्याचारों को समाप्त करना नामुमकिन है, उन्होंने फैसला लिया कि अपनी बीवी और बच्ची को छोड़कर बंदूक उठाई जाए। इस तरह 2006 में ही कामरेड रामाल पीएलजीए में भर्ती हुए। सबसे पहले उन्होंने जेगुरगोण्डा एरिया कमेटी के तहत बोड़केल एलओएस में काम किया था। कुछ दिनों बाद उन्हें एलजीएस में स्थानांतरित किया गया। 2006 के आखिर में निर्मित पलटन-10 में उन्हें सदस्य के रूप में लिया गया। यहां उन्होंने जन सेना के अनुशासन को सीखने के साथ-साथ पढ़ना-लिखना भी सीख लिया। उसी दौरान उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। 2008 में जब 8वीं कम्पनी का निर्माण हुआ था, तब उन्हें उसमें शामिल किया गया। बाद में अगस्त 2009 में उन्हें बटालियन के सदस्य के रूप में ले लिया गया। बटालियन में काम करते हुए एक साल के अंदर ही वह एक अच्छे लड़ाकू के रूप में उभरे थे।

17 सितम्बर 2009 को सिंगनमडुगू में कोबरा बलों को घेरकर 6 भाड़े के कुत्तों का सफाया करने की कार्रवाई में उन्होंने बहादुरी से भाग लिया। इसके अलावा किष्टारम हेलिपैड और पालोड़ी में किए गए हमलों में भी कामरेड रामाल ने अपना योगदान दिया था। अपनी आखिरी व ऐतिहासिक लड़ाई में उन्होंने भी अपने पराक्रम का पूरा प्रदर्शन किया। दुश्मन की गोलियों की बरसात की परवाह न करते हुए वह तेजी से आगे बढ़े थे और काफी संघर्ष के बाद उन्हें दुश्मन की गोली लगी थी। उनके कंधे से फेफड़े

में गोली घुस जाने से वह बुरी तरह घायल हुए थे। अपनी घायल अवस्था में भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी ताकि साथियों के मनोबल पर बुरा असर न पड़ सके। ऐम्बुश को सफल करने के बाद डेरा तक ले जाने के बाद इलाज के दौरान ही कामरेड रामाल ने आखिरी सांस ली। अंतिम संस्कार के लिए कामरेड रामाल के शव को उनके गृहग्राम पहुंचाया गया था जहां जनता और परिवार ने मिलकर पूरे सम्मान के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी।

कामरेड मड़काम मंगू

कामरेड मड़काम मंगू (23) का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन (बीजापुर जिला) के ऊसूर ब्लॉक के गांव सिंगम में हुआ था। गरीब कोया आदिवासियों के परिवार में जन्म लेने वाले मंगू अपने सोलवें साल से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे थे। पहले जन संगठन और बाद में जन मिलिशिया में काम करने के बाद उन्होंने 2006 में पीएलजीए में भर्ती हुए थे। घर पर उन्होंने पांचवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। 2006 से रीजनल कम्पनी-2 में शामिल होने वाले कामरेड मंगू ने नयागढ़, दामनजोड़ी जैसी कार्रवाइयों में भाग लेकर अपने पराक्रम का प्रदर्शन किया। संचार के साधनों के प्रयोग में भी कामरेड मंगू ने अच्छी-खासी पकड़ बना ली थी। 6 अप्रैल की ऐतिहासिक ताड़िमेट्ला लड़ाई में उन्होंने दुश्मन के नजदीक जाकर आमने-सामने लड़ते हुए अपने सीने पर गोली खाई। कामरेड मंगू की शहादत को बस्तर की संघर्षशील जनता सदा याद रखेगी।

कामरेड रतन

माड़ डिवीजन के (बीजापुर जिला) भैरमगढ़ ब्लॉक के नेत्तुरवाया गांव में एक गरीब आदिवासी परिवार में कामरेड रतन (25) का जन्म हुआ था। जब वह 18 साल के थे तभी से उन्होंने डीएकेएमएस और बाद में मिलिशिया में काम करना शुरू किया। फासीवादी सलवा जुडूम के खिलाफ चलाए गए प्रतिरोधी संघर्ष में उन्होंने जोश के साथ भाग लिया था। 2005 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में पीएलजीए में भर्ती हुए थे। 2007 से उन्हें रीजनल कम्पनी में काम करने के लिए भेजा गया था। उसमें रहते

हुए उन्होंने नयागढ़, दामनजोड़ी, बंडा आदि ऐम्बुशों में भाग लिया था। पीएलजीए में एक अनुशासनबद्ध सैनिक की छवि बनी थी उनकी। 6 अप्रैल की लड़ाई में उन्होंने पहलकदमी और बहादुरी का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए वीरगति को प्राप्त किया।

इन सभी नौजवान कामरेडों ने अपने छोटे से क्रांतिकारी जीवन में ही जो आदर्श प्रस्तुत किए, लड़ाई के दौरान वीरता का जो प्रदर्शन किया और गोलियों के तूफान में भी उन्होंने दुश्मनों का सफाया करते हुए अपने प्राणों को जिस तरह न्यौछावर कर दिया, यह तमाम पीएलजीए सैनिकों और देश के तमाम नौजवानों के लिए अनुसरणीय है। आइए, इन सभी शहीदों को फिर एक बार तहेदिल से बंद मुट्ठियों से सलाम करें और उनके रास्ते पर आगे बढ़ते हुए दण्डकारण्य को आधार इलाके में बदलने का संकल्प लें।

कामरेड प्रदीप

कामरेड प्रदीप गड़चिरोली जिला एटापल्ली तहसील के पोटावी जेवली गांव में जन्मे थे। माता–पिता ने उनका नाम नान्सु रखा था। उनका गांव क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए केन्द्र की तरह रहा है। उनके गांव और परिवार से कई कामरेड्स पार्टी में भर्ती होकर काम कर रहे हैं। उन्हें देखकर उनके मन में बचपन से गुरिल्ला बनने की इच्छा थी। बड़ा होने के बाद वह दस्ता में भर्ती हो गया। वह जल्द ही पीएलजीए के अनुशासन और पढ़ना–लिखना सीख गया और एक कमांडर के तौर पर विकसित हुआ। 2010 के टीसीओसी अभियान की तैयारी के मौके पर एक हादसे में कामरेड प्रदीप बुरी तरह घायल हुए थे। उन्हें बचाने की बहुत कोशिश की गई, लेकिन 21 दिन बाद 29 अप्रैल 2010 के दिन उन्होंने आखरी सांस ली।

2007 से कम्पनी–4 में कामरेड प्रदीप ने काम किया। अपनी शहादत तक

किसी भी कार्रवाई में कभी पीछे नहीं हटा। झारावंडी, मरकानार हमलों में कामरेड प्रदीप फौजी तकनीकों का सही इस्तेमाल करते हुए दुश्मन को खत्म कर उनके हथियारों को जब्त करने में आगे रहकर अहम भूमिका निभाई। टव्वेटोला अपार्चुनिटी ऐम्बुश में कामरेड प्रदीप ने गाड़ी में आ रहे कमांडो बलों के ऊपर पहले फायरिंग करके हमले की शुरूआत की था। और दुश्मन के 16 जवानों को खत्म करने में अहम भूमिका निभाई थी।

मानपुर डिवीजन के कोरकोटी एरिया एम्बुश में हमला शुरू करने वाले टीम में रहकर मदनवाडा कैम्प के नजदीक जाकर फायरिंग की थी। उसके बाद पीएलजीए ने अन्य तीन जगहों पर हमला करके कुल 29 पुलिस वालों को खत्म कर 25 हथियार जब्त कर लिए थे। लाहेरी के पास सी–60 कमांडों बलों पर कई घण्टों तक चली लड़ाई में, जिसमें 17 कमांडों को मारकर 19 हथियार जब्त किए गए थे, भी कामरेड प्रदीप अगली पंक्ति में खड़े रहे। इस तरह कामरेड प्रदीप सभी हमलों में हिम्मत के साथ आगे रहकर लड़ते थे। वह जिस टीम में रहते वहां सभी कामरेडों का हौसला बढ़ता था। उनकी शहादत से पीएलजीए ने एक बहादुर कमांडर को खो दिया।

कामरेड सोमा

उत्तर बस्तर डिवीजन, रावघाट एरिया के आलपरस गांव में एक गरीब किसान परिवार में सोमा का जन्म हुआ था। घर की माली हालात तंग होने की वजह से सोमा को बचपन से उनके माता-पिता ने दूसरे के घर में नौकर रखा था।

1990 में रावघाट एरिया में पार्टी ने कदम रखा। तब से कामरेड सोमा पार्टी के सम्पर्क में आए। पार्टी द्वारा बताई जा रही बातों को ध्यान से सुनता था। उससे बहुत प्रभावित होता था। जब गांव में दण्डकारण्य आदिवासी किसान-मजदूर संगठन का गठन हुआ तब कामरेड सोमा भी उसमें सदस्य के तौर पर शामिल हो गया। वह संगठन के कामकाजों में सक्रिय रूप से भाग लेता था। पार्टी के आने के बाद उन्होंने नौकर का काम छोड़कर आलपरस गांव में जमीन लेकर जीने लगा। वहां भी उन्होंने संगठन के कामों में भाग लेता था। बाद में वह गांव में संगठन के अध्यक्ष चुने गए। संगठन के सभी कामों में कामरेड सोमा पहलकदमी के साथ भाग लेते थे। 2004 में वह एरिया डीएकेएमएस के सदस्य के तौर पर चुने गए। उन्होंने उनको दी गई जिम्मेदारियों को बड़ी लगन से पूरा करने का प्रयास किया। रावघाट खदान के खिलाफ जनता को संगठित कर आन्दोलन का नेतृत्व किया। विभिन्न मुद्दों पर जनता को संगठित कर संघर्ष किया।

2005 में जनताना सरकार का गठन हुआ तब जनताना सरकार कमेटी में भी चुने गए। जनताना सरकार में रक्षा विभाग की जिम्मेदारी ली। बाद में कामरेड सोमा ने पूरे एरिया में मिलिशिया को सुदृढ़ करने के लिए प्रशिक्षण दिया। एरिया में जन-विरोधियों, पुलिस मुखबिरों को पकड़कर जनताना सरकार को सौंपने और जन अदालतों द्वारा सुनाई गई सजाओं को अमल करने में कामरेड सोमा आगे रहते थे। रात-दिन जनता की रक्षा के लिए संतरी करते और एरिया में मिलिशिया को सावधान करते थे। इसलिए पुलिस उनके पीछे पड़ी थी।

2 मई 2010 के दिन कामरेड सोमा अपने घर में सो रहे थे। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर घर की घेराबंदी कर उन्हें पकड़कर क्रूर यातनाएं देने के बाद हत्या कर दी और मुठभेड़ में मारे जाने की झूठी कहानी को प्रचारित किया। कामरेड सोमा ने पुलिस की यातनाओं को सहकर भी पार्टी और संगठन के रहस्यों को नहीं बताया। आइये, उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लें।

कामरेड राजाराम मड़ावी

उत्तर गड़चिरोली के धानोरा तहसील, टिप्रागढ़ एरिया के बड़गांव के मध्यम किसान परिवार में कामरेड राजाराम मड़ावी का जन्म हुआ था। वो 27 साल के थे। उनकी शादी हो चुकी थी और दो बच्चों के बाप थे। ये गांव भी बहुत पहले से क्रांतिकारी गतिविधियों से प्रभावित रहा है। कामरेड राजाराम बचपन से क्रांतिकारी गतिविधियों से प्रभावित थे और उनमें सक्रिय रूप से भाग लेते थे।

बड़े होने के बाद कामरेड राजाराम ने डीएकेएमएस संगठन के सदस्य के तौर पर काम किया। संगठन की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। 2007 में वे डीएकेएमएस कमेटी के सदस्य चुने गए थे। कमेटी में उन्हें सौंपी गई सभी कामों को पूरा करने की कोशिश थे। जनता को संगठन के महत्व व क्रांति की जरूरत को समझाया करते थे। विभिन्न आर्थिक व राजनीतिक संघर्षों और सामाजिक समस्याओं पर जनता को संगठित करते थे। तेन्दुपत्ता मजदूरी, बांस कटाई के दाम में बढ़ोत्तरी के संघर्षो में उन्होंने आगे रहकर जनता का नेतृत्व किया। कमेटी के कामकाज को सुचारू रूप से चलाने का प्रयास करते थे। अपनी गलतियों और कमजोरियों पर कमेटी में बेहिचक आत्मलोचना कर उनसे बाहर आने की कोशिश करते थे। गांव में युवकों को भी अनुशासित रखने का प्रयास करते थे और गांव को संगठित रखते थे।

5 मई 2010 को तेन्दुपत्ता मजदूरी बढ़ाने की मांग को लेकर ठेकेदारों से बात करने के लिए जन संगठनों के नेतृत्व में एक बड़ी सभा का आयोजन किया गया था। उस

सभा में अपने गांव और आसपास के गांवों की जनता को लेकर जा रहे थे। रास्ते में आंधी, तूफान के साथ बारिश हुई थी। बड़े-बड़े पेड़ जड़ों सहित उखड़कर गिर गए थे। एक पेड़ कामरेड राजाराम के ऊपर गिरने से वे वहीं शहीद हो गए।

कामरेड राजाराम की मृत्यु से इस इलाके जन आंदोलनों को झटका सा लगा। लेकिन उनके आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र की समूची जनता संकप्लबद्ध है।

कामरेड वीरेश (सूर्यम/प्रकाश/जीवन)

9 मई 2010 को ओड़िशा के कोरापुट जिले के नारायणपटना इलाके में दुश्मन द्वारा घात लगाकर किए गए हमले में पीएलजीए की सेन्ट्रल रीजनल कम्पनी के राजनीतिक कमिस्सार कामरेड सूर्यम (वीरेश) और उनके गार्ड कामरेड नंदा (जगदीश) शहीद हो गए। नारायणपटना में जारी आदिवासी किसानों का संघर्ष देश की तमाम जनता का ध्यान आकृष्ट कर रहा है। इस संघर्ष को कुचलने के लिए सरकारें घोर दमनचक्र चला रही हैं। ऐसी स्थिति में उस संघर्ष की मदद में हमारी केन्द्रीय कमेटी ने कामरेड सूर्यम की अगुवाई में पीएलजीए की रीजनल कम्पनी-1 को वहां पर भेज दिया। छह महीनों तक हमारी पीएलजीए ने दुश्मन के नाक में दम करके रख दिया। कामरेड सूर्यम की अगुवाई में प्रधान, माध्यमिक और आधार बलों द्वारा किए गए एक हमले में एक एसओजी जवान मारा गया जबकि 17 घायल हो गए थे। पीएलजीए बलों के हमलों की बदौलत ही नारायणपटना के किसानों ने अपने आंदोलन को और आगे बढ़ाया। जमींदारों की फसलों को जब्त कर लिया।

अपनी जिम्मेदारी को पूरा कर जब कामरेड सूर्यम अपनी कम्पनी के साथ लौट रहे थे तब शत्रु बलों ने संघर्ष के गांवों पर हमला शुरू किया। यह खबर पाकर 8 मई 2010 को कामरेड सूर्यम ने अपनी कम्पनी के साथ दुश्मन पर ऐम्बुश की योजना बनाई। कुछ देर लड़ाई के बाद हमारे कामरेडों ने दुश्मनों की बड़ी संख्या, प्रतिकूल भौगोलिक धरातल और दुश्मन की फॉर्मेशन को देखते हुए पीछे हटने का फैसला लिया। पीछे हटने के दौरान कामरेड सूर्यम के साथ तीन कामरेड अलग हो गए। अगले दिन की सुबह जब

वे तयशुदा मिलन-स्थान पर जा रहे थे तब वे दुश्मन के एम्बुश में फंस गए। दुश्मन का मुकाबला करने के दौरान कामरेड जगदीश मौके पर ही शहीद हो गए जबकि कामरेड सूर्यम बुरी तरह घायल हो गए। फिर भी उन्होंने पूरा जोर लगाकर 10 मीटर तक रेंगते हुए एक पहाड़ी के टीले पर पहुंच गए। लेकिन वहां से आगे बढ़ना मुश्किल हुआ तो फिसलकर नीचे गिर गए। ज्यादा खून बहने से कुछ देर बाद उन्होंने आखिरी सांस ली। साथियों को इन दोनों के शव 17 मई को मिल गए। क्रांतिकारी जनता और पीएलजीए के साथियों ने नम आंखों से दोनों कामरेडों का अंतिम संस्कार किया। लम्बे अरसे से पार्टी में काम करते हुए कदम-ब-कदम तरक्की करने वाले कामरेड सूर्यम की मौत हमारी पार्टी के लिए, खासकर सेन्ट्रल रीजनल कमान के लिए तथा पीएलजीए के कतारों के लिए बड़ा नुकसान है। आइए, दुश्मन के साथ दो-दो हाथ करते हुए वीरगति को प्राप्त करने वाले कामरेड्स सूर्यम और जगदीश को विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजलि पेश करें।

41 वर्षीय सूर्यम का जन्म आंध्रप्रदेश के करनूल जिले के आदोनी मण्डल के तहत आने वाले ग्राम कड़ितोटा में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम एल्लैया है। माता-पिता ने सूर्यम का नाम 'वीरेश' रखा था। उनके एक भाई और एक बहन हैं। जब वे छोटे थे तभी गरीबी के कारण वीरेश का परिवार 1978 में गुंटूर शहर के पास एटुकूर गांव में आ बसा था। उनके पिताजी शहर के एक काटन मिल में दिहाड़ी मजदूरी करते थे। उन दिनों गुंटूर में क्रांतिकारी गतिविधियां तेज थीं। बस्तियों में रैडिकल युवा संगठन के कामकाज चलते थे। वीरेश अपने पिता और भाई के साथ-साथ काटन मिल में काम करते हुए ही स्कूल में पढ़ाई करते थे। उन्होंने 9वीं कक्षा तक पढ़ाई की। उन्होंने उस समय क्रांतिकारी गीत सुनते हुए और खुद गरीबी में पैदा होने के कारण समाज में जारी शोषण को समझ लिया। समाज में जारी शोषण-उत्पीड़न को खत्म करने के लिए क्रांति ही एक मात्र रास्ता है, इस सच्चाई को समझते हुए उस दिशा में कदम बढ़ाने का फैसला लिया। तभी से उन्होंने रैडिकल युवा संगठन की क्रियाकलापों में भाग लेना शुरू किया। 1987 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर पार्टी में शामिल हो गए।

शुरू में गुंटूर शहर में 'प्रकाश' के नाम से युवाओं को गोलबंद करने की कोशिश की। अनुशासनप्रिय और कम बोलते हुए ज्यादा काम करने का स्वभाव वाले कामरेड प्रकाश को 1987 के आखिर में जिला कमेटी सचिव के कुरियर नियुक्त किया गया। 1985 के दमन के माहौल में कामरेड प्रकाश ने समय का पालन करते हुए अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया।

1989 में हमारी पार्टी ने नल्लामला क्षेत्र में गुरिल्ला जोन बनाने के लक्ष्य से कामरेड प्रकाश को एक संगठनकर्ता के साथ पुल्ललचेरवू इलाके में भेजा था। तबसे लेकर नल्लामला के जंगलों को क्रांति का गढ़ बनाने के लिए जारी अविराम परिश्रम में कामरेड प्रकाश ने दस्ता सदस्य, कमाण्डर और डिवीजनल कमेटी सदस्य के रूप में आदर्शपूर्ण भूमिका निभाई।

नल्लामला जंगलों में तेंदुपत्ता संघर्षों के अलावा वन विभाग के अधिकारियों के जुल्म-अत्याचारों के खिलाफ व्यापक संघर्ष फूट पड़े। इन सब में कामरेड प्रकाश ने उत्साह के साथ भाग लिया। इससे जनता से वसूले जाने वाले हर प्रकार के जुर्मानों से छुटकारा मिल गया। शराब बंदी को लेकर 1990 के दशक में किए गए संघर्षों में भी कामरेड प्रकाश की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इससे जनता का उत्साहित होकर संगठनों में शमिल होना शुरू हुआ। जमींदारों के खिलाफ किए गए जन पंचायतों में भी कामरेड प्रकाश ने भाग लिया। वन विभाग के दमन-शोषण को खत्म करने के बाद लोगों ने कई गांवों में जंगल काटकर खेती के लिए जमीनें बना लीं।

गांवों में घर-घर के साथ कामरेड प्रकाश का परिचय काफी बढ़ गया। वह जनता का चहेता बन गए। खासकर दलित बस्तियों में उन्हें लोग बेहद पसंद करते थे जहां पार्टी का प्रभाव ज्यादा था। धीरे-धीरे उनकी टीम दस्ते में तब्दील हो गई और सहज ही वह उस दस्ते के उप-कमाण्डर बनाए गए। 1993 में एक कार्रवाई के लिए गए उनके कमाण्डर के गिरफ्तार हो जाने से बाद में उन्हें दस्ता कमाण्डर बनाया गया। सरकारी दमन के बीचोबीच भी जनता को गोलबंद करते हुए अकाल की समस्या को लेकर संघर्ष चलाया गया। इस संघर्ष में कामरेड प्रकाश की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

कई गांवों में जमींदारों की पट्टा जमीनों और मंदिर की जमीनों पर कब्जा करने के लिए कामरेड प्रकाश ने किसानों को गोलबंद किया। कई जमीन संघर्षों का उन्होंने नेतृत्व किया। ऊंची जाति के जमींदारों द्वारा नीची जातियों के लोगों का दमन व महिलाओं के साथ बलात्कार की घटनाओं के खिलाफ भी कामरेड प्रकाश ने जनता को, खासकर महिलाओं को गोलबंद किया। ऐसे कुछ जालिम जमींदारों का सफाया कर उनकी सारी सम्पत्तियों को जब्त कर जनता के हवाले करने की कार्रवाइयों का भी कामरेड सूर्यम ने नेतृत्व किया। महिला आंदोलन को मजबूत बनाने का भी उन्होंने काफी प्रयास किया। इसी संदर्भ में 2000 में उन्हें नल्लामला डिवीजनल कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया।

आंदोलन की जरूरतों के हिसाब से उन्हें 2002 में गुंटूर जिले में स्थानांतरित किया गया था। वहां चंद्रावंका एरिया कमेटी की जिम्मेदारी के साथ-साथ डिवीजनल

कमाण्डर-इन-चीफ और रीजनल कमाण्ड सदस्य की जिम्मेदारी भी निभाई।

2003 में गुंटूर जिले में पहली बार गठित प्लटून के कमाण्डर की जिम्मेदारी कामरेड प्रकाश ने ली। 2004 के आखिर में उन्होंने जिला कमेटी सचिव की जिम्मेदारी ली। तबसे 'जीवन' के नाम से काम किया। जिले के आंदोलन को गुरिल्ला जोन के स्तर पर विकसित करने में कामरेड जीवन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। फरवरी 2006 में उन्हें आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी में को-ऑप्ट किया गया था।

कई फौजी कार्रवाइयों में कामरेड सूर्यम ने कमाण्डर के रूप में नेतृत्व किया। फरवरी 2001 में श्रीशैलम व सुन्निपेंटा के सांझे हमले में उन्होंने श्रीशैलम में कमाण्डर की भूमिका निभाई। मई महीने में एर्रागोण्डापालेम के पास किए गए रेड में उन्होंने हमलावर टुकड़ी के कमाण्डर के रूप में नेतृत्व किया। नवम्बर 2001 में नरसरावपेटा के एसएसएन कॉलेज पर हमला कर पुलिस के 30 रायफलें और एक एलएमजी छीनने की कार्रवाई का भी नेतृत्व कामरेड प्रकाश ने ही किया था।

2002 में एक पैसेंजर बस में आ रहे पुलिस वालों पर रेमिड़िचरला के पास किए गए हमले का, बोल्लापल्ली थाने पर राकेट लांचर से किए गए हमले का और अड़िगोप्पुला के पास पैदल आ रहे ग्रेहाउण्ड्स बलों पर हमला कर चार भाड़े के बलों का सफाया करने की कार्रवाई का कामरेड सूर्यम ने ही नेतृत्व किया था। राज्य कमेटी सदस्य कामरेड कारुमंची प्रसाद की फर्जी मुठभेड़ के खिलाफ 2003 में अद्दंकि पुलिस थाने पर हमला कर 24 हथियार और 5 हजार कारतूस जब्त करने की कार्रवाई का भी कामरेड प्रकाश ने ही नेतृत्व किया था। इसके अलावा कई छोटी व मध्यम किस्म की कई कार्रवाइयों का उन्होंने नेतृत्व किया था।

जून 2007 में कामरेड जीवन को सेन्ट्रल रीजियन की पीएलजीए कम्पनी-1 में राजनीतिक कमिस्सार की जिम्मेदारी दी गई। सेन्ट्रल रीजियन में, जिसमें दण्डकारण्य, आंध्रप्रदेश व ओड़िशा के इलाके आते हैं, जनयुद्ध को तेज करने के लक्ष्य से गठित सेन्ट्रल रीजनल कमान में वह सदस्य बन गए। इस इलाके की भाषाओं को सीखने की उन्होंने काफी कोशिश की।

ओड़िशा के नयागढ़ जिला मुख्यालय पर किए गए ऐतिहासिक हमला - 'ऑपरेशन रोप वे' को सफल बनाने के लिए गठित कोर ग्रूप में कामरेड सूर्यम भी एक सदस्य थे। इसमें कामरेड सूर्यम ने अपने हिस्से की जिम्मेदारी कुशलता से पूरी की। एक तरफ गोसामा में बहादुराना लड़ाई लड़ते हुए ही सैकड़ों हथियारों और हजारों कारतूस को बचाकर सुरक्षित जगह पर पहुंचाने के लिए उन्होंने अपनी पूरी ताकत झोंककर काम किया। इस ऑपरेशन के बाद जब रीजनल कम्पनी-2 का निर्माण हुआ तो कामरेड सूर्यम

को उसमें राजनीतिक कमिस्सार के रूप में स्थानांतरित किया गया। जून 2008 में बंडा के पास किए गए हमले और अप्रैल 2009 में ओड़िशा के नाल्को खदानों पर किए गए हमलों में उन्होंने गुरिल्ला बलों का नेतृत्व किया। नाल्को में दुश्मन के साथ 8 घण्टों तक जूझने का अच्छा अनुभव हासिल किया उन्होंने।

कामरेड सूर्यम सीधे-सादे इंसान थे। वह जहां भी रहे जनता और कैडरों के साथ घुलमिलकर रहे। वह श्रम का सम्मान करते थे। वह खुद मेहनत करते हुए दूसरों को इसके लिए प्रोत्साहित करते थे। गुरिल्ला जिंदगी में हर मुश्किल का उन्होंने मुस्कराते हुए सामना किया। कामरेड सूर्यम ने कम्युनिस्ट मूल्यों और संस्कृति को हमेशा ऊंचा रखा, साम्राज्यवादी व सामंती संस्कृति के खिलाफ निर्मम संघर्ष किया। महिला कामरेडों के साथ उनका व्यवहार सम्मानपूर्वक रहता था। आज सूर्यम की मौत से पार्टी ने एक उन्नत श्रेणी के कम्युनिस्ट को खो दिया। उनके दिखाए रास्ते में आगे बढ़ते हुए संघर्ष को अविश्रांत जारी रखेंगे, वही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजली होगी।

कामरेड कल्मा नंदा

दण्डकारण्य के दंतेवाड़ा जिले के ऊसूर ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम मुरकुम में कामरेड नंदा पैदा हुए थे। गरीब आदिवासी परिवार में जन्मे कॅमरेड नंदाल के पिता कामरेड कल्मा लिंगाल हैं। वह एक समय डीएकेएमएस में रेंज कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी में थे। गिरफ्तार होकर दंतेवाड़ा जेल में दो साल बिताए थे। जेल से छूटने के बाद भी वह क्रांतिकारी क्रियाकलापों में लगे रहे। बल्कि अपने बच्चों को भी उन्होंने प्रोत्सहित किया। इसके तहत ही नंदाल जो गंगनपाडू गांव में एक धनी किसान के घर में नौकर के रूप में काम करता था, बाल संगठन में शामिल हो गए। बाद में 2005 में वह मिलिशिया में सदस्य बन गए क्योंकि उन्होंने सलवा जुडूम के खिलाफ लड़ने की ठान ले रखी थी।

सलवा जुडूम के गुण्डों के जुल्म और आतंक को प्रत्यक्ष देखने वाले कामरेड नंदाल के दिल में उनके खिलाफ गुस्से की आग भड़कती थी। जहां भी दुश्मनों के आने का समाचार मिलता तो वह अपने तीर-धनुष लेकर तैयार हो जाते थे ताकि उन्हें सबक सिखाया जा सके। दिसम्बर 2006 में उन्हें पीएलजीए में सदस्य के रूप में भर्ती किया गया। पहले उन्हें ऊसूर दस्ते में सदस्य के रूप में रखा गया था। जनवरी 2007

में कामरेड नंदाल को पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। अप्रैल 2008 में उन्हें पार्टी ने रीजनल कम्पनी-2 में स्थानांतरित किया।

कामरेड जगदीश की अनुशासनप्रियता और राजनीतिक-फौजी चेतना को देखते हुए उन्हें कम्पनी के सचिव कामरेड सूर्यम के गार्ड रूप में रखा गया। कामरेड जगदीश अपने जिम्मेवार कामरेड सूर्यम को हर प्रकार का सहयोग देते थे। उनसे बहुत कुछ सीखते थे। जहां भी मौका मिला तो दुश्मन के खिलाफ हमलों में उत्साह के साथ भाग लेते थे। बंडा के पास हुए ऐम्बुश में उन्होंने गॉर्ड के रूप में अपनी भूमिका निभाई। दामनजोड़ी (नाल्को) में किए गए हमले में भी कामरेड जगदीश ने अपने जिम्मेवार कामरेड के साथ गार्ड की भूमिका निभाते हुए ही हमलावर टुकड़ी में रहकर लड़ाई में बहादुराना ढंग से भाग लिया। दिसम्बर 2009 में कोरापुट जिले के नारायणपटना इलाके में दाइगूड़ा के पास किए गए ऐम्बुश में भी उन्होंने भाग लिया।

इसके अलावा मुखबिरों, जमींदारों और क्रांति के दुश्मनों पर किए गए कई हमलों और सफाया कार्रवाइयों में कामरेड जगदीश ने बहादुरी से भाग लिया। कामरेड जगदीश अनुशासनप्रिय योद्धा थे। हर विषय को सीखने में वह उत्सुकता दिखाया करते थे। हमलों में रनर के रूप में अच्छी भूमिका निभाई ताकि बलों के बीच तालमेल बिठाया जा सके। हमलों के दौरान कम्युनिकेशन के जिम्मेवार कामरेड को भी वह सहयोग देते थे। नारायणपटना क्षेत्र की जनता के न्यायपूर्ण संघर्ष के समर्थन में बस्तरिया माटी-पुत्र कामरेड जगदीश ने भी अपनी भूमिका निभाई। जमींदारों से जब्त जमीनों में फसलें काटने में उन्होंने जनता का सहयोग किया। जनता की सुरक्षा में उन्हों जी-जान लगाया। सक्रियता, साहस, अनुशासन, दृढ़ संकल्प आदि कामरेड जगदीश के अच्छे गुणों को पीएलजीए के तमाम कतारों को आदर्श के रूप में लेना चाहिए। आइए, कामरेड जगदीश के अधूरे मकसद को पूरा करने की कसम खाएं।

कामरेड नंदिता (पोटावी पांडरी)

22 मई 2010 को जन डाक्टर कामरेड नंदिता की दुखद मृत्यु हुई। उनकी मृत्यु ने सभी को गमगीन कर दिया। 22 साल की कामरेड नंदिता पश्चिम बस्तर डिवीजन, गंगलूर इलाके के ग्राम कोरसेल की थीं। कोरसेल क्रांतिकारी आंदोलन के मजबूत गढ़ों में से एक है। इस गांव ने आंदोलन को 35 से ज्यादा पूर्णकालीन कार्यकर्ता दिए। नंदिता का परिवार हमारी पार्टी के लिए विश्वसनीय परिवारों में से एक है। पिछले दो दशकों से उनका परिवार आंदोलन के साथ जुड़ा हुआ

है। कामरेड नंदिता का असली नाम पोटावी पांडरी था। मां मंगली और पिता पाण्डू की वह चौथी संतान थीं। बचपन से ही नंदिता छापामार दस्तों से मिलती–जुलती थीं।

उनके माता–पिता ने नंदिता को ग्राम चेरपाल में स्थित कन्या आश्रमशाला में भर्ती करवाया। वहां पर उन्होंने 8वीं कक्षा तक पढ़ाई की। आठवीं की परीक्षा दिलाने से पहले ही प्रतिक्रांतिकारी सलवा जुडूम अभियान शुरू हो गया। चूंकि इस आश्रम को सीआरपीएफ ने अपना अड्डा बना लिया था, इसलिए जनवरी 2006 में वह पढ़ाई छोड़ गांव आ गई।

नंदिता जब पढ़ाई कर रही थीं, तब उनके कई भाई–बहन क्रांतिकारी जन संगठनों में सक्रिय रूप से काम करने लगे थे। इसका उन पर काफी सकारात्मक असर था। 2006 में नंदिता ने पीएलजीए में भर्ती होने का प्रस्ताव स्थानीय पार्टी कमेटी के सामने रखा। पार्टी ने इसे स्वीकार किया। दो महीनों तक गंगलूर एरिया में रहने के बाद डिवीजन के समन्वय दस्ते में सदस्य के रूप में उन्होंने काम किया। अप्रैल 2007 में उन्हें दक्षिण रीजियन के मेडिकल टीम में भेजा गया। तब से लेकर आखिर तक उन्होंने डाक्टर टीम में सदस्य के रूप में रहते हुए जनता और गुरिल्लों को एक डाक्टर के तौर पर अनमोल सेवाएं दीं।

2007 से 2010 तक, यानी तीन सालों तक कामरेड नंदिता ने दक्षिण रीजियन मेडिकल टीम में रहकर अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई। अपनी चिकित्सकीय जानकारी बढ़ाने के लिए उन्होंने कई मेडिकल गाइडों का अध्ययन किया। मेडिकल टीम के वरिष्ठ कामरेडों से सीखने में वह आगे रहती थीं। उच्च कमेटी द्वारा आयोजित मेडिकल शिविरों में भाग लेकर डाक्टरी काम सीखने का भरसक प्रयास किया।

दक्षिण रीजियन में दुश्मन के हमले लगातार बढ़ने लगे थे। कई क्रांतिकारी और आम जनता का दुश्मन के हमलों में घायल होना एक आम बात बन गया। इसके अलावा बीमारियों का शिकार होना भी स्वाभाविक है। ऐसे में गुरिल्लों और क्रांतिकारी जनता का आवश्यक इलाज करने में इस टीम ने महत्वपूर्ण काम किया। इसमें कामरेड नंदिता एक थीं। रानिबोदली, पुल्लुम, तड़िकेल, मिनपा, मुकरम–ताड़िमेट्ला आदि हमलों में घायल होने वाले कामरेडों का कई महीनों तक इलाज चला जिसमें कामरेड नंदिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कई घायल कामरेडों को ठीक कर फिर से जंगे मैदान में उतारने में नंदिता ने प्रशंसनीय काम किया। घावों को साफ करने, मरहम–पट्टी करने, टांके लगाने और मरीजों को

भोजन–पानी आदि देने में वह ध्यानपूर्वक काम करती थीं।

दक्षिण रीजियन में कई गांवों में ग्रामीण कार्यकर्ताओं को मेडिकल प्रशिक्षण देने में भी कामरेड नंदिता ने एक शिक्षक के रूप में भाग लिया। उनके लिए आसानी से समझ आने वाले नोट्स भी तैयार किया। स्थानीय स्तर पर जड़ी–बूटियों के बारे में जानकारी लेकर उनके साथ प्रयोग करने में भी वह आगे रहती थीं। नंदिता एक विनम्र कामरेड थीं। सभी के साथ उनका व्यवहार प्रेमपूर्वक रहता था। उनके अंदर घमण्ड कभी नहीं देखा गया। असमय मृत्यु से कामरेड नंदिता हमसे दूर भले ही हुई हो, लेकिन हमारे यादों में वह हमेशा जिंदा रहेंगी।

कामरेड तामो दय्यो

कामरेड दय्यो (38) का जन्म माड़ डिवीजन के इन्द्रावती एरिया के वांगेल गांव के एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था। यह गांव बीजापुर जिला के भैरमगढ़ तहसील के तहत आता है। माता-पिता ने अपनी बेटी का नाम प्यार से दय्यो रखा था। कामरेड दय्यो की मां बचपन में ही चल बसी। पिता ने उन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया।

वांगेल गांव से पार्टी का परिचय 1989 में हुआ था। दस्ता जब भी इधर आता यह गांव दस्ता को इन्द्रावती नदी पार कराने में मदद करता था। इसमें कामरेड दय्यो के परिवार का योगदान ज्यादा ही रहा है। 1990 और 1997 के जन जागरण अभियानों के समय भी यह गांव पार्टी के पक्ष में दृढ़ता से खड़ा रहा और पार्टी की रक्षा की।

1998 से इस इलाके में दस्ता का नियमित रूप से आना शुरू हुआ। वांगेल गांव में 1999 में क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन (केएएमएस) का गठन हुआ। तब कामरेड दय्यो भी इस संगठन की सदस्य के रूप में शामिल हुईं। उस समय यहां महिलाओं पर आदिवासी परम्पराओं के नाम पर सामंती व पितृसत्तात्मक ज्यादा दबाव था। महिलाएं जबरिया शादी, बाल विवाह, गुडा पिल्ला (मामा की लड़की) के नाम से जबरदस्ती से पकड़कर ले जाना, छेड़छाड़, रीति-रिवाजों के नाम पर अपमान, वंचनाओं की शिकार थीं। पार्टी के आने से महिलाओं को इन सबके खिलाफ आवाज उठाने और संघर्ष करने में मदद मिली। गुरिल्ला दस्ता जब भी गांव में आता कामरेड दय्यो गांव के युवक-युवतियों को जमा करके ले आती थीं। पार्टी की बातें सुनती, क्रांतिकारी गाने सीखती थीं। वांगेल के पास ही सतवा नामक एक गांव है। इस गांव का इचामी बुधराम का परिवार जन-विरोधी था। यह परिवार गांव और आसपास गांवों में हिन्दू धर्म (गुमरगोण्डा भक्ति) का प्रचार कर उसे मानने के लिए दबाव डालता था। सतवा गांव में राजनीतिक व आर्थिक तौर पर इन्हीं का दबदबा था। बेईमानी करके गरीब

किसानों की जमीन हड़प लेता था। गांव में उनकी बातों को न मानने वालों के ऊपर जुल्म करता था। उनके कुकृत्यों का पर्दाफाश करने और उसके खिलाफ संघर्ष करने में वांगेल गांव का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस आन्दोलन को मुख्य रूप से केएएमएस ने आगे रहकर नेतृत्व किया था। इसमें कामरेड दय्यो का योगदान ज्यादा ही था। इसके अलावा एरिया में भूस्वामियों की जमीनें छीनने के संघर्षों में महिलाओं को संगठित करने में कामरेड दय्यो की अहम भूमिका रही।

2004 में गांव में मिलिशिया प्लाटून का निर्माण हुआ। कामरेड दय्यो भी मिलिशिया में भर्ती हो गईं। 2005 में पाशविक दमनकांड सलवा जुडूम शुरू हो गया। गांवों के ऊपर सलवा जुडूम गुण्डों ने हमला कर घरों को जला दिया। फसलों को नष्ट कर दिया। जनता सलवा जुडूम के हमलों से डरकर इधर-उधर भागने लगी। कुछ लोग सलवा जुडूम शिविरों में जाने लगे। कामरेड दय्यो गांव-गांव घूमकर जनता की हिम्मत बंधाती, 'जमीन छोड़कर नहीं भागेंगे, यहीं रहकर उनका सामना करेंगे, हाथ में आई फसलों को छोड़कर मत जाओ' कहते हुए रात-दिन घूम-घूमकर प्रचार करती थीं। संतरी कर जनता की रक्षा करती, अपनी मिलिशिया को लेकर सलवा जुडूम गुण्डों का प्रतिरोध करती थीं। शिविरों में भागे परिवारों की फसलों को काटकर जनता को देने, हिफाजत से रखने में कामरेड दय्यो ने पहलकदमी के साथ काम किया। ऐसे ही फसल काट रहे मिलिशिया के ऊपर एहकेल गांव में पुलिस और सलवा जुडूम गुण्डों ने हमला किया जिसमें 5 मिलिशिया सदस्य शहीद हो गए। वहां बचे मिलिशिया कामरेडों को कामरेड दय्यो ने प्रतिरोध करते हुए घेराव तोड़कर सुरक्षित बाहर निकाला। सलवा जुडूम गुण्डों और सरकारी सशस्त्र बलों का प्रतिरोध करने के लिए जनता और मिलिशिया ने मिलकर पारम्पारिक तरीकों से कई ट्राप्स, हजारों गड्ढ़े खोदे। इन सब कामों को कामरेड दय्यो ने मेहनत और सहनशीलता के साथ काम किया।

2006 जून में कामरेड देवे पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गईं। सवला जुडूम शुरू होने के बाद जनता ने गांवों को छोड़कर जंगलों में शरण ले ली। इस दौरान शरण स्थलों के आसपास साफ-सफाई न होने की वजह से लोग बीमार होने लगे। ये देखकर कामरेड देवे एरिया जनताना सरकार की डॉक्टर टीम में शामिल हो गईं। जनता के डेरों में रात-दिन घूम-घूमकर उन्हें साफ-सफाई के महत्व को समझाती, और जनता के साथ मिलकर आसपास की साफ-सफाई करती, रोगियों और हमलों में घायल जनता की इलाज करती थीं। मिलिशिया में रहते हुए प्राथमिक पढ़ाई सीखने वाली कामरेड देवे ने आगे चलकर अंग्रेजी अक्षरों को भी सीखने लगीं। और जल्द ही दवाइयों के नाम पढ़ने योग्य अंग्रेजी सीख गईं। 2007 में उन्हें कुतुल एरिया में डॉक्टर ट्रेनिंग के लिए भेजा गया।

ट्रेनिंग के लिए जाने से पहले कामरेड देवे अपने परिवार से मिलने गईं तब कामरेड देवे अपने परिवार को हिम्मत बंधाते हुए बोलीं – ''हमारे घरों को जला दिए। हमारे परिवारों की हत्या करने पर भी पार्टी का पक्ष न छोड़ें। डरकर गांवों को छोड़कर न भागें। दृढ़ता के साथ सलवा जुडूम का प्रतिरोध करें। अंतिम जीत जनता की ही होगी।''।

2007 में ट्रेनिंग के लिए आई कामरेड देवे ने यहीं रहकर काम करने की इच्छा जताई। तब से आखरी सांस तक कुतुल एरिया में जनता की सेवा की। इलाके में अपनी मिलनसार व मेहनती स्वभाव और सेवा भावना की वजह से उन्होंने जल्द ही जनता के दिलों में जगह बना ली। बड़ी लगन और सहनशीलता के साथ मरीजों का इलाज किया करती थीं। जब भी रात हो या दिन जिस गांव से भी किसी के बीमार पड़ने की खबर आती वहां जाकर इलाज करती थीं। उनके दुख-दर्द को समझती और उन्हें हिम्मत बंध ाती थीं। जहां भी जाती जनता से घुलमिल जाती थीं।

19 जून 2010 के दिन कोहकामेट्टा के डोंडरीपारा में मुखबिर की सूचना पर आई पुलिस के हमले में कामरेड देवे और मिलिशिया सदस्य कामरेड शिवचरण मण्डावी शहीद हो गए। आइए, कामरेड देवे के अधूरे लक्ष्य को पूरा करने का संकल्प लें।

कामरेड शिवचरण मण्डावी

कामरेड शिवचरण मण्डावी (25) का जन्म माड़ डिवीजन के मोहन्दी गांव के एक गरीब राउत परिवार में हुआ था। शिवचरण जब 8–9 महीने का था तभी मां चल बसी। नन्हे शिवचरण को पिता दस्सू मण्डावी ने बकरी का दूध पिलाकर पाला। मां के गुजर जाने के बाद पिता ने दूसरी शादी कर ली। सौतेली मां की देखरेख में शिवचरण बड़ा हुआ। सौतेली मां के तीन बेटे हैं। शिवचरण बचपन से अपने माता–पिता के कामों में हांथ बंटाता था। बड़े होने के बाद शिवचरण ने शादी करके अलग घर बसा ली। उनके दो बच्चे हैं।

कामरेड शिवचरण बचपन से क्रांतिकारी गतिविधियों के बीच पले–बढ़े थे। बाल संगठन में काम करते हुए बड़े होने के बाद डीएकेएमएस में काम किया। जनता की रक्षा के लिए जन मिलिशिया में सदस्य बन गये। और संतरी करना, पेट्रोलिंग करना, जब जरूरत पड़ी सेकण्डरी बल के साथ फौजी कार्रवाइयों में भाग लिया करते थे।

जब भी जहां भी काम हो तो वहां जाने से कभी आना–कानी नहीं करते थे। मुखबिरों को गिरफ्तार करना हो या सामान पहुंचाना हो या फिर कोई अन्य काम बड़ी लगन से करते थे। कभी मेरे घर में ये काम है या वो काम है नहीं कहते। अपना सब काम छोड़कर जनता, पार्टी और जनताना सरकार के कामों को महत्व देते थे। कामरेड शिवचरण अपनी शहादत के दो दिन पहले तीन मुखबिरों को गिरफ्तार कर जनताना सरकार को सौंपा और जब जन अदालत ने उन्हें मौत की सजा सुनाई तो उस सजा को अमल करने के लिए कामरेड शिवचरण बेझिझक आगे आए थे।

कामरेड शिवचरण टीसीओसी के समय सेकण्डरी बलों के साथ कई प्रतिरोध ी कार्रवाइयों में भाग लिया था। 2008–09 के विधानसभा व लोकसभा के झूठे चुनावों का बहिष्कार करने और चुनाव के लिए आए सशस्त्र बलों पर कार्रवाई करने के लिए सेकण्डरी बल और मिलिशिया ने दिन–रात काम किया था। उस समय कामरेड शिवचरण कड़ी मेहनत की। चुनाव बहिष्कार और प्रतिरोध की तैयारी कर रहे एलजीएस और मिलिशिया के मुकाम पर 6 मई 2009 को मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने हमला किया था। वहां पर एलजीएस सदस्य कामरेड सुजाता शहीद हो गई थीं। उस घटना में कामरेड शिवचरण भी थे और बाल–बाल बचकर निकले थे।

कामरेड शिवचरण सदा हंसमुख और मिलनसार स्वभाव के व्यक्ति थे। सभी के साथ आसानी से घुलमिल जाते थे। उन्हें ठीक से गोंडी नहीं आने पर भी अपनी टूटी–फूटी गोंडी से बातें करके सबका दिल जीत लेते थे। हर काम के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। कठिन परिस्थितियों में संकल्प के साथ काम करते थे।

19 जून 2010 के दिन मुखबिर की सूचना पर आई पुलिस कोहकामेट्टा के डोंडरीपारा में दस्ता के डेरा पर हमला किया। उस दिन कामरेड शिवचरण रसोई की जिम्मेदारी पर थे। पहले किचन पर ही हमला हुआ। उस हमले में कामरेड देवे शहीद हो गईं। कामरेड शिवचरण को पुलिस ने पकड़कर गोली मार दी।

21 जून के दिन उनकी याद में मोहन्दी और तोके में संस्मरण सभाओं का आयोजन किया गया। इन सभाओं में 400 जनता शामिल हुई। अपने प्यारे कामरेडों को आंसूओं के साथ क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मोहन्दी गांव में हुई सभा में कामरेड शिवचरण के पिता दस्सू मंडावी ने कहा – ''शिवचरण की मां के गुजर जाने के बाद बकरी का दूध पिलाकर बड़ा किया था। आज इस

लुटेरी व्यवस्था को ध्वस्त कर जनता की जनवादी सत्ता की स्थापना के लक्ष्य से जारी क्रांतिकारी आन्दोलन में मेरे बेटे की शहादत हुई है, ये मेरे लिए गौरव की बात है। आज मेरे बेटे ही नहीं, सैकड़ों बेटे–बेटियां अपनी जान कुर्बान कर रहे हैं। कामरेड शिवचरण और देवे के आदर्शों को ऊंचा उठाते हुए सरकारी दमन का प्रतिरोध करते हुए आपरेशन ग्रीन हंट को हराने का संकल्प लेंगे।''

कोंगेरा के वीर शहीद

29 जून 2010 के दिन पीएलजीए के हमारे जांबाज लाल योद्धाओं ने अपने बहादुर कमाण्डरों के नेतृत्व में और क्षेत्र की संघर्षशील जनता की सक्रिय मदद से हत्यारे, अत्याचारी व आतंकी सीआरपीएफ बलों पर नारायणपुर जिले के कोंगेरा गांव के पास एक और शौर्यपूर्ण हमला किया। चार घण्टों तक चले इस जबर्दस्त घमासान में 27 भाड़े के जवान मारे गए और 8 अन्य घायल हुए। ताड़िमेट्ला की तर्ज पर चले इस ऐम्बुश में मारे गए सरकारी बलों से 26 अत्याधुनिक हथियार छीन लिए गए ताकि जन सेना की शस्त्र सम्पत्ति को बेहतर बनाया जा सके। खासकर 'ऑपरेशन ग्रीनहंट' के तहत पुलिस व अर्ध -सैनिक बलों द्वारा पिछले 10 महीनों में दण्डकारण्य में 150 से ज्यादा लोगों की हत्या कर, कई गांवों को जलाकर और कई महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार कर घोर आतंक जो मचाया गया, उसके जवाब में ही इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया। और जिस जगह पर यह ऐम्बुश हुआ, उसके आसपास के गांवों ओंगनार, चिनारी (इन्नर), राजूबेड़ा, कज्जुम आदि में अर्ध-सैनिक बलों द्वारा जिस प्रकार लोगों की अंधाधुंध हत्याएं की गईं और घरों में आग लगा दी गई, उसके खिलाफ जनता आक्रोशित थी। जनता के बचाव में, जनता की मांग पर और जनता के गुस्से को अभिव्यक्ति देते हुए पीएलजीए ने इस कार्रवाई को अंजाम दिया।

इस शौर्यपूर्ण हमले को सफल बनाने की खातिर हमारी पीएलजीए के तीन बहादुर कमाण्डरों ने अपने अनमोल प्राणों को भारत की नई जनवादी क्रांति की बलिवेदी पर अर्पित किया। ये तीन कामरेड थे - बण्डू (कम्पनी पार्टी कमेटी सदस्य/प्लटून कमाण्डर), शंकर (कम्पनी पार्टी कमेटी सदस्य/कम्पनी उप-कमाण्डर) और रमेश (सेक्शन कमाण्डर/एलएमजी मैन)। आइये, जनता की मुक्ति के लिए अपनी जानें कुरबान कर जाने वाले इन वीर शहीदों व बस्तर माटी के इन बहादुर बेटों को अपना सिर झुकाकर पूरी विनम्रता से सलामी दें।

कामरेड बण्डू (बारसू कोरसा)

करीब 26 साल के नौजवान कामरेड बण्डू का जन्म माड़ इलाके के काकूर गांव में हुआ था। यह गांव नारायणपुर जिले के ओरछा विकासखण्ड में आता है। माड़िया

समुदाय के कोरसा परिवार में जन्मे बण्डू का माता-पिता ने उनका नाम 'बारसू' रखा था। वह अपने माता-पिता की तीसरी संतान थे। जब वह छोटे थे तब उनके बड़े भाई की मृत्यु हुई थी। उनकी दो बहनें और दो भाई हैं। काकूर ऐसा गांव है जो माड़ को गड़चिरोली डिवीजन से जोड़ता है। इधर से उधर और उधर से इधर आने-जाने वाले पार्टी कार्यकर्ताओं और गुरिल्ला बलों को यह गांव अपनी गरीबी के बावजूद भी कुछ न कुछ खिलता-पिलाता है। इस गांव का नाम सरकार को पता है भी या नहीं, किसी को नहीं पता। लेकिन इस गांव ने वर्तमान जनयुद्ध के पन्नों पर तो जगह बना ही ली। इतना ही नहीं, ऐतिहासिक 'परालकोट विद्रोह' (1825) का केन्द्र परालकोट यहां से ज्यादा दूर नहीं है। आंग्ल-मराठा शासन के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाने वाले पहले शहीद गेंदसिंह को जिस जगह पर फांसी दी गई थी, वहां से यह गांव काफी करीब है। काकूर के बड़े ही नहीं, बच्चे भी गुरिल्ला दस्तों के गीतों और स्नेहपूर्ण व्यवहार से प्रेरित होने लगे थे। इस तरह बच्चे बढ़ते गए और ठीक से जवानी की दहलीज में कदम तक नहीं रखे थे कि उनके दिलों में गुरिल्ला बनने की इच्छा पैदा हो गई। आने-जाने वाले हर कामरेड से, हर जिम्मेदार साथी से वो अपनी दिली इच्छा प्रकट करते थे कि वो बंदूक उठाना चाहते हैं और फौजी पोशाक पहनना चाहते हैं। लेकिन हर कामरेड ने उन्हें यही समझाने की कोशिश की कि तुम लोग अभी छोटे हों, जरा बड़े हो जाओ ताकि गुरिल्ला जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना किया जा सके। लेकिन वो मानने को तैयार नहीं थे।

कई दौर के मान-मनौवल के बाद जुलाई 1999 में इस गांव के चार किशोर थोड़ा आगे-पीछे पीएलजीए में भर्ती हो गए। इन चारों में तीन चचेरे भाई और एक बहन शामिल थे। कुछ ही दिनों बाद दुर्भाग्य से 20 जुलाई 2000 को इन तीन भाइयों की बहन कामरेड राजे सांप काटने से शहीद हो गई। इस गम को भुलाकर इन तीनों कामरेडों ने अलग-अलग इकाइयों में अपनी जिम्मेदरियों का निर्वाह जारी रखा। उनमें से एक थे कामरेड बण्डू जो भर्ती के समय सिर्फ 16 साल के थे।

कामरेड बण्डू को पहले परालकोट दल का सदस्य बनाया गया था। उसके बाद वह माड़ डिवीजन के सीएनएम दल में सदस्य बनाए गए थे। वर्ष 2002 में उन्हें एसजेडसी के विशेष दस्ते में सदस्य के रूप में लिया गया था। बाद में उस दस्ते का उप-कमाण्डर भी बने थे। बण्डू में हर चीज को जानने-समझने की बढ़िया जिज्ञासा और क्षमता थीं। वह दिखने में अपने उम्र से भी छोटा व दुबला-पतला आकार के थे, इसलिए हर कामरेड ने उन्हें प्यार बांटा था। कई नेतृत्वकारी कामरेडों ने उन्हें विकसित करने के लिए विशेष ध्यान दिया और मदद की। कामरेड बण्डू ने भी इस मदद का फायदा उठाया और पढ़ने-लिखने के मामले में बाकी कामरेडों की तुलना में आगे निकल गए। 2004 में उन्होंने अपने ही दस्ते की सदस्या कामरेड रामे से प्यार कर पार्टी की सहमति से शादी कर ली। कामरेड रामे 2009 में धमतरी में गिरफ्तार हुई थी और फिलहाल वह जेल में है।

जुलाई 2004 में दण्डकारण्य में पहली बार गठित पीएलजीए की कम्पनी-1 में उन्हें शामिल करते हुए सेक्शन कमाण्डर की जिम्मेदारी दी गई। तबसे लेकर अपनी शहादत तक पूरे छह साल उनकी क्रांतिकारी जिन्दगी कम्पनी-1 में ही बीती। पार्टी के राजनीतिक व सैद्धांतिक विषयों को वह ध्यान लगाकर पढ़ते थे और समझने की कोशिश करते थे। हर विषय को जानने के लिए उनके दिमाग में सवाल उठते रहते थे। और अपने सवालों को कामरेडों के सामने पेश करने में वह हिचकते नहीं थे जिससे उन्हें और भी सीखने का मौका मिल जाता था। वो एक विनम्र कामरेड थे जो साथियों से हर चीज को ध्यान से सुनते थे और अपनी शंकाओं को सामने रखकर जानकारी हासिल करते थे। कामरेड बण्डू फौजी मोर्चे पर और राजनीतिक समझदारी में तेजी से उभरने वाले कामरेड थे। सीखना, समझना और साथी गुरिल्लों को समझाना - इस तरह कामरेड बण्डू कम्पनी-1 में एक चहेते कामरेड बन गए। पीएलजीए के अनुशासन का पालन करना, मेहनत करना, लड़ाई के दौरान वीरता का प्रदर्शन करना और साथियों के साथ विनम्र व्यवहार - इन गुणों को देखते हुए कामरेड बण्डू को पदोन्नति भी मिलती रही। पहले उन्हें प्लटून के उप-कमाण्डर और फिर प्लटून कमाण्डर और प्लटून सचिव की जिम्मेदारियां देकर सितम्बर 2008 में कम्पनी पार्टी कमेटी में सदस्य के रूप में चुन लिया गया। इस तरह कम उम्र में ही उच्च जिम्मेदारियों की तरफ बढ़ने के दौरान ही कामरेड बण्डू का शहीद हो जाना खासकर फौजी मोर्चे के लिए बड़ा नुकसान है।

अपनी 11 साल की क्रांतिकारी जिंदगी में कामरेड बण्डू ने कई ऐम्बुशों और रेडों में भाग लिया। दुबले-पतले शरीर वाले कामरेड बण्डू फौजी कार्रवाइयों में तेजतर्रार योद्धा के रूप में भाग लेते थे। डौला शार्ट सरप्राइज एटैक, मुरकीनार, एनएमडीसी बारूद

गोदाम, कुरसनार, झाराघाटी, कुदुर, रानीबोदली, नारायणपुर जिला मुख्यालय में एसपीओ के घरों पर हमला, रिसगांव, बेरेवेड़ा-1 व बेरेवेड़ा-2, बट्टुम, मल्लेचूर, मूंडपाल, बजरंगबलि के पास विक्रम उसेण्डी के काफिले पर हमला, करकेली आदि कई ऐम्बुश और रेड की कार्रवाइयों में उन्होंने अनुपम शूरता और अदम्य साहस का प्रदर्शन किया। कम्पनी-1 द्वारा की गई सभी कार्रवाइयों में उन्होंने न सिर्फ भाग लिया, बल्कि उनकी सफलता में अहम भूमिका निभाई। लड़ाइयों को सफल करने में वह अपनी जान पर खेलते थे। 2010 की गर्मियों में अमोनियम नाइट्रेट की गाड़ी पर कब्जा करने की कार्रवाई में भी कामरेड बण्डू की भागीदारी रही।

2005 से जारी फासीवादी सलवा जुडूम को हराने के लिए चलाए गए प्रतिरोध ी अभियान को सफल बनाने तथा हर साल लिए जाने वाले टीसीओसी को सफल बनाने में कामरेड बण्डू ने बहादुरी से का प्रदर्शन करते हुए भाग लिया, नेतृत्व किया। खासकर इंद्रावती और पश्चिम बस्तर के इलाकों में जनता पर जारी जुडूम के आतंक को रोकने और जनता का मनोबल बढ़ाने के लिए कामरेड बण्डू ने भरपूर प्रयास किया। वह जनता के बीच एक लोकप्रिय कामरेड थे। माड़ के अलावा, पूर्व बस्तर, पश्चिम बस्तर, गढ़चिरौली - वह जहां भी गए जनता में लोकप्रियता हासिल की।

29 जून 2010 के दोपहर अपनी जिंदगी की आखिरी लड़ाई लड़कर कामरेड बण्डू अपनी शहादत से हमें गम के साथ-साथ सफलता दे गए। उस लड़ाई में उन्होंने एक प्लटून के कमाण्डर के रूप में नेतृत्व करते हुए फायर एण्ड मूवमेंट में अपने बलों का बढ़िया तालमेल किया। शुरू में ही दो दुश्मनों का सफाया कर और कुछ को घायल कर दिया जिससे बाकी जवानों को वहां से भागना पड़ा। और वहां अपनी एक सेक्शन को छोड़कर वह दूसरी जगह में दुश्मन से लड़ रहे अपने साथियों से जा मिले। वहां पर शत्रु बलों का पूरी तरह से घेराव करने में उन्होंने कमाण्ड के संपर्क करते हुए साथियों से तालमेल बनाया। युद्ध के मैदान में वह जो काशन दे रहे थे, दुश्मनों के दिलों में घबराहट पैदा कर रहे थे, जबकि हमारे साथियों के हौसलों को और भी बुलंद कर रहे थे। करीब-करीब ऐम्बुश समाप्ति की ओर बढ़ रहा था। सिर्फ 4 या 5 दुश्मन ही बचे हुए थे जो अपने प्रतिरोध से हथियार छीनने की पक्रिया को रोक रहे थे। इस परिस्थिति में हेडक्वार्टर ने कामरेड बण्डू के नेतृत्व में छह कामरेडों की एक टीम बनाकर तेजी से आगे बढ़ते हुए बचे हुए दुश्मनों को मार गिराने का आदेश दिया। इस आदेश का पालन करते हुए कामरेड बण्डू अपनी जान की जरा भी परवाह किए बिना अपनी टीम के साथ आगे बढ़ गए। इसी इंतजार में बैठे दुश्मन के एक निशानेबाज ने गोलियां चला

दीं जिससे कामरेड बण्डू और कामरेड रमेश मौके पर ही शहीद हो गए। कामरेड बंडू को सिर में और कामरेड रमेश को छाती पर गोलियां लगी थीं। इसके तुरंत बाद टीम के बाकी कामरेडों ने सारे दुश्मनों का सफाया कर ऐम्बुश को जबर्दस्त कामयाबी दिलवाई। विजय की कगार पर पहुंचने के बाद, मात्र 10 मिनट पहले इन दोनों कामरेडों के शहीद हो जाने से सभी साथियों को सदमा सा लगा था। लेकिन, आखिर यह युद्ध है, इसमें हर कामयाबी कुरबानियों की मांग करती है। जिस तरह आठ जांबाज कामरेडों की शहादत के बिना 6 अप्रैल 2010 वाली ऐतिहासिक ताड़िमेट्ला कार्रवाई की कल्पना नहीं कर सकते, उसी तरह कामरेड्स बण्डू, शंकर और रमेश की शहादत के बिना हम कोंगेरा कार्रवाई की सफलता की कल्पना भी नहीं कर सकते।

उन्होंने खुद को एक बहादुर कमाण्डर के रूप में विकसित किया। कमांडिंग, कंट्रोल और समन्वय की कला में उन्होंने अच्छी-खासी पकड़ हासिल की। वह सीखने की बढ़िया क्षमता रखते थे। परिस्थितियों के अनुसार चलने का हुनर था उनमें। भौगोलिक धरातल को नजर में रखते हुए शत्रु बलों के खिलाफ रणकौशल का बेहतरीन प्रदर्शन करते थे। राजनीतिक व फौजी विषयों को सीखने में उनकी गहरी दिलचस्पी रही। सामूहिकता की भावना को वह हमेशा प्राथमिकता देते थे। अपनी प्लटून पार्टी कमेटी को वह सामूहिक इकाई के रूप में संचालित करते थे। सामूहिक कार्य-पद्धति को महत्व देते थे।

वह मेहनती कामरेड थे। कोई भी काम बताने पर इनकार उनके मुंह से कभी निकलता ही नहीं था। किसी भी काम को पूरा करने की कोशिश जरूर करते थे। रसोई के लिए लकड़ी लाने से लेकर पानी लाने तक पीएलजीए की रोजमर्रा जिंदगी का हर काम करते थे। गलतियां होने पर निराश नहीं हुआ करते थे। गलती से सबक लेते हुए आगे बढ़ने को ही सोचते थे। वह हर समय दुश्मन पर हमले के बारे में सोचा करते थे। दूसरे जोनों और राज्यों में होने वाले सफल हमलों की खबरों से वह प्रेरणा पाते थे।

ऐसे समय, जबकि 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' को पराजित कर क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के संकल्प के साथ हम लड़ रहे हैं, कामरेड बण्डू की कमी हमें खलेगी। कामरेड बण्डू ने कोंगेरा ऐम्बुश में जो पहलकदमी, सूझबूझ, बहादुरी, बेहतरीन कमाण्डिंग, अपनी जान की जरा भी परवाह न करने वाली आत्म-बलिदान की उच्च भावना आदि का प्रदर्शन किया उससे पीएलजीए के हर कमाण्डर को, हर लड़ाकू को प्रेरणा मिलेगी।

कामरेड शंकर (पुनाऊ हलामी)

कामरेड पुनाऊ हलामी (27) का जन्म केशकाल इलाके के किसकोड्डो के निकट ऊचाकोट गांव में हुआ था। यह गांव नारायणपुर जिला मुख्यालय से करीब है।

उनका परिवार लोहार काम करने वाला मध्यम आदिवासी परिवार था। वह माता-पिता का बड़ा बेटा था। ऊचाकोट गांव विकास से वंचित और वन विभाग के अधिकारियों के जुल्मों से त्रस्त गांवों में से एक था। वन विभाग वाले और पटवारी क्या-क्या करते थे, इसे बचपन में ही कामरेड पुनाऊ ने देख लिया था। उनके गांव के नजदीक रावघाट पहाड़ है जिसमें सरकार खदान खोलकर आदिवासियों का विनाश करने पर आमादा है। शहीद कामरेड सुखदेव के नेतृत्व में इस इलाके में पहली बार गुरिल्ला दस्ते का प्रवेश हुआ। तबसे यह इलाका क्रांतिकारी संघर्ष का हिस्सा बन गया। जन संगठनों का निर्माण होने लगा। कामरेड सुखदेव की अगुवाई में जनता ने वन विभाग व पटवारियों के जुल्मों को बंद करवाया। रावघाट लोहा खदान और कुव्वेमारी बाक्साइट खदान के खिलाफ लोगों की लामबंदी हुई। रावघाट खदान शुरू होने से लोहा साफ करने के लिए जो बांध बनाया जाएगा, उसमें ऊचाकोट गांव डूब जाने वाला है। इस खतरे को समझते हुए ऊचाकोट गांव के लोग मजबूती से संगठनों में गोलबंद हो गए।

बचपन में कामरेड पुनाऊ बाल संगठन का सदस्य बने थे। उनका परिवार पूरा क्रांतिकारी समर्थक था। गांव के मुखिया संगठनों को हतोत्साहित करने की कोशिश करते थे। लेकिन कामरेड पुनाऊ शुरू से ही क्रांतिकारी संघर्ष के प्रति उत्साहित थे। उन्होंने अपनी बहन को भी प्रोत्साहित कर पार्टी में भर्ती करवाया। और तीन-चार युवकों को पार्टी में शामिल करने में उनका योगदान रहा। वह खुद मई 2001 में केशकाल दस्ते में सदस्य के रूप में भर्ती हो गए। पार्टी की जरूरतों के मुताबिक उन्होंने रावघाट और परतापुर इलाकों में भी दस्ता सदस्य के रूप में काम किया। एक साल तक उन्होंने एक डीवीसी सदस्य के गॉर्ड के रूप में भी काम किया। उन्होंने पार्टी में भर्ती होने के बाद अपना नाम 'आजाद' बदला था।

बाद में उन्हें परतापुर एलजीएस का उप-कमाण्डर बनाया गया। फिर परतापुर

एरिया कमेटी का सदस्य बन गए। फिर रावघाट में एलजीएस कमाण्डर के साथ-साथ एरिया कमाण्डर-इन-चीफ की जिम्मेदारी भी निभाई। उसके बाद उन्हें फिर से 2007 में परतापुर इलाके में भेज दिया गया। वहां जन मिलिशिया को प्रशिक्षण देते हुए उसे विकसित करने पर जोर दिया। 2008 में उन्हें पलटन-17 में कमाण्डर और सचिव के रूप में नियुक्त किया गया। और उन्हें उत्तर बस्तर डिवीजनल कमाण्ड के सदस्य के रूप में लिया गया। 2009 में गठित कम्पनी-6 में उन्हें कम्पनी पार्टी कमेटी सदस्य और कम्पनी उप-कमाण्डर के रूप में शामिल किया गया। उन्होंने एसजेडसी के इस फैसले को सहर्ष स्वीकार किया और इस बढ़ी हुई जिम्मेदारी के अनुरूप अपने आपको विकसित करने की पूरी कोशिश की। कम्पनी में स्थानांतरित होने के बाद उन्होंने अपना नाम शंकर बदला।

उत्तर बस्तर में काम करने के दौरान ही उन्होंने अपनी पसंद की एक कामरेड से शादी की। दोनों ने अलग-अलग जिम्मेदारियों में रहकर पार्टी में अपना-अपना योगदान दिया।

एक दस्ता सदस्य के रूप में और एक कमाण्डर के रूप में कॉमरेड शंकर ने कई कार्रवाइयों में भाग लिया। 2005 में दुर्गकोंदल के पुलिस वालों के साथ मेंडो गांव के पास दो घण्टे तक हुई घमासान लड़ाई में कामरेड शंकर शामिल थे। कई जन विरोध ी दुश्मनों को दण्डित करने में कामरेड शंकर भागीदार रहे। एक एक्शन टीम के कमाण्डर के रूप में उन्होंने पखांजूर कस्बे में एक मुखबिर को मार गिराया था।

अपनी अंतिम लड़ाई में कामरेड शंकर ने बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए दुश्मन से लोहा लिया। पहली असल्ट टीम के कमाण्डर के रूप में उन्होंने अपने सेक्शन का नेतृत्व किया। पहले ही दौर में उन्होंने दुश्मन पर धावा बोलते हुए एक दुश्मन को मार गिराया। उसके बाद उन्होंने दूसरी जगह पर दुश्मन का घेराव करने वालों से मिलकर लड़ाई जारी रखी। इस बीच जब वह दुश्मन पर निशाना साध रहे थे तभी एक दुश्मन ने उन पर गोली चला दी जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई।

कामरेड शंकर ने हमेशा जनता और कार्यकर्ताओं के साथ बढ़िया सम्बन्ध बनाए रखा। गांवों में छोटे बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी के साथ उनका बेहतर सम्बन्ध रहता था। कामरेड शंकर सीधा और स्पष्ट बोलने वाले इंसान थे। घुमा-फिराकर बात करना उन्हें आता नहीं था। उन्होंने कम्बैट बलों में रहकर काम करना चाहा। फौजी मोर्चे पर उभरते हुए इस नौजवान की शहादत से हमें बड़ा नुकसान हुआ है। हम अपने दुख को दृढ़ संकल्प में बदलकर कामरेड शंकर के आदर्शों और अधूरे सपनों को साकार बनाने के लिए हिम्मत के साथ कदम बढ़ाएंगे।

कामरेड रमेश (ओड़ी उंगाल)

करीब 30 वर्षीय कामरेड रमेश का जन्म दरभा डिवीजन के गांव टीटो में हुआ था। बाद में वह अपने चाचा के पास गांव पुव्वार जिला दंतेवाड़ा (दक्षिण बस्तर डिवीजन) में आ गए थे। पुव्वार गांव एक क्रांतिकारी किला है, जो हमेशा दुश्मनों के लिए चुनौती रहा है। पुव्वार गांव की माताओं ने कई वीर योद्धाओं को जन्म दिया। इस गांव के कामरेड शहादतों व लड़ाइयों में कभी पीछे नहीं रहते। कॉमरेड रमेश को घर में ओड़ी उंगाल के नाम से पुकारा जाता था। वह सितंबर 2001 में दल में भर्ती हुए थे। 2001 के आखिर से उन्होंने पलटन-5 में सदस्य के रूप में काम किया। 2002 के आखिर में उन्हें पलटन-1 में स्थानांतरित किया गया। जुलाई 2004 तक उन्होंने उसी में काम किया था।

शुरू से ही वह बहुत मजबूत व मेहनती कामरेड थे। कंपनी-1 के गठन के साथ ही वह उसके सदस्य बने थे और आखिर तक कम्पनी में ही बने रहे। कम्पनी के जीवन में उन्होंने संतरी, किचेन आदि जिम्मेदारियों को निभाया। उन्होंने मैकानिक काम भी सीखा था। कम्पनी में हथियारों में छोटी-छोटी खराबियों को वह ठीक कर देते थे। हथियारों को रंग चढ़ाकर सुंदर बनाते थे। उन्हें मैकेनिक काम में और ज्यादा प्रशिक्षण दिलवाने का कम्पनी पार्टी कमेटी ने निर्णय लिया था। लेकिन इसे लागू करने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई।

उन्होंने कई सैनिक कार्रवाइयों में भाग लिया। डौला हमले में, एनएमडीसी, मुरकीनार, रानिबोदली आदि हमलों में उन्होंने भाग लिया था। रानिबोदली कार्रवाई में वह हल्के से जख्मी हो गए थे। कुछ दिन तक चले इलाज के बाद वह फिर अपनी जिम्मेदारी में आ गए। टेकानार, कड़ियानार, बोदली, मूंडपाल, मल्लेचूर, बेरेवेड़ा, कुरसनार, जारावेड़ा (गढ़चिरोली), झाराघाटी, कुदूर, मैनपुर आदि कई ऐम्बुशों में उन्होंने भाग लिया। इंद्रावती और नेशनल पार्क इलाकों में सलवा जुडूम के जुल्मों के खिलाफ जनता को लामबंद करते हुए प्रतिरोधी कार्रवाइयों को अंजाम देने में भी कामरेड रमेश की अहम भूमिका रही।

कंपनी-1 में उनको बाद में सेक्शन कमांडर व एलएमजी मैन की जिम्मेदारी प्रदान की गई। उन्होंने कोंगेरा ऐंबुश में जबर्दस्त भूमिका निभाकर उसकी सफलता में

उल्लेखनीय योगदान दिया। जब आखिरी मौके पर दुश्मनों के नजदीक तक जाकर भिड़ना था, तब वह बेझिझक और बेखौफ अपने कमाण्डर कामरेड बण्डू के साथ एलएमजी से आग उगलते हुए आगे बढ़ते गए। मात्र 30 गज की दूरी से जब वह दुश्मन से दो-दो हाथ कर रहे थे दुश्मन की एक गोली उनके सीने को चीरते हुए निकल गई। इससे बस्तर का यह प्यारा बेटा, शोषित जनता का यह सच्चा सेवक वहीं धराशायी हो गया। लेकिन उनके साथी नहीं रुके, इधर बण्डू और रमेश की लाशें गिरती रहीं, दूसरे साथी रमेश की एलएमजी उठाकर दुश्मनों पर टूट पड़े। कुछ ही पलों में उन्हें ढेर कर पूरी सफलता दिलवा दी।

इन तीन कामरेडों की मृत्यु से हमें बड़ा नुकसान हुआ है, फिर भी जैसा कि माओ ने भी कहा - हर लड़ाई कुरबानी मांगती है। और दुश्मन के बलों का भारी संख्या में उन्मूलन कर बड़ी-बड़ी कामयाबियां हासिल करनी हैं तो हमें भी जरूर खून बहाना ही पड़ेगा। रानीबोदली (2007) में छह कामरेडों व अभी 6 अप्रैल को ताड़िमेटला में हमारे आठ कामरेडों ने अपना खून बहाकर ही हमें सफलता दिलाई थी। इसी सिलसिले में आज कामरेड बण्डू, कामरेड शंकर और कामरेड रमेश की शहादतों से ही यह ऐतिहासिक कार्रवाई 4 घण्टों की लड़ाई के बाद सफल हो पाई। ये शहादतें पीएलजीए के हर योद्धा के लिए ऊर्जा व प्रेरणा के स्रोत सिद्ध होंगी। आने वाले दिनों में ऐसे हजारों बण्डू, शंकर व रमेश बन निकलेंगे जो इस शोषणकारी व्यवस्था को दफनाकर ही दम लेंगे।

कामरेड मड़ावी रामक्का (अनिता/शारदा)

दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन की पहली पीढ़ी की महिला नेताओं में से एक कामरेड मड़ावी रामक्का (शारदा) का गंभीर बीमारी के चलते 29 जून 2010 की मध्यरात्री में आकस्मिक निधन हो गया। मुश्किलों से भरी लम्बी क्रांतिकारी जिंदगी के कारण बीमार होकर वह काफी समय से परेशान थीं। अपनी अस्वस्थता की परवाह किए बगैर ही वह क्रांतिकारी कामकाज में लगातार शिरकत करती आ रही थीं। पार्टी ने जहां तक संभव हो उनका इलाज करवाने की काफी कोशिश की। बीच में कामरेड रामक्का थोड़ी बेहतर हुई भी थीं, लेकिन पिछले कुछ समय से फिर से गंभीर अस्वस्थता

का शिकार हुई थीं। आखिरकार वही उनकी मौत का कारण बना। उस कैम्प में, जिसमें उनके जीवनसाथी के अलावा कई नेतृत्वकारी कामरेड्स और दूसरे कामरेड्स मौजूद थे, सभी को गम में डुबोते हुए 29 जून की रात में उन्होंने अंतिम सांस ले ली। उन्हें बचाने के लिए की गई सारी कोशिशें विफल हुईं। उस इलाके की जनता, छापामार साथी और जनताना सरकार के नेताओं – सभी ने मिलकर उन्हें क्रांतिकारी सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी। सैकड़ों लोगों के मुंह से निकले 'कामरेड शारदक्का अमर रहें' के बुलंद नारों के बीच उनकी चिता को अग्नि दी गई। सभी ने कामरेड शारदा के अधूरे मकसद को पूरा करने की कसम खाई।

कामरेड शारदा का जन्म महाराष्ट्र के गड़चिरोली जिले के अहेरी तहसील में आने वाले गांव गुड्डिगूड़ेम में 1962 में हुआ था। वह गरीब किसान परिवार से थीं। माता-पिता की कुल पांच संतानों में वह तीसरी थीं। कामरेड शारदा की मौत से दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन ने एक अनमोल क्रांतिकारी को खो दिया जिसने दो दशकों से ज्यादा समय से पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दीं। जबसे यहां क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआत हुई, तभी से क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की गतिविधियों का हिस्सा बनकर, उसे आज की स्थिति में लाने के लिए नींव रखने वाले प्रमुख कामरेडों में कामरेड रामक्का एक थीं। उनकी शहादत से खासकर क्रांतिकारी महिला आंदोलन को बड़ा नुकसान हुआ है। 1980 के दशक के आखिर से ही दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ने वाली कामरेड रामक्का 1988 तक एक सक्रिय कार्यकर्ता बनी थीं। जल्द ही वह कमलापुर रेंज कमेटी सदस्या के रूप में चुन ली गई थी। केएएमएस संगठनकर्ता के साथ घूमते हुए उन्होंने क्रांतिकारी महिला आंदोलन के विकास के लिए प्रयास किए। 1990 से पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने वाली कामरेड रामक्का पार्टी की एक वरिष्ठ कार्यकर्ता थीं जिन्होंने महिला संगठन की संगठतकर्ता के रूप में, पार्टी की एरिया कमेटी सदस्या व सचिव के रूप में विभिन्न जिम्मेदारियों में 'अनितक्का' और 'शारदक्का' के नाम से गढ़चिरौली (महाराष्ट्र), माड़ (छत्तीसगढ़), श्रीकाकुलम (आंध्रप्रदेश) और मलकनगिरी (ओड़िशा) के विभिन्न इलाकों की जनता के बीच काम किया।

पहले पहल उन्होंने गढ़चिरौली जिले में क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन में काम कर उसके विकास में अपना योगदान किया था। अहेरी इलाके से क्रांतिकारी आंदोलन में आकर्षित हुई पहली पीढ़ी की महिला नेत्री थीं कामरेड रामक्का। कई बार प्रचार कैम्पेन चलाकर गांवों में क्रांति का प्रचार-प्रसार कर, विशेषकर महिलाओं को क्रांतिकारी आंदोलन में जोड़ने में कामरेड रामक्का ने उल्लेखनीय कार्य किया। 1980 में,

आंदोलन के शरूआती समय में ही कामरेड पेद्दि शंकर की गोली मारकर हत्या कर लुटेरे शासक वर्गों ने यह सपना देखा था कि इससे वे क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार को रोक सकेंगे। कामरेड पेद्दि शंकर की शहादत और उनके द्वारा फैलाए गए क्रांति के संदेश को गांव-गांव में सुनाते हुए शहीदों के मकसद की पूर्ति करने का प्रचार करने में कामरेड रामक्का ने भाग लिया। सालों से जारी वन विभाग वालों के जुल्मों और अत्याचारों को खत्म करने में, पेपरमिल प्रबंधन की लूटखसोट व महिलाओं पर हो रहे यौन शोषण के खिलाफ जनता को संगठित करने में तथा जन संघर्षों को संचालित करने में कामरेड रामक्का अग्रिम पंक्ति में डटी रहीं। खासकर वन विभाग के अधिकारी आदिवासी महिलाओं को अपने कब्जे में रखकर उनका यौन शोषण करते थे। इसके खिलाफ संगठन के नेतृत्व में संघर्ष किया गया जिसमें कामरेड शारदा की नेतृत्वकारी भूमिका रही। पेपरमिल के मजदूरी दामों में बढ़ोत्तरी के लिए किए गए संघर्षों में गढ़चिरौली जनता ने कई बार कामयाबियां हासिल कीं। इस दौरान पार्टी के लिए कोष जुटाने के लक्ष्य से सामने आए 'वर्क डे' (श्रम दिवस) परम्परा को जनता में स्थापित कर पार्टी के लिए एक दिन का सामूहिक श्रम करने की प्रेरणा देने वाले कामरेडों में रामक्का एक थीं। इसके अलावा कई अन्य कामों में मजदूरी दर बढ़ाने के लिए किए गए जन संघर्षों में कामरेड रामक्का आगे रहीं। गढ़चिरौली जिले में क्रांतिकारी आंदोलन को जड़ें जमाने से रोकने और अपनी सामंती पकड़ को ढीला पड़ने से बचाने के लिए उस समय के अहेरी महाराजा विश्वेश्वरराव ने कई साजिशें की थीं। उन्हें पराजित कर जनता पर जारी उनके जुल्म-शोषण के खिलाफ किए गए संघर्षों में कामरेड रामक्का का योगदान रहा। इस तरह अहेरी इलाके में किए गए तमाम सामंत-विरोधी व साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों में जनता को, खासकर महिलाओं को गोलबंद करने में कामरेड रामक्का ने सक्रिय भूमिका निभाई। राज परिवार के धर्माराव आत्रम ने कामरेड शारदा पर सरेंडर करने का काफी दबाव डाला था। लेकिन कामरेड शारदा ने उसे विफल कर दिया।

घर में रहते समय में ही पार्टी सदस्यता पाकर सेल सदस्या बनने वाली कामरेड रामक्का ने एक तरफ जन संगठन की गतिविधियों को सक्रियता से संचालित करते हुए ही दूसरी तरफ पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी समर्पण की भावना के साथ पूरा किया। इस दौरान उन्होंने कई महिलाओं को पार्टी में भर्ती करवाया। उस क्षेत्र की जनता को शारदा पर इतना विश्वास था कि डीएकेएमएस के रहने के बावजूद लोग हर प्रकार की समस्याओं को लेकर शारदा के पास ही जाया करते थे।

बाद में 1990 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गईं। तबसे उन्होंने अपना नाम 'अनिता' बदल लिया। पहले कमलापुर इलाके में केएएमएस की सांगठनिक जिम्मेदारी उठाई थी।

बाद में जिम्मलगट्टा इलाके में भी उन्होंने केएएमएस की संगठनकर्ता के रूप में काम किया था। सादे कपड़ों में निहत्थे ही गांवों में घूमती थीं। एक बार उनकी तीन सदस्यीय टीम एक गांव में ठहरी हुई थी तो एक मुखबिर ने पुलिस को इत्तला दिया था। पुलिस ने गांव में छापा मारा और घर-घर की तलाशी ली। वे तीनों गांव में ही थीं, लेकिन जनता ने उन्हें बचा लिया। इस तरह संगठन के काम पर घूमते समय वह कम से कम तीन बार दुश्मन के हाथों में पड़ने से बच गईं। बल्कि जनता ने उन्हें बचा लिया।

गरीबी के चलते बचपन से कुपोषण की शिकार कामरेड अनिता शारीरक रूप से काफी कमजोर रहती थीं। पतली सी व लम्बी सी दिखने वाली कामरेड अनिता में क्रांति के लक्ष्य के प्रति अटल प्रतिबद्धता थी। बचपन में पढ़ाई-लिखाई से वंचित कामरेड अनिता ने पार्टी में भर्ती होने के बाद दृढ़ संकल्प के साथ पढ़ना-लिखना सीख लिया। 1990 में कामरेड अनिता ने पार्टी में केन्द्रीय कमेटी सदस्य कामरेड से शादी की।

पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में भर्ती होने के थोड़े ही समय बाद वह माड़ डिवीजन में स्थानांतरित की गई थीं। पहले एसजेडसी के विशेष दस्ते में काम करने के बाद सांगठनिक काम में आई थीं जिसमें उन्होंने 1996 तक वहां की माड़िया जनता को, खासकर महिलाओं को संगठित करने के कार्यों में हिस्सा लिया। 'सभ्यता' से कोसों दूर फेंक दिए जाने वाले माड़ इलाके की जनता के बीच क्रांतिकारी आंदोलन के निर्माण के प्रयास किए। मुख्य रूप से माड़िया समाज में प्रचलित महिलाओं के बलपूर्वक विवाहों के खिलाफ जनता को सचेतन करने में कामरेड अनिता ने बेहतरीन भूमिका निभाई। कबीलाई रीति-रिवाजों के तहत महिलाओं के साथ होने वाले अन्याय का विरोध करने के लिए उन्होंने महिलाओं को एकजुट किया। माड़ इलाके में क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन के निर्माण की नींव रखने में कामरेड अनिता ने काफी मेहनत की। माड़ इलाके में पार्टी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों को सफल बनाने की खातिर उन्होंने अपनी पूरी ताकत लगाकर काम किया।

1996 से 1999 तक आज के पूर्व बस्तर डिवीजन के कोण्डागांव इलाके में एरिया कमेटी सदस्या के तौर पर काम किया। बाबा बिहारीदास द्वारा इस इलाके के आदिवासियों को कई किस्म के प्रलोभन देकर हिंदू धर्म में आकर्षित कर आदिवासी संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने का षड़यंत्र जारी था। इसके खिलाफ किए गए जन संघर्षों में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। भक्ति के नाम से आदिवासी युवतियों को गुमराह कर वहशीपन का शिकार बनाए जाने के खिलाफ महिलाओं को गोलबंद कर नाहकानार गांव में बाबा बिहारीदास को जनता के सामने लाकर गलती मनवाने की घटना में कामरेड अनिता शामिल थीं। कन्हारगांव में सुकडाल नामक मालगुजार के खिलाफ लड़कर

करीब 150 एकड़ जमीन छीनकर जनता में बांटने के लिए किए गए संघर्ष में कामरेड अनिता ने जनता का नेतृत्व किया। वेडमाकोट गांव में तहसीलदार श्रीमाली और भाजपा नेता बालसाय वड्डे द्वारा आदिवासी महिलाओं पर किए जा रहे यौन शोषण और अत्याचार के खिलाफ जनता को, खासकर महिलाओं को एकजुट कर जन अदालत लगाकर उन्हें दण्डित करने की घटना में कामरेड अनिता ने एसी सदस्या के रूप में जिम्मेदारी के साथ काम किया। तेंदुपत्ता मजदूरी बढ़ाने के लिए किए गए संघर्षों में जनता को गोलबंद करने में कामरेड अनिता ने काफी प्रयास किया। ग्राम नरिया में लकड़ी कटवाकर ले जा रहे वन अधिकारियों के खिलाफ जनता को एकजुट करने में कामरेड शारदा ने योगदान किया।

1999 में पार्टी ने कामरेड अनिता को आज के आंध्र-ओड़िशा बार्डर स्पेशल जोन के श्रीकाकुलम डिवीजन में तबादला किया था। वहां पर उन्होंने उद्दानम इलाके की जनता में काम करते हुए वहां की भाषा को सीखने की कोशिश की। दस्ते में उप कमाण्डर की जिम्मेदारी निभाते हुए उन्होंने जनता का प्यार व विश्वास हासिल किया। वर्ष 2000 के आखिर तक श्रीकाकुलम डिवीजन में काम करने वाली कामरेड शारदा ने 2000 में आयोजित पूर्व रीजियन के पार्टी अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। उसके बाद एओबी एसजेडसी ने उन्हें मलकनगिरी डिवीजन के पप्पुलूर एरिया में स्थानांतरित किया। वहां पर उन्होंने दस्ता कमाण्डर के रूप में काम करते हुए कोण्डारेड्डी समुदाय की जनता का असीम प्रेम हासिल किया। उनके साथ घुलमिलकर उन्हें कई संघर्षों में गोलबंद किया। बाद में मोटू इलाके में स्थानांतरित होकर एरिया कमेटी सचिव की जिम्मेदारी लेकर काम किया। इस तरह उन्होंने एओबी की जनता के दिलों में सदा के लिए अपनी छाप छोड़ दी।

दस साल बाद, 2006 में कामरेड शारदा को पार्टी ने फिर से दण्डकारण्य में स्थानांतरित किया। माड़ डिवीजन के आंदोलन का वह फिर एक बार हिस्सा बन गईं। उन्हें इंद्रावती एरिया के आदेड़ इलाके में संगठन की जिम्मेदारियां दी गईं। तब तक माड़ डिवीजन में क्रांतिकारी आंदोलन काफी विकास कर चुका था। गांव-गांव में जनताना सरकार, ग्राम पार्टी कमेटी और जन मिलिशिया का विकास हो चुका था। अपने इलाके में इनके सुचारू संचालन के लिए कामरेड शारदा ने अथक परिश्रम किया। जनताना सरकार के तहत गांवों में विकास कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार कर उन्हें लागू करने में कामरेड शारदा की भूमिका महत्वपूर्ण रही। गावों में और पार्टी के भीतर पितृसत्ता के खिलाफ उन्होंने आखिर तक संघर्ष किया।

कामरेड शारदा की गुरिल्ला जिंदगी के बारे में भी विशेष रूप से उल्लेख करना

जरूरी है। 2001 में पार्टी द्वारा संचालित पहले कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान (टीसीओसी) के दौरान कलिमेला थाने पर किए गए हमले में उन्होंने एक टीम की कमान संभाल ली और अतिरिक्त बलों के आने के रास्ते को जाम करने की जिम्मेदारी निभाई। हमले की सफलता और 42 हथियारों की जब्ती में कामरेड शारदा ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई। शत्रु बलों के साथ हुई कुछ मुठभेड़ों में भी वह दृढ़ता से डटी रही।

कामरेड रामक्का की असमय मृत्यु से माड़ डिवीजन की जनता बुरी तरह आहत हुई। उनके अधूरे सपनों को साकार बनाने का संकल्प लेते हुए जनता, क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं और पार्टी ने संघर्ष को तेज करने की कसम खाई। उनके दृढ़ संकल्प, अटल विश्वास और मेहनती स्वभाव हम सभी के लिए आदर्श होंगे।

कामरेड सुखदु आचला

कामरेड सुखदु आचला का जन्म उत्तर बस्तर डिवीजन के चिलपरस गांव के मेट्टाटोला में हुआ था। वे 25 वर्ष के थे। ग्राम रक्षक दल के सदस्य के तौर पर काम कर रहे थे। जून 2010 को अपने मिलिशिया साथियों के साथ चारगांव एरिया के वाला गांव में जनता की मीटिंग ले रहे थे। मुखबिर की सूचना पर आई बीएसएफ और जिला पुलिस ने उन पर अंधाधुंध फायरिंग की जिसमें कामरेड सुखदु शहीद हो गए। कामरेड सुखदु की मौत का बदला लेने का जनता ने संकल्प लिया।

कामरेड एमला जिल्ला (मंगु)

कामरेड मंगु की शहादत जून 2010 को चिन्तलनार–चिंतागुफा के बीच बुरकापाल के पास पुलिस पर पीएलजीए द्वारा किए गए ऐम्बुश के दौरान हुई।

कामरेड मंगु (25) का जन्म बीजापुर जिला, गंगालूर एरिया के आवनार (सावनार) गांव में हुआ था। पिता एमला पाण्डू और मां एमला लखमे की चार संतानों में मंगु चौथी संतान थे। सावनार क्रांतिकारी आन्दोलन के मजबूत केन्द्रों में से एक है। दक्षिण बस्तर से पार्टी का विस्तार 1987 में इस इलाके में हुआ था। तबसे यह गांव पार्टी के पक्ष में दृढ़ता से खड़ा है। इस गांव से कई युवक–युवतियां पेशेवर क्रांतिकारी बनकर पार्टी और पीएलजीए में काम कर रहे हैं। उन्हीं में से कामरेड मंगु भी एक थे।

कामरेड मंगु 2003 में गांव के डीएकेएमएस में शामिल हुए थे। जन मिलिशिया में भी सक्रिय रूप से काम करने लगे थे। शोषक शासकों द्वारा जून

2005 में महेन्द्र कर्मा के नेतृत्व में अत्यंत पाशविक दमनकांड सलवा जुडूम को शुरू किया गया। सरकारी सशस्त्र बलों और सलवा जुडूम के गुण्डों द्वारा गांवों पर हमले करके आगजनी, हत्याकांड, लूटपाट, अत्याचार, बलात्कार आदि कर जनता में भय का माहौल निर्मित किया जा रहा था। जनता को राहत शिविरों में बंदी बनाया जा रहा था। उस दौरान कामरेड मंगु ने एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार के नेतृत्व में सलवा जुडूम का दृढ़ता के साथ प्रतिरोध किया। मिलिशिया के साथ मिलकर गंगालूर इलाके में कई प्रतिरोधी कार्रवाइयों में भाग लिया।

जनवरी 2006 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बनकर जेगुरगोण्डा एलओएस में शामिल हो गये। वहां एलजीएस में तीन साल काम किया। पार्टी ने उन्हें 2009 में टेकनिकल टीम में बदलने का निर्णय लिया। वहां उन्होंने जल्द ही बन्दूकों को रिपेयर करना, कुन्दा लगाने का काम सीख गया। वह अपने साथियों के साथ मिलजुलकर रहते थे। सभी के लिए वह एक आदर्श कामरेड थे। कम बोलना और ज्यादा काम करना उनका स्वाभाव था।

जून 2010 को दुश्मन पर हमला करने के लिए टू मेन ऐम्बुश की योजना बनाई गई। उस योजना को अंजाम देने के लिए मुकरम–चिंतागुफा के बीच बम बिछाया गया। दुश्मन ऐम्बुश की आंशका से रोड टीम के अलावा फ्लैंक में जंगल से एक टीम आई थी। इसकी जानकारी न होने से ऐम्बुश टीम ने रोड से आ रही पुलिस टीम पर ऐम्बुश किया। जंगल से आ रही टीम ने इन पर बगल से हमला करने से कामरेड मंगु वहीं शहीद हो गए। कामरेड मंगु एक निष्ठावान, जिम्मेदार और ईमानदार कामरेड थे। आइए, उनके आशयों को पूरा करने की शपथ लेंगे।

कामरेड आजाद (चेरुकूरी राजकुमार)

शोषित–उत्पीड़ित जनता के लिए 1 जुलाई 2010 भारी दुख का दिन था। इस दिन जनता के प्यारे नेता, भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी व पोलिटब्यूरो के सदस्य और प्रवक्ता कामरेड आजाद को एक स्वतंत्र पत्रकार हेमचंद्र पांडे के साथ महाराष्ट्र के नागपुर के आसपास से आंध्रप्रदेश की खुफिया एजेंसी एसआईबी और केन्द्रीय खुफिया संस्थाओं ने उठा लिया। तब वह सांगठनिक कामकाज के सिलसिले में हमारे दंडकारण्य में आ रहे थे। क्रांतिकारियों के खून की प्यासी एसआईबी ने दूसरे क्रांतिकारी नेताओं की तरह उनकी भी ठंडे दिमाग से उसी रात गोली मारकर हत्या कर दी। केन्द्रीय गृहमंत्री

चिदम्बरम की साजिश व आदेश से की गई इस जघन्य हत्या के बाद वही पुरानी झूठी खबर फैलाई गई कि आदिलाबाद के जंगलों में हुई एक मुठभेड़ में कामरेड आजाद और एक अज्ञात व्यक्ति मारे गये थे। कामरेड आजाद की शहादत न केवल भारतीय क्रांति के लिए, बल्कि विश्व की तमाम संग्रामी जनता के लिए एक बड़ा धक्का है।

कामरेड आजाद का जन्म आंध्रप्रदेश के कृष्णा जिले के ग्राम चिलुकूरी में मई 1954 में हुआ था। उनका नाम चेरुकूरी राजकुमार था और वो एक समय आरके के नाम से पूरे छात्र जगत् में मशहूर थे। बहुत पहले ही उनका परिवार हैदराबाद आकर बस गया जहां उनके पिता ने होटल व्यवसाय शुरू किया था। पढ़े-लिखे मध्यम परिवार में पले-बढ़े कामरेड आजाद शुरू से पढ़ाई में अव्वल रहे। उनके बड़े भाई भारतीय सेना में अधिकारी थे। दो छोटे भाई डॉक्टर हैं और एक बहन भी है। पहले हैदराबाद के एक कॉन्वेंट स्कूल में प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्हें अभी के विजयनगरम जिले में स्थित भारत सरकार की कोरुकोण्डा सैनिक स्कूल में भर्ती कराया गया जहां से उन्होंने उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी की। खेल-कूद में भी आगे रहने वाले कामरेड राजकुमार शुरू से ही एक गहन पाठक थे. .. साहित्य के प्रेमी थे।

कामरेड आजाद का प्रेरणादायक क्रांतिकारी जीवन

उनके जुझारू व गतिशील क्रांतिकारी जीवन की शुरूआत 1972 से होती है जब उन्होंने वरंगल के रीजनल इंजिनीयरिंग कॉलेज में बी.टेक. में दाखिला लिया था जहां से उन्होंने एम.टेक. भी पूरा किया। वरंगल का रीजनल इंजिनीयरिंग कालेज नक्सलबाड़ी राजनीति का गढ़ रहा है। इस कॉलेज के छात्रों ने अक्टूबर 1974 में आंध्रप्रदेश रैडिकल छात्र संगठन (एपीआरएसयू) का गठन करने में अहम भूमिका निभाई थी। इस कॉलेज ने कई नेताओं, कार्यकर्ताओं व योद्धाओं को जन्म दिया है, जिन्होंने न सिर्फ आंध्रप्रदेश में, बल्कि पूरे भारत में क्रांतिकरी आंदोलन को आगे बढ़ाने में खासा योगदान दिया। कामरेड आजाद शहीद सूरपानेनी जनार्दन, जो तीन अन्य छात्रों के साथ आपातकाल के अंधेरे दिनों गिरायपल्ली के जंगलों में पुलिस के हाथों झूठी मुठभेड़ में मारे गए थे, की प्रेरणा से क्रांतिकारी राजनीति की ओर आए थे। कामरेड जनार्दन की हत्या से कामरेड आजाद बेहद दुखी हुए थे, और जल्द ही अपने दुख को दृढ़ संकल्प में बदलकर क्रांति के पथ पर आगे बढ़ते गए। इस दौरान कामरेड आजाद को सरकार ने मीसा के तहत

गिरफ्तार कर छह महीनों तक जेल में रखा था। आपातकाल के हटने के बाद उस बदनाम फर्जी मुठभेड़ पर बनाई गई तार्कुंडे कमेटी और बाद में गठित भार्गव कमिशन के साथ मिलकर छात्र-नेता कामरेड आजाद ने काम किया था ताकि उसका पर्दाफाश किया जा सके। रैडिकल छात्र संगठन (आरएसयू) की स्थापना से लेकर वह उससे जुड़े रहे। उन्होंने न सिर्फ छात्रों को, बल्कि प्रोफेसरों व बुद्धिजीवियों को भी बेहद प्रभावित किया था। उन दिनों वरंगल शहर में हुए तमाम छात्र आंदोलनों में कामरेड राजकुमार की नेतृत्वकारी भूमिका रही। 1978 में वह आंध्रप्रदेश रैडिकल छात्र संगठन के अध्यक्ष चुने गए थे। जब देश के छात्र आंदोलन के इतिहास की बात आती है तो वह एपीआरएसयू का जिक्र किए बिना पूरी नहीं होती, और इसी प्रकार एपीआरएसयू के इतिहास की बात आती है तो कामरेड राजकुमार का नाम लिए बिना वह पूरी नहीं हो सकती। आंध्रप्रदेश में छात्र संगठन की अगुवाई करते हुए ही उन्होंने देशव्यापी क्रांतिकारी छात्र संगठन खड़ा करने का बीड़ा उठाया था। 1981 में चेन्नई शहर में आरएसयू की तरफ से राष्ट्रीयता के प्रश्न पर देशव्यापी सेमिनार आयोजित किया गया था। उसे सफल बनाने का श्रेय कामरेड राजकुमार को ही जाता है। बाद में, 1985 में अखिल भारतीय क्रांतिकारी छात्र संघ (एआईआरएसएफ) की स्थापना के लिए वही सेमिनार आधारस्तम्भ बना था।

वरंगल के बाद पार्टी ने आंदोलन की जरूरतों को देखते हुए उन्हें विशाखापट्नम शहर में आंदोलन का विस्तार करने, छात्र-नौजवानों व बुद्धिजिवीयों को संगठित करने के लिए भेजा था। वहां रहते हुए भी उन्होंने छात्र आंदोलन को नेतृत्व देना जारी रखा। वह छात्र संगठन की पत्रिका 'रैडिकल मार्च' को भी निकालते रहे। विशाखापट्नम में आरटीसी बसों की मांग से चलाए गए ऐतिहासिक आंदोलन में उनका खासा योगदान रहा। उन्हें 1978 में पार्टी में जिला कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया था। 1980 में आयोजित आंध्रप्रदेश के 12वें पार्टी अधिवेशन में उन्होंने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। 1983 में उन्हें क्रांतिकारी आंदोलन का निर्माण के लिए कर्नाटका राज्य भेजा गया था। वहां उन्होंने 'उदय' के नाम से काम किया। बेंगलूरू व अन्य शहरों में छात्र व बुद्धिजीवियों को संगठित किया। रायचूर क्षेत्र में सशस्त्र किसान संघर्ष की नींव डाली। शहीद साकेत राजन जैसे मेधावी-छात्रों को पार्टी में आकर्षित करने में कामरेड उदय का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 1987 में कर्नाटक में पहली बार गठित पार्टी की राज्य कमेटी के वह सचिव चुने गए थे। उसके बाद 1990 में तत्कालीन भाकपा (माले) (पीपुल्स वार) की केंद्रीय सांगठनिक कमेटी (सीओसी) के सदस्य चुन लिए गए थे। बाद में सीओसी के सेक्रटेरियट सदस्य चुन लिए गए थे। तब से लेकर आखिरी सांस तक वह केन्द्रीय कमेटी, सेक्रटेरियट/पोलिटब्यूरो सदस्य के रूप में पार्टी का नेतृत्व करते रहे। 2007 में हुई भाकपा (माओवादी) की एकता कांग्रेस-नौवीं कांग्रेस में उन्हें केंद्रीय

कमेटी सदस्य चुन लिया गया था। साथ ही, पोलिट ब्यूरो सदस्य व पार्टी के केंद्रीय प्रवक्ता की जिम्मेदारियां उन्हें दे दी गईं। तबसे वह देश-दुनिया को 'आजाद' के नाम से परिचित हो गए, जबकि पार्टी के भीतर उन्हें आरके, उदय, मधु, गंगाधर, परिमल, दिनेश आदि नामों से बुलाया जाता था।

अदम्य सैद्धांतिक सेनानी

कामरेड आजाद तेलुगु, अंग्रेजी, कन्नड़, तमिल व हिंदी भाषाओं में अच्छी-खासी पकड़ रखते थे। 1974 में महान नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान विद्रोह की अस्थाई पराजय के बाद आंदोलन को पुनरुज्जीवित करने वाली पहली पीढ़ी के नेताओं में कामरेड आजाद एक थे। पार्टी को आंध्रप्रदेश, तमिलनाडू और कर्नाटका में संगठित करने तथा कई राज्यों के संघर्ष के विकास में योगदान करने के साथ-साथ देश भर में तमाम सच्ची क्रांतिकारियों को एकताबद्ध करने में कामरेड आजाद का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 1998 में सीपीआई (एम-एल) पार्टी यूनिटी के साथ विलय और उसके बाद 2004 में भारत की दो माओवादी धाराओं का विलय - इन अवसरों पर कामरेड आजाद की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण थी। आज एक देशव्यापी माओवादी क्रांतिकारी पार्टी के रूप में भाकपा (माओवादी) के उभरने के पीछे कामरेड का योगदान सदा याद रखा जाएगा। इस महान विकासक्रम के तहत समय-समय पर पार्टी के बुनियादी दस्तावेज, नीति-पत्र, सरकुलर, समीक्षाएं, मार्क्सवादी शिक्षण के पाठ्य पुस्तकें आदि तैयार करने में कामरेड आजाद का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर माओवादी संगठनों और पार्टियों के साथ हुई द्विपक्षीय वार्ताओं में कामरेड आजाद ने कई बार हमारी पार्टी का प्रतिनिधित्व किया। दूसरे देशों के माओवादी संगठनों और शख़्सों के साथ राजनीतिक रूप से सम्बन्ध स्थापित करने के साथ-साथ उनकी अवधारणाओं में मौजूद गलतियों, खामियों या कमजोरियों पर भी उनकी नजर रहती थी। एक शब्द में कहें तो हमारी पार्टी के विकास के हर मोड़ में कामरेड आजाद ने अपनी छाप छोड़ दी।

खासकर पार्टी के सैद्धांतिक-विचारधारात्मक पक्ष को मजबूत करने में उनका बड़ा योगदान रहा। एक निरंतर अध्ययनशीली के साथ-साथ वह एक तेज, सृजनशीन, गंभीर, अथक व गहन लेखक भी थे। आर्थिक मंदी से लेकर नेपाल के परिणामों तक हर मुद्दे पर उनकी कलम चलती रही। 1990 के दशक में आए साम्राज्यवादी भूमंडलीकरण पर पार्टी पत्रिकाओं में उन्होंने लगातार लेख लिखे। 1993 में जब बालगोपाल ने मार्क्सवाद की प्रासंगिकता पर कुछ बुनयादी सवाल उठाए थे जिससे कई अन्य बुद्धिजीवियों में भ्रम की स्थिति व्याप्त हुई थी, उस मौके पर पार्टी की ओर से कामरेड आजाद ने 1995 में एक लेख और 2001 में एक किताब लिखकर उनका माकूल जवाब दिया। वह पार्टी

की केंद्रीय स्तर की सभी पत्रिकाओं को चलाने में अहम भूमिका निभाते रहे। विभिन्न राज्यों से निकाली जाने वाली पार्टी-पत्रिकाओं को समय-समय पर आवश्यक सुझाव देते थे। पार्टी-काडरों में राजनीतिक शिक्षा के क्षेत्र में कामरेड आजाद का योगदान उल्लेखनीय रहा। मार्क्सवाद के बुनियादी विषयों पर पाठ्यपुस्तकें तैयार करने में उन्होंने महत्वपूर्ण काम किया।

पार्टी के भीतर उत्पन्न आंतरिक संघर्षों के दौरान कामरेड आजाद ने क्रांतिकारी पक्ष को ऊंचा उठाकर हर किस्म के अवसरवादियों के खिलाफ संघर्ष किया। पुरानी पीपुल्सवार में 1985 व 1991 के आंतरिक संघर्षों में उस समय के पार्टी-नेताओं के अवसरवाद के खिलाफ कामरेड आजाद की अगुवाई में कर्नाटका राज्य कमेटी ने महत्वपूर्ण संघर्ष किया था। अलग-अलग मौकों पर पार्टी से अलग हुए अवसरवादी तत्वों और गुटों ने जब भी पार्टी की लाइन पर हमला करने की कोशिश की, तो कामरेड आजाद ने उनके दिवालिएपन की तीखी आलोचना कर पार्टी की लाइन को मजबूती से ऊंचा उठाए रखा। इस तरह हमारी पार्टी लाइन को समृद्ध बनाने और उसका बचाव करने में कामरेड आजाद के योगदान को इतिहास हमेशा याद रखेगा।

2005 में दण्डकारण्य के बस्तर क्षेत्र में सलवा जुडूम शुरू हुआ था और शोषक-शासकों के तलवे चाटने वाले मीडिया ने उसे 'जनता का सस्फूर्त आंदोलन' के रूप में खूब प्रचारित किया। उसका विरोध करते हुए तथा क्रांतिकारी संघर्ष का जोरदार समर्थन करते हुए कामरेड आजाद ने अथक प्रचार किया। पार्टी व जन-पक्षधर बुद्धिजीवियों के अथक प्रयासों की बदौलत ही पूरी दुनिया को इस बात से अवगत हो गई कि वह पूरी तरह सरकार-प्रायोजित फासीवादी दमन अभियान था। प्रति-क्रांतिकारी सलवा जुडूम को पराजित करने के लक्ष्य से राजनीतिक प्रचार के मोर्चे पर किए गए प्रयासों में कामरेड आजाद का योगदान महत्वपूर्ण था। लुटेरे शासकों ने ऑपरेशन ग्रीनहंट के नाम से अगस्त 2009 में एक देशव्यापी हमला शुरू किया। इस दमन अभियान की असली मंशाओं का पर्दाफाश करते हुए देश-दुनिया को अवगत करवाया कि साम्राज्यवादियों व बड़े पूंजीपतियों के मुनाफे के लिए भारत सरकार ने जनता पर घृणित व नाजायज युद्ध छेड़ दिया है जिससे खासकर आदिवासी जनता के अस्तित्व को खतरा है। सोनिया-मनमोहन-चिदंबरम गिरोह के दुष्प्रचार व मानसिक युद्ध के खिलाफ उन्होंने माकूल क्रांतिकारी प्रचार अभियान लगातार चलाया। समय-समय पर बतौर प्रवक्ता प्रेस विज्ञप्तियां जारी कर पार्टी व जनता का पक्ष पेश किया। जब लोगों को गुमराह करने के लिए शासक गिरोह 'शांति वार्ता', 'हिंसा त्यागने' आदि ढोंगी प्रस्तावों को उछालता रहा, तो कामरेड आजाद ने साक्षात्कारों व बयानों के जरिए पार्टी का मत स्पष्ट करते

हुए ही उनके दमनकारी व खूंखार चेहरे को उजागर किया कि शांति का घोर विरोध ी खुद शासक गिरोह है। यही कारण है की चिदंबरम गिरोह को आजाद का भूत नींद में भी सताने लगा था। हालांकि कामरेड आजाद की आंखों में की रोशनी काफी कमजोर पड़ रही थी, बल्कि एक आंख तो पूरी तरह जवाब दे गई थी, फिर भी पढ़ने और लिखने के मामले में वह दिन-रात एक करते थे। आज उनकी मृत्यु से भारतीय क्रांति ने एक बेमिसाल सैद्धांतिक योद्धा को खो दिया है।

आजाद के आदर्शों को ऊंचा उठाए रखेंगे! हजारों 'आजाद' पैदा करने की कसम खाएंगे!!

कामरेड आजाद एक महान कम्युनिस्ट थे जो 'सादी जिंदगी और कठोर परिश्रम' पर न सिर्फ यकीन किया, बल्कि अमल कर दिखाया। उन्होंने अपने करीब चार दशकों के क्रांतिकारी जीवन में एक मिनट भी फिजूल खर्च नहीं किया। हंसमुख, हास्यप्रिय, रचनात्मक और सतत चिंतनशील कामरेड आजाद हर स्तर व हर उम्र के साथियों से इस कदर घुलमिल जाते थे कि लगता ही नहीं था वह इतने बड़े बुद्धिजिवी या नेता होंगे। लुटेरे शासक सोचते होंगे कि कामरेड आजाद को हमसे छीनकर वे क्रांति को रोक लेंगे। जनता और क्रांतिकारी आंदोलन ने ही आजाद को पैदा किया और आगे भी ऐसे कई 'आजाद' जरूर पैदा करते रहेंगे। इतिहास की गति का अकाट्य नियम है यह। पत्रकार हेमचंद्र के साथ उनकी हत्या की खबर सुनकर देश-विदेशों से कई जनवादी, प्रगतिशील व क्रांतिकारी संगठनों और अमनपसंद इंसानों ने हत्यारी शोषक सरकारों के प्रति अपना गुस्सा प्रकट किया। देश के तमाम गुरिल्ला जोनों में जनता और जन-सैनिकों ने अपने आंसुओं को पोंछकर शपथ ली कि कामरेड आजाद के अधूरे लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनयुद्ध को देश के कोने-कोने में फैलाते हुए तेज करेंगे... हजारों-लाखों लोगों को क्रांतिकारी संघर्ष से जोड़ेंगे... हजारों 'आजाद' पैदा करेंगे।

कामरेड मनोज

कामरेड मनोज (22) का जन्म बीजापुर जिला बासागुड़ा एरिया के तर्रेम गांव के गरीब आदिवासी ओयाम परिवार में हुआ था। अपने माता-पिता के तीन बच्चों में से मनोज बड़े बेटे थे। माता-पिता ने प्यार से उनका नाम मंगु रखा था।

2005 से लुटेरी सरकार द्वारा चलाई गई फासीवादी सलवा जुडूम के जुल्मों, अत्याचारों, नरसंहार और तबाही को उन्होंने अपने आंखों से देखा था। उसका अनुभव किया था। कामरेड मनोज का गांव भी इस तबाही का शिकार हुआ था। कई बार इस गांव के ऊपर सलवा जुडुमियों ने हमला किया। आगजनी और तबाही का ताण्डव

मचाया। उस समय कामरेड मंगु की उम्र 14–15 साल रही होगी। इन सबने कामरेड मंगु को बहुत प्रभावित किया। लुटेरी व्यवस्था के प्रति उसके दिल में नफरत पैदा कर दी। सलवा जुडूम का प्रतिरोध करने के लिए, जनता और अपने गांवों की रक्षा के लिए कामरेड मंगु मिलिशिया में शामिल हो गए। मिलिशिया में रहकर रात–दिन संतरी कर दुश्मन के आने का संकेत देकर जनता को सतर्क किया करते थे और सलवा जुडूम गुण्डों का प्रतिरोध करते थे। इसके साथ ही, कामरेड मंगु कलाकार के तौर पर क्रांतिकारी गानों व नाटकों के द्वारा जनता को लुटेरी व्यवस्था और सरकार की नीतियों को समझाते, संगठित करते थे। कामरेड मंगु इस लुटेरी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने और शोषणविहीन समाज की स्थापना के लिए 2008 में पीएलजीए की 8वीं वर्षगांठ के मौके पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर भर्ती हो गए।

तब से वह कामरेड मंगु से मनोज बनकर जनता के दिलों में बस गए। कामरेड मनोज ने छह महीने जेगुरगुण्डा एरिया में काम किया। 2009 के कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान के दौरान जेगुरगुण्डा एरिया में किए गए प्रतिरोधी कार्रवाइयों में भाग लिया। 2009 में पार्टी ने पीएलजीए के फार्मेशन को बढ़ाते हुए गुरिल्ला बटालियन का निर्माण करने और दुश्मन के दमन को हराकर आन्दोलन को मजबूत व विस्तार करने का निर्णय लिया। इस उच्च फार्मेशन में कामरेड मनोज का तबादला किया गया। कामरेड मनोज खुशी से इसे खुशी से स्वीकार किया और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ने व दुश्मन से साहस के साथ लड़ने की प्रतिज्ञा ली। अपनी प्रतिज्ञा का कामरेड मनोज अपनी शहादत तक पालन करते रहे।

गुरिल्ला बटालियन के सदस्य के रूप में कामरेड मनोज ने उनको दी गई सभी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने की कोशिश की। एक अच्छे सैनिक बनने के लिए सैनिक निपुणताओं को सीखने का प्रयास किया। बटालियन में आने के 2–3 महीने के अन्दर ही उन्होंने बहुत कुछ सीख लिया और एक बहादुर व साहसी योद्धा के रूप में उभरा।

सलवा जुडूम अभियान विफल होने के बाद केन्द्र और राज्य सरकारों ने नई रणनीति के तहत माओवादियों को आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बताकर देशव्यापी दमन अभियान ऑपरेशन ग्रीनहन्ट को 2009 में शुरू किया। इसी के तहत सितम्बर महीने में केन्द्र सरकार कोबरा बटालियन को जंगल वारफेर ट्रेनिंग देकर माओवादियों के खात्मे और यहां की अपार वन व खनिज सम्पदाओं के दोहन के उद्देश्य से बस्तर में तैनात किया। सितम्बर 2009 में दक्षिण बस्तर के सिंगनमडुगू क्षेत्र में कोबरा बटालियन के जवान गांवों में हमले करके आतंक मचा रहे थे। उसी इलाके

में पीएलजीए की गुरिल्ला बटालियन भी मौजूद थी। आतंक मचा रहे सरकारी बलों के ऊपर पीएलजीए गुरिल्लों ने हमला करके 6 कोबरा कमांडो को मौत के घाट उतार दिया। इस हमले में कामरेड मनोज ने भी भाग लिया। हथियारों की कमी की वजह से कुछ कामरेडों के पास हथियार नहीं थे। उन्हीं में से कामरेड मनोज भी एक थे। कामरेड मनोज निहत्था होने के बावजूद निडरता के साथ आगे बढ़कर मृत कोबरा जवानों के हथियार लेकर उन्हीं के हथियारों से उन्हें खदेड़ा।

2010 में ऐतिहासिक ताड़मेटला-मुकरम एम्बुश किया गया जिसमें 76 सीआरपी जवानों को खत्म कर हथियारों सहित सारे साजो-सामन को पीएलजीए ने जब्त कर लिया। इस हमले में भी कामरेड मनोज ने बहादुरी के साथ लड़ा था और अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया था। उस हमले के दिन कामरेड मनोज एम्बुश पार्टी के लिए खाना लाने गए थे। गोलीबारी की आवाज सुनकर खाना बीच में ही छोड़कर हमले में भाग लेने के लिए दौड़कर आ गए। गोलियों की बौछारों के बीच वह जंगे मैदान में घुस गए और हमला सफल होने तक डटे रहे।

दरभा डिवीजन में अवधेश गौतम नामक एक कट्टर जन विरोधी नेता को खत्म करने का पार्टी ने निर्णय लिया। उस इलाके में उसका ही दबदबा था। अवधेश गौतम ठेकेदारी व गुण्डागर्दी करने के लिए बदनाम था। वह अपने साथ हमेशा 5 अंगरक्षकों को रखता था और उसके पास लाइसेंसी बंदूक थी। इस एक्शन को 7 जुलाई 2010 को अंजाम दिया गया। एक्शन के लिए बनाई गई टीम में कामरेड मनोज असाल्ट टीम के सदस्य थे। पहलकदमी के साथ अन्य साथियों के साथ आगे बढ़कर घर की पहली मंजिल को अपने कब्जे में ले लिया और एक 8 एमएम रायफल जब्त कर लिया गया। अवधेश ऊपरी मंजिल में था। अपना पोजिशन ले रहे कामरेड मनोज के ऊपर दूसरी मंजिल में छिपे अवधेश के गुण्डों ने फायरिंग की जिससे गोली उनके सिर पर लगी। बाद में इलाज के दौरान उनकी मौत हुई। 9 जुलाई को उनका अंतिम संस्कार किया गया।

कामरेड मनोज ने एक अच्छे सैनिक के तौर पर विकसित होने और फौजी मामलों में निपुणता हासिल करने की पूरी कोशिश की। उनके अन्दर नई-नई चीजों को सीखने की उत्सुकता हुआ करती थी। गरीब परिवार में जन्मे कामरेड मनोज ने सलवा जुडूम के फासीवादी चेहरे को, उसके द्वारा हजारों घरों को जलते, तबाह होते, हजारों परिवारों को उजड़ते देखा था। सामूहिक नरसंहार आदि क्रूर जुल्मों के जख्म उनके दिल में थे। इसलिए वर्ग दुश्मन के प्रति उनका दिल घृणा और नफरत से भर गया। वह हमेशा लड़ने के लिए तैयार रहते, लड़ाई के मोर्चे पर अगली पंक्ति में रहते था। उन्हें घर में पढ़ाई नसीब नहीं हुई थी। पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने के बाद उन्होंने जल्द ही पढ़ाई सीख

ली। कामरेड मनोज पीएलजीए के अनुशासन का हमेशा पालन करते थे और कोई उल्लंघन करने पर तुरन्त आलोचना भी करते थे।

आइये, कामरेड मनोज के आदर्शों को ऊंचा उठायें और उनके सपनों को पूरा करने के लिए दृढ़ता के साथ आगे बढ़ें।

कामरेड चैते (ललिता मड़ावी)

17 अगस्त 2010 का दिन। देश को कथित रूप से मिली आजादी की 63वीं वर्षगांठ के जश्न का शोरगुल पूरी तरह थमा ही नहीं था। लाल किले से प्रधानमंत्री मनमोहनसिंग की रटी-रटाई घोषणा कि 'मैं फिर एक बार माओवादियों से अपील करता हूं कि वे हिंसा छोड़कर सरकार के साथ वार्ता के लिए आएं...' अभी बासी पड़ी ही नहीं थी। इधर, बाहरी दुनिया के लिए 'अबूझ' माने जाने वाले माड़ अंचल के एक गांव के नजदीक जंगल में दस दिनों से एक हत्यारा गिरोह अपने 'शिकार' की ताक में बैठा हुआ था। इस गिरोह को प्रधानमंत्री की घोषणा से कोई लेना-देना नहीं और उसे इस घोषणा पर माओवादियों की प्रतिक्रिया का इंतजार भी नहीं करना था। इनका काम है बस, अपने 'शिकार' पर पंजा मारना। दरअसल यह खुद प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए ऑपरेशन ग्रीन हंट का ही हिस्सा है। इसके तहत अगस्त 2009 से दण्डकारण्य में सैकड़ों लोगों की जानें गईं और खूब सारी तबाही हुई। लेकिन माओवादियों से 'हिंसा छोड़ने' की 'अपील' पता नहीं इसके पहले कितनी बार की गई होगी। नक्सलवादियों को हिंसा छोड़ने की नसीहत देने वाले शासक अपने पुलिस, एसपीओ, मुखबिरों और अन्य पालतू गुण्डों के जरिए इन दूर-दराज के आदिवासी बस्तियों पर किस तरह हिंसा, आतंक और बर्बरता का कहर बरपा रहे हैं, इसे समझने के लिए 17 अगस्त की घटना एक बेहतर उदाहरण है।

केसा बहरा (गांव कुत्तुल); दल्लू उर्फ अजय (गांव फरसबेड़ा); दुरगा, कोतवाल और बण्डू (गांव कोहकामेट्टा) इन पांच एसपीओ का हत्यारा गिरोह नारायणपुर जिला एसपी राहुल भगत के दिशा-निर्देश पर निकला हुआ था। इनके निशाने पर था दण्डकारण्य आंदोलन में अहम योगदान करने वाली प्रेस यूनिट। यह यूनिट जनता के समर्थन से व सक्रिय सहयोग से पिछले कई सालों से क्रांतिकारी पत्र-पत्रिकाओं की

छपाई करती आ रही है। इस यूनिट पर चोट करके दण्डकारण्य के संघर्ष को नुकसान पहुंचाने की मंशा से इस गिरोह को उनके आकाओं ने यह 'टास्क' दिया। यह साजिश दरअसल डीजीपी विश्वरंजन, आईजी लांगकुमेर आदि बड़े अफसरों द्वारा रची गई है जिसे अंजाम देने के लिए इन भाड़े के गुण्डों व बेहद ओछी किस्म के दरिंदों को चुन लिया गया।

ये पांचों भी माड़ के ही निवासी थे। अपने गांवों में हत्या, बलात्कार, चोरी समेत कई अपराधों में शामिल इन असामाजिक व लम्पट तत्वों को जनता ने अलग-अलग समय में जन अदालतों में सजा देना चाहा तो ये भागकर पुलिस के शरण में चले गए थे। तबसे ये दरिंदे नारायणपुर व ओरछा में रहते हुए लोगों को गिरफ्तार करवाना, पुलिस से मारपीट करवाना, मुखबिर तैयार करना आदि प्रति-क्रांतिकारी हरकतों में लिप्त रहे हैं। इन्होंने दूर-दराज के गांवों में भी अपनी यारी-रिश्तेदारी के आधार पर कुछ लोगों को बहला-फुसलाकर और पैसों का प्रलोभन देकर मुखबिर बना लिया है। इस तरह पोदमगोटी और ऊसेवाड़ा गांवों के कुछ स्थानीय मुखबिरों के सहयोग से इन लोगों ने प्रेस यूनिट को निशाना बनाया। चूंकि स्थानीय मुखबिरों को इस यूनिट के कैम्प की पूरी जानकारी थी, इसलिए इनका काम आसान हो गया। और ग्रामीण इसके बारे में पूरी तरह बेखबर थे।

करीब दस दिनों तक कैम्प के इर्द-गिर्द अत्यंत गोपनीयता के साथ टोह लेने के बाद प्रेस यूनिट की सदस्या कामरेड चैते पर इन दरिंदों ने अपना खूनी पंजा मारा। उस समय कामरेड चैते अकेली ही नाले में नहाने निकली हुई थी, जो कैम्प से ज्यादा दूर नहीं था। अचानक हुए इस आक्रमण से वह संभल नहीं पाईं। उन्हें पकड़ते ही मुंह को कपड़े से ढंक दिया ताकि वह आवाज न कर सके। वहां से कुछ दूर ले जाकर इन दरिंदों ने कामरेड चैते के साथ पाशविकता से सामूहिक बलात्कार किया। उसके बाद चाकू से गला रेतकर उनकी हत्या की। उधर, यूनिट के कामरेडों ने चैते के लिए इधर-उधर ढूंढ़ा लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। अगले दिन की सुबह उनकी लाश बहुत ही बुरी हालत में पाई गई। उनके कपड़े फाड़कर इधर-उधर फेंक दिए गए। यूनिट के सदस्यों ने लाश को उठा लाकर जनता के समक्ष कामरेड चैते का अंतिम संस्कार किया। सभी जनता और साथी कामरेडों ने नम आंखों से कामरेड चैते को अंतिम विदाई दी और उनके हत्यारों पर बदला लेने की कसम खाई।

इसके पहले 10 फरवरी 2010 को दुमनार गांव में कुमली नामक कृषि कार्यकर्ता की निर्मम हत्या की थी इसी केसा बहरा गिरोह ने। उसमें शामिल पिरतू नामक दरिंदे का कुछ ही दिनों के अंदर पीएलजीए ने सफाया कर दिया। और यह इस तरह का दूसरा

हमला था। कामरेड चैते के हत्यारों का पता लगाने में भी ज्यादा देर नहीं लगी। जनता से मिली सूचनाओं से पता चला कि पोदमगोटी गांव के मोड्डा, सुक्कू और कोरिये तथा ऊसेवेड़ा का कोसा इस दरिंदगी में केसा बहरा गिरोह का पूरा साथ दिया था। इन्हें जनता ने मौत के घाट उतार दिया। ऊसेवेड़ा के कोसा का भाई कोहला उर्फ राजू 2002 में मुखबिरी के ही कारण जन अदालत के फैसले के मुताबिक मार डाला गया था। बाद में भाई कोसा भी पुलिस के साथ मिलकर काम करने लगा था। पोदमगोटी के मोड्डा की एक बहन ने एक एसपीओ से शादी की थी जो कुछ साल पहले नारायणपुर में पीएलजीए के हाथों मारा गया था। तबसे वह खुद भी एसपीओ बनकर नारायणपुर में ही रह रही है। और उसने पोदमगोटी में रहने वाले अपने भाई मोड्डा से नियमित संपर्क रखते हुए उसे इस साजिश का हिस्सा बनाया। मोड्डा ने अपने ही गांव के सुक्कू और कोरिये को पैसों के लालच में फंसाकर इस साजिश में भागीदार बनाया। इस तरह बाहर से आए 5 एसपीओ और 4 स्थानीय मुखबिर, कुल 9 लोगों ने इस जघन्य व अमानवीय अपराध को अंजाम दिया। केसा बहरा इस दरिंदगी का सूत्रधार था। हत्या के तुरंत बाद केसा बहरा इन्हें प्रत्येक को 8-10 हजार रुपए देकर नारायणपुर भाग गया, ताकि अपने आका एसपी राहुल भगत से शाबासी और इनाम की मोटी रकम हासिल कर सके। लेकिन जनता और जन संघर्ष इन दरिंदों को कभी माफ नहीं करेंगे। वो जहां भी छिपकर रहें, जितनी भी सुरक्षा हो, खोज निकालेंगे और उन्हें मौत के घाट उतारकर ही कुमली और चेते की निर्मम हत्याओं का बदला लेंगे। खासकर महिला कामरेडों को इस प्रकार निशाना बनाकर बलात्कार के बाद हत्या करने की पाशविक घटनाओं की साजिश कर रहे विश्वरंजन, लांगकुमेर, राहुल भगत को इसकी कीमत जरूर चुकानी पड़ेगी।

करीब 30 वर्ष की उम्र की कामरेड चैते का जन्म उत्तर बस्तर के बड़गांव इलाके के एनहूर गांव में हुआ था। घर पर माता-पिता का दिया नाम 'ललिता मण्डावी' था। जब वह छोटी थी तभी उनके सिर पर से पिता का साया उठ चुका था। वह गैर-आदिवासी कलार समुदाय के एक गरीब परिवार में पैदा हुई थीं। घर में मां और एक छोटा भाई हैं उनके। एनहूर गांव परतापुर इलाके के क्रांतिकारी गांवों में से एक है। इस गांव में क्रांतिकारी जन संगठन सक्रियता से काम करते थे। शुरू से ही इसका प्रभाव कामरेड ललिता पर था। कुछ समय तक केएएमएस में काम करने के बाद 1999 में उन्होंने पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में आंदोलन में भागीदार बनने का फैसला लिया। स्थानीय पार्टी ने उन्हें भर्ती करके महिला दस्ते में सदस्य के रूप में नियुक्त किया। महिलाओं का यह विशेष दस्ता खासकर महिलाओं को केएएमएस में संगठित करता था। इस दस्ते में शामिल होने के बाद उन्होंने अपना नाम 'ज्योति' बदल लिया था। शुरू से ही कम बोलने वाली और अनुशासनप्रिय रही कामरेड ज्योति ने इस इलाके के लोगों,

खासकर महिलाओं में अपनी खास पहचान बना ली। उनके मेहनती स्वभाव और प्रतिबद्धता को देखते हुए 2002 में उन्हें पार्टी ने प्रेस यूनिट में स्थानांतरित किया। तबसे वह 'चैते' बनकर इस यूनिट का अभिन्न हिस्सा बन गईं। उसके पहले ही उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई थी। प्रेस में आने के बाद उन्होंने विभिन्न किस्म के तकनीकी कामों और छपाई सम्बन्धित विभिन्न कामों को मन लगाकर सीख लिया। प्रेस यूनिट के संचालन के लिए जरूरी सामानों की ढुलाई, रखरखाव और रवाना में भी कामरेड चैते ने भरपूर योगदान दिया। पत्र-पत्रिकाओं की छपाई में समय के दबाव के कारण कभी-कभी पूरी रात काम चलता था। ऐसे मौकों पर कामरेड चैते ने पार्टी व जनता के हितों को ऊपर उठाते हुए रातों में जगकर भी काम करती थीं।

2007 में कामरेड चैते को प्रेस यूनिट की पार्टी कमेटी (एसी स्तर) में लिया गया। वह घर पर पढ़ी-लिखी नहीं थी, लेकिन पार्टी में शामिल होने के बाद उन्होंने ध्यान देकर पढ़ना-लिखना सीख लिया। उनके योगदान व राजनीतिक चेतना को देखते हुए उनको यह पदोन्नति दी गई। यूनिट की सुरक्षा, संचालन और समस्याओं पर कामरेड चैते कमेटी की बैठकों में अपने विचार व्यक्त करते हुए यूनिट के विकास में अपना योगदान दिया। वर्ष 2005 में उन्होंने उसी यूनिट में काम करने वाले अपने पसंद के एक कामरेड से शादी कर ली। इन दोनों की जोड़ी ने यूनिट के काम को आगे बढ़ाने में पूरा योगदान दिया। कामरेड चैते दुबली-पतली थीं, बीच-बीच में बीमार भी पड़ जाती थीं। फिर भी वह अपने काम को मजबूत इरादों से अंजाम देती थीं। बीच में उनके घर और गांव पर पुलिसिया दमन का कहर टूटा था। गांव के कई संगठन नेता-कार्यकर्ताओं को पुलिस ने गिरफ्तार किया था। उनके सगे भाई को भी पुलिस ने झूठे केस में फंसाकर एक साल से ज्यादा समय जेल में रखा था। इससे कामरेड चैते को मानसिक रूप से काफी दिक्कत हुई थी। वह उनकी बूढ़ी मां को लेकर चिंतित हो जाती थीं क्योंकि उनका एक मात्र सहारा इकलौता बेटा ही था। फिर भी कामरेड चैते ने घर की समस्याओं को अपनी राजनीतिक जिम्मेदारियों पर हावी होने नहीं दिया। 2008 के आखिर में घर वालों से मिलने के लिए जाकर मां और भाई का हौसला बढ़ाकर और उन्हें सरकार के आतंकी व दमनकारी स्वभाव से अवगत करवाकर वापस अपनी जिम्मेदारी पर लौट आई थीं।

आखिर चैते के साथ इतनी बर्बरता क्यों बरती? क्योंकि कामरेड चैते की हत्या कर वो प्रेस यूनिट के काम पर चोट करना चाहते थे। दण्डकारण्य आंदोलन की आवाज की तरह काम करने वाली इस यूनिट के हौसलों को पस्त करना चाहते थे। जनता की तरफ से उठने वाले विरोध-प्रतिरोध की आवाज को दबाना चाहते थे। उन्होंने एक महिला कामरेड को अपना निशाना क्यों बनाया? इसके जवाब के लिए खासकर माड़ अंचल

के क्रांतिकारी आंदोलन की रचना को समझना होगा। माड़ डिवीजन के आंदोलन में खासकर पिछले दस सालों से महिलाओं की भागीदारी प्रेरणादायक स्तर पर है। हालांकि यह पूरे दण्डकारण्य पर भी लागू होता है, लेकिन माड़ में इसे और भी स्पष्टता से देख सकते हैं। यहां पार्टी की डिवीजनल कमेटी और एरिया कमेटियों के अलावा विभिन्न विभागों के संचालन में भी महिलाओं की भागीदारी ज्यादा है। भर्ती होने वाले नए सदस्यों में भी महिलाओं की संख्या ज्यादा है। दुश्मन ने इस पर भी चोट करना चाहा। ऐसी महिलाओं को आतंकित करने के लिए ही उसने इस प्रकार सामूहिक बलात्कार और बर्बर हत्या का तरीका चुन लिया। यह कोई केसा बहरा जैसे भाड़े के हत्यारे के दिमाग से पैदा हुई सोच नहीं है। यह रणनीतिक तौर पर उच्च स्तर पर ही लिया गया निर्णय था जो सरकारों के 'जनता के खिलाफ युद्ध' का हिस्सा है। लेकिन हत्याओं और आतंक के बल पर जनता के न्यायपूर्ण आंदोलन को कुचलना असंभव है, इसे समझने के लिए इतिहास की बहुत ज्यादा गहराई में जाने की जरूरत भी नहीं है। फासीवादी सलवा जुडूम और उसके बाद का इतिहास भी काफी है। कामरेड चैते के अधूरे लक्ष्यों को पूरा करने और उनकी निर्मम हत्या का बदला लेने माड़ अंचल के महिला-पुरुष और भी जोशोखरोश के साथ आंदोलन के साथ जुड़ेंगे और इस शोषक व्यवस्था को दफनाने के लिए जारी संघर्ष को और तेज करेंगे।

कामरेड चैते कम बोलने वाली, हमेशा काम को महत्व देने वाली और हंसमुख स्वभाव वाली गंभीर कामरेड थीं। उन्होंने अपने 11 साल के क्रांतिकारी जीवन में पार्टी और क्रांतिकारी आंदोलन को अनमोल सेवाएं दीं। लेनिन ने कहा था कि 'पत्रिका एक संगठनकर्ता है।' कामरेड चैते ने 'प्रभात' पत्रिका समेत पार्टी की अनेक पत्रिकाओं की छपाई में, क्रांतिकारी साहित्य के प्रकाशन के कार्यों में और दुश्मन के खिलाफ जारी क्रांतिकारी प्रचार-युद्ध की हर सामग्रि की तैयारी में अपना योगदान दिया। इस तरह उन्होंने कई 'संगठनकर्ता'ओं को सजाने-संवारने का काम किया। उनकी उंगलियों से और उनके खून-पसीने से पिछले 8 सालों में लाखों कोरे कागज क्रांतिकारी साहित्य का आकार लेकर पीएलजीए के सैनिकों, जन संगठन सदस्यों और क्रांतिकारी जनता के हाथों में पुस्तक के रूप में, पत्रिका के रूप में और पर्चा-पोस्टर बनकर पहुंचता रहा। उन्हें शिक्षित करता रहा। शोषक-लुटरों के दुष्प्रचार का मुंहतोड़ जवाब देता रहा। पिछले करीब 15 वर्षों से चल रहे दण्डकारण्य प्रेस यूनिट में वह पहली शहीद बनी हैं। वह भले ही आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके आदर्श और सर्वहारा गुण हमें हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे।

कामरेड मुचाकी पोदियाल

कामरेड पोदियाल दक्षिण बस्तर के दन्तेवाड़ा जिला, जेगुरगुण्डा एरिया, तोलोड़ गांव में एक गरीब किसान परिवार में जन्मे थे। बचपन में ही माता-पिता गुजर गए। उनके चाचा ने उन्हें पाला।

कामरेड पोदियाल 2005 में गांव की डीएकेएमएस कमेटी में चुने गए थे। कमेटी में रहकर कामरेड पोदियाल जनता को संगठित करते और उन्हें राजनीतिक तौर पर चेतनाबद्ध करने की कोशिश करते थे। उनके कामकाज और राजनीतिक चेतना को देखते हुए 2006 में उन्हें पार्टी सदस्यता देकर ग्राम रक्षक दल के कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। कामरेड पोदियाल ने उन्हें दी गई जिम्मेदारी को संभालते हुए जनता की रक्षा के लिए रात-दिन संतरी करते, जनता के साथ खेतों में काम करते थे। सलवा जुडूम गुण्डों के हमलों से बचने और जनता को, जनता की सम्पत्ति को बचाने के लिए हर संभव कोशिश करते थे। सलवा जुडूम गुण्डे और सशस्त्र बलों ने उनके गांव में चार बार हमला किया। गांव के सभी घरों को जला दिया। मुर्गों, बकरियों आदि को लूटकर ले गए। जनता की सम्पत्ति को बचाने के लिए कामरेड पोदियाल ने अपने मिलिशिया सदस्यों को लेकर सशस्त्र बलों और सलवा जुडूम गुण्डों पर कई बार फायरिंग करके भगाने की कोशिश की। उन्हें हैरान-परेशान किया। सलवा जुडूम के जुल्मों और तबाही को खुद भुगतने के बाद उनका मन वर्ग घृणा से भर गया।

प्रतिरोध के लिए जमा हुए मिलिशिया सदस्य 3 सितम्बर 2010 की रात को जंगल में आराम कर रहे थे। सो रहे पोदिया को एक जहरीला सांप ने डंस लिया जिससे उनकी मौत हो गई। उनके अंतिम संस्कार में सैकडों जनता शामिल हुई और उनके सपनों को पूरा करने की कसम खाई।

कामरेड मुचाकी कोसा

कामरेड कोसा का जन्म दन्तेवाड़ा जिला, भैरमगढ़ एरिया, ग्राम कमलूर के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। कामरेड कोसा चार भाइयों में बड़ा था। कामरेड कोसा का गांव बैलाडीला के नजदीक है। उनके परिवार के पास जमीन थोड़ी ही थी जिससे पूरा परिवार का गुजारा नहीं हो पाता था। इसलिए उनका परिवार खेती के अलावा मेहनत मजदूरी करके गुजारा करता था। कामरेड कोसा भी होश संभालते ही अपने

माता-पिता के साथ खेतों में काम करता और बैलाडीला खदान में मजदूरी करने के लिए जाता था। बचपन से गरीबी में पले कोसा के दिल में हमेशा इस व्यवस्था को बदलने की चाहत बसे रहती थी।

कामरेड कोसा की क्रांतिकारी जिन्दगी बाल संगठन से शुरू हुई। कामरेड कोसा बचपन से होनहार और मेहनती स्वभाव का था। बाल संगठन में होशियारी के साथ काम करता, गांव की पूरी जानकारी रखता था। दस्ता आने पर गांव की पूरी रिपोर्ट दस्ता को देता था। जब बड़ा हुआ दण्डकारण्य क्रांतिकारी आदिवासी किसान मजदूर संगठन में शामिल हो गया। संगठन में उसे जो भी काम सौंपा जाता जिम्मेदारीपूर्वक पूरा करने की कोशिश करता था। जनता को राजनीतिक व आर्थिक संघर्षो में संगठित करता था। पार्टी द्वारा लिए गए बंद, चक्काजाम आदि कार्यक्रमों में जनता को बड़ी संख्या में शामिल कर बैलाडीला खदान के आसपास, वहां से जाने वाली कच्चामाल की गाड़ियों को रोकने की कार्रवाइयों में सक्रिय रूप से भाग लेता था।

2005 में फासीवादी सलवा जुडूम की शुरूआत बीजापुर के भैरमगढ़ एरिया में ही हुआ था। सलवा जुडूम का कहर सबसे ज्यादा इसी इलाके में बरपा था। सलवा जुडूम का प्रतिरोध करने के लिए कामरेड कोसा मिलिशिया में शामिल हो गया। मिलिशिया में रहते हुए सलवा जुडूम गुण्डों का सामना किया। जनता को राजनीतिक तौर पर सलवा जुडूम के उद्देश्यों को समझाते हुए संगठित कर प्रतिरोध के लिए तैयार किया। मिलिशिया साथियों का मनोबल बढ़ाते हुए हर तरह की कठिनाइयों को झेलने के लिए तैयार करता था। कामरेड कोसा ने सलवा जुडूम के विध्वंसकांड, घरों, खेतों और फसलों को नष्ट होते, परिवारों को बिखरते हुए देखा था। इसलिए उनके अन्दर लुटेरी सरकार के प्रति घोर नफरत पैदा हुई।

2010 में कामरेड कोसा पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गया। कुछ दिन कमलूर एलओएस में काम करने के बाद पार्टी ने उन्हें कम्पनी-2 में बदला। कम्पनी में आने के बाद मार्च महीने से बीमार पड़ गया। उन्हें बचाने के लिए इलाज किया गया और अस्पताल भी भेजा गया, लेकिन नहीं बचा पाया। 21 अगस्त 2010 को कामरेड कोसा हमसे सदा के लिए विदा ले गए। आइए, उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लें।

कामरेड वेट्टी हड़मा

दक्षिण बस्तर डिवीजन, बीजापुर जिला के पामेड़ एरिया गोमगुड़ेम गांव के गरीब आदिवासी परिवार में कामरेड हड़मा जन्मे थे। उनकी मां बचपन में ही चल बसी। उनके

पिता ने उन्हें दरभा डिवीजन के मेडुम गांव से गोमगुड़ेम में लेकर आए थे। यहीं उनकी परवरिश हुई।

कामरेड हड़मा बड़े होने के बाद डीएकेएमएस में शामिल हो गए और भूमकाल मिलिशिया में भी काम करने लगे। क्रांतिकारी जनताना सरकार की विकास कमेटी में भी उन्होंने अपना योगदान दिया। जनता की जरूरतों को नजर में रखकर जनताना सरकार के नेतृत्व में खेती विकास की योजनाएं बना कर उन्हें लागू करने की कोशिश की।

2009 में कामरेड हड़मा पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पीएलजीए में भर्ती हो गए। कुछ समय पामेड़ एलओएस और जन मिलिशिया दल में काम करने के बाद पार्टी ने उनका प्लाटून-9 में तबादला किया। कामरेड हड़मा प्लाटून में सैनिक नियमों और पार्टी अनुशासन को सीखते हुए आगे बढ़ रहे थे। पार्टी में आने के बाद पढ़ना-लिखना सीखा। पार्टी पत्रिकाओं को भी ध्यान से पढ़ने और समझने की कोशिश करते थे। प्लाटून के हर सामूहिक काम में कामरेड हड़माल शामिल होते थे।

21 सितम्बर 2010 के दिन उसूर थाना से पुलिस पार्टी पुलिया बनाने के लिए निकली थी। पीएलजीए ने पुलिस के करीब जाकर हमला किया जिसमें एक एसपीओ मारा गया और अन्य तीन घायल हुए। पीएलजीए ने उनसे 18 मैगजीन, 357 कारतूस जब्त कर लिए। हमले के बाद एम्बुश की जगह से एक किलोमीटर पीछे हटे थे कि दुश्मन के मोर्टार का गोला आकर उनके करीब गिरा जिसके फटने से कामरेड हड़मा और कामरेड बुधराल वहीं शहीद हो गए। उनके पार्थिव शरीरों को पीएलजीए ने लाकर परिवारों को सौंप दिया। गांव में क्रांतिकारी जन संगठनों की अगुवाई में उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके अंतिम संस्कार में सैकड़ों जनता शामिल होकर उनके सपनों को पूरा करने की शपथ ली।

कामरेड ओयामी बुधराल

दक्षिण बस्तर डिवीजन के बीजापुर जिला, पामेड़ एरिया के ग्राम गोमगुड़ेम में एक गरीब आदिवासी किसान परिवार में कामरेड ओयामी बुधराल (20) का जन्म हुआ था। अपने माता-पिता के छह बच्चों में वह चौथी संतान थे। उनका परिवार भी दरभा डिवीजन के काकड़गांव से गोमगुड़ेम में आकर बसा था। कामरेड बुधराल बचपन से अपने माता-पिता के साथ खेतों में काम करता था। कामरेड बुधराल के पिता बचपन में ही गुजर गए। और बचपन से ही उसका लगाव क्रांतिकारी राजनीति से हुआ।

बाल संगठन में काम करते हुए बड़े होने के बाद मिलिशिया में काम करने लगा।

मिलिशिया में रहकर संतरी करना, पेट्रोलिंग करना आदि सीखा। जनता के साथ सामूहिक कामों शामिल होता था। दिन-ब-दिन बढ़ता दमन और जनता की स्थिति को देखकर कामरेड बुधराल ने इस व्यवस्था को बदलना है तो सशस्त्र क्रांति ही एक रास्ता है सोचकर 2009 दिसम्बर में पीएलजीए में भर्ती हो गया। उसकी बड़ी दीदी भी पार्टी में काम कर रही है। पार्टी में आने के बाद बुधराल ने पढ़ाई सीखी और पीएलजीए के अनुशासन को सीखा। फौजी तकनीकों को सीखा। सभी के साथ मिलजुलकर रहता था। 21 सितम्बर 2010 के दिन कामरेड बुधराल भी हड़माल के साथ शहीद हो गए। कम उम्र में की कामरेड बुधराल ने एक बहुत बड़े मकसद की खातिर अपनी जान की बाजी लगा दी। आइए, कामरेड बुधराल की शहादत को ऊंचा उठाएं।

कामरेड सोड़ी राजाल

कामरेड राजाल दक्षिण बस्तर डिवीजन के बीजापुर जिला, उसूर ब्लाक के ग्राम सेन्ड्रमबोर के एक मध्यम किसान परिवार के थे। कामरेड राजाल चार भाइयों में बड़े थे। कामरेड राजाल (30) का जन्म दरभा डिवीजन के कोलियन गांव में हुआ था। वहां जमीन नहीं होने की वजह से उनके दादा ने उन्हें सेन्ड्रोमबोर गांव में लाकर बसाया। तब इस इलाके में सरकारी वन विभाग वालों के शोषण व जुल्म का दबदबा था। मनमानी वसूली, झूठे केसों में जेल में डालना आदि करते थे। कामरेड राजाल ने इन जुल्मों व शोषण को अपनी आंखों से देखा और झेला था। कामरेड राजाल क्रांतिकारी राजनीति से बहुत प्रभावित थे। 1998 में डीएकेएमएस में सदस्य के तौर पर शामिल हो गए और संगठन के कामकाज में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे। वह हर जिम्मेदारी को बड़ी लगन से करते थे। बाद में वे डीएकेएमएस कमेटी में चुन लिए गए। अपने कामकाज से उन्होंने जनता का विश्वास और प्यार हासिल किया। जब गांव में 2006 में जनता की जनवादी सत्ता का भ्रूण रूप जनताना सरकार का गठन हुआ तब कामरेड राजाल अध्यक्ष चुने गए। एरिया जनताना सरकार के सदस्य के रूप में जंगल विभाग की जिम्मेदारी संभाली। कामरेड राजाल अपने परिवार और अपने हितों से ज्यादा जनता के हितों को सर्वोपरि रखा। अपने परिवार को भी जनता का हिस्सा समझा। अपने परिवार में कितनी भी मुश्किलें हों या समस्यायें हों उन्हें परे रखकर पहले जनता और पार्टी के हितों को महत्व देते थे। पार्टी ने उन्हें 2007 में किसी काम से आन्ध्रप्रदेश के चरला में भेजा था। तब कामरेड राजाल को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और क्रूर यातनाएं दीं। लेकिन कामरेड राजाल वहां भी दृढ़ता के साथ खड़े रहे और अपनी पार्टी व संगठन के एक भी रहस्य को नहीं बताया। यातनाओं को सह लिया। बाद में जमानत पर रिहा हो गए।

कामरेड राजाल 2006 से अपनी शहादत तक जनताना सरकार के अध्यक्ष के तौर पर काम किया। जनता राजाल को बहुत प्यार करती थी। जनता की छोटी से छोटी समस्या को भी राजाल सही तरीके से हल करने का प्रयास करते थे। सदा जनता के लिए काम करते थे। हर विषय को राजनीतिक तौर पर जनता को अच्छे से समझाकर बताते थे। कामरेड राजाल 26 सितम्बर 2010 को हैजा का शिकार हो गए। उन्हें बचाने के लिए जनताना सरकार डॉक्टरों ने कोशिश की, लेकिन नहीं बचा पाए। आइये, उनके आदर्शों को लेकर दण्डकारण्य को आधार इलाके में विकसित करने के लिए क्रांतिकारी आन्दोलन को तेज करें। उनके सपनों को पूरा करने की शपथ लें।

कामरेड वेको बोज्जाल

कामरेड बोज्जाल का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन के बासागुड़ेम एरिया के ग्राम चिपुरबट्टी गांव में हुआ था। उनकी उम्र लगभग 34 साल था। वे बचपन से पार्टी की राजनीति से प्रभावित थे।

1997 में उन्होंने डीएकेएमएस संगठन की सदस्यता ली। हमारे आन्दोलन को कुचलने के लिए 1998 में सरकार ने जन जागरण अभियान के नाम से दमन अभियान चलाया था। उस समय सरपंचों और कबीलशाहों ने डरा धमकाकर कामरेड बोज्जाल को बासागुड़ेम थाने में आत्मसमर्पण करवाया था। कामरेड बोज्जाल आत्मसमर्पण करने के बावजूद जनता और पार्टी के पक्ष में खड़े रहे और संगठन के कामकाजों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। फरवरी 2006 में बासागुड़ेम एरिया में फासीवादी सलवा जुडूम अभियान शुरू हुआ। कामरेड बोज्जाल इस अभियान के समय भी हिम्मत के साथ पार्टी और जनता के पक्ष में दृढ़ता के साथ खड़े रहकर सलवा जुडूम का विरोध किया। और जनता को संगठित करते हुए सलवा जुडूम का मुकाबला किया। जब सितम्बर 2006 में पहली बार वहां जनता की जनवादी सत्ता क्रांतिकारी जनताना सरकार का निर्माण हुआ तब कामरेड बोज्जाल सरकार कमेटी में सदस्य चुने गए और जंगल बचाव विभाग की जिम्मेदारी संभाली। अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाते हुए उन्होंने जल-जंगल-जमीन पर अधिकार के लिए संघर्ष ही एक रास्ता है कह जनता को संगठित किया। जंगल को बचाने के लिए संघर्ष किया।

सितम्बर 2010 को अचानक बीमार होकर वे हम से विदा ले गए। कामरेड बोज्जाल ने आखरी दम तक जनता के लिए काम किया। वे अमर रहेंगे।

पड़कीपाली शहीद

9 अक्टूबर 2010 को छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिला के सांकरा थाना क्षेत्र के अंतर्गत पड़कीपाली गांव के पास स्पेशल टास्क फोर्स के करीब 500 कमाण्डो बलों ने पीएलजीए की एक गुरिल्ला कम्पनी पर घात लगाकर हमला किया। इस हमले में कुल 8 लोग मारे गए जिसमें पीएलजीए के 6 जांबाज गुरिल्लों समेत दो निर्दोष ग्रामीण शामिल हैं। हमारे कामरेडों ने वीरता का परिचय देते हुए इस हमले का मुकाबला किया और महत्वपूर्ण नेतृत्व के साथ-साथ पूरी कम्पनी की सुरक्षा करते हुए अपनी जान कुरबान की। शहीद हुए साथियों में कामरेड आयतु उर्फ कोसा (डिवीजनल कमेटी सदस्य), कामरेड अनिता उर्फ नताशा (सीएनएम, एसीएम, गांव गट्टाकाल, उत्तर बस्तर), कामरेड अर्जुन उर्फ चंदू (पीएल-1, गांव पोल्लेवाया, इंद्रावती एरिया, माड़), कामरेड पार्वती (पीएल-5, उत्तर बस्तर), कामरेड राजबती (पीएल-5, उत्तर बस्तर) तथा लच्छू (गांव ऊसेबेड़ा, माड़) तथा पड़कीपाली गांव के साधारण आदमी गौतम पटेल व उसका नौकर शामिल हैं। इन दोनों ग्रामीणों को पुलिस ने सरेआम पकड़कर, उनके घर वालों के सामने ही गोली मार दी और मुठभेड़ में मारे जाने का दावा किया।

क्रांतिकारी आंदोलन को देश के कोने-कोने में फैलाने के लक्ष्य से और उस इलाके की जनता की आकंक्षाओं को समझते हुए जन मुक्ति छापामार सेना की एक कंपनी पिछले कई महीनों से उस इलाके में क्रांतिकारी राजनीति का जोरशोर से प्रचार-प्रसार कर रही थी। आमसभाएं करते हुए क्रांतिकारी संदेश को जनता में ले जा रही थी और जनता से आव्हान कर रही थी कि अपनी मुक्ति के लिए, अपने जल-जंगल-जमीन की रक्षा के लिए एकजुट हो संघर्ष करो। महासमुंद, नगरी, सिहावा आदि इलाकों की जनता ने भाकपा (माओवादी) का दिलोजान से हाथ उठा कर स्वागत किया। पार्टी के विस्तार से जनता के दिलों में खुशी की लहर दौड़ गई और उन्होंने जनयुद्ध के साथ अपना समर्थन जताया। लेकिन शोषक सरकार ने पार्टी के विस्तार कार्य पर पानी फेरने के लिए इस कातिलाने हमले की योजना बनाई। क्रांतिकारियों की हत्या कर क्रांति को रोकने का सपना पाले हुए शासक वर्गों ने एक सोची-समझी साजिश के तहत बड़े पैमाने पर पुलिस व कमाण्डो बलों को उतार दिया। हमारे छह कामरेडों ने अपना सुर्ख लहू बहाकर महासमुंद व उसके आसपास के इलाकों की जनता के दिलों में अमिट छाप छोड़ दी। आइए, इन शहीदों के जीवन का परिचय लें।

कामरेड पेंटू हिचामी (कोसा/आयतू)

कामरेड आयतू का जन्म बीजापुर जिला भैरमगढ़ इलाके के उरेपाड़ गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। मां सोमली और पिता सोमाल की पांच संतानों में कामरेड आयतू दूसरी संतान थे। माता–पिता ने प्यार से उनका नाम पेंटू रखा था। वह बचपन से क्रांतिकारी आन्दोलन के तहत चले जमीन संघर्ष, सामंती मुखियाओं, सरकारी शोषण, जंगल विभागों के खिलाफ संघर्ष, तेन्दुपत्ता मजदूरी बढ़ाने आदि संघर्षों को देखते हुए बड़े हुए थे। उसका गहरा प्रभाव उनके ऊपर रहा। जब वह बड़े हुए डीएकेएमएस संगठन में शामिल हो गए। अपने गांव और आसपास के गांवों में घूमते हुए जनता को विभिन्न संघर्षों में बड़े पैमाने पर गोलबंद किया और उनका नेतृत्व किया। जनता के आपसी झगड़ों को जनदिशा–वर्गदिशा के आधार पर सुलझाने की कोशिश की। क्रांतिकारी आन्दोलन के विकास के साथ–साथ कामरेड आयतू भी विकसित होने लगे। उसकी राजनीतिक समझदारी बढ़ने लगी। इसी दौरान लुटेरी सरकार ने 1997 में एक बड़ी साजिश के तहत आन्दोलन को खत्म करने और आदिवासियों के बीच फूट डालने व आन्दोलन से दूर रखने के इरादे से जनविरोधी मुखियाओं को अपने पक्ष में करके दूसरे ''जनजागरण' अभियान को शुरू किया। इस दमन अभियान का नेतृत्व जमींदार व कांग्रेसी नेता महेन्द्र कर्मा कर रहा था। इस दौरान जनता और जन संगठनों में काम रहे कार्यकर्ताओं पर हमले करना, मारपीट, लूटपाट, तबाही, महिलाओं के साथ अत्याचार, डरा–धमका कर लोगों को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करना आदि किया गया। इस दमन अभियान को हराने के लिए पार्टी और जन संगठनों ने जनता को संगठित किया। इन कामों में कामरेड कोसा ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन हमलों के बाद जनता को पुनःसंगठित करने के लिए पार्टी ने विस्तृत योजना बनाई। उस योजना को कार्य रूप देने के लिए रात–दिन एक करके काम करने वाले कार्यकर्ताओं में कामरेड आयतू भी एक थे। इस दमन

अभियान में आगे रहकर नेतृत्व करने और जनता को नुकसान पहुंचाने वालों के ऊपर कार्रवाई की गई। सुकलू, मोरका नेता, सन्नू डेंगा जैसे सामंतियों और गुण्डों को दण्डित किया गया। इन कार्रवाइयों में कामरेड आयतू ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

कामरेड आयतू एक जन नेता के अलावा अच्छे कलाकार भी थे। क्रांतिकारी गीतों और नृत्य के माध्यम से भी जनता में क्रांतिकारी राजनीति को फैलाने की कोशिश की। कामरेड आयतू मार्च 1999 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गए। एक साल तक चेतना नाट्य मंच के सांस्कृतिक दल में काम किया। पार्टी ने उन्हें 2000 में पहली बार गठित मिलिटरी दल एसजीएस में भेजने का निर्णय लिया। कामरेड आयतू ने उसे खुशी से स्वीकारा और लिंगा बनकर 2001 तक वहां काम किया। यहीं से कामरेड कोसा को मिलिटरी तौर पर विकसित होने का मौका मिला। उसके बाद उन्हें 2001 में प्लाटून–6 में बदला गया। प्लाटून–6 का गठन नेतृत्व की सुरक्षा और युद्ध कार्रवाइयों में भाग लेने के उद्देश्य से किया गया था। कामरेड कोसा ने तबसे लेकर 2010 तक प्लाटून–6 में काम किया। कामरेड कोसा का राजनीतिक विकास प्लाटून–6 के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। कामरेड कोसा ने प्लाटून–6 में बड़ी मेहनत और लगन के साथ विश्वसनीय कामरेड के तौर पर काम किया। नेतृत्वकारी कामरेडों की सुरक्षा की जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। उन्हें 2003 में प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नति दी गई। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को बड़ी लगन से निभाने की कोशिश की। 2004 में उन्हें सेक्शन कमांडर बनाया गया। बाद में कामरेड कोसा को कम्पनी पार्टी कमेटी सदस्य के तौर पदोन्नति दी गई। कामरेड कोसा ने बढ़ते आन्दोलन के साथ अपनी राजनीतिक व मिलिटरी समझदारी को बढ़ाने की कोशिश की।

कामरेड कोसा ने प्लाटून–6 के साथ कई फौजी कार्रवाइयों में भाग लिया। 2003 के टीसीओसी अभियान के दौरान भांसी थाना के करीब विस्फोटक जब्ती की कार्रवाई में उनका योगदान रहा। 22 अप्रैल 2003 को पहली बार बस्तर में आई सीआरपीएफ के ऊपर पीएलजीए ने हमला किया था। इन हमलों कामरेड कोसा ने भाग लेकर अपना योगदान दिया। ताकिलोड़ के स्कूल में डेरा जमाए सीआरपीएफ और पुलिस के ऊपर किए गए हमले में कामरेड कोसा ने असाल्ट टीम में रहकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

शोषक शासक वर्गों द्वारा 2005 को शुरू किए फासीवादी सलवा जुडूम

अभियान को हराने के लिए किए गए कई हमलों में कामरेड कोसा ने भाग लिया था। मुख्य रूप से 9 फरवरी 2006 को बैलाडीला के एनएमडीसी बारूद गोदाम पर हमला करके 19 टन विस्फोटक, 15 हथियारों सहित हजारों कारतूस जब्त किए थे। इस हमले में टावर के ऊपर संतरी कर रहे पुलिस खत्म करने की जिम्मेदारी कामरेड कोसा की थी। उन्होंने इस जिम्मेदारी को बड़ी हिम्मत व सूझबूझ से निभाया। 16 अप्रैल 2006 को मुरकीनार बेस कैम्प पर किए गए हमले में संतरी को काबू करने की जिम्मेदारी उनकी थी। उन्होंने वह काम बड़ी आसानी से निभाया। इनके अलावा सलवा जुडूम को हराने के लिए किए गए अनेकों हमलों में भाग लेकर कामरेड कोसा ने अपनी अहम भूमिका निभाई।

इनके अलावा एओबी के कलिमेला पोट्टेर शहर में ओड़िशा राज्य मंत्री और पुलिस चौकी के ऊपर एक साथ हमला किया गया था। इस हमले में 8 हथियार जब्त किए गए। इस हमले में भी कामरेड कोसा ने भाग लिया था। उसके बाद अपने सेक्शन के साथ दो साल उसी इलाके में रहकर काम किया। कलिमेला और पूर्वी डिवीजन की जनता के साथ घनिष्ठ संबंध बनाया और उन्हें संगठित किया।

पीएलजीए द्वारा किए गए ऐतिहासिक नयागढ़ रेइड को सफल करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वालों में कामरेड कोसा भी एक थे। इस हमले को अंजाम देने के लिए संघर्ष इलाके से 600 कि.मी. की दूरी को तय कर कई कठिनाइयों का सामना करते हुए पीएलजीए के सैनिक व कमाण्डर गए थे। जाते समय उन पर ओड़िशा के इरकबाड़ी गांव के पास पुलिस ने हमला किया था। उस समय कामरेड कोसा ने पहलकदमी करते हुए अपनी टीम के साथ काउन्टर हमला करके अपने साथियों को सुरक्षित बाहर निकलने में मदद दी। कितनी ही प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कामरेड कोसा बेझिझक और दृढ़ता के साथ सभी का हौसला बढ़ाते थे। नयागढ़ आपरेशन के दौरान कामरेड कोसा एक एम्बुश पार्टी का खुद नेतृत्व करते हुए नवापाड़, जशपुर शहरों के हमलों और ऐम्बुशों को समन्वय किया था। इस हमले में सभी फौजी नियमों का कड़ाई से पालन करते हुए उन्हें दी गई जिम्मेदारी को पूरा किया।

नयागढ़ हमले के बाद दुश्मन ने हमारी पीएलजीए का पीछा करते हुए जब्त कर लाए गए हथियारों को सुरक्षित जगह में पहुंचाने के दौरान गोसामा जंगल में हमला किया। इस हमले में कामरेड रामबति और इकबाल शहीद हुए थे। कामरेड कोसा ने अदम्य साहस के साथ दुश्मन का प्रतिरोध किया था। यह

मुठभेड़ लगभग 6 घण्टे चली थी। कई दिनों से नींद नहीं थी। थके हुए थे सब। पीने के लिए पानी नहीं था। खाने को खाना नहीं। कई कामरेड्स भूख और थकान से चूर हो चुके थे। ऐसे समय में भी कामरेड कोसा सभी का मनोबल बढ़ाते हुए हिम्मत से काम लेने की बात कहते थे।

2010 में कामरेड कोसा ने आन्दोलन के विस्तार के लिए महासमुन्द जिला में कदम रखा। वहां की जनता में जनयुद्ध का संदेश पहुंचाया। संघर्ष का बीज बोए और उन्हें अपने लहू से सींचा। इस तरह कामरेड कोसा ने अपनी क्रांतिकारी जिन्दगी में विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाया। वह सभी साथियों के साथ मिलजुल कर और प्यार से रहते थे। वह जहां भी जाते वहां के माहौल के अनुरूप अपने आपको ढाल लेते थे। वहां की जनता के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने की कोशिश करते थे। वह अपने सदस्यों को पूरा सहयोग देते थे। अपनी गलतियों की आत्मालोचना करने में कभी संकोच नहीं करते थे। कठिन परिस्थितियों में भी घबराये बिना उनका सामना करते और अपने साथियों का हौसला बढ़ाते थे। आइए, उनके आदर्शों को आत्मसात करें और उनके सपनों को साकार करने का संकल्प लें।

कामरेड नताशा

कामरेड नताशा का जन्म कांकेर जिला कोयलीबेड़ा तहसील के अंतर्गत आने वाला गट्टाकल गांव के एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था। अपने माता–पिता की पांच संतानों में वह दूसरी थीं। माता–पिता ने उनका नाम अनिता रखा था। अपने गांव के स्कूल में उन्होंने 5वीं तक पढ़ाई की थी।

वह बचपन से क्रांतिकारी आन्दोलन से प्रेरित थीं। उन्होंने पहले बाल संगठन, बाद में केएएमएस में शामिल होकर काम किया। उन्हें नाच, गानों में बहुत रुचि थी। जहां भी नगाड़े की आवाज सुनती वहां अनिता पंहुच जातीं। गांव में रहकर वह चेतना नाट्य मंच (सीएनएम) टीम के साथ प्रचार कार्य में भाग लेती थीं। अपनी सुरीली आवाज में क्रांतिकारी गीतों को गाकर जनता को गोलबंद करती थीं। 2005 में जनता के जीवन को बदलने और देश को शोषण व उत्पीड़न से मुक्त

करने के लक्ष्य से पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में स्थानीय दस्ता में शामिल हो गईं।

गाना गाने में उनकी रुचि को देखते हुए उन्हें डिवीजन सीएनएम की जिम्मेदारी सौंपी गई। 2007 में कामरेड नताशा को डिविजन से जोन सीएनएम टीम में बदला गया। 2007 से लेकर 2010 मार्च तक जोन सीएनएम टीम में रहकर जोन के अलग–अलग डिवीजनों में घूमकर क्रांति का प्रचार किया। कई सांस्कृतिक प्रोग्रामों भाग लेकर विभिन्न मुद्दों पर गानों, नाटकों आदि के माध्यम से क्रांति के संदेश को पहुंचाकर प्रोग्रामों को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। खाली समय में अपने साथियों को, गांवों के युवक–युवतियों, बच्चों को नाच–गाने सिखाती थीं।

जोन स्तर पर सांस्कृतिक सब कमेटी द्वारा चलाए गए कई ट्रेनिंग कैम्पों और कार्यशालाओं में भाग लेकर गीत, कविताएं लिखने और गाने की शैली और तरीकों में प्रगति लाने में अपने हिस्से का योगदान दिया। जोन स्तर के सीएनएम अधिवेशन में उन्होंने प्रतिनिधि के तौर पर भाग लिया। कामरेड नताशा को जिन विषयों की जानकारी होती उन्हें अपने साथियों को बताती थीं। और हमेशा नए–नए विषयों को सीखने के लिए उत्सुक रहती थीं। सांस्कृतिक विषयों के अलावा राजनीतिक और मिलिटरी विषयों को समझने और सीखने का भरपूर प्रयास करती थीं।

2006 में जब वह पार्टी में भर्ती हुईं पुलिस ने उनके घर पर धावा बोला और घर के सामान को तहस–नहस कर दिया। कामरेड नताशा को आत्मसमर्पण करवाने के लिए परिवार वालों के ऊपर दबाव डाला। 2009 में दुबारा घर पर हमला करके परिवार और कामरेड नताशा के ऊपर मानसिक दबाव बढ़ाने की कोशिश की। मगर कामरेड नताशा ने दुश्मन की साजिश को समझकर घर और गांव वालों को समझा कर आन्दोलन ही मेरा जीवन कहकर जनता के पक्ष में मजबूती से खड़ी हुईं। 2010 मार्च में कामरेड नताशा को एरिया कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नति दी गई।

ग्रीन हंट सैनिक अभियान को हराने और आंदोलन का विस्तार करके जनयुद्ध को तेज करने के लिए कामरेड नताशा को विस्तार इलाका में बदला गया। नए इलाके में कामरेड नताशा चांदनी के नाम से जनता में परिचित हुईं। उन्हें गोंडी, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी भाषाएं आती थीं। उन्होंने यहां सीएनएम की जिम्मेदारी लेकर इन भाषाओं में यहां की जनता में नवजनवादी क्रांति का संदेश

पंहुचाया। कामरेड चांदनी सांस्कृतिक योद्धा के अलावा पीएलजीए की भी बहादुर योद्धा भी थीं। पड़कीपाली मुठभेड़ में पुलिस के साथ निडरता व बहादुरी से लड़ते हुए अपनी जान कुरबान कर दी। देश के कोने–कोने में जनयुद्ध को फैलाकर नवजनवादी क्रांति को सफल करने का संकल्प लें, यही कामरेड चांदनी को सही श्रद्धांजलि होगी।

कामरेड राजबति

कामरेड राजबति (19) का जन्म कांकेर जिला, ब्लाक कोयलीबेड़ा के अंतर्गत ग्राम कड़मे में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। मां सोमारी बाई और पिता मंगलसिंह की पांच संतानों में वह चौथी थीं। घर पर उनका नाम कमलेश्वरी था। कामरेड राजबति जब छोटी थीं तभी उनके पिता की बीमारी से मृत्यु हो गई। गांव में जब भी दस्ता आता राजबति तुरन्त उसके पास पहुंच जाती थीं। दस्ता कामरेडों द्वारा बताए बातों और गानों को बड़े ध्यान से सुनती थीं। गानों को सीखने की कोशिश करतीं। वह धीरे–धीरे पार्टी की तरफ आकर्षित होने लगीं। बाल संगठन में रहकर संगठन के लड़के–लड़कियों को अपने सीखे हुए गानों को सिखाने की कोशिश करती थीं। बाल संगठन में रहते हुए ही उन्होंने गांव में क्रान्तिकारी सांस्कृतिक संगठन में बाल चेतना नाट्य मंच (सीएनएम) की जिम्मेदारी लेकर काम किया।

2008 में उन्होंने पेशेवर क्रान्तिकारी बनने की इच्छा पार्टी के सामने रखी और स्थानीय कड़मे दस्ता में भर्ती हो गईं। बाद में पार्टी ने उन्हें पांचवीं प्लाटून में भेजा। प्लाटून में वह सभी कामों में उत्साह के साथ भाग लेती थीं। कामरेड राजबति सभी विषयों को मेहनत करके सीखने की कोशिश करती और अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ाने का प्रयास करती थीं। उनके विकासक्रम को देखते हुए प्लाटून में उनको पार्टी सदस्यता दी गई।

मार्च 2010 में डीके एसजेडसी के प्रस्ताव के मुताबिक पांचवीं प्लाटून को नए इलाके में आन्दोलन के विस्तार के लिए भेजने का फैसला लिया गया। अपने साथियों के साथ कामरेड राजबति भी प्रस्ताव को खुशी से स्वीकारा। विस्तार

इलाका में कदम रखा। वहां की जनता के दुख–दर्द को देखा, समझा। क्रान्तिकारी गीतों के माध्यम से पार्टी की राजनीतिक संदेश को जनता तक पंहुचाया। पड़कीपाली के पास गुरिल्लाओं के ऊपर घात लगाकर किए गए हमले में जवाबी फायरिंग करते हुए अपने साथियों की सुरक्षा करते पीछे हट रही थीं तभी दुश्मन की गोली लगने से कामरेड राजबति शहीद हो गईं।

कामरेड अर्जुन

बीजापुर जिला भैरमगढ़ ब्लाक इन्द्रावती एरिया के पोल्लेवाया गांव के अटामी परिवार में कामरेड अर्जुन का जन्म हुआ था। पोल्लेवाया गांव के सभी परिवार इन्द्रावती के उस पार से जमीन के लिए यहां आ कर जंगल साफ कर बसे हुए हैं।

पहले यह गांव एक भूस्वामी के अधीन था। इस गांव के भूस्वामी का आधिपत्य आसपास के गांवों में भी था। जमींदार गरीब जनता को अपने यहां बेगारी करने के लिए मजबूर करता था। गांव में गरीब जनता को कोई हक–अधिकार नहीं था। इसी दौरान 1993 में पार्टी ने इस गांव में कदम रखा। दस्ता का आना–जाना रहता था लेकिन संगठन नहीं बना था। साल 2000 में इस गांव में संगठन का निर्माण हुआ। भूस्वामियों के विरुद्ध संघर्ष शुरू हुआ। इन संघर्षों के समय कामरेड अर्जुन छोटे थे लेकिन बड़े उत्साह के साथ इन संघर्षों में भाग लेते थे। इसी दौरान नीरम गांव के भूस्वामी के घर पर हमला किया गया। उस हमले में कामरेड अर्जुन ने भाग लिया और उसके घर से जब्त किया गया सामान बांटने में मदद की।

कामरेड अर्जुन 2003 में डीएकेएमएस में भर्ती हो गया। गांव के मंगडू सावकार, जारम बुधराम जैसे जनविरोधी मुखियाओं के खिलाफ जनता ने संगठन के नेतृत्व में संघर्ष किया था। तब इन संघर्षों में भाग लेने वालों में कामरेड अर्जुन भी एक थे। गांव में बदल रही परिस्थितियों को कामरेड अर्जुन दस्ता को बताते थे। पार्टी के विरुद्ध, जनता के विरुद्ध जनविरोधियों द्वारा रची जा रही साजिशों या गांव में गुप्त रूप से होने वाली गतिविधियों से पार्टी को अवगत कराते थे अर्जुन। भूस्वामियों के विरुद्ध संघर्ष तेज होने के क्रम में यहां के युवक–युवतियां बड़ी संख्या में संगठन में भर्ती हो रहे थे। इसी दौरान कामरेड अर्जुन पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर आन्दोलन में कदम रखा।

2004 में पार्टी में भर्ती होने के बाद प्लाटून-1 सदस्य के तौर पर कामरेड अर्जुन जनता में परिचय हुए। फासीवादी सलवा जुडूम अभियान के समय उनके घरों को सलवा जुडूम गुण्डों ने आग लगाए, फसलों को नष्ट कर दिया। इस दौरान कामरेड अर्जुन ने अपने परिवार और जनता की हिम्मत बंधाते हुए सलवा जुडूम को हराने लिए दृढ़ता के साथ मुकाबला करने को कहते थे। कुरुसनार-नारायणपुर के बीच हुई हर कार्रवाई में कामरेड अर्जुन आगे रहे थे। उन्हें पार्टी जो भी काम सौंपती उसे पूरा करने के लिए आगे रहते थे। किसी भी काम से कभी पीछे नहीं हटते थे। पार्टी में आने के बाद पढ़ना-लिखना सीख लिया। पढ़ना नहीं आता सोचकर हारकर नहीं बैठते थे। जिद करके सीखने की कोशिश करते थे। थोड़ा भी समय मिलने पर स्लेट पेंसिल लेकर पढ़ाई करते थे। पढ़ाई सीखकर पार्टी द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों को पढ़कर अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ाने की कोशिश करते थे। फौजी तौर पर अपनी शारीरिक क्षमता को बढ़ाने और सैन्य तकनीकों में निपुणता हासिल करने के लिए सुबह शाम अभ्यास करते थे। 2008 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई। पार्टी द्वारा दी गई सभी जिम्मेदारियों को लगन के साथ पूरा करने की कोशिश करते थे। विस्तार इलाके में जाने का प्रस्ताव बताते ही उनके चेहरे में खुशी और उत्साह झलक रहे थे। कामरेड अर्जुन विस्तार एरिया में जाते समय अपने साथियों से कहा था -''हम सबको राजनीतिक तौर पर, फौजी तौर पर विकसित होना है। ग्रीनहन्ट अभियान को हराना है, जनयुद्ध को नए-नए इलाके में फैलाना है, अपने शहीदों के सपनों को पूरा करेंगे। हम सब जनता के लिए काम कर रहे हैं, आखरी दम तक क्रांति में दृढ़ता के साथ खड़े रहकर जनता के लिए जान देंगे।'' कहते हुए आंखों में आंसू भरकर सलवा जुडूम के कड़वे अनुभवों को याद करते हुए अपने साथियों से विदा ले गए। नए इलाके में आन्दोलन का बीज बोने के लिए प्रस्थान कर गए।

जाने के बाद उन्होंने वहां की जनता की समस्याओं को देखा। वहां की जनता में जनयुद्ध की राजनीति के बीज बोये। पड़कीपाली गांव के पास हुई मुठभेड़ में बहादुरी के साथ लड़ते हुए धरती को अपने गरम लहू से सींचा। उनके आदर्शों को आत्मसात करते हुए जनयुद्ध को देश के कोने-कोने में फैलाकर उनके सपनों को साकार करेंगे।

कामरेड शामबाई दुग्गा

कामरेड शामबाई का जन्म उत्तर बस्तर डिवीजन के रावघाट एरिया के ग्राम सम्बलपुर के एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था। वह अपने माता-पिता की पहली संतान थीं। शामबाई ने अपने गांव के स्कूल में तीसरी तक पढ़ाई की थी। सामंती और

पितृसत्तात्मक समाज में लड़कियों को ज्यादा पढ़ने नहीं दिया जाता और शामबाई घर में बड़ी बेटी होने के नाते घर के कामों में मां का हाथ बंटाने के लिए स्कूल छुड़ा दिया गया।

शामबाई जैसे-जैसे बड़ी होती गई क्रांतिकारी आन्दोलन की गतिविधियां भी बढ़ने लगीं। वह अपने माता-पिता के साथ आम सभाओं, जन संगठनों की मीटिंगों में जाती थीं। जब भी गांव में कोई मीटिंग या सभा होती माता-पिता से जिद करके उनके साथ जाती थी। इस तरह शामबाई क्रांतिकारी गतिविधियों के बीच ही बड़ी हुई थी। समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, पितृसत्ता के दबाव, आदिवासी समाज में रीति-रिवाजों के नाम से महिलाओं पर हो रही हिंसा, वंचनाओं, जोर-जबरदस्ती आदि को समझने लगी थीं। पार्टी के नेतृत्व में उस इलाके में बमरा मांझियों के विरुद्ध आन्दोलन चला था। बमरा मांझियों को जन अदालतों में रखकर उनके कुकृत्यों के लिए जनता ने उन्हें दण्डित किया था। इन सबको शामबाई ने बचपन से देखा था। इससे बहुत प्रभावित हुई थीं।

बाल संगठन में रहते हुए क्रांतिकारी गीतों, विभिन्न समस्याओं पर बने गीतों को सीखकर वह अपनी सुरीली आवाज में गाती थीं। सांस्कृतिक प्रोग्रामों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। बड़ी होने के बाद चेतना नाट्य मंच की सदस्य बन गईं। क्रांतिकारी आन्दोलन और विभिन्न समस्याओं पर जनता को संगठित करने के लिए गीतों, नाटकों आदि के द्वारा जनता में प्रचार करती थीं। छत्तीसगढ़ी, हिन्दी, गोण्डी भाषाओं में गीतों को गाकर जनता का दिल जीत लेती थीं। दल्ली-राजहरा में विस्थापन, विशेष आर्थिक क्षेत्रों के विरुद्ध एक विशाल रैली और सभा हुई थी। उस सभा में कामरेड शामबाई ने भी सीएनएम सदस्य के तौर पर भाग लेकर विभिन्न गानों के साथ नृत्य भी पेश किया था। माता-पिता ने आदिवासी परम्परा के मुताबिक बचपन में ही उनकी सगाई कर दी थी। जब शामबाई थोड़ी बड़ी हुई शादी करने के लिए उस पर दबाव डाला गया तो शामबाई ने इसका विरोध किया। शादी से मना कर दिया। कामरेड शामबाई के मन में बचपन से ही पीएलजीए में भर्ती होकर जनता की सेवा करने और इस समाज को बदलने के लिए लड़ने की इच्छा जगी हुई थी।

17 साल की उम्र में 2008 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पीएलजीए में भर्ती हो गईं। बाद में उन्होंने सैनिक प्रशिक्षण शिविर में भाग लेकर प्लाटून-5 में सदस्य के रूप में गईं। कामरेड शामबाई प्लाटून में रहकर सभी कार्रवाइयों में भाग लिया। वहीं उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई।

दुश्मन हमारे आन्दोलन को एक ही इलाके में सीमित कर खत्म करने की योजना के तहत कार्पेट सेक्युरिटी को बढ़ा रहा है। उसकी इस नीति को विफल करने, हमारी

आन्दोलन को देश के कोने-कोने में फैलाने के उद्देश्य से 2010 में दण्कारण्य से कुछ कामरेडों को आन्दोलन के विस्तार के लिए भेजने का प्रस्ताव हुआ। विस्तार में जाने वाली टीम में कामरेड शामबाई भी एक थीं। इस तरह कामरेड शामबाई ने महासमुन्द जिले में कदम रखा। वहां की जनता के दुख-दर्द को देखा, समझा और उनके दिलों में जगह बनाई।

कामरेड लच्छु उसेण्डी

माड़ डिवीजन के नयबेरड़ एरिया के उसेवेडा गांव के एक गरीब किसान परिवार में कामरेड लच्छु (19) का जन्म हुआ था। कामरेड लच्छु अपने माता-पिता की दो संतानों में दूसरी संतान थे। कामरेड लच्छु के पिता की दो पत्नियां थीं। कामरेड लच्छु की सौतेली मां का एक बेटा है। माता-पिता ने अपने बेटे का नाम लच्छु रखा था। लेकिन गांव में सभी उन्हें काना के नाम से पुकारते थे। काना जब छोटे थे तब पिता ने आपसी झगड़े में पत्नी की हत्या करके खुद आत्महत्या कर ली। सौतेली मां पहले ही चल बसी थी। उसके बाद कामरेड लच्छु की परवरिश उनके सौतेले भाई ने किया। नन्हा काना दिन भर अपने भैया के साथ खेतों में काम करता, मवेशी चराता, घर में भाभी के कामों में हाथ बंटाता, उसके बावजूद मार खानी पड़ती और भाभी से गालियां सुननी पड़ती थीं। भरपेट भोजन भी नहीं मिलता था। कभी-कभी भूखा ही सो जाता था। बचपन से छापामार दस्ता के साथ उसका सम्पर्क रहा। गांव में जब भी दस्ता जाता धूल-मिट्टी से सना शरीर, फटे कपड़े पहने दस्ते के पास आ जाता था। दस्ता जब तक वहां रहता तब तक वह वहीं रहता। दस्ता के साथी उन्हें नहलाते, खाना खिलाते, प्यार से बातें करते थे। इन सबसे प्रभावित नन्हा काना दस्ते में आने की जिद करता था। लेकिन काना बहुत छोटे होने की वजह से उन्हें गांव में रहकर काम करने की, बड़े होने के बाद ले जाने की हिदायत देकर दस्ता चला जाता था। हर बार यही बता जाते थे। आखिर 2006 में दस्ता में आने के लिए जिद करके दस्ता के पीछे-पीछे भागकर आ गया। लौटाने पर रोने लगा। आर्गनाइजर ने उन्हें अपने साथ ले लिया।

उसके बाद से कामरेड लच्छु दस्ते के साथ रहकर बड़ा हुआ। दस्ते में रहते हुए कामरेड लच्छु प्राथमिक पढ़ाई के साथ अनुशासन, राजनीति सीखने लगा। बिल्कुल कुछ

भी नहीं जानने वाला काना जल्द ही बहुत होशियार हो गया। उनमें नए-नए विषयों को सीखने, जानने की उत्सुकता होती थी। उनके सीखने की लगन को देखते हुए उन्हें जनताना सरकार स्कूल में शिक्षक के लिए ट्रेनिंग लेने के उद्देश्य से मास (मोबाइल अकादमिक स्कूल) टीम के साथ एक साल रखा गया। कामरेड लच्छु जल्द ही पढ़ाई सीखकर दूसरों को भी सिखाने लग गया। राजनीतिक तौर पर उनकी समझदारी भी बढ़ने लगी। 2008 में उन्हें जनताना सरकार स्कूल में शिक्षक रखने का निर्णय लिया गया। लेकिन कामरेड लच्छु को फौजी क्षेत्र में ज्यादा रुचि थी। उसे देखते हुए उन्हें प्लाटून-1 में भेजा गया।

2008 से कामरेड लच्छु ने प्लाटून-1 में काम किया। प्लाटून में भी उन्हें साथी कामरेडों को पढ़ाने के लिए शिक्षक की जिम्मेदारी दी गई। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाते हुए अपने साथियों को प्राथमिक शिक्षा के साथ-साथ पार्टी द्वारा प्रकाशित पर्चा, पत्र-पत्रिकाएं भी पढ़कर समझाते थे और चर्चा करते थे। कामरेड लच्छु जनता और अपने साथियों से आसानी से घुलमिल जाते थे। वह सदा हंसमुख और मिलनसार रहते थे और अनुशासित, मेहनती स्वभाव के थे।

नवम्बर 2008 से प्लाटून-1 द्वारा की गई सभी फौजी कार्रवाइयों में कामरेड लच्छु ने उत्साह के साथ भाग लिया। 2008-09 के विधानसभा व लोकसभा के झूठे चुनावों के मौके पर चुनाव बहिष्कार अभियान और चुनाव के लिए आए सशस्त्र बलों का प्रतिरोध करने के लिए की गई कार्रवाइयों में कामरेड लच्छु ने फौजी अनुभव न होने के बावजूद बेझिझक और निडरता के साथ भाग लिया। उसके बाद भी 2010 तक माड़ डिवीजन में प्लाटून-1 द्वारा की गई सभी फौजी कार्रवाइयों में कामरेड लच्छु ने भाग लिया। कामरेड लच्छु हर कार्य को फौजी कार्रवाई हो या प्रचार, उत्पादन, सामान ढोना आदि सभी कामों को बड़ी लगन से करता था। मेहनत से कभी जी नहीं चुराता था। कोई नहीं करने पर भी खुद आगे आकर करता था। वह जहां भी जाता वहां के माहौल के अनुरूप अपने आपको ढाल लेता था।

दुश्मन ने महासमुन्द जिले के पड़कीपाली गांव के पास सैकड़ों की संख्या में सशस्त्र बलों को उतारकर गुरिल्लों के ऊपर हमला कर दिया। इस मुठभेड़ में कामरेड लच्छु ने बहादुरी के साथ लड़ते हुए अपनी जान कुरबान कर दी। आइये, कामरेड लच्छु के आदर्शों को ऊंचा उठाते हुए उनके सपनों को साकर करने का संकल्प लें। कामरेड लच्छु! महासमुन्द के धरती पर गिरा तुम्हारा खून व्यर्थ जाने नहीं देंगे। जनयुद्ध को तेज करेंगे।

कामरेड नागेश (कोवासी जोगा)

15 अक्टूबर 2010 को उत्तर रीजियनल कमेटी सदस्य, माड़–उत्तर बस्तर संयुक्त डिवीजन कमेटी सदस्य, संयुक्त डिवीजन के कमांडर–इन–चीफ कामरेड नागेश और पीएलजीए सदस्य कामरेड प्रमीला को दुश्मन ने एक गद्दार की सूचना पर भिलाई शहर में पकड़कर फर्जी मुठभेड़ में दोनों की हत्या कर दी। उस समय वे दोनों निहत्थे थे। पुलिस महकमे ने इसे मुठभेड़ के रूप में चित्रित कर बहुत बड़ी सफलता के रूप में प्रचारित किया।

कामरेड नागेश का जन्म 1976 में दक्षिण बस्तर डिवीजन किष्टारम एरिया के पालोड़ी गांव में आदिवासी मुरिया समुदाय के गरीब किसान परिवार में हुआ था। कामरेड नागेश अपने माता–पिता की छह संतानों में आखिरी बेटा था। उनके पिता का देहांत बचपन में ही हुआ था। मां ने उन्हें पाल–पोसकर बड़ा किया। पालोड़ी गांव शुरू से क्रांतिकारी आन्दोलन के संघर्षशील गांवों में से एक रहा है। गांव का जन–विरोधी मुखिया कुंजाम जोगा (कुटाल) के विरुद्ध जनता ने संगठित होकर संघर्ष किया था और आखिर में उसने जनता के सामने आत्मसमर्पण किया था। पालोड़ी गांव किष्टारम, गोलापल्ली रिजर्व वन क्षेत्र में होने की वजह से वन विभाग वालों के जोर–जुल्म, शोषण और उत्पीड़िन का शिकार था। जनता ने उनके साथ जूझते हुए जंगल साफ कर खेती योग्य जमीन तैयार की थी। 1980 में इस इलाके में भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) ने प्रवेश किया। तबसे यहां की जनता ने पार्टी के साथ होकर वन विभाग, सेठ, साहूकारों के शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ जुझारू संघर्ष किया। सदा क्रांतिकारी आन्दोलन के पक्ष में मजबूती से खड़ा गांव है पालोड़ी। इस गांव से दर्जनों युवक–युवतियां पीएलजीए में भर्ती होकर काम कर रहे हैं। उनमें से कामरेड नागेश भी एक थे।

कामरेड नागेश जून 1994 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गए। तब उनकी उम्र 18 साल थी। वह गांव में मिलिशिया में काम करते हुए पार्टी में भर्ती हुए थे। पार्टी में आने के तुरंत बाद उन्हें 6 छह महीना टेकनिकल कैम्प की सुरक्षा के लिए एओबी भेजा गया। अनजान इलाका, नई भाषा होने के बावजूद बेहिचक वहां जाकर अपनी जिम्मेदारी को निभाया।

जनवरी 1995 में बस्तर डिवीजन को दो भागों में विभाजित कर दक्षिण और उत्तर बस्तर डिवीजन पार्टी कमेटियों का गठन किया गया था। तभी कामरेड नागेश को उत्तर बस्तर डिवीजन में बदला गया। वहां उन्होंने केशकाल दस्ता में दल सदस्य के तौर पर काम किया। यहीं पर उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई। दिसम्बर 1995 में स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य के सुरक्षा गार्ड के तौर पर उन्हें वहां से बदला गया। ईमानदारी और लगन के साथ तीन साल सुरक्षा गार्ड की जिम्मेदारी निभाई। दुश्मन के हमले के मौकों पर नेतृत्वकारी कामरेड की सुरक्षा करते थे। 1999 की शुरुआत में गार्ड की जिम्मेदारी से छुट्टी देकर उन्हें कोण्डागांव दस्ता में भेजा गया। वहां एरिया कमेटी सदस्य के रूप में डौला एलओएस कमांडर की जिम्मेदारी उन्हें दी गई। इस क्षेत्र में जनता को संगठित कर जन आन्दोलनों को मजबूत करने का प्रयास किया।

बाद में उत्तर बस्तर डिवीजनल कमेटी ने रावघाट इलाके में एक एलओएस का गठन करने का निर्णय लिया। उस दस्ता में कमांडर के तौर पर कामरेड नागेश को भेजा गया। बाद में उन्हें रावघाट एसी सचिव के रूप में चुन लिया गया। कामरेड नागेश ने रावघाट इलाके में जनता को संगठित कर जन संगठनों का निर्माण करने और जन आन्दोलनों को तेज कर पार्टी को मजबूत करने का प्रयास किया। विभिन्न तबकों की जनता को संगठित करने में कामरेड नागेश का बड़ा योगदान रहा। रावघाट और चारगांव में खदानें खोलकर जल–जंगल–जमीन को हड़पने के लिए सरकार और कार्पोरेट कम्पनियों द्वारा जारी कोशिशों के खिलाफ कामरेड नागेश ने जनता को गोलबंद किया। इसके खिलाफ व्यापक जन आंदोलन का निर्माण करने में कामरेड नागेश का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

2006 में हुए उत्तर बस्तर डिवीजन के दूसरे पार्टी अधिवेशन ने उन्हें डिवीजनल कमेटी सदस्य के तौर पर चुन लिया। तबसे उत्तर बस्तर आन्दोलन को मजबूत करने और उसका विस्तार करने में कामरेड नागेश ने अहम भूमिका निभाई। डीवीसी सदस्य बनने के बाद से आखिर तक उन्होंने डिवीजनल

कमांडर–इन–चीफ की जिम्मेदारी निभाई।

नवम्बर 2009 में उत्तर रीजियनल कमेटी का गठन हुआ। तब कामरेड नागेश को रीजियनल कमेटी सदस्य के तौर पदोन्नति दी गई। उसी समय माड़ और उत्तर बस्तर को मिलाते हुए माड़–उत्तर बस्तर संयुक्त डिवीजन का गठन किया गया। और संयुक्त डिवीजन के कमांडर–इन–चीफ की जिम्मेदारी भी कामरेड नागेश के कंधों पर डाल दी गई।

कामरेड नागेश एक लोकप्रिय जन नेता थे। बस्तर के दक्षिणी छोर में पैदा होने वाले नागेश का राजनीतिक जीवन पूरा उत्तर बस्तर में ही बीता। लोगों के साथ उनका व्यवहार मिलनसार हुआ करता था। गांवों में बच्चे, बूढ़े, महिला, पुरुष और नौजवान सभी के साथ वह घुलमिल जाया करते थे। वह हमेशा जनता की समस्याओं को हल करने का प्रयास करते थे। वह जहां भी जाते हर उम्र के लोग उनसे मिलने आते थे। अपना सुख–दुख बताया करते थे। खासकर रावघाट इलाके की जनता में उन्होंने अमिट छाप छोड़ी। कई नौजवानों को पार्टी व पीएलजीए में भर्ती करने में भी कामरेड नागेश का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

कामरेड नागेश एक सक्षम मिलिटरी कमांडर थे। उन्होंने उत्तर बस्तर में की गई कई फौजी कार्रवाइयों में साहस के साथ भाग लेकर उन्हें सफल करने में अहम भूमिका निभाई। 2002 में डौला के पास बड़गांव में दुश्मन के ऊपर एक हमला किया गया। उसमें थानेदार को मारकर उसकी एके–47 जब्त कर ली गई। इसका नेतृत्व कामरेड नागेश ने किया था। कोयलीबेड़ा के इलाके में भदरंगी, गोण्डबीनापाल, भुस्की आदि ऐम्बुशों का नेतृत्व कर दुश्मन को मारकर हथियार जब्त कर लिया। विश्रामपुर थाने पर किए गए रेइड में भी कामरेड नागेश का योगदान रहा। कामरेड नागेश ने ऐसे कई हमलों में भाग लेकर विभिन्न जिम्मेदारियां निभाईं। पुलिसिया हमलों के दौरान भी बहादुरी और साहस के साथ लड़कर अपने साथियों का हौसला बढ़ाते थे। दुश्मन के दिल में खौफ पैदा करते थे। इसीलिए दुश्मन ने निहत्थे नागेश को गिरफ्तार कर जेल में डालने का मौका होने के बावजूद उनकी निर्मम हत्या कर दी। ऐसा करके वह जनता में भय का माहौल पैदा कर रावघाट संघर्ष को खत्म करना चाह रहा है। लेकिन कामरेड नागेश की शहादत से जन आन्दोलनों को प्रेरणा मिलेगी। उनके अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए जनयुद्ध को तेज करेंगे। पीएलजीए को पीएलए में तथा गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करते हुए दण्डकारण्य आधार इलाके में बदल देंगे।

कामरेड सोड़ी बामन

पश्चिम बस्तर डिवीजन, गंगालूर एरिया, गोरनम गांव में कामरेड बामन (14) का जन्म हुआ था। उसके पिता को अगस्त 2010 में पुलिस ने अरेस्ट कर जेल में डाल दिया। बामन का परिवार बहुत ही गरीब परिवार है। मेहनत–मजदूरी करके जीने को मजबूर है। बामन क्रांतिकारी राजनीति से आकर्षित होकर चेतना नाट्य मंच का सदस्य बन गया। सलवा जुडूम के हमले में इस गांव को भारी तबाही झेलनी पड़ी। लगभग सभी घरों को जला दिया गया। ऐसी स्थिति में गांव में संतरी, गश्त आदि कामों में बामन भी जिम्मेदारी के साथ भाग लेता था।

13 अक्टूबर 2010 में बीजापुर पुलिस थाने से निकले सीआरपीएफ, एसपीओ और जिला पुलिस के संयुक्त बलों ने रातोंरात गोरनम गांव को घेर लिया। कामरेड बामन और मासाल दोनों उनके हत्थे चढ़े थे। सशस्त्र बलों ने उन पर गोलियां बरसा दीं। पुलिस उनकी लाशें साथ ले गई। गांव की महिलाओं ने बीजापुर जाकर पुलिस से लड़–भिड़कर लाशें वापस लाईं। हालांकि पुलिस वालों ने महिलाओं को डराने के लिए उनकी ओर भी हवाई फायर की। फिर भी महिलाओं ने जिद करके लाशें लेने तक पीछा नहीं छोड़ा। गांव में लाकर दोनों नौजवानों का पूरे सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

कामरेड ओयाम मंगु (शिवु)

कामरेड मंगु का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन, बीजापुर जिला के गंगालूर एरिया ग्राम बुरगिल में हुआ था। उनकी उम्र 29 साल थी। इनका गांव गंगालूर से आधा किलोमीटर की दुरी पर है। बचपन से उनका परिचय पार्टी से था।

जब बड़े हुए डीएकेएमएस में शामिल हो गए और कमेटी में भी चुने गए। 2002 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गए। उन्होंने गंगोल एलजीएस में सदस्य के रूप में काम किया। 2004 में उन्हें कम्पनी–1 में तबादला किया गया। वहां उन्हें कम्पनी कमांडर के गार्ड की जिम्मेदारी सौम्पी गई। दो साल गार्ड की जिम्मेदारी निभाने के बाद उन्हें उसी कम्पनी में सेक्शन कमांडर

बनाया गया। वहीं एक साथी कामरेड से शादी कर ली। 2010 में घर देखने आए थे। उस समय वह निहत्थे थे। 21 अक्टूबर 2010 के दिन पुलिस ने अपने एम्बुश में फंसाकर उन पर फायरिंग कर हत्या कर दी।

वह 2004 से कम्पनी–1 में रहते हुए कई सैनिक कार्रवाइयों में शामिल रहा। झाराघाटी, कुदरू, कोंगेरा आदि शौर्यपूर्ण एम्बुशों में उनकी भूमिका रही। 2005 से शुरू होने वाले सलवा जुडूम अभियान का प्रतिरोध करने के लिए गए विशेष प्रतिरोध ी हमलों में भी अपना योगदान दिया।

आइए, कामरेड शिवु की कुरबानी को ऊंचा उठाए रखें और उनके अधूरे मकसद को पूरा करने के लिए जनयुद्ध को तेज करने का संकल्प लें।

कामरेड ओयाम मनकु

कामरेड मनकु (20) का जन्म बुरगिल गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। बचपन से उन्हें क्रांतिकारी गीतों से उन्हें बहुत लगाव था। जब थोड़ा बड़े हुए तो गांव के सीएनएम में शामिल हो गए। गीतों और नाटकों के माध्यम से क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार करते रहे। संगठन के साथ–साथ मिलिशिया में भी सदस्य के तौर पर काम रहे थे। दुश्मन से कभी नहीं डरते थे। हिम्मत के साथ उसका प्रतिरोध करने की बात करते थे। कई प्रतिरोधी कार्रवाइयों में उन्होंने अपना योगदान दिया। कामरेड मनकु की भी 21 अक्टूबर 2010 के दिन कामरेड शिवु के साथ फर्जी मुठभेड़ में हत्या कर दी गई।

कामरेड बज्जी

कामरेड बज्जी (18) का जन्म उत्तर गड़चिरोली डिवीजन के कटेझरी गांव में एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था। उनका गांव पहले से क्रांतिकारी आन्दोलन का केन्द्र रहा है। इसलिए कामरेड बज्जी क्रांतिकारी आन्दोलन के बीच पली थी। वह अपने गांव में चौथीं तक की पढ़ाई करके छोड़ दी। अपने माता-पिता के कामों में हाथ बंटाती थी। वह अपने माता-पिता के साथ गांव में मीटिंगों में जाती थी। बाल संगठन में काम करते हुए 2007 में मिलिशिया सदस्य के तौर पर मिलिशिया में भर्ती हो गई।

कामरेड बज्जी मिलिशिया में रहकर उनको दी गई सभी जिम्मेदारियों को मन लगाकर करती थी। मिलिशिया के साथ हर काम में भागीदारी करती थी। सभाओं, मीटिंगों के दौरान जनता की रक्षा के लिए संतरी करती, प्रचार कामों में भाग लेती, चक्काजाम, बंद के दौरान तोड़-फोड़ आदि कार्रवाइयों में भाग लिया करती थी।

2008 में सरकार ने 'पराक्रम अभियान' के नाम से एक अभियान चलाया था। उस

दौरान पुलिस ने व्यापक तौर पर गांवों के ऊपर हमले करके मार-पीट, गिरफ्तारियां की थीं। इस अभियान के दौरान कामरेड बज्जी के गांव पर भी पुलिस ने हमला किया और कई लोगों की पिटाई की। कुछ लोगों को गिरफ्तार कर थाने में ले गई। धारा 310 के तहत केस लगाया गया। उसी दौरान पुलिस ने गांव की दो युवतियों को भी पकड़ लिया और गड़चिरोली में एसपी के पास एक महीना रखकर छोड़ दिया गया। इस तरह गांव के ऊपर कई हमले करके जनता को डराने की कोशिश की गई। लेकिन जनता और बज्जी ने कभी हिम्मत नहीं हारी। वह अपने साथियों की भी हिम्मत बंधाती थी।

कामरेड बज्जी अक्टूबर 2010 में 18 साल की उम्र में पीलिया रोग से शहीद हो गई। कामरेड बज्जी ने जनता के पक्ष में जो कार्य किए उसे भुलाया नहीं जा सकता। वह अमर है।

जगरगोण्डा (मेट्टागुड़ा) शहीद

'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के तहत दण्डकारण्य के गांवों में सरकारी आतंक का नंगा नाच जारी है। 23 नवम्बर 2010 को जगुरगोण्डा का पारा मेट्टागुड़ा में अपने गांव में फसलें काटने वाले किसानों की सुरक्षा में तैनात जन मिलिशिया के 9 कॉमरेडों की निर्मम हत्या कर सीआरपीएफ और राज्य पुलिस बलों ने इसे अपनी बहुत बड़ी सफलता के रूप में प्रचारित किया। सिलिंगेर गांव के एमला फागू (21), कोरसा मधु (25) व कोरसा सुक्काल (29); तिम्पुरम गांव के कुंजाम सुरेश (29); दुरवोनदरभा गांव के अटामी बंडी (26) व कड़ती सुब्बाल (21), मेस्सुम गांव के उइके दूला (22) व उइके सन्नू (21), वेदिरे गांव के ओयम हिड़मा (18) - ये नौ नव युवक अपने गांव की और गांव

की जनता की रक्षा करने के लिए जन मिलिशिया में काम कर रहे थे। ये सभी निहत्थे थे या छिटफुट परम्परागत हथियारों से लैस थे। और ये लोग हमारी पार्टी के पूर्णकालीन कार्यकर्ता नहीं थे और ताड़िमेटला की कार्रवाई से इनका कोई संबन्ध नहीं था, जैसा कि सरकारी दुष्प्रचार में कहा गया। जबसे बर्बर व फासीवादी सलवा जुडूम अभियान शुरू हुआ था, खास तौर पर तबसे इस तरह लोगों ने गांव-गांव में खुद को मिलिशिया में व्यापक रूप से संगठित कर लिया। यह उनके अस्तित्व को बचाने के लिए जरूरी और जायज भी है। इस तरह के निरीह व गरीब आदिवासी युवकों पर अंधाधुंध गोलियों की बरसात कर सभी को मारकर मुठभेड़ की कहानी गढ़ना और यह कहना कि सीआरपीएफ ने नक्सलवादियों पर बदला लिया, सरकार व पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों के अधिकारियों के दिवालिएपन का साफ सबूत है। आइए, जन मिलिशिया के इन नौ शहीद कॉमरेडों को तहेदिल से श्रद्धांजली पेश करें और उनकी हत्या का बदला लेने का संकल्प दोहराएं।

कामरेड उयका सुक्की (ज्योति)

17 दिसम्बर 2010 को एओबी के पूर्वी डिवीजन में कोरुकोण्डा इलाके के चेरुवूर के पास पुलिस बलों ने पीएलजीए के दस्ते पर हमला किया। इस हमले में कोरुकोण्डा एसीएम कामरेड लता और सीआरसी कम्पनी–1 की सेक्शन डिप्यूटी कमाण्डर कामरेड ज्योति ने दुश्मन से वीरतापूर्वक लड़ते हुए अपने प्राणों को न्यौछावर किया। एक अन्य सदस्य कामरेड शांति और गांव के संगठन नेता कामरेड लक्ष्मणराव को पुलिस वालों ने पकड़कर गोली मार दी। इनमें कामरेड ज्योति दण्डकारण्य में जन्मी थीं जो पार्टी की जरूरतों के मद्देनजर एओबी में जाकर काम कर रही थीं।

छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिला, मल्लेपाड़ गांव में एक गरीब परिवार में जन्म लेने वाली उयका सुक्की ने पहले बाल संगठन में सदस्य बनकर काम किया। उसके बाद कुछ समय तक सीएनएम में काम करते हुए मिलिशिया में सदस्य बनी थीं। 2006 में वह दस्ते में भर्ती हो गईं। उन्होंने अपना नाम ज्योति बदल लिया। पहले उन्होंने बासागुड़ा एलओएस में काम किया था। उसके बाद 2007 में सीआरसी की पहली कम्पनी का गठन होने के बाद कामरेड ज्योति को उसमें सदस्य के रूप में भेजा गया।

तबसे लेकर कामरेड ज्योति ने कम्पनी द्वारा की गई हरेक कार्रवाई में उत्साह के साथ भाग लिया। ऐतिहासिक नयागढ़ आपरेशन में कामरेड ज्योति ने डाक्टर की जिम्मेदारी निभाई। गोसामा की शौर्यपूर्ण लड़ाई में उन्होंने भाग लिया। 2009 में कलिमेला एरिया में हुई मुठभेड़ में भी वह शामिल थीं। एमकेबी एरिया में गोविंदपल्ली में तथा नाल्को पर किए गए हमलों में भी उन्होंने भाग लिया। कोरापुट जिले के सालूर में किए गए ऐम्बुश में उन्होंने असाल्ट टीम की सदस्य के रूप में भाग लिया। पूर्वी

डिवीजन में प्रतिरोधी कार्यक्रम के तहत किल्लमकोट और आरवी नगर में हुई गोलीबारी की घटनाओं में वह शामिल थीं। कई जनविरोधियों और मुखबिरों पर की गई कार्रवाइयों में कामरेड ज्योति ने भाग लिया।

एओबी के पूर्वी डिवीजन में बाक्साइट खदानें खोलने की सरकारी साजिशों के खिलाफ जन आंदोलन का निर्माण करने में कामरेड ज्योति का योगदान रहा। कॉफी बागानों पर कब्जा कर जनता में बांटने के संघर्ष में भी कामरेड ज्योति ने भाग लिया।

अनजान भाषा, अनजान लोग, अनजान इलाका होने के बावजूद कामरेड ज्योति ने सचेतनपूर्वक लोगों के साथ घुलमिलकर काम किया। दण्डकारण्य से आकर पूर्वी पर्वतमाला में अपना खून बहाने वाली कामरेड ज्योति की शहादत का वहां के जन समुदाय सदा गुणगान करते रहेंगे।

कामरेड ओयम रामाल

बीजापुर जिले के गंगालूर एरिया, चिन्ना जोजुर गांव के एक गरीब परिवार में कामरेड ओयम रामाल (12) का जन्म हुआ था। वह बाल संगठन से सीएनम कलाकार के रूप में उभरा था। क्रांतिकारी गीतों और नाटकों के जरिए वह गांवों में प्रदर्शन देता था। उनकी मां का नाम सीको और पिता का नाम सोमलू है। इनकी एक दीदी पीएलजीए में भर्ती होकर काम कर रही हैं, जबकि एक बड़े भाई मिलिशिया में कार्यरत हैं।

इनके गांव के नजदीक में रेड्डी गांव है जहां पुलिस बलों का कैम्प मौजूद है। यहां से वे आसपास के गांवों पर पाशविक हमले करते हैं। इन्हें रोकने के लिए गांव–गांव में तरह–तरह के बूबीट्रैप तैयार कर जनता ने जबर्दस्त प्रतिरोधी संघर्ष छेड़ रखा है। इसमें कामरेड रामाल का भी योगदान है। वह अपने साथी किशोरों को संगठित कर दुश्मन के बारे में समझाते थे। जब गांव में पुलिस बल हमले करने आते हैं तो ये बच्चे पुलिस बलों को कोई बात नहीं बताते थे। पुलिस की खबर जन संगठन के कार्यकर्ताओं और नेतृत्व को दे देते थे।

छोटी उम्र में ही रामल ने एक बड़ा सपना देखा था। जल–जंगल–जमीन पर अधिकार जनता का होना चाहिए। लूटखसोट, दमन, अत्याचार, गरीबी आदि नहीं होनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था को लाना है तो क्रांतिकारी पार्टी के साथ रहना है। उस पार्टी को बचाना है। यह राजनीति कामरेड रामाल ने समझ ली। यहां के गांवों पर दुश्मन के निरंतर हमलों के चलते भी किशोरों में भी यह राजनीतिक सोच आम हो गई है। दिसम्बर 2010 में पुलिस वालों ने इस गांव की जनता पर मोर्टार शेल फेंका था जिसकी चपेट में आकर कामरेड रामाल शहीद हो गए। कामरेड रामाल के सपनों को साकार करने के संकल्प के साथ जनता उसे अंतिम विदाई दी।

कामरेड किशोर (आयतू आत्रम)

4 जनवरी 2011 के दिन केशकाल एरिया के मेच्चानार गांव में मुखबिर की सूचना पर सैकड़ों की संख्या में सशस्त्र बलों ने छापामार दस्ते पर हमला किया। उस हमले में केशकाल एरिया कमेटी सचिव कामरेड किशोर और एरिया कमेटी सदस्य विक्रम बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गए।

कामरेड किशोर (25) का जन्म बीजापुर जिला, गंगालूर एरिया के मोर्रूम गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। मां लिंगे वड्डे और पिता दोन्दा वड्डे ने अपने बेटे का नाम आयतू रखा था। उनका परिवार पहले दन्तेवाड़ा जिला के मोसेम गांव से जमीन के लिए बीजापुर जिला में आकर बस गया। उन्होंने पांचवीं तक पढ़ाई की थी। पढ़ाई का खर्च नहीं उठा पाने की वजह से माता–पिता ने पढ़ाई छुड़वा दी। क्रांतिकारी आन्दोलन से कामरेड किशोर बचपन से ही प्रभावित थे।

जुलाई 2000 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गए। जनयुद्ध को देश के कोने–कोने में फैलाने के लिए जहां जरूरत हो वहां जाना चाहिए, इस चेतना के साथ 2001 में पश्चिम बस्तर से उत्तर बस्तर (अब पूर्व बस्तर) जाकर केशकाल एरिया के बारदा दस्ता के सदस्य बने। उन्होंने पूरे दस साल केशकाल इलाके में काम किया। कामरेड किशोर ने दल सदस्य से अपनी क्रांतिकारी जिन्दगी का सफर शुरू करके राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक तौर पर अपनी समझदारी को बढ़ाते हुए एरिया कमेटी सचिव के तौर पर विकसित हुए। कामरेड किशोर ने केशकाल एरिया कमेटी सदस्य और सचिव के तौर पर सांगठनिक विषयों पर अच्छी पकड़ हासिल कर ली थी। उन्होंने व्यापक जनता को जन संगठनों में संगठित किया और विभिन्न जन संघर्षों में शामिल किया। कोडयुर, भंगापाल, किसकोडो, पाण्डोमेट्टा आदि जगहों में जन–विरोधियों की साजिशों का जनता में पर्दाफाश किया। वह अपने साथियों और जनता के प्रति जितना विनम्र थे वर्ग दुश्मन के प्रति उतना ही कठोर। वह सीधा–सादा,

मेहनती और सभी के साथ मिलजुलकर रहने वाले कामरेड थे। वह खुद सीखते और दूसरों को सिखाने की कोशिश करते थे। वह अपने साथ काम करने वाली एक कामरेड से विवाह किया था। उन्हें भी सभी तरीके से मदद देते थे। फौजी तौर पर भी कामरेड किशोर एक बहादुर सैनिक थे। कई मुठभेड़ों में दुश्मन का बहादुरी के साथ प्रतिरोध किया था। आज कामरेड किशोर हमारे बीच नहीं हैं। परन्तु उनके आदर्श सदा हमें प्रेरणा देते रहेंगे। आइए, उनके सपनों को साकार करने का संकल्प लें।

कामरेड विक्रम (बैजू उसेण्डी)

कामरेड विक्रम का जन्म कांकेर जिला के अंतागढ़ तहसील के रायनार गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। माता–पिता ने उनका नाम बैजू रखा था। बैजू का पार्टी से परिचय बचपन से हुआ था। वह 1999 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गए।

पहले उन्होंने एक नेतृत्वकारी कामरेड की सुरक्षा गार्ड के रूप में काम किया था। कुछ समय बाद घरेलू समस्याओं की वजह घर में रहकर काम करने का फैसला लेकर पार्टी से वापस चला गए थे। वह गांव में जन संगठन में रहकर काम करने लगे थे। जब 2007 में मिलिशिया प्लाटून का गठन हुआ कामरेड बैजु उसमें कमांडर बने थे। मिलिशिया प्लाटून कमांडर के तौर पर द्वितीय बल के साथ कई कार्रवाइयों में भाग लिया। युवक–युवतियों को संगठित कर मिलिशिया में शामिल किया। एक बार द्वितीय बल के साथ कार्रवाई की तैयारी कर रहे थे। पुलिस ने उनके मुकाम पर हमला किया। अचानक हुए हमले से दस्ता कमांडर घबराकर अपना बंदूक छोड़कर भाग गया। तब कामरेड विक्रम ने पहलकदमी करते हुए उनकी बंदूक को लेकर फायरिंग करते हुए बाकी दस्ता सदस्यों और मिलिशिया को सुरक्षित वहां से निकाल दिया। उसी समय एड़का पुलिस कैम्प पर सैकड़ों मिलिशिया को लेकर खुद नेतृत्व करते हुए दो दिन फायरिंग करके दुश्मन को परेशान किया। इससे मिलिशिया के अन्दर एक उत्साह का वातावरण बन गया। इस घटना के बाद एरिया में कई जगहों पर मिलिशिया प्लाटूनों का गठन हुआ। इस तरह कामरेड विक्रम ने कई कार्रवाइयों में पहलकदमी के साथ भाग लिया। 2008 में दुबारा पेशेवर क्रांतिकारी बनने का फैसला कर पीएलजीए में भर्ती हो गए। एरिया इनस्ट्रक्टर की जिम्मेदारी लेकर मिलिशिया को प्रशिक्षण दिया। और बेस फोर्स के द्वारा मेन फोर्स को मजबूत करने

का प्रयास किया। उन्होंने मिलिशिया से कई कामरेडों को पीएलजीए में पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं के रूप में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया। एरिया कमांडर–इन–चीफ रहकर मिलिशिया प्लाटूनों को सुचारू तौर पर चलाने का प्रयास किया। खुफिया विभाग की जिम्मेदारी लेकर दुश्मन की गतिविधियों और मुखबिर नेटवर्क को ध्वस्त करने की कोशिश की। 2009 में महला गांव में हुई मुठभेड़ में निडरता से लड़ते हुए कम्पनी को सुरक्षित रिट्रीट करवाया। इस तरह कामरेड विक्रम फौजी तौर पर सदा पहलकदमी करते हुए अच्छे सुझाव देते थे। कैडरों के साथ हमेशा अच्छा बरताव करते थे। अपनी जीवनसाथी को भी पार्टी में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया और कई मायनों में उनकी मदद की। आइए, कामरेड विक्रम आदर्शों को आत्मसात करते हुए उनके सपनों को पूरा करने का शपथ लें।

कामरेड कोरसा सन्नू

पश्चिम बस्तर डिवीजन, गंगालूर एरिया मुरुंगा गांव में कामरेड कोरसा सन्नू (26) पला–बढ़ा था। सन्नू अनाथ था। रिश्तेदारों के यहां बड़ा हुआ। वह शुरू में बाल संगठन में था। बाद में डीएकेएमएस में आ गया। साथ ही, भूमकाल मिलिशिया में सदस्य बन गया। 2005 में शुरू हुए सलवा जुडूम दमन अभियान को हराने के लिए उसने जनता और मिलिशिया को संगठित रखने में योगदान दिया। वह क्रांतिकारी राजनति को समझते हुए अपने साथियों को समझाया करता था।

8 फरवरी 2011 को चेरपाल कैम्प से लाइसेंसी हत्यारों के दल निकले थे। आपरेशन ग्रीनहंट के नाम से जनता पर जारी युद्ध के हिस्से के तौर पर उन्होंने मुरुंगा गांव को घेरकर फायरिंग शुरू की। इसमें कामरेड सन्नू को गोली लगने से वहीं गिर पड़ा। जनता पर युद्ध छेड़कर, निर्मम हत्याएं करके इन सभी जंगल–पहाड़ों को कार्पोरेट लूट के हवाले करने की साजिशों को बस्तरिया जनता कभी सफल नहीं होने देगी। सन्नू जैसे युवाओं के खून बेकार नहीं जाएगा। वह सागर बनकर, तूफान बनकर सोनिया–मनमोहन–चिदम्बरम गिरोह को बहा ले जाएगा।

कामरेड चन्दना

दण्डकारण्य की विद्या विभाग कमेटी की सदस्य, रीजनल मास टीम की इंचार्ज, डिवीजनल कमेटी स्तर की कार्यकर्ता कामरेड चंदना की 19 फरवरी 2011 में दुखद मृत्यु हुई।

कामरेड चंदना गड़चिरोली जिला एटापल्ली तहसील के बूर्गी गांव के

मेट्टामी परिवार में 1984 में जन्मी थीं। माता–पिता ने उनका नाम छाया रखा था। तोड़सा कन्याशाला में 10वीं तक की पढ़ाई की थी। 2002 में पढ़ाई छोड़कर घर में रहने लगीं। तभी उनका परिचय पार्टी से हुआ। पार्टी की राजनीति से प्रभावित होकर 2003 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर भर्ती हो गईं। उन्होंने एक साल तक एटापल्ली दस्ता में काम किया।

दण्डकारण्य में मोबाइल अकादमिक स्कूलें (मास) शुरू हो जाने से शिक्षकों की आवश्यकता बढ़ी। पार्टी ने उन्हें दक्षिण रीजन में मास शिक्षिका के तौर बदलने का निर्णय लिया। वह खुशी से वहां जाने के लिए तैयार हो गईं। वहां उन्हें मास टीम की इंचार्ज की जिम्मेदारी दी गई। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए बड़ी लगन से काम किया। राजनीतिक अध्ययन को जारी रखा और राजनीतिक तौर पर विकसित हुईं। उनके राजनीतिक विकास को देखते हुए उन्हें डिवीजनल कमेटी स्तर में पदोन्नति देकर दण्डकारण्य विद्या विभाग में सदस्य नियुक्त करने का फैसला लिया गया था। इस जिम्मेदारी को लेने से पहले ही वह शहीद हो गईं।

कामरेड चंदना मेहनती और मिलनसार स्वभाव की कामरेड थीं। उनकी असमय मौत से हुई रिक्तता को भरने के लिए दर्जनों शिक्षकों को तैयार करेंगे। उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लेंगे।

कामरेड तुरसिंग तुलावी

गड़चिरोली जिला टिप्रागढ़ एरिया के बंदहुर गांव के एक गरीब किसान परिवार में तुरसिंग का जन्म हुआ था। जबसे पार्टी इस इलाके में आई तब से कामरेड तुरसिंग का परिवार पार्टी का हमदर्द रहा है और पार्टी से घनिष्ठ सम्बन्ध था। कामरेड मनोज जो 2007 में सीताटोला मुठभेड़ में शहीद हो गए कामरेड तुरसिंग के बड़े भाई थे। बचपन से कामरेड तुरसिंग क्रांतिकारी आन्दोलन से प्रभावित थे।

तुरसिंग बड़े होने के बाद गांव के डीएकेएमएस में शामिल हो गए। संगठन की गतिविधियों में पहलकदमी के साथ भाग लेते थे। उन्हें जो भी जिम्मेदारी दी जाती आगे–पीछे हुए बिना ले लेते थे। बाद में वे पंचायत स्तर की डीएकेएमएस कमेटी के

सदस्य के तौर चुने गए। कामरेड तुरसिंग संगठन को सुदृढ़ करने के लिए बहुत ध्यान देते थे। जनता को संगठन में संगठित करते थे। दुश्मन के हमलों, दमन अभियानों से नहीं डरते थे। जनता की जनवादी सत्ता की स्थपना का सपना देखते थे। सदा जनता की मदद करते थे। 1 मार्च 2011 के दिन जहरीले सांप के डंसने से कामरेड तुरसिंग की मौत हो गई। कामरेड तुरसिंग को लाल सलाम।

कामरेड दसरू (विलास)

उत्तर गड़चिरोली के धानोरा तहसील, चातगांव एरिया, चिमिरकल गांव के मध्यम किसान परिवार में दसरू का जन्म हुआ था। उनके पिता बचपन में चल बसे। कामरेड दसरू पांच भाई-बहनों में तीसरे थे। कामरेड दसरू के तीन बच्चे हैं।

कामरेड दसरू का परिवार 1980 से ही क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़ा है। दसरू 2003 से डीएकेएमएस में काम रहे थे। कामरेड दसरू संगठन में सक्रिय रूप से काम रहे थे। यह मालूम होने के बाद पुलिस उसके पीछे पड़ी थी। 2006 में कामरेड दसरू को पकड़ने के लिए आ रही पुलिस ने उनके गांव के पांच युवकों को रास्ते में गिरफ्तार किया। बाद में गांव में आकर कामरेड दसरू को भी गिरफ्तार कर लिया और उनकी बुरी तरह पिटाई की। उनके खेत के खलिहान में ले जाकर बहुत पिटाई करके वहां से एक भरमार और कुछ सामान जब्त कर ले गई। 6 महीना जेल में रखा। जेल से आने के बाद भी कामरेड दसरू संगठन में सक्रिय रूप से काम करने लगे। जब 2007 में यहां पहली बार क्रांतिकारी जनताना सरकार बनी उसमें वह उपाध्यक्ष चुने गए। जनताना सरकार के उपाध्यक्ष रहकर जनता की जिन्दगी में सुधार लाने लिए कई क्रांतिकारी सुधार कार्यक्रमों की योजनाएं बनाकर उन्हें लागू किए। जनता की समस्याओं को हल करने के लिए कमेटी में चर्चा करके हल करने का प्रयास किया। जनता की हर तकलीफ को दूर करने की कोशिश की। अपनी सेवा भावना की वजह से जनता के दिलों में कामरेड दसरू एक लोकप्रिय नेता के तौर पर उभरे।

4 मार्च 2011 के दिन एक गाड़ी दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गए। और 12 मार्च 2011 के दिन सदा के लिए आंखें मूंद लीं। कामरेड दसरू को आसपास के गांवों की जनता ने श्रद्धांजलि पेश की और उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प दोहराया।

कामरेड माड़वी मिसड़ाल

पश्चिम बस्तर डिवीजन के उरेपाल गांव में मां कोवो और पिता सन्ने का बेटा था माडवी मिसड़ाल। बचपन से ही वह पार्टी की गतिविधियों में शामिल था।

2008 में उसे पुलिस ने उस समय गिरफ्तार किया जब वह खलिहान में धान की मिंजाई कर रहे थे। उसे झूठे केस में रायपुर केन्द्रीय जेल में बंद कर दिया। जेल के अमानवीय हालात के चलते उनका जेल के अंदर ही 5 मार्च 2011 को देहांत हो गया। क्रांतिकारी परम्परा के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया।

ताड़िमेटला विध्वंसकाण्ड

दक्षिण बस्तर का ताड़िमेटला इलाका क्रांतिकारी आंदोलन के मजबूत गढ़ों में से एक है। यहां पर जनता ने पिछले तीन दशकों से कई संघर्ष किए और कई कामयाबियां हासिल कीं। आज क्रांतिकारी जनताना सरकार के नेतृत्व में यहां की जनता अपने विकास का फैसला खुद कर रही है। 6 अप्रैल 2010 को किए गए ऐतिहासिक ताड़िमेटला-मुकरम ऐम्बुश, जिसमें 76 अर्धसैनिक बलों का सफाया किया गया, से यह इलाका देश भर में चर्चा के केन्द्र में आया था। तबसे शोषक सरकारों ने इस क्षेत्र की जनता का कत्लेआम करने की साजिशें तेज कीं। व्यापक दमन की योजनाएं बनाईं। इसके तहत मार्च 2011 में 11 से 16 तारीख तक कोया कमाण्डो, कोबरा, एसटीएफ आदि बलों ने आतंक का तांडव मचाते हुए इस क्षेत्र के मोरपल्ली, पुलानपाड़, तिम्मापुरम और ताड़िमेटला में 300 से ज्यादा घरों को जला दिया। कई अत्याचार किए। तीन आदिवासियों - मोरपल्ली के माड़वी सुला (28), पुलानपाड़ के बाड़से भीमा (29) और मानु यादव (28) की हत्या की। इस दरमियान 14 मार्च को तिम्मापुरम के पास पीएलजीए इन आतंकी बलों पर जवाबी हमला किया जिसमें तीन कोया कमाण्डो मारे गए और 9 घायल हो गए। इस कार्रवाई में पीएलजीए के सेक्शन उपकमाण्डर कामरेड मुचाकी गंगाल शहीद हो गए।

कामरेड माड़वी सुला

कामरेड सुला ग्राम मोरपल्ली के एक गरीब किसान थे। सुला के माता-पिता बचपन में ही चल बसे। उनके तीन भाई-बहन हैं। आदिवासी रिवाज के मुताबिक सुला की शादी उनके मामा की लड़की से करा दी गई। वह एक बेटे के बाप थे।

सुला 2006 से संगठन के कामकाजों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे। सलवा जुडूम गुण्डों के हमलों से गांव की रक्षा के लिए ग्राम रक्षक दल के सदस्य के तौर पर भी कामरेड सुला ने काम किया। सलवा जुडूम हमलों से डर कर भाग रही जनता की हिम्मत बंधाते थे। 2011 के भूमि सुधार अभियान को सफल करने के लिए उन्होंने पहलकदमी के साथ काम किया। 11 मार्च 2011 के दिन चिंतलनार क्षेत्र में आतंकी कोया कमांडो बलों ने हमला कर कई घरों को जला दिया। कई लोगों के साथ मारपीट की। उनके डर से सुला पेड़ पर चढ़कर बैठे हुए थे। दरिन्दों ने पेड़ के ऊपर बैठे सुला

को वहीं फायरिंग कर चले गए। बाद में जनता ने उनकी लाश को पेड़ से उतारकर अंतिम संस्कार किया।

कामरेड बाड़से भीमा

कामरेड बाड़से भीमा पुलानपाड़ गांव के निवासी थे। उनके पिता का नाम बाड़से देवा और मां का नाम अड़मे है। वह शादीशुदा थे और एक नन्ही बच्ची के बाप। 13 मार्च 2011 को भीमा और मानु यादव को सरकारी बलों ने उनके घरों से उठा लिया। अपने साथ में तिम्मापुरम तक ले गए थे। वहां पर पीएलजीए के हाथों मिली पराजय से बौखलाकर कोया कमाण्डों ने 15 मार्च को भीमा को पाशविकता के साथ कुल्हाड़ियों से काटकर फेंक दिया।

कामरेड मानु यादव

कामरेड मानु यादव भी पुलानपाड़ के निवासी थे। घर में माता-पिता, पत्नी, तीन बेटों और दो बेटियों के साथ वह रह रहे थे। मानु को भी भीमा के साथ में ही पकड़ लिया गया। उन्हें माओवादी के रूप में दिखाने के लिए अपने साथ लाई वर्दी पहनाकर गोली मार दी। और लाश को चिंतलनार ले जाकर 'इनामी नक्सली' को मारने का दावा किया।

कामरेड मुचाकी गंगा

कामरेड गंगा (23) का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन, कोंटा एरिया रेगडगट्टा गांव में हुआ था। मुचाकी वारे और मुचाकी कोसी दम्पति की पहली संतान थे। उनके तीन भाई हैं। कामरेड गंगा अपने गांव में बाल संगठन में काम करते हुए मिलिशिया में भर्ती हो गये। सलवा जुडूम के समय मिलिशिया प्लाटून के साथ दिन–रात संतरी, गश्त करके दुश्मन के हमलों से जनता की रक्षा की। भेज्जी, विंजरम, एर्राबोर, दोरनापाल कैम्पों के सशस्त्र बलों व सलवा जुडूम गुण्डों का मिलिशिया के साथ बहादुरी से प्रतिरोध किया। एर्राबोर शिविर में 2006 को पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में भाग लेकर दुश्मनों को खत्म करने में अपना योगदान दिया। भेज्जी थाना के पुलिस व सीआरपीए बलों ने रेगड़गट्टा गांव में हमला करके 50 घरों को जलाया, संपत्तियों को लूटा, ध्वस्त किया और दो किसानों की हत्या की। वापस जा रहे सशस्त्र बलों पर प्लाटून–4 ने जवाबी हमला करके दो जवानों को खत्म करके सबक सिखाया। इस हमले में कामरेड गंगा ने बहादुरी के साथ भाग लिया था।

पार्टी द्वारा विभिन्न संदर्भो में दिए जाने वाले बंद, चक्काजाम आदि के आह्वानों

और अन्य विरोध दिवसों को सफल करने के लिए तय किए गए प्रोग्रामों में उत्साह के साथ भाग लेते थे। प्रचार अभियानों में भाग लेकर क्रांतिकारी आन्दोलन के महत्व को जनता तक पहुंचाया करते थे।

रेगड़गट्टा गांव शुरू से क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए मजबूत गांवों में से एक रहा है। पिछले तीन दशकों से इस गांव से कई साथी पार्टी और पीएलजीए में भर्ती होकर काम कर रहे हैं। उन्हें देख कामरेड गंगा बचपन से बहुत प्रभावित थे। बड़े होने के बाद जनवरी 2009 में वह भी पेशेवर क्रांतिकारी बनकर कोन्टा दस्ते में शामिल हो गये। एक साल कोन्टा एलओएस में काम किया। बाद में पार्टी ने उन्हें प्लाटून–10 में भेजने का निर्णय लिया। कामरेड गंगा प्लाटून–10 में सैनिक नियमों, फौजी तकनीकों की बारीकियों को सीखने का प्रयास किया। उन्होंने चिन्तलनार और जेगुरगुण्डा इलाके में किए गए सभी हमलों में शामिल होकर उन्हें सफल करने में अपना योगदान दिया। 6 अप्रैल 2010 के ऐतिहासिक ताड़िमेटला–मुकरम हमले के दौरान सेकण्डरी बल के साथ फ्लैंक हमले में भाग लेकर महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। जून 2010 में उसूर रोड ओपनिंग पर आई पुलिस पार्टी पर किए गए हमले में शामिल होकर दुश्मन बलों को खत्म किया। इस घटना में प्लाटून कमांडर मड़काम हिड़मा शहीद हो गए थे। फौजी कार्रवाइयों में कामरेड गंगा अपनी जान की परवाह किए बिना निडरता के साथ भाग लेकर सफल करने का प्रयास करते थे। उनकी मिलिटरी और राजनीतिक समझदारी को देखते हुए उन्हें सेक्शन डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई।

13 मार्च 2011 को तिम्मापुरम के पास चिन्तलनार इलाके में मोरपल्ली, पुल्लनपाड़, तिम्मापुरम, ताड़मेटला गांवों पर हमला करके आतंक मचा रहे सशस्त्र बलों पर हमला किया गया। कामरेड गंगा सेक्शन डिप्यूटी कमांडर के तौर पर अपने सेक्शन का नेतृत्व किया था। वहां कामरेड गंगा ने सरकारी सशस्त्र बलों को दूसरे गांव की ओर एडवांस होने से रोककर तिम्मापुर वापस जाने को बाध्य किया था। 14 मार्च के दिन इन्हीं बलों पर प्रधान और सेकण्डरी बलों ने हमला किया। इस हमले में दुश्मन पर बहादुरी से फायरिंग करते हुए आगे बढ़ रहे कामरेड गंगा को गोली लगने से वह मौके पर ही शहीद हो गये। पीएलजीए ने चार कोया कमांडो को खत्म कर, 9 को घायल किया और तीन हथियार जब्त कर लिए। कामरेड गंगा के शव को लाकर 15 मार्च 2011 को क्रांतिकारी परम्परा से अंतिम संस्कार किया गया। उनके अंतिम संस्कार में सैकड़ों जनता शामिल हुई और कामरेड गंगा के बलिदान को ऊंचा उठाने, उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया।

कामरेड विक्रम

कामरेड विक्रम का जन्म उत्तर गड़चिरोली डिवीजन के चातगांव एरिया के कानेला गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। माता-पिता उनको नानू के नाम से पुकारते थे। उनके परिवार की स्थिति बहुत बुरी थी। कुछ साल पहले बीमारियों के चलते उनकी छोटी बहन और भाई की असमय मृत्यु हुई थी।

कामरेड नानू बचपन से क्रांतिकारी गतिविधियों के बीच बड़े हुए थे। डीएकेएमएस में काम करते हुए उन्होंने मिलिशिया सदस्य के तौर पर भी गांव में अपना योगदान दिया। कामरेड नानू 2003 से संगठन के कामकाज में सक्रिय रूप से काम करने लगे थे। उनके कामकाज को देखते हुए संगठन ने उन्हें पंचायत स्तर की डीएकेएमएस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में चुन लिया। कमेटी अध्यक्ष के तौर पर उन्होंने अपनी जिम्मदारियों को भलीभांति पूरा करने की कोशिश की। जनता को संगठित करते थे और जन संघर्षों में शामिल करते थे। घर की परिस्थितियां कितनी भी खराब होने पर भी संगठन के कामों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। 13 मार्च 2011 के दिन जब वह तेन्दुपत्ता की बूटा कटाई के लिए गए थे जहरीला सांप काटने से शहीद हो गए। आइए, कामरेड नानू को लाल-लाल जोहार अर्पित करें।

कामरेड पोड़ियम बण्डी

कामरेड बण्डी का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन के कोन्टा तहसील के ग्राम पोलमपल्ली के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। कामरेड बण्डी अपने माता-पिता का आखरी बेटा था। उनके माता-पिता बचपन में ही गुजर गए। उनके भैया और दीदी ने उनको पाला-पोसा। कामरेड बण्डी अपनी जीविका चलाने के लिए टैक्सी के कण्डक्टर का काम किया और हाट बाजार में चाय ठेला लगाकर अपनी रोजमर्रे की जरूरतों को पूरा करता था।

वह बचपन से क्रांतिकारी गतिविधियों को देखते हुए बड़ा हुआ। गांव में हर मीटिंग में शामिल होता था। क्रांतिकारी राजनीति उन्हें बहुत प्रभावित करती। जब कामरेड बण्डी बड़ा हुआ मिलिशिया में शामिल हो गया और 2007 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर भर्ती हो गया। जन मिलिशिया में एक साल सदस्य के तौर पर काम करने के बाद उन्हें दोरनापाल एलओएस सदस्य के तौर पर कोन्टा एरिया से बदला गया। वहां भी कामरेड बण्डी ने पूरी लगन के साथ काम किया। अपने साथियों के साथ मिलजुल कर रहना, हर काम में शामिल होना, जनता में घुलमिल जाना और कड़ी मेहनत करना उनका

स्वभाव था। 2008 में पार्टी ने आन्दोलन का विस्तार केरलापाल इलाके में किया। कामरेड बण्डी को भी केरलापाल इलाके में भेजा गया। 2008 जुलाई में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई थी। सितम्बर 2008 में सुकमा में एक एक्शन के लिए जाकर कामरेड बण्डी और अन्य तीन कामरेड्स दुश्मन के हाथों पकड़े गए। 14 महीने जगदलपुर जेल में रहने के बाद रिहा होकर आए और आते ही फिर से पार्टी से सम्पर्क कर क्रांतिकारी संघर्ष में जुड़ गए। कामरेड बण्डी 13 मार्च 2011 को गंभीर बीमारी के शिकार हो गए। बण्डी अब हमारे बीच नहीं है, पर उनका दिखाया हुआ रास्ता हम सभी को प्रेरित करता रहेगा।

कामरेड कुंजाम कमलू

पश्चिम बस्तर डिवीजन, भैरमगढ़ एरिया के पुल्लुम गांव के एक गरीब परिवार में कामरेड कुंजाम कमलू (12) पला–बढ़ा था। पुल्लुम उन गांवों में शामिल हैं जो क्रांतिकारी आंदोलन के मजबूत गढ़ माने जाते हैं। कमलू की मां बीमारी से चल बसी थीं। पांच भाईयों और दो बहनों में वह सबसे छोटा था। कमलू के पिता जन संगठन में कार्यरत थे। 2005 में सलवा जुडूम शुरू होने के बाद वे मिलिशिया में शामिल हो गए थे। वे अपने बेटे को पार्टी की राजनीति समझाते थे और सलवा जुडूम की बुरी मंशाओं के बारे में समझाया करते थे। 16 मार्च 2011 को दुश्मन ने जब गांव पर हमला करके अंधाधुंध फायरिंग की उसमें नन्हा कामरेड कमलू शहीद हो गया। जोहार कामरेड कमलू!

कामरेड प्रभाकर

कामरेड प्रभाकर (22) का जन्म बासागुड़ा एरिया के चिपुरबट्टी गांव के पुनेम परिवार में हुआ था। प्रभाकर भीमे और पाण्डू दम्पति के सात बच्चों में चौथी संतान थे। माता पिता ने प्यार से उनका नाम सेन्दल रखा था। उन्होंने अपने गांव में पांचवीं तक पढ़ाई की थी। पढ़ाई छोड़ अपने माता–पिता के कामों में हाथ बंटाते थे। प्रभाकर बचपन से बड़े होनहार और चंचल स्वभाव के थे। बाल संगठन के अध्यक्ष के तौर पर गांव के सभी बच्चों को जमा करके

क्रांतिकारी गीतों, नारों को सिखाते थे। जब दस्ता गांव में आती तुरन्त दौड़कर आ जाते थे। दस्ते के द्वारा बताए बातों को ध्यान से सुनता था। बचपन से क्रांतिकारी माहौल के बीच पले-बढ़े होने की वजह से वह क्रांतिकारी राजनीति से बहुत आकर्षित थे। जब बड़े हो गए गांव के मिलिशिया में भर्ती हो गये और बाद में मिलिशिया प्लाटून के सेक्शन कमांडर बन गये। मिलिशिया में रहते हुए पीएलजीए के साथ कई कार्रवाइयों में भाग लिया। अपने मिलिशिया का नेतृत्व करते हुए कई एसपीओ व गुण्डों को पकड़कर पीएलजीए और जनताना सरकार को सौंपा था। उनके मन में बचपन से पीएलजीए में भर्ती होने की इच्छा थी। उनकी बड़ी दीदी क्रांतिकारी आन्दोलन में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पहले से काम कर रही थीं। प्रभाकर ने भी पेशेवर क्रांतिकारी बनने का प्रस्ताव कमेटी के आगे रखा। और अक्टूबर 2006 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गये।

पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने के बाद कामरेड प्रभाकर ने कई मुठभेड़ों और कार्रवाइयों में भाग लिया और हिम्मत के साथ लड़ा। बासागुड़ा के पास किए गए एम्बुश में, जेगुरगुण्डा, कोडमेर आदि मुठभेड़ों में कामरेड प्रभाकर ने निडरता के साथ लड़ा। 2007 में उन्हें जेगुरगुण्डा एरिया से किष्टारम प्लाटून-8 में सदस्य के तौर पर बदला गया। कामरेड प्रभाकर ने ताड़मेट्ला, भट्टिगुड़ा, वीरापुरम, बंडा-1, आसिरगुड़ा, सिंगनमड़गू आदि कई एम्बुशों में भाग लिया। 2009 आखरी में उन्हें प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नति दी गई और वहां से एक्शन टीम में बदला गया था।

कामरेड प्रभाकर एक काम के सिलसिले में दल के साथ 23 मार्च को पूर्व बस्तर के केशकाल इलाके के ग्राम कुल्लेनार गए हुए थे। वहां पर एक मुखबिर से सूचना पाकर सैकड़ों पुलिस बलों ने दस्ता के जाने के रास्ते में घात लगाए बैठा। पूरा दल पुलिसिया ऐम्बुश में फंस गया। लेकिन कामरेड प्रभाकर ने बहादुरी का परिचय देते हुए आखिरी दम तक दुश्मन का मुकाबला किया। आखिर में जब उनके पास गोलियां खत्म हुई थीं तब दुश्मन ने उन्हें और कामरेड रमेश को घेरकर नजदीक से गोली मार दी। इन दोनों कामरेडों ने अदम्य साहस के साथ लड़ते हुए अपनी जान कुरबान कर दी और इसकी बदौलत दल के बाकी सदस्यों को ऐम्बुश से बचकर निकल जाने का मौका मिला। आइए, कामरेड प्रभाकर की वीरतापूर्ण शहादत को ऊंचा उठाएं।

कामरेड रमेश

कामरेड रमेश (20) का जन्म पूर्व बस्तर डिवीजन, कुदुर एरिया के तुरुसमेट्टा गांव में हुआ था। वह एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार से आए थे। घर में उनका नाम रामनाथ पोटावी था। घर पर उन्होंने पांचवीं तक की पढ़ाई की। 2007 में वह गांव के ग्राम रक्षा दल का सदस्य बन गए। बाद में उन्हें उस दल का उप कमाण्डर बनाया गया। 2009 में उन्होंने पेशेवर क्रांतिकारी बनने का फैसला लिया। उन्हें एलजीएस सदस्य बनाया गया। उनकी सक्रियता को देखते हुए उन्हें प्रशिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने कई गांवों में मिलिशिया सदस्यों को सैन्य प्रशिक्षण दिया। पार्टी जो भी काम सौम्पती वह पूरी लगन के साथ पूरा किया करते थे। दस्ता में भर्ती होने के बाद अध्ययन करने और राजनीतिक रूप से विकसित होने में वो एक आदर्श कामरेड के रूप में रहे। नए विषयों को सीखने में वो एक कुशल कामरेड थे। उनके कुछ सगे-सम्बन्धियों ने कामरेड रमेश को पार्टी में काम न करने, घर चले आने की सलाह दी थी। लेकिन उन्होंने इसे नकार दिया और अपनी जिंदगी को जनता की मुक्ति के लिए समर्पित करने का ऐलान किया। कुल्लेनार की लड़ाई में कामरेड रमेश ने कामरेड प्रभाकर के साथ मिलकर दुश्मन के नाकों चना चबवाया। कई घण्टों तक इन दोनों कामरेडों ने दुश्मन को आगे बढ़ने नहीं दिया। दो सौ से ज्यादा संख्या में रहे पुलिस बलों को इन दो कामरेडों के प्रतिरोध को काबू करने में पसीने छूट गए। जब तक इन दोनों कामरेडों की रायफलें आग उगलती रहीं तब तक वे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सके थे। दुश्मन ने इन दोनों कामरेडों को मारकर इसे बड़ी सफलता के रूप में प्रचारित किया। कुल्लेनार और आसपास की जनता ने कामरेड प्रभाकर और रमेश की बहादुरी भरी कुरबानी से बेहद प्रभावित हुई। ऐम्बुश से बच निकलने वाले बाकी सभी कामरेडों को सुरक्षित बाहर भेजने में जनता का सक्रिय योगदान रहा। आइए, इन दोनों कामरेडों के शौर्यपूर्ण बलिदान को लाल-लाल जोहार पेश करें।

कामरेड नागेश

19 अप्रैल 2011 के दिन कोब्रामेंढा के पास सी–60 और कोबरा कमांडो बलों के साथ हुई मुठभेड़ में एक कमांडो को मारकर, 5 अन्य को घायल करके कामरेड्स नागेश, मंजू, मंगल शहीद हो गए।

कामरेड नागेश गड़चिरोली जिला एटापल्ली तहसील के पिपिल बूर्गी गांव के एक गरीब किसान परिवार में जन्मे थे। लुटेरी सरकार द्वारा आदिवासियों का

शोषण, दमन, उपेक्षा आदि कामरेड नागेश ने बचपन से देखा था। इन सबसे उनके मन में शोषक सरकार के प्रति नफरत की भावना थी। उनका गांव शुरू से क्रांतिकारी आन्दोलन में सक्रिय भागीदार रहा है। वहां पर कामरेड नागेश ने जन संगठन में सदस्य बनकर जन आन्दोलनों में आगे रहकर नेतृत्व किया था। इस गांव ने क्रांतिकारी आन्दोलन को कई नेतृत्वकारी कैडरों को दिया। और पीएलजीए के लिए भी एक स्रोत है। उनके भैया कामरेड लालचन्द 1994 में तेन्दुपत्ता ठेकेदार की गद्दारी से हुई मुठभेड़ में शहीद हुए थे। उसी साल कामरेड नागेश भी छापामार दस्ते में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर भर्ती हो गए। आते ही उन्हें बालाघाट इलाके में भेजा गया। मेहनती, सहनशील, किसी भी काम को जिद करके पूरा करने के अपने स्वाभाव की वजह से कामरेड नागेश अपने साथियों में विश्वसनीय बने थे। कुछ समय के लिए उन्होंने एक नेतृत्वकारी कामरेड के सुरक्षा गार्ड के तौर पर काम किया। वहां रहते हुए उन्होंने अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ाने का प्रयास किया। गार्ड से छुट्टी होने के बाद दस्ता में सदस्य के रूप में काम किया। युद्ध से संबंधित तकनीकों को सीखने का प्रयास किया। बंदूक पकड़कर सिर्फ फायरिंग करना ही नहीं, उन्हें सुधारना भी सीखा। ऐम्बुश, रेड, एक्शन आदि सैनिक कार्रवाइयों में पहलकदमी के साथ भाग लेते थे। हर कार्रवाई से सबक लेते हुए एक अच्छे कमांडर के रूप में विकसित हुए थे। उत्तर गड़चिरोली–गोंदिया डिवीजनों में किए गए कई कार्रवाइयों में कामरेड नागेश ने भाग लिया और उन्हें सफल करने के लिए अपना पूरा योगदान दिया। रेक्की, कार्रवाइयों की योजनाएं बनाने और उन्हें अमल करने में कामरेड नागेश की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने छोटी टीमों से लेकर बड़े फार्मेशनों में किए कार्रवाइयों का अनुभव हासिल किया था। पार्टी की पद्धतियों और अनुशासान का कड़ाई से पालन करते थे। उनका उल्लंघन करने वालों की आलोचना करते थे। उन्हें सौंपे गए कामों को कठिन परिस्थितियों में भी जिद के साथ पूरा करने की कोशिश करते थे।

केन्द्रीय कमेटी के आह्वान पर पश्चिम घाट में क्रांतिकारी संघर्ष का विस्तार करने के लिए कामरेड नागेश खुशी से जाने के लिए तैयार हुए। कामरेड नागेश अपने मिलनसार स्वाभाव की वजह से जल्द ही वहां के कामरेडों के साथ

घुलमिल गए और सबका दिल जीत लिया। वहां उन्होंने कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों के कामरेडों को सैनिक प्रशिक्षण दिया। और वहां कई सैनिक कार्रवाइयों में भाग लिया। एक साधारण सदस्य से अपनी क्रांतिकारी जिन्दगी शुरू करके डिवीजनल कमेटी सदस्य, पीएलजीए का डिवीजनल कमांडर–इन–चीफ के तौर पर विकसित हुए। वह सिर्फ एक पीएलजीए कमांडर ही नहीं थे बल्कि सच्चे जन नेता भी थे। कई मौकों पर जनता को जन आन्दोलनों में गोलबंद किया और उनका प्रत्यक्ष नेतृत्व भी किया। गड़चिरोली से लेकर बालाघाट तक जहां–जहां उन्होंने काम किया, जनता उनकी मौत की खबर सुनकर बहुत दुखी हुई। अपने प्यारे बेटे की मौत का बदला लेने का संकल्प लिया।

कामरेड मंजू

कोब्रामेंढा मुठभेड़ में कामरेड नागेश के साथ अपनी जान कुरबान करने वाली कामरेड मंजू भी पिपिल बूर्गी गांव के ही एक मध्यम किसान परिवार में जन्मी थीं। मां पौरी और पिता डुंगा के 7 बच्चों में मंजू दूसरी संतान थीं। माता–पिता ने उनका नाम जनको रखा था। वह अपने गांव में चौथी तक पढ़ी थीं। गांव से उनके कई सगे–संबंधी पार्टी में भर्ती होकर जनता की सेवा कर रहे हैं। उनकी प्रेरणा से वह पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर भर्ती हो गईं। साथ में शहीद होने वाले कामरेड नागेश उनके सगे मामा थे। शहीद चंदना उनकी बुआ थीं। रक्त संबंध को वर्ग संबंध में बदलकर कामरेड मंजू ने क्रांतिकारी संघर्ष में अपनी जान कुरबान करने का निर्णय लिया। शहादत के समय वह सिर्फ 17 साल की थीं।

कामरेड मंगल

कामरेड मंगल का जन्म माड़ डिवीजन, नारायणपुर जिला के बालेवेडा गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। लालू वड्डे और कारी वड्डे दम्पति की वह दूसरी संतान थे। बचपन से वह पार्टी में आने की जिद करते रहे। 2007 में वह पार्टी में आ गये। कुछ समय के लिए उन्होंने जोन की तकनीकी टीम में

रहकर काम किया। बाद में उन्हें माड़ डिवीजन के परालकोट एलजीएस में बदला गया। वहां आने के कुछ ही महीने बाद मार्च 2007 को सितरम के पास एसपी के काफीले पर एलजीएस ने ऐम्बुश किया था। उसमें नया होने के बावजूद वह निडरता से आखिर तक खड़े रहे। उन्होंने पीएलजीए के अनुशासन का कड़ाई से पालन करते हुए पढ़ना–लिखना सीखने की कोशिश की। यहां आकर जल्द ही हल्बी, हिन्दी, छत्तीसगढ़ भाषाएं भी सीख लीं। उनके अन्दर हमेशा नए विषयों को सीखने व जानने की जिज्ञासा रहती थी। और सीखने का प्रयास वह लगातार करते थे। इसी बीच उन्हें हार्निया हो गया। इलाज के लिए महाराष्ट्र गए थे। मुखबिर की सूचना पर सी–60 कमांडो ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और बाल बंदी गृह में डाल दिया। वहां से पुलिस को चकमा देकर भाग आए। आकर पार्टी से सम्पर्क किया। पार्टी ने उन्हें पश्चिम रीजन में कम्पनी–4 में रखने का फैसला किया। तबसे अपनी शहादत तक उन्होंने कम्पनी–4 में काम किया। कोब्रामेंढा ऐम्बुश में दुश्मन के साथ बहादुरी के साथ लड़ते हुए अपनी जान दे दी।

कामरेड महरू

19 मई 2011 के दिन गड़चिरोली जिला के कंदोड़ी गांव के पास पीएलजीए के डेरा पर हमला करने आए सी–60 कमांडों बलों के ऊपर जवाबी हमला करके बदमाश व कुख्यात कमांडो कमांडर चिन्ना वेंटा व अन्य दो कमांडो जवानों को हमारी पीएलजीए ने खत्म किया। इस हमले में हमार दो बहादुर कमांडर कामरेड महरू और राकेश शहीद हो गए।

कामरेड महरू महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ सीमा में स्थित राजनांदगांव जिला, तेरेगांव के एक गरीब किसान परिवार में जन्मे थे। उनकी उम्र 27 साल थी। वह पांच भाई–बहनों में तीसरे

थे। उनका गांव गड़चिरोली के टिप्रागढ़ इलाके से लगा हुआ है। टिप्रागढ़ दस्ता जब भी गांव में जाता था वह तुरंत दस्ता के पास आ जाते थे। मीटिंगों में भाग लेकर क्रांतिकारी राजनीति को समझने की कोशिश करते थे। और जनता के संगठित होने जरूरत को समझते थे।

तेरेगांव में पठान नामक एक बदमाश था। गांव की महिलाओं को परेशान करता था। गांव में किसी से भी मारपीट करना, फसल काटकर ले जाना, जमीन हड़पना आदि करता था। पुलिस के साथ उनकी दोस्ती होने की वजह गांव वाले उसका विरोध करने से डरते थे। 2001 में कामरेड महरू ने हिम्मत करके उसके खिलाफ आवाज उठाई और पार्टी की मदद से उसकी गुण्डागर्दी का पर्दाफाश कर उस पर रोक लगाने के लिए जन अदालत में पेश किया। जनता ने उसको उसकी गलतियों के लिए माफी मंगवाकर, आखरी चेतावनी देते हुए एक मौका देने का निर्णय किया। इसके बाद समाज में व्याप्त शोषण, उत्पीड़िन, गुण्डागर्दी को मिटाने की ठान लेकर कामरेड महरू 2002 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गये। घर में ही उनकी शादी हो चुकी थी। उन्होंने अपनी जीवनसाथी को भी पार्टी में आने के लिए प्रेरित किया। बाद में वह भी पार्टी में आ गईं। कुछ समय तक टिप्रागढ़ दस्ता में काम करने के बाद कामरेड महरू को प्लाटून–3 में बदला गया। फौजी तौर पर उनकी पहलकदमी को देखते हुए दण्डकारण्य में बनी पहली कम्पनी के लिए उन्हें चुना गया। किसी भी फौजी कार्रवाई में वह कभी पीछे नहीं हटे। अच्छे गुरिल्ला के रूप में अपने साथियों का विश्वास जीता। बाद में दुबारा उन्हें गड़चिरोली डिवीजन में बदला गया। वहां उन्हें डिवीजन स्टाफ में कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गयी। उसी समय उनकी जीवनसाथी पार्टी छोड़कर चली गई। उनके जाने पर भी कामरेड महरू दृढ़ता के साथ पार्टी में खड़े रहे। पार्टी अनुशासन का पालन करते हुए 2009 में दूसरी साथी कामरेड से शादी कर ली।

2007 में पश्चिम ब्यूरो में बने सप्लाई टीम के कमांडर की जिम्मेदारी को भी उन्होंने बखूबी निभाया। दिन–रात मेहनत करके पार्टी व पीएलजीए की जरूरतों को पूरा करने के लिए सप्लाई का काम किया। जनवरी 2011 में उन्हें वहां से बदलकर प्लाटून–7 में कमांडर बनाया गया। वहां भी उन्होंने युद्ध के मैदान के अलावा सामान ढोने आदि सामूहिक कामों में आगे रहकर अपने साथियों का विश्वास जीता। खुद राजनीतिक तौर पर विकसित होने का प्रयास करते हुए अपने साथियों को विकसित करने का प्रयास किया। कामरेड महरू कम बोलने

वाले विनम्र शख़्स थे। अपने विचारों को स्पष्ट और संक्षिप्त रूप से पेश करते थे।

2011 के टीसीओसी के दौरान कामरेड महरू दक्षिण कमांड सदस्य के तौर पर थे। प्रतिरोध की योजनाएं बनाने के लिए कांदोड़ी में मीटिंग चल रही थी। मुखबिर की सूचना पर सैकड़ों की संख्या में सी–60 कमांडों बल हमला करने के लिए आए थे। इसकी खबर मिलते ही प्रतिरोध के लिए टीमों को तैयार किया गया। दुश्मन के बलों का नेतृत्व चिन्ना वेंटा कर रहा था जिसको समूचे जिले की जनता सबसे ज्यादा नफरत करती है। कई निर्दोष लोगों की हत्याओं, मारपीट व बलात्कार की घटनाओं से उसका सीधा सम्बन्ध था। एक शब्द में कहें तो वह एक खूंखार जानवर से भी बदतर था। इन्सान कहलाने के लिए उसके पास कोई योग्यता नहीं थी। गुरिल्लों को यह जानकारी थी कि उन पर हमले के लिए वेंटा आ रहा है।

इस हमले में कामरेड महरू की अहम भूमिका रही। दुश्मन को नजदीक तक आने दिया और उस पर अचानक हमला कर दो कमांडो को मार गिराया। उनके पास गिरे पुलिस वाले से एक एसएलआर को छीन लिया। इस अचानक हुए हमले से कमांडो बल घबरा गए और तितर–बितर भागने लगे। इस बीच कामरेड महरू घायल हो गए। इसके बावजूद भी भाग रहे चिन्ना वेंटा पर अपनी एके–47 से निशाना साधकर फायरिंग कर उसको मार गिराया। अपने साथियों ने उन्हें वहां से सुरक्षित निकालने की कोशिश की। लेकिन भीषण गोलीबारी के बीच उनकी वजह से दूसरों को नुकसान होगा सोचकर अपना हथियार सौम्पकर जाने के लिए कहा। और वह वहीं शहीद हो गए। कामरेड महरू की मौत से पार्टी, पीएलजीए और जन संगठनों की तमाम कतारें और समूची जनता ने शोक मनाया और साथ ही उन्होंने चिन्ना वेंटा को मौत के घाट उतारकर जो कारनामा कर गए उस पर हर जगह खुशियां भी मनाईं। कामरेड महरू की मौत से पीएलजीए ने एक बहादुर और जांबाज कमांडर को खो दिया। आइए, उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लें।

कामरेड राकेश

कामरेड राकेश का जन्म गड़चिरोली जिला के एटापल्ली तहसील, जीजावंडी टोला के एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था। वह अपने मां–बाप के आठ बच्चों में तीसरे बेटे थे। माता–पिता ने उनका नाम जगन्नाथ रखा था। वह पास

के गांव बूर्गी में विनोबा आश्रमशाला में प्राथमिक पढ़ाई पूरी करके कसनसुर में 11वीं तक पढ़े थे। स्कूल में रहते हुए ही उन्होंने पार्टी के सम्पर्क में रहकर काम किया। पार्टी द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं को ध्यान से पढ़ते थे। छुट्टियों में घर आने पर जरूर पार्टी वालों से मिलते थे। पढ़ाई छोड़ने के बाद गांव में एक छोटी सी दुकान खोल दी। कुछ समय के लिए इरपानार में रहकर डॉक्टर का काम भी सीखा। पार्टी के करीब रहने और मदद देने की वजह से पुलिस उसके पीछे पड़ी थी। उनको गिरफ्तार कर झूठे केसों में फंसाने की कोशिश की। बाद में कामरेड राकेश पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर भर्ती हो गये। कसनसूर दल में रहकर डॉक्टर की जिम्मेदारी निभाई। वह अपने साथियों और जनता का मन लगाकर इलाज करते थे। वहीं उन्होंने एक साथी कामरेड से शादी कर ली। दल कमांडर की अराजकता की वजह से नाराज होकर कामरेड राकेश कुछ समय के लिए घर चले गये थे। 2007 में दुबारा पार्टी में आ गये। उसी साल उन्हें जन मिलिशिया दल में कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। जनमिलिशिया में रहकर उन्होंने युवाओं को पीएलजीए में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया। उनके सांगठनिक कामकाज को देखते हुए उन्हें डीएकेएमएस की सांगठनिक जिम्मेदारी दी गई। कामरेड राकेश ने उसे पूरा करने की दिल लगाकर कोशिश की। अपनी जिम्मेदारी को पूरा करते हुए एरिया की जनता का विश्वास जीत लिया।

2008 में कामरेड राकेश को एरिया कमेटी सदस्य के रूप में पदोन्नति दी गई। 2009 में उन्हें फौजी खुफिया विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई। उस क्षेत्र में उनकी क्षमता को देखते हुए बाद में उन्हें डिवीजन खुफिया विभाग की जिम्मेदारी भी सौंपी गई। इस जिम्मेदारी को लेने के बाद कामरेड राकेश ने रात–दिन मेहनत कर जन दुश्मनों और मुखबिर तंत्र को ध्वस्त करने में काफी योगदान दिया। एरिया कमेटी सदस्य के तौर पर एरिया आन्दोलन को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। व्यापक जनता में अपने काम को बढ़ाने के बारे में राकेश बहुत सोचते थे। इस बारे में अपनी कमेटी में चर्चा करते थे। 2010 में चले रीजन प्लीनम में भी इस विषय पर काफी चर्चा की थी। अपने व्यवहार में सभाओं, मीटिंगों में व्यापक तौर पर आदिवासी और गैर–आदिवासी जनता को गोलबंद किया। उनके नेतृत्व में महान भूमकाल विद्रोह की 100वीं वर्षगांठ के अवसर पर

4,500 जनता सभा में शामिल हुई। कसनसूर एरिया में यह एक ऐतिहासिक गोलबंदी थी। राशन दुकानों में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ 13 गांवों की जनता को संगठित किया।

कामरेड राकेश सभी के साथ आसानी से घुलमिल जाते थे। मार्क्सवादी–लेनिनवादी–माओवादी सिद्धांतों का ध्यान से अध्ययन करते और अपनी राजनीतिक चेतना को बढ़ाने की कोशिश करते थे। उन्हें अपने व्यवहार में लागू करने की कोशिश करते थे।

सांगठनिक कामों के साथ–साथ सैनिक कार्रवाइयों में भी कामरेड राकेश सक्षम थे। हर साल चलने वाले कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों के दौरान स्काउट, असाल्ट, एक्शन टीम, रोड टीम आदि सभी टीमों में रहकर उन्होंने अपनी भूमिका अदा की। दस्ते के ऊपर हमला होने पर बेझिझ व निडरता से प्रतिरोध करते हुए अपने साथियों और दल को निकालते थे।

सांगठनिक, सैनिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में अच्छी पकड़ बना चुके कामरेड राकेश को खोना पार्टी के लिए, खासकर गड़चिरोली आन्दोलन को बहुत बड़ी क्षति है। उनकी जगह को भरने के लिए बड़ी संख्या में युवक–युवतियों को पार्टी में भर्ती करने और जनयुद्ध को तेज करने का संकल्प लेंगे।

कामरेड सुखराम कोर्राम

60 साल उम्र के बुजुर्ग कामरेड सुखराम कोर्राम 24 मई 2011 के दिन बीमारी से शहीद हो गए। कामरेड सुखराम वयानार एरिया के ओकपाड़ गांव के एक मध्यम किसान थे। उनका पार्टी से परिचय 1994 में हुआ था। तबसे कामरेड सुखराम पार्टी को प्यार किया, क्रांतिकारी आन्दोलन में विश्वास के साथ काम किया। कामरेड सुखराम कोंडागांव इलाके में दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगठन की पहली पीढ़ी के नेता थे। 1994–95 के दौरान उस इलाके में रेंज कमेटी सदस्य के तौर पर जन आन्दोलनों का नेतृत्व किया था। जनता को संगठित किया, पार्टी पर जनता का विश्वास बढ़ाया। जनता की समस्याओं को पार्टी के मार्गदर्शन में हल करने की कोशिश करते थे। लुटेरी सरकार द्वारा चलाए जा रहे क्रूर दमन के बावजूद पार्टी और जनता के पक्ष में अडिग खड़े रहे।

'जल–जंगल–जमीन पर अधिकार जनता का ही हो' का उन्होंने सिर्फ नारा ही नहीं दिया बल्कि उसके लिए जनता को संगठित कर वन विभाग और लुटेरी सरकार के खिलाफ आन्दोलन भी चलाया। 'जोतने वाले को जमीन' का नारा

देकर मालगुजारों व जमींदारों के खिलाफ संघर्ष कर उनके कब्जे से जमीनें छीनकर भूमिहीनों और गरीबों में बांटीं। गांवों में सामंती कबीलशाहों और लुटेरी सरकार के पंचयात व्यवस्था को ध्वस्त कर उसके स्थान पर जनता की जनवादी सत्ता का निर्माण करने के लिए जनता को संगठित किया। आदिवासी समाज में व्याप्त सामंती पितृसत्तात्मक रिवाजों के खिलाफ आवाज उठाई। शोषित महिलाओं का समर्थन किया। अपनी जीवनसाथी को क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन में काम करने के लिए प्रेरित किया और सहयोग दिया। अपने बच्चों को भी संगठनों में काम करने के लिए प्रेरित किया। अपने पूरे परिवार को जनता के हितों के लिए काम करने योग्य बनाने वाले आदर्श कामरेड थे सुखराम। कामरेड सुखराम सदा जनता और पार्टी के हितों को ही सर्वोपरि रखकर काम करने वाले कामरेड थे। आइए, उनके आदर्शों को ऊंचा उठाते हुए उनके सपनों को साकार करने का संकल्प लें।

कामरेड मिटकू

कामरेड पोटाम मिटकू का जन्म बीजापुर जिला, गंगालूर एरिया के पुम्बाड़ गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। पुम्बाड़ गांव ने कामरेड बाबू, दसरू जैसे बहादुर जाबांज क्रांतिकारियों को पैदा किया है। मिटकू अपने माता-पिता की तीन संतानों में तीसरी संतान थे। बचपन में ही उनके माता-पिता चल बसे। उनके बड़े भाई ने उनकी परवरिश बड़े प्यार से की थी। गरीबी और माता-पिता नहीं, मिटकू बहुत कष्ट झेलकर बड़े हुए थे। भैया बैलाडीला खदान में मजदूरी करने जाते थे और मिटकू जंगल में घूम-घूमकर महुआ, टोरा, आम आदि वनोपजों को बीनकर लाते और बाजार में चावल के बदले बेचते थे। तब भी कई दिन भूखों रहना पड़ता था। मिटकू कभी खाली नहीं बैठते, कुछ न कुछ काम करते रहते थे। बचपन से कड़ी मेहनत करने की उनकी आदत थी।

जब थोड़े बड़े हुए तो मिलिशिया में भर्ती हो गए। तभी फासीवादी सलवा जुडूम अभियान शुरू हो गया। सलवा जुडूम के जुल्मों को देख कामरेड मिटकू बहुत गुस्से में उनका प्रतिरोध करने के लिए तीर धनुष लेकर मिलिशिया के साथ निकल पड़ता था। अपने जल-जंगल-जमीन को बचाने के लिए जान की परवाह किए बगैर सशस्त्र बलों और गुण्डों का पीछा करके हमला करते थे। जब सलवा जुडूम के गुण्डे गांव में हमला

करने आते, उन्हें भगाने के लिए कोई न कोई योजना बनाकर अमल करते और डराकर भगाते। अपने साथी मिलिशिया कामरेडों का मनोबल बढ़ाते थे और उन्हें ट्रेनिंग देते थे। इसी दौरान कामरेड मिटकू सलवा जुडूम गुण्डों के हाथ में पड़ गए थे। उन्हें बुरी तरह पिटाई की गई और सलवा जुडूम शिविर में बंदी बनाया गया था। कामरेड मिटकू सलवा जुडूम गुण्डों और सशस्त्र बलों को चकमा देकर शिविर से भागकर आ गए और पीएलजीए में भर्ती होने की इच्छा जताई। उनके भैया ने उन्हें मना किया, लेकिन उन्हें भी समझा बुझाकर 2005 आखरी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गए।

भर्ती होने के बाद उन्हें सीधा माड़ डिवीजन में भेजा गया। कुछ समय डौला एरिया में एलजीएस सदस्य के तौर पर काम किया। उस समय डौला एरिया माड़ डिवीजन में था। अपने मिलनसार स्वभाव की वजह से वहां कामरेड मिटकू अपने साथियों और जनता के बीच जल्दी ही घुलमिल गए। पार्टी में आने के बाद उन्होंने जल्दी ही पढ़ना-लिखना भी सीख लिया। किसी भी जोखिमभरे काम से कभी नहीं कतराते थे। एलजीएस के सभी कामों में पहलकदमी के साथ भाग लेते थे। 2006 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई और उन्हें डिवीजन सप्लाई दल में बदला गया। कामरेड मिटकू अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ाते हुए वहां भी अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दीं। रात-दिन भारी सामान ढोकर चलना होता था। समय पर तय जगहों में सामान, चिठ्ठियां पहुंचाना पड़ता था। कई कठिनाइयों के बावजूद कामरेड मिटकू बड़ी मेहनत से काम करते थे। कभी अपने मुंह से 'मैं थक गया' या 'मेरे से ये काम नहीं होगा' नहीं बोलते थे। छोटी-मोटी शारीरिक समस्याओं की परवाह नहीं करते थे। 2009 में उन्हें सप्लाई दल से कोहकामेटा एलजीएस में बदला गया। वहां भी कामरेड मिटकू अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। वहीं उन्होंने एक साथी कामरेड से शादी कर ली। 2010 दिसम्बर में उन्हें एरिया मिलिशिया कमांडर-इन-चीफ के तौर पर जिम्मेदारी दी गई थी। वह एरिया में मिलिशिया को मजबूत करने की कोशिश करते थे। उन्हें राजनीतिक और फौजी तौर पर सुदृढ़ करने के लिए प्रशिक्षिण देते थे। कभी खाली नहीं बैठते थे। जब भी मौका मिलता जनता के साथ खेतों में काम करते या जनता जो काम करती उनके साथ काम में शामिल हो जाते थे। जनता के साथ वे दोस्ती करते थे। उनके दुख-दर्दों को समझते थे। उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने की कोशिश करते थे। इस तरह कामरेड मिटकू कोहकामेटा और वे जहां भी काम किए वहां की जनता और साथियों का प्यार और विश्वास जीत लिया।

टीसीओसी अभियान के दौरान एक एक्शन के सिलसिले में एक्शन टीम सदस्य के तौर पर कामरेड मिटकू एक और साथी कमलू के साथ गए थे। 6 जून 2011 को

बाकुलवाही के पास मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने घेरकर कामरेड मिटकू और कामरेड कमलू को पकड़कर निर्मम हत्या कर दी। कामरेड मिटकू की मौत से जनता ने एक उभरते हुए कमांडर को खो दिया।

कामरेड कमलू कुंजाम

कामरेड कमलू (25) का जन्म कोहकामेट्टा एरिया के आकाबेड़ा गांव के एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था। पिता हरेसिंह और माता बुदिया की पांच संतानों में कामरेड कमलू तीसरी संतान थे। पहले के दो बच्चे मर गए थे। कामरेड कमलू का परिवार पहले कांकेर जिला के कोंगेरा गांव में रहा करता था। वहां उनकी एक एकड़ जमीन थी जिससे उनका परिवार का गुजारा नहीं हो पाता था। इसलिए उनका परिवार आकाबेड़ा में आकर बस गया।

परिवार में कामरेड कमलू बड़े बेटे होने के नाते उन्हें पांचवीं तक ही पढ़ने का मौका मिला। परिवार की जिम्मेदारियों को उठाने के लिए पांचवीं के बाद स्कूल छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़कर कामरेड कमलू अपने माता-पिता के साथ खेती के कामों में हाथ बंटाने लगा। कामरेड कमलू बचपन से बड़े होनहार और मेहनती स्वभाव के थे।

बचपन से ही उनका परिचय पार्टी से हुआ। गांव में जब भी दस्ता जाता कामरेड कमलू तुरन्त दस्ता के लिए खाना-पानी लेकर आ जाते थे। दस्ता वहां से जाने तक दस्ता के साथ रहते, क्रांतिकारी गाने, और राजनीतिक बातों को बड़े ध्यान से सुनते थे। जब बड़े हुए गांव के डीएकेएमएस संगठन में शामिल हो गए। और ग्राम रक्षक दल के सदस्य बने। मिलिशिया में रहकर पुलिस के हमलों से जनता की रक्षा करने की जिम्मेदारी को भी बखूबी निभाया। गांव की संगठन और मिलिशिया में कामरेड कमलू 2007 से सक्रिय रूप से काम करने लगे। उनकी संगठन में सक्रियता और पार्टी, जनता के प्रति विश्वास को देखते हुए उन्हें 2008 में पार्टी सदस्यता दी गई।

डीएकेएमएस में रहते हुए संगठन द्वारा लिए गए सभी प्रस्तावों को अमल करने में कामरेड कमलू हमेशा आगे रहते थे। जन आन्दोलनों में जनता को गोलबंद करना हो या प्रचार करना सभी कामों को जिम्मेदारीपूर्वक निभाते थे। नारायणपुर में जब भी पर्चा, पोस्टर डालना हो तो ये काम कामरेड कमलू को सौंपकर निश्चिंत रहा जा सकता था। कामरेड कमलू बड़ी चतुराई के साथ पुलिस और एसपीओ के आंखों में धूल झोंककर

नारायणपुर में पोस्टर, पर्चा डालकर आते थे। हर तरह के जन आंदोलनों में जनता को संगठित करते और नेतृत्व करते थे। वनोपजों व फसलों के वाजिम दाम के लिए संघर्ष, नशा-विरोधी (शराब, गुटखा, गुड़ाखू आदि) संघर्ष, दमन के खिलाफ संघर्ष, जब भी पुलिस किसी को गिरफ्तार कर ले जाती तुरन्त महिलाओं को संगठित कर छुड़ाकर लाने के लिए भेजते थे। इस तरह कामरेड कमलू बड़ी लगन और मेहनत से पहलकदमी के साथ काम कर रहे थे। जनता की सेवा में वे हर दम तैयार रहते थे। 2010 में वे गांव की डीएकेएमएस कमेटी में चुन लिए गए और पंचायत स्तर की कमेटी के सदस्य के रूप में भी चुने गए थे।

इलाके में चलने वाले साप्ताहिक हाट-बाजारों को सुचारू ढंग से चलाने के लिए और सेठ, साहुकारों द्वारा जनता की लूट और ठगी को नियंत्रित करने के लिए क्रांतिकारी जनताना सरकार के नेतृत्व में बनाई गई बाजार कमेटी के सदस्य के रूप में, बाद में उस कमेटी के अध्यक्ष के तौर पर भी काम किया। इस दौरान कामरेड कमलू बाजार में आने वाली समस्याओं, सेठों और जनता के बीच उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की। बाजार को सही ढंग से चलाने की कोशिश की।

2009 में माड़ क्षेत्र में चलने वाली सभी हाट-बाजारों को नारायणपुर एसपी ने बंद करवा दिया था। माड़ के अन्दर आने वाली दोनों रास्तों में चेक पोस्ट लगाकर आने-जाने वालों की तलाशी लेना, उन्हें परेशान करना, 5 किलो से ज्यादा कोई भी सामान लेकर जाने पर मनाही, कोई लेकर जाने से उन्हें थाने में दिन भर बिठाना, ज्यादा सामान लेना हो तो पहले एसपी से अनुमति लेकर सामान बिल पर एसपी से हस्ताक्षर करवाना आदि नियमों को लागू करवाया था। जिससे जनता काफी परेशान हुई थी। साबुन, तेल, नमक जैसी रोजमर्रा की चीजों के लिए भी मोहताज थी। सरकारी आश्रम और स्कूल बंद हो गए थे। ऐसी स्थिति में जन संगठनों के नेतृत्व में व्यापक तौर पर जनता को संगठित कर बाजारों को शुरू करवाने की मांग को लेकर कई बार कलेक्टर आफिस का घेराव किया गया। आखिर प्रशासन को जनता की मांगें माननी पड़ीं और दोबारा हाट-बजारों को शुरू करना पड़ा। इसमें कामरेड कमलू का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

मिलिशिया में कामरेड कमलू की भूमिका: कामरेड कमलू 2007 से गांव के रक्षा दल में सदस्य के तौर पर शामिल हो गया। कामरेड कमलू फौजी तौर पर भी निडर और साहसी कामरेड थे। जब भी जरूरत पड़ती सेकण्डरी बल के साथ कार्रवाइयों में भाग लिया करते थे। दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखकर जब तब प्राप्त सूचनाएं दस्ता को देते थे। कुकड़ाझोर पुलिस कैम्प करीब होने की वजह से पुलिस हमेशा गश्त के नाम पर इन गांवों में हमला करती है। इन गांवों में गिरफ्तारियां, मारपीट करना, घरों

को लूटना आदि साधारण हो गया है। ऐसी स्थिति में रात-दिन पहरा देना पड़ता है। कामरेड कमलू रात-दिन पहरा देकर, पेट्रोलिंग करके दुश्मन के हमले की स्थिति में तुरन्त जनता को सूचित करके सावधान करते थे। उनकी पहलकदमी और बहादुरी को देखते हुए जनवरी 2011 में उनकी मिलिशिया प्लाटून के सेक्शन कमांडर के रूप में नियुक्ती की गई। मार्च महीने से कामरेड कमलू अपने सेक्शन को लेकर अपनी शहादत तक द्वितीय बल के साथ रहकर प्रत्याक्रामण अभियान के मौके पर प्रतिरोध कार्रवाइयां हो या प्रचार काम सभी में पहलकदमी के साथ भाग लेते हुए अभियान को सफल करने की कोशिश की। इसी दौरान एक एक्शन के सिलसिले में एक्शन टीम सदस्य के तौर पर कामरेड कमलू कामरेड मिटकू के साथ मिलकर गए थे। 6 जून 2011 को बाकुलवाही के पास मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने घेरकर कामरेड्स मिटकू और कमलू की हत्या कर दी। कामरेड कमलू के मौत से जनता ने एक उभरते हुए जन नेता और कमांडर को खो दिया।

कामरेड पोड़ियामी मंगडू

कामरेड पोड़ियामी मंगडू की शहादत तब हुई जब पीएलजीए की एक टीम भेज्जी थाना से महज 200 मीटर की दूरी पर स्थित संतरी पर हमले के लिए गई थी।

उस टीम का नेतृत्व खुद कामरेड मंगडू कर रहे थे। इस हमले को सफल करने में कामरेड मंगडू की महत्वपूर्ण भूमिका रही। थाने से महज 200 गज की दूरी पर, पूरा मैदान, चारों तरफ संतरियों की चौकन्नी नजरों के बीच कामरेड मंगडू ने गुरिल्ला नियमों का पालन करते हुए अपनी टीम को बिना किसी आहट किए एडवांस किया। और साढ़े 7 बजे तक मैदान में लेटे रहकर दुश्मन के आने का इंतजार किया। जब शत्रु बल इनसे 5-10 गज की दूरी पर पहुंचे अचानक उन पर हमला बोल दिया गया। दूसरी ओर से पुलिस द्वारा की गई फायरिंग से कामरेड मंगडू के सीने में गोली लगी। अपने करीब जो कामरेड थे उन्हें बताकर अपनी जिम्मेदारी उन्हें सौंपकर वह शहीद हो गए। साथियों ने उनके पार्थिव शरीर को लाकर भावभीनी श्रध्दांजलि देकर उनके गृहग्राम में अंतिम संस्कार किया।

कामरेड मंगडू का जन्म बीजापुर जिला, पामेड़ एरिया के गोमगुड़ा गांव के एक

गरीब किसान परिवार में हुआ था। कामरेड मंगडू अपने माता-पिता के तीन बच्चों में से तीसरी संतान थे। गोमगुड़ा गांव में बहुत पहले से क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रभाव रहा है। इसलिए बचपन से कामरेड मंगडू के ऊपर भी यह प्रभाव रहा और तभी से पार्टी में आने की उनकी इच्छा थी। मंगडू ने 5वीं तक की पढ़ाई कर छोड़ दिया। फिर बाल संगठन का सदस्य बन गए।

कामरेड मंगडू 2006 अक्टूबर में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बने। कुछ समय के लिए पामेड़ एलओएस में काम करने के बाद उनका कम्पनी-3 में तबादला किया गया। 2007 में वहां उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई। 2009 में उन्हें गुरिल्ला बटालियन में सदस्य के तौर पर बदला गया। राजनीतिक व सैनिक तौर पर उनके विकास को देखते हुए 2009 में उन्हें प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नति दी गई। उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को बड़ी खुशी से निभाया। सैनिक निपुणता हासिल करने के लिए फौजी मामलों को बारीकी से सीखा। हमलों के दौरान बहादुरी के साथ लड़ा।

सैनिक क्षेत्र में योगदान

कामरेड मंगडू ने 2007 से कम्पनी-3 में काम किया। कम्पनी-3 द्वारा किए गए सभी कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया। जैसे - आसीरगुड़ा माइन विस्फोट, 9 जुलाई उरपलमेट्टा ऐतिहासिक एम्बुश जिसमें 24 जवानों को मारकर 21 बंदूक पीएलजीए ने छीना था, 29 अगस्त ताड़मेटला में 12 जवानों को मारकर 14 हथियार छीने थे, अक्टूबर में तोंगगुड़ा में 11 पुलिस वालों को मारकर 11 हथियार छीने थे, दिसम्बर में बट्टीगुड़ा एम्बुश जिसमें 12 पुलिस को मारकर 12 हथियार छीने थे। इन सभी कार्रवाइयों को सफल करने में कामरेड मंगडू ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

इनके अलावा 2008 के बण्डा एम्बुश, 2009 के पद्देड़ा-मिनपा एम्बुश, किष्टारम में हेलिपैड की सुरक्षा के लिए आई पुलिस के ऊपर हमला, उसके दो दिन बाद पालोड़ी में कोया कमांण्डो के ऊपर हमला कर 3 हथियार छीने थे, 17 सितम्बर को कोबरा बटालियन के घमण्ड को चूर करने वाली सिंगनमड़गु एम्बुश जिसमें 6 कोबरा कमांण्डो को खत्म कर 5 हथियार छीना गया था, 6 अप्रैल 2010 के ऐतिहासिक ताड़मेटला-मुकरम एम्बुश जिसमें 76 जवानों को मारकर हथियार छीने थे, मार्च 2011 में गांवों के ऊपर हमले कर घरों को जलाकर, लूटकर उत्पात मचा रहे 400 कोया कमांण्डो के ऊपर पीएलजीए ने हमला किया था जिसमें तीन कोया कमांण्डो मरे, 9 घायल हुए। और आखरी हमला जिसे उन्होंने अपनी जान की बाजी लगाकर सफल किया। 11 जून 2011 को किए गए भेज्जी हमला। इन सभी कार्रवाइयों में कामरेड मंगडू ने पीएलजीए सदस्य और कमांडर की तौर पर बहादुरी के साथ लड़ते हुए अपनी जिम्मेदारियों को पूरा किया। कामरेड मंगडू एक अनुभवी और बहादुर सैनिक थे।

उन्हें दी गई सभी जिम्मेदारियों को कामरेड मंगडू ने निष्ठा और लगन के साथ पूरा किया। रेक्की, सप्लाई, कम्युनिकेशन आदि सभी में भी उन्होंने उनकी बारीकियों को सीखते हुए महारत हासिल की। दुश्मन की कमजोरियों को परखना, हमला कहां करना, कब करना आदि। पीएलजीए की जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्होंने बहुत कम समय में गाड़ी ड्राइवर का काम भी सीख लिया। और पीएलजीए के लिए सप्लाई काम में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

उनका सीखने का उत्साह और काम के प्रति लगन को देखते हुए बटालियन पार्टी कमेटी ने 2009 में उन्हें कम्युनिकेशन मेन की जिम्मेदारी दी। कम्युनिकेशन की बारीकियों को सीखकर बटालियन में अपनी सेवायें दीं। कम्युनिकेशन के मामले में आने वाली समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की। वह वॉकी-टॉकी से लेकर रेडियो, टेपरिकार्डर, घड़ी आदि रिपेयर भी करते थे।

उनकी शहादत से एक उभरते हुए कमांडर और एक होनहार कम्युनिकेश मेन को पीएलजीए ने खो दिया। आइये उनके सपनों को पूरा करने की शपथ लें।

कामरेड सन्नू (केशा)

कामरेड सन्नू का परिवार पहले जगदलपुर के पास पोदुम गांव में रहता था। वहां से जमीन के लिए नारायणपुर जिला के डुंगा गांव में आकर बस गया। कामरेड सन्नू का जन्म डुंगा में ही हुआ। पार्टी की गतिविधियों के बीच वह बड़े हुए थे। सन्नू बचपन से बड़े चंचल और होशियार थे।

कामरेड सन्नू 2002 में मिलिशिया में भर्ती हो गए। तभी माता-पिता ने उनकी शादी कम उम्र में कर दी। उनके दो बच्चे हैं। मिलिशिया में रहते हुए सभी कामों में सक्रिय रूप से भाग लेता था और एरिया में घूमकर मिलिशिया के युवक-युवतियों को प्रशिक्षण दिया करता था। 2003 के विधानसभा चुनाव बहिष्कार के लिए जनता को संगठित कर मतपेटियों को जब्त करने की कार्रवाइयों में कामरेड सन्नू ने आगे रहकर नेतृत्व किया था। इसी साल जन संगठनों के नेतृत्व में पूरे एरिया के युवक-युवतियों का खेलकूद का आयोजन किया जा रहा था। पुलिस इस आयोजन को रोकने के लिए वेड़मा गांव में फायरिंग कर एक ग्रामीण को घायल कर दिया। उस समय कामरेड सन्नू ने वहां

मौजूद मिलिशिया सदस्यों को लेकर आयोजन की सुरक्षा की जिम्मेदारी लेकर सफल करने में मदद की। 2003 में ही ताकिलोड़ गांव के पुलचीन कुटाल, कुम्मा डाडी नामक जनविरोधियों ने कुछ लोगों को भड़काकर अपने पक्ष में करके जन संगठनों में सक्रिय काम करने वालों को पकड़वाने के लिए पुलिस को लाया था। ताकिलोड़ के स्कूल में डेरा जमाए सीआरपी वालों पर पीएलजीए ने हमला किया जिसमें तीन जवान मारे गए। तब कामरेड सन्नू मिलिशिया कमांडर थे। अपने मिलिशिया सदस्यों को लेकर उन्होंने भी इस हमले में भाग लिया था। 2004 में जनविरोधियों के घरों में हमला करने की कार्रवाइयों में कामरेड सन्नू ने पहलकदमी के साथ भाग लिया। इसी साल हुए झूठे लोकसभा चुनावों का बहिष्कार करने के कार्यक्रम में कामरेड सन्नू ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। चुनाव के लिए आने वाले सशस्त्र बलों का मुकाबला करने और चुनावी सामाग्रियों को जब्त कर चुनाव बहिष्कार को सफल करने में मिलिशिया कमांडर के तौर पर उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2004 के आखिर में कामरेड सन्नू पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गए। 2005 में फासीवादी सलवा जुडूम अभियान शुरू होने के बाद कामरेड सन्नू ने सलवा जुडूम शिविरों में भागने वाली जनता को रोकने, डर से जंगलों और शिविरों में भागी जनता की फसलों, उनकी सम्पत्तियों को हिफाजत से रखने के लिए मिलिशिया को लेकर खुद नेतृत्व करते हुए रात-दिन मेहनत की। पश्चिम बस्तर में सलवा जुडूम गुण्डों का प्रतिरोध करने के लिए एलजीएस के साथ दो महीना मिरतुर एरिया में जाकर कई कार्रवाइयों में भाग लिया। 2005 नवम्बर महीने में पहली बार सैकड़ों सलवा जुडूम गुण्डों और सशस्त्र बलों ने इन्द्रावती एरिया में बड़े पैमाने पर हमला किया। घरों को जलाया, खेत-खलिहानों और फसलों को नष्ट किया, मुर्गे, सुअर, बकरे आदि लूटे और खाए। मवेशियों को हांक कर ले गए। इस विनाशलीला में कामरेड सन्नू के घर को भी लूटा और जला दिया गया। कामरेड सन्नू ने अपनी मिलिशिया के साथ जाकर मवेशियों को हांककर ले जा रहे जुडूम गुण्डों के ऊपर इन्द्रावती नदी के पास फायरिंग की। वहां पर एक सलवा जुडूम गुण्डा घायल हुआ। इस तरह कामरेड सन्नू किसी भी कार्रवाई में बेझिझक व निडर होकर पहलकदमी के साथ भाग लेते थे। 2006 में इन्द्रवती एरिया में प्लाटून का गठन किया गया। कामरेड सन्नू को वहां सेक्शन डिप्युटी कमांडर के तौर बदला गया। कामरेड सन्नू ने इस जिम्मेदारी को दिल लगाकर निभाया। सैनिक तकनीक को मन लगाकर सीखने की कोशिश करते थे। नए-नए विषयों को सीखने के लिए हमेशा उत्सुक रहते थे। सलवा जुडूम गुण्डों और सशस्त्र बलों को मारने के उपायों को सोचते, बूबी ट्रैप के नए-नए तरीकों का प्रयोग करते थे। ऐसा ही एक प्रयोग 2006 में किया जब हजारों की संख्या में सलवा जुडूम गुण्डे और सशस्त्र बल इन्द्रवती एरिया

में लूटपाट, आगजनी, तबाही मचा रहे थे। मिलिशिया, जनता और पीएलजीए ने व्यापक तौर पर बूबी ट्रैप लगाकर, गड्ढ़े खोदकर दुश्मन के हमले का प्रतिरोध किया। पल्ली गांव के पास कामरेड सन्नू ने रेडियो से तैयार किया गया बूबी ट्रैप छोड़ दिया। जिसे सलवा जुडूम गुण्डों ने खुशी से उठा लिया और चालू किया। चालू करते ही विस्फोट हुआ जिसमें दो सलवा जुडूम गुण्डे मारे गए। उसके बाद से सशस्त्र बल और गुण्डे किसी भी चीज को हाथ लगाने से कतराते रहे। एसपी ने बाकायदा किसी भी चीज को हाथ न लगाने की आदेश दिया। वापस जा रहे सलवा जुडूम गुण्डों और सशस्त्र बलों को फिर बूबी ट्रैप में फंसाने के लिए वांगेल गांव के पास जाल बिछाया जिसमें एक जवान मारा गया। इस तरह कामरेड सन्नू ने बूबी ट्रैप की बारीकियों को सीखकर उन्हें सही इस्तेमाल करने में अच्छी पकड़ हासिल की थी।

2007 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नति दी गई और नया इलाका आन्दावाड़ा में भेजा गया। कामरेड सन्नू ने वहां कुछ ही महीनों में जनता से अच्छा परिचय बना लिया था। बाद में उन्हें वहां से बदलकर एरिया मिलिशिया कमांडर-इन-चीफ की जिम्मेदारी सौंपी गई। बाद में उन्हें एरिया कमांडर-इन-चीफ की जिम्मेदारी दी गई। इन जिम्मेदारियों में रहते हुए कामरेड सन्नू मिलिशिया और द्वितीय बलों को समन्वय के साथ चलाते थे। मिलिशिया को सैनिक प्रशिक्षण दिया करते थे। हर विषय को ध्यान देकर सीखते और सिखाते थे। सभी के साथ मिलजुलकर रहते, प्यार से बातें करते थे। उन्हें फौजी क्षेत्र में बहुत दिलचस्पी थी। 2009 में वह कुछ समय के लिए कम्पनी-1 में रहे। वहां रहकर रिसगांव के पास किए गए एम्बुश में भाग लिया जिसमें पीएलजीए ने 13 पुलिस बलों को मारकर हथियार जब्त कर लाए थे। उसके बाद कुछ समय के लिए जाटलूर एरिया में रहे। बाद में उन्हें कम्पनी-9 में बदला गया। वहां कामरेड सन्नू ने प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्य के तौर पर सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी ली। वहां रहते हुए महाराष्ट्र के गड़चिरोली जिला में लाहेरी के पास किए गए एम्बुश में एक सेक्शन का नेतृत्व किया। इस हमले में 17 सी-60 कमांडों बलों को मारकर हथियार जब्त कर लिया गया। कुटरू इलाके में करकेल कैम्प के पास रोड़ ओपनिंग पार्टी के ऊपर किए गए एम्बुश में भी कामरेड सन्नू ने भाग लिया। इस तरह कामरेड सन्नू ने पीएलजीए में अलग-अलग जिम्मेदारियों में रहकर अपना योगदान दिया।

14 जून 2011 के दिन गंभीर बीमारी के चलते कामरेड सन्नू ने हमसे विदा लिया। कामरेड सन्नू ने अपनी बीमारी के बारे में पहले से नहीं बताया था। अस्वस्थता के बावजूद सभी कामों में भाग लेते रहे। दूसरों को उनकी बीमारी का अभास होने नहीं दिया। जब बर्दाश्त से बाहर हो गया तब इलाज शुरू किया गया। उन्हें बचाने की बहुत

कोशिश की गई लेकिन बीमारी बहुत बढ़ चुकी थी। अस्पताल ले जाते समय उन्होंने रास्ते में दम तोड़ दिया। उनके पार्थिव शरीर को उनके गांव ले जाकर उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके अंतिम संस्कार में आसपास के लगभग 300 जनता ने भाग लिया। उनके सपनों को पूरा करने की शपथ ली। कामरेड सन्नू की मौत से पीएलजीए ने एक अनुभवी और बहादुर कमांडर को खो दिया। अपने घर-परिवार और बीवी बच्चों को छोड़कर कामरेड सन्नू ने जनता की मुक्ति के लिए अपनी जान कुरबान कर दी। उनकी कुरबानी हम सभी को हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहेगी।

कामरेड मड़काम हिड़मा

दन्तेवाड़ा जिला, दक्षिण बस्तर डिवीजन, कोन्टा तहसील के कड़युम (करीगुण्डम) गांव के एक गरीब किसान परिवार में कामरेड मड़काम हिड़मा (27) का जन्म हुआ था। कामरेड हिड़मा अपने माता-पिता के बड़े बेटे थे। पहले उनका परिवार दरभा डिवीजन के मिड़यम गांव में रहता था और वहां से जमीन के लिए यहां आकर बस गया। बचपन से कामरेड हिड़मा अपने मां-बाप के कामों में हाथ बंटाता थे। बड़ा होने के बाद कामरेड़ हिड़मा अपने मामा की बेटी भीमे से शादी कर ली। उनकी दो बेटियां हैं।

कामरेड हिड़मा के मन में बचपन से चेतना नाट्य मंच में काम करने की इच्छा थी। थोड़ा बड़े होने के बाद कामरेड हिड़मा सीएनएम में भर्ती हो गए और एक अच्छे कलाकार बन गए। बाद में उन्हें ग्राम पार्टी कमेटी ने मिलिशिया कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी। कामरेड हिड़मा ने बड़ी खुशी से उस जिम्मेदारी को स्वीकारते हुए लगन के साथ काम किया। गांव में संतरी करना, गरीब परिवारों की मदद करना और अन्य सामूहिक कामों में अपनी मिलिशिया टीम को लेकर जाते थे। जब भी जरूरत पड़ती अपने साथ मिलिशिया को लेकर प्रतिरोध कार्रवाइयों में शामिल हो जाते थे। चिन्तागुफा थाने से 600 गज की दूरी पर माइन लगाकर बाजार में सामान लेने जाने वाली पुलिस पार्टी पर हमला करने की योजना बनाकर कोशिश की थी। लेकिन माइन विस्फोट नहीं होने से बड़ी एम्बुश चूक गई। कामरेड हिड़मा पहदकदमी करके ऐसी कई कार्रवाइयों की योजनाएं बनाकर उन्हें अंजाम देते थे। पश्चिम बस्तर में 2005 में फासीवादी सलवा जुडूम शुरू हो गया। वहां की जनता के ऊपर सलवा जुडूम गुण्डों और सशस्त्र बलों द्वारा किए जा

रहे अत्याचारों, तबाही, आगजनी और नरसंहार की खबरें सुनकर कामरेड हिड़मा का दिल दुखता था और सरकार के प्रति नफरत से भर जाता। और उसके खिलाफ लड़ने की भावना मजबूत होती थी। 2005 दिसम्बर में कामरेड हिड़मा पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में पार्टी में भर्ती हो गए।

कुछ महीने भेज्जी एलओएस में काम करने के बाद उन्हें कोन्टा एलजीएस में बदला गया। उनके कामकाज को देखते हुए उन्हें 2006 में पार्टी सदस्यता दी गई। 2006 में ही कोन्टा एरिया में फासीवादी दमन अभियान सलवा जुडूम तेज हुआ। सलवा जुडूम गुण्डों का प्रतिरोध करने के लिए बनाई गई तात्कालिक प्लाटून में कामरेड हिड़माल को एक सेक्शन कमांडर के तौर पर चुना गया। इसी दौरान अक्टूबर 2006 को दोरनापाल से एसपीओ, सीआरपीएफ और जिला पुलिस द्वारा आरलमपल्ली गांव में हमला करके ग्रामीणों को पकड़कर ले जाते समय तोयापारा गांव के पास पीएलजीए ने सशस्त्र बलों पर हमला किया। इसमें बदमाश एसपीओ जाबुड़ हड़मा मारा गया। इस हमले में कामरेड हिड़मा ने भी भाग लिया। 2007 में पोलमपल्ली में कैम्प बैठाने के लिए आ रहे सीआरपीएफ, जिला पुलिस और सलवा जुडूम गुण्डों का पीछा करके उनके ऊपर फायरिंग की गई। उसके बाद पोलमपल्ली से ट्रेक्टर में बैठकर आ रहे सशस्त्र बलों के ऊपर हमला किया गया जिसमें 5 एसपीओ मारे गए और 7 घायल हुए। इसमें भी कामरेड हिड़मा ने भाग लिया। इसके अलावा विंजरम-आसिरगुड़ा एम्बुश और कई छोटी-बड़ी कार्रवाइयों में कामरेड हिड़माल ने अपना योगदान दिया।

2008 में कामरेड हिड़मा को पार्टी और आन्दोलन की जरूरत के लिए केरलापाल एरिया में एलजीएस डिप्यूटी कमांडर के रूप में बदलने का निर्णय लिया गया। कामरेड हिड़मा खुशी से अपनी जिम्मेदारी को स्वीकार करते हुए केरलापाल एरिया में गए। 2009 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्य के रूप में पदोन्नति दी गई। उसके बाद उन्हें एलजीएस कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। बाद में उन्हें 2010 में 10वीं प्लाटून में सेक्शन कमांडर के तौर पर बदला गया। कुछ महीनों बाद उन्हें प्लाटून कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। कामरेड हिड़मा ने इस जिम्मेदारी को पूरी तन्मयता से निभाया। मार्च 2011 में चिन्तलनार इलाके के मोरपल्ली, पुलनपाड़ और तिम्मापुरम गांवों में हमला करके आतंक का तांडव मचा रहे कोया कमांडो, कोबरा कमांडो आदि सशस्त्र बलों को रोकने के लिए पीएलजीए द्वारा हमला किया गया। उस हमले में कामरेड हिड़मा ने बहादुरी के साथ लड़ा और अपनी प्लाटून का नेतृत्व किया। उसके बाद 20 जून 2011 को रोड बना रहे एसपीओ की सुरक्षा के लिए आई पुलिस के ऊपर किए गए हमले

में दुश्मन की गोली लगने से कामरेड हिड़मा वहीं शहीद हो गए। उनकी लाश को लाने के लिए जा रहे कामरेड मनोज को भी गोली लगने से वो भी वहीं शहीद हो गए।

कामरेड हिड़मा अपनी क्रांतिकारी जिन्दगी मिलिशिया सदस्य के रूप में शुरू करके प्लाटून कमांडर तक विकसित हुए थे। घर में उन्हें स्कूल जाने का मौका नहीं मिला। पार्टी में आने के बाद पढ़ाई सीखी और अपने साथियों को भी सिखाने लगे। पीएलजीए के अनुशासन का दृढ़ता से पालन किया। राजनीतिक तौर पर अपनी समझदारी को बढ़ाते हुए खुद विकसित होने के साथ अपने साथियों को भी विकसित करने की कोशिश की। आइए, उनके उच्च आदर्शों को ऊंचा उठायेंगे।

कामरेड कुंजाम मनोज

कामरेड मनोज (22) का जन्म दंतेवाड़ा जिला के कुआकोण्डा एरिया के ग्राम जब्बाली में हुआ था। कामरेड मनोज को उनके चाचा-चाची बचपन में ही करंगड़ गांव में ले आए थे। बचपन उनके चाचा-चाची के यहां गुजरा। वहां रहते हुए कामरेड मनोज का परिचय क्रांतिकारी आन्दोलन से हुआ जिससे वह बहुत प्रभावित हुआ।

वह 2010 सितम्बर में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पीएलजीए में भर्ती हो गए। जगरगुण्डा एरिया से उन्हें 10वीं प्लाटून में सदस्य के तौर पर भेजा गया। उन्होंने एक पीएलजीए सदस्य के तौर पर सभी सैनिक विषयों को सीखने की कोशिश की। अनुशासन, पढ़ाई और युद्ध नियमों को सीखा। मार्च 2011 में तिम्मापुर, मोरपल्ली और पुलनपाड़ गांवों को जलाकर जा रहे कोया कमांडो बलों पर किए गए हमले में बहादुरी के साथ लड़कर हमले को सफल करने में अपना योगदान दिया। इस हमले में 10वीं प्लाटून के सेक्शन उप कमाण्डर कामरेड मुचाकी गंगा शहीद हुए थे। भीषण गोलीबारी के बीच से उनकी लाश को लाने में कामरेड मनोज की अहम भूमिका रही। कामरेड मनोज हर जिम्मेदारी को बड़ी खुशी से पूरा करने की कोशिश करते थे।

20 जून 2011 को रोड मरम्मत कर रहे एसपीओ की सुरक्षा के लिए आ रहे सशस्त्र बलों के ऊपर किए गए हमले में कमाण्डर कामरेड हिड़मा शहीद हुए थे। दुश्मन की गोलीबारी के बीच अपनी जान की परवाह किए बिना कमांडर की लाश को लाने के लिए जा रहे कामरेड मनोज को भी गोली लगने से वहीं शहीद हो गए। आइए, कामरेड मनोज की बहादुराना शहादत को सलाम करें।

कामरेड मंजुला (नागी कोरसा)

दक्षिण बस्तर डिविजन, जेगुरगोंडा एरिया के तिप्पापुर गांव के एक मध्यम किसान परिवार में कामरेड मंजुला पैदा हुई थीं। मां–बाप की वह तीसरी संतान थीं। माता–पिता ने उनका नाम नागी रखा था। वह बचपन से ही क्रान्तिकारी गतिविधियों के बीच बड़ी हुई थीं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों को वह बहुत पसंद करती थीं। बाद में वह चेतना नाट्य मंच में शामिल हो गईं।

जेगुरगोंडा इलाके में बढ़ते दुश्मन के दमन को हराने और जनता की जनवादी सत्ता क्रांतिकारी जनताना सरकारों की रक्षा के लिए बनी मिलिशिया प्लाटून में कामरेड नागी सदस्य बनीं। मिलिशिया में रहकर दुश्मन की गतिविधियों पर वह लगातार नजर रखती थीं। दुश्मन के आने के रास्तों में बूबीट्रैप लगाना, गड्ढ़े खोदना आदि कामों में उत्साह के साथ भाग लेती थीं। क्रान्तिकारी जनता, पीएलजीए और पार्टी ने कई कुर्बानियां देकर फासीवादी सलवा जुडूम को परास्त किया। इसके बाद लुटेरे शोषक–शासक वर्गों ने पीएलजीए और पार्टी को जड़ से मिटाने के लिए 2009 से ''आपरेशन ग्रीनहंट'' के नाम से देशव्यापी सैनिक अभियान शुरू किया। इसी दौरान पार्टी ने कामरेड मंजुला को पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने का आह्वान किया। वह उसे स्वीकारते हुए 2009 सितम्बर में पीएलजीए में भर्ती हो गईं। उन्हें प्लाटून–10 में भेजा गया। वहां उन्होंने पढ़ना– लिखना और युद्ध कौशल को सीखने की कोशिश की। वह फौजी कार्रवाइयों में हिम्मत के साथ भाग लेती थीं। जेगुरगोंडा इलाके के सुर्पनगुड़ा, तिम्मापुर गांवों पर हमला कर वापस जा रहे सशस्त्र बलों पर पीएलजीए ने हमला किया। यह संघर्ष लगभग एक घंटा चला था। इसमें कामरेड मंजुला ने भाग लिया। 6 अप्रैल 2010 को किए गए ऐतिहासिक ताड़मेटला–मुकरम ऐम्बुश में भी कामरेड मंजुला ने भाग लिया था। इसके अलावा और कई कार्यवाहियों में कामरेड मंजुला शामिल हुई थीं।

छत्तीसगढ़–ओड़िशा सीमा में क्रांतिकारी संघर्ष का विस्तार करने के लिए कामरेड मंजुला ने नवरंगपुर जिला में कदम रखा। उन्होंने वहां की ओड़िया भाषा भी सीखने का प्रयास किया। सीएनएम की जिम्मेदारी लेकर गांवों में क्रान्तिकारी

गीतों के द्वारा नवजनवादी क्रांति के संदेश को जनता तक पंहुचाने का प्रयास किया। इस इलाके में भाकपा (माओवादी) पार्टी के कदम रखते ही दुश्मन ने बड़े पैमाने पर सशस्त्र बलों को तैनात कर गश्त और तलाशी अभियानों के नाम पर जनता को तंग करना शुरू किया। और जनता को माओवादियों से दूर रखने की कोशिशें तेज कीं। छापामार दस्ता इसके विरुद्ध जनता में राजनीतिक प्रचार करते हुए किसानों को गोलबन्द कर रहा था। इसी मकसद से 21 जून 2011 को बोलंगीर जिला के सनबांजीपाली गांव में दस्ता गया हुआ था। मुखबिर की सूचना पर एसओजी व कोबरा बलों ने डेरा पर हमला किया। इस हमले में दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए कामरेड मंजुला शहीद हो गईं। आइए, जनयुद्ध को देश के कोने–कोने में फैलाकर उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लें।

सुलंगी वीर शहीदों को लाल-लाल सलाम!

26 जून 2011 को उत्तर बस्तर के सुलंगी गांव के पास पीएलजीए ने टीसीओसी के अंतर्गत बीएसएफ के बलों पर घात लगाकर हमला किया। इस हमले में दुश्मन के 2 जवान मारे गए और 4 अन्य घायल हुए। दुश्मन से एक इन्सास रायफल छीन लेने में पीएलजीए सफल रही। वहीं इस लड़ाई के दौरान पीएलजीए के दो नौजवान साथियों ने अपनी जान की कुरबानी दी। कम्पनी–1 के सदस्य कामरेड्स जोगा मुहंदा और श्यामलाल बारसा ने अपनी शौर्यपूर्ण शहादत से पीएलजीए के कतारों और क्रांतिकारी जनता के दिलों में अमिट छाप छोड़ दी। आइए, इन बहादुर साथियों के संक्षिप्त जीवन–इतिहास पर नजर डालें।

कामरेड जोगा मुहंदा

कामरेड जोगा मुहंदा (20) का जन्म माड़ डिवीजन के जाटलूर एलओएस इलाके में आने वाले ग्राम बूरिक के एक गरीब परिवार में हुआ था। वर्ष 2000 से यह गांव क्रांतिकारी आंदोलन का हिस्सा बन गया। 2003 में गांव में जन संगठनों का निर्माण हुआ। तबसे जोगाल के परिवार के साथ गुरिल्ला दल का संपर्क बन गया। बचपन से ही कामरेड जोगा पार्टी से परिचित था। 2005 में जब सलवा जुडूम शुरू

हुआ, तब इस गांव की जनता भयभीत होकर कुटरू में स्थित सरकारी शिविर में चली गई थी। लेकिन जोगा समेत गांव के कुछ किशोरों ने ऐसा न करके गांव में ही रहने का फैसला किया। ये लोग जंगलों में रहते हुए गांव की रखवाली करते रहे और छापामार दस्ते से मिलते रहते थे। 2006 में कामरेड जोगा जन मिलिशिया का सदस्य बन गया। ग्राम पेंटा में मौजूद जुडूम के गुण्डों पर जब पीएलजीए के नेतृत्व में जनता ने हमला किया था, उसमें कामरेड जोगा ने अपनी मिलिशिया के साथ भाग लिया था। 2008 में वह पूर्णकालीन सदस्य के रूप में गुरिल्ला दस्ते में भर्ती हो गया। एक साल तक उसने इंद्रावती इलाके में 16वीं प्लाटून में सदस्य बनकर काम किया था। 2009 में उन्हें कम्पनी–1 में बदली कर दिया गया। दुश्मन पर हमलों में उत्साह के साथ भाग लेने वाले कामरेड जोगा दैनिक जीवन में पीएलजीए के अनुशासन का पालन करने में आगे रहते थे। 2010 में उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। हंसमुख, मेहनती और सभी के साथ स्नेहपूर्वक घुलमिल जाने के कारण कामरेड जोगा सभी का चहेता बना था। जनता के साथ उसका व्यवहार नम्र और जिम्मेदारीपूर्वक रहता था। कामरेड जोगा आज भले ही हमारे बीच में नहीं है, उनके आदर्श हमेशा जीवित रहेंगे और हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

कामरेड श्यामलाल बारसा

कामरेड श्यामलाल बारसा (24) का जन्म बीजापुर जिले के भैरमगढ़ विकासखण्ड, इत्तमपारा पंचायत के ग्राम बोड़गा में एक गरीब परिवार में हुआ था। वह अपने माता–पिता की आखिरी संतान था। 2003 में वह जन संगठन में शामिल हुआ था। इस गांव में लेकाम लक्खू नामक जमींदार था। इसके खिलाफ जनता को गोलबंद करने में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। कामरेड श्यामलाल ने जन मिलिशिया में शामिल होकर सलवा जुडूम के गुण्डों को मार भगाने में भी बढ़िया भूमिका निभाई। 2006 में लिए गए प्रतिरोधी कार्यक्रम में उन्होंने उत्साह के साथ भाग लिया ताकि सलवा जुडूम को परास्त किया जा सके। बट्टुम, चिहका, ओड़सापारा और पेंटा गांवों के जनविरोधी मुखिया जुडूम में शामिल हुए थे और नदी के इस पार

के गांवों पर हमलों में वे बढ़–चढ़कर भाग ले रहे थे। ऐसे समय जनता को बड़े पैमाने पर गोलबंद कर उन प्रतिक्रियावादी मुखियाओं के घरों पर हमले किए गए थे। इन हमलों में कामरेड श्यामलाल ने उत्साह के साथ भाग लिया। 2006 में वह गुरिल्ला दस्ते में भर्ती हो गए। एक साल तक प्लाटून–16 में सदस्य के रूप में काम किया था। 2007 में उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। 2008 में उनका कम्पनी–1 में तबादला कर दिया गया। उन्होंने बट्टुम ऐम्बुश, मैनपुर के पास मांदगिरि में किए गए ऐम्बुश, कोंगेरा ऐम्बुश और झारा फ्रंटल एटैक में बड़े जोश के साथ भाग लिया था। उन्होंने कम्पनी में एलएमजी मैन और कमाण्डर के गार्ड के रूप में काम किया। कामरेड श्यामलाल दुश्मन से जितनी नफरत करते थे उतना ही प्यार और सम्मान जनता के साथ बरतते थे। दुश्मन से वह जरा भी नहीं डरते थे। सुलंगी ऐम्बुश में जब वह दुश्मन को मारने के लिए आगे बढ़ रहे थे तभी दुश्मन की गोली लगने से शहीद हो गए। कामरेड श्यामलाल की शहादत को जनता सदा याद रखेगी और उनके अधूरे कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ेगी।

कामरेड प्रेमलाल

कामरेड प्रेमलाल 24 जुलाई 2011 के दिन दुर्घटनावश अपनी ही बंदूक फायरिंग होने से शहीद हो गए। उनका जन्म गड़चिरोली जिला, पेरिमिलि एरिया के चिचोड़ा गांव में एक राउत परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने गांव में 6वीं तक पढ़ाई की थी। वह अपने भैया और भाभी को पीएलजीए में काम करते हुए देख बहुत खुश होते थे। उनसे प्रेरित होकर 2010 में वह भी पीएलजीए में भर्ती हो गये।

प्लाटून–19 में काम करने लगे। कम्पनी–10 का गठन होने पर उन्हें वहां भेजा गया। कुछ समय बाद वहां से भी बदलकर उन्हें एक एसजेडसी सदस्य के सुरक्षा गार्ड की जिम्मेदारी सौंपी गई। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को बखूभी निभाया। कोब्रामेंढा हमले में उन्हें फायरिंग का अनुभव न होने के बावजूद साहस के साथ लड़ते हुए नेतृत्वकारी कामरेड के साथ रहकर उनकी सुरक्षा की। उन्हें उनकी शहादत के कुछ ही समय पहले पार्टी सदस्यता दी गई थी।

कामरेड पोड़ियम सुकड़ाल

पश्चिम बस्तर डिवीजन के भैरमगढ़ इलाके के कोतरापाल गांव में 1 अगस्त 2011 को पुलिस बलों ने हमला कर मिलिशिया के दो सदस्यों की गोली मारकर हत्या कर दी। उनसे एक .303 रायफल जब्त कर ली। कामरेड पोडियम सुकड़ाल और केलू ये दोनों कामरेड शहीद हो गए। दोनों की लाशें पुलिस भैरमगढ़ थाना ले गईं। गांव की जनता, खासकर महिलाओं ने भैरमगढ़ जाकर अपने लोगों की लाशें देने की मांग की। पुलिस ने काफी आनाकानी के बाद 2 तारीख को सुकड़ाल की लाश और 3 तारीख को केलू की लाश दे दी। इन दोनों कामरेडों का अलग–अलग दिनों में अंतिम संस्कार किया गया।

कामरेड वंजम केलू

कामरेड सुकड़ाल (16) के साथ जान देने वाले कामरेड वंजम केलू का जन्म इसी कोतरापाल गांव में हुआ था। छोटी उम्र से ही यह बाल संगठन में काम करता रहा। 9वीं कक्षा के बाद स्कूल छोड़ना पड़ा क्योंकि सलवा जुडूम के गुण्डे व एसपीओ स्कूली बच्चों को बेहद आतंकित करने लगे थे। गांव में आकर मिलिशिया प्लाटून में शामिल होकर काम करने लगे। मिलिशिया में रहकर उन्होंने संतरी, गश्त आदि कार्यों को बड़ी जिम्मेदारी के साथ किया था।

कामरेड लिंगु मुन्सी हेडो

कामरेड लिंगु गड़चिरोली डिवीजन, भामरागढ़ तहसील के कोटी गांव में जन्मे थे। कोटी गांव में पुलिस थाना है। पुलिस थाना होने के बावजूद जनता पार्टी के पक्ष में है। दस्ता जब भी गांव में जाता है वहां की जनता पार्टी की मदद करती है। और बच्चे–बूढ़े सभी दस्ता के पास आ जाते हैं। कामरेड लिंगु भी वैसे ही आ जाते थे। कामरेड लिंगु को क्रांतिकारी गानों से बहुत लगाव था। भाषणों और गानों को कामरेड लिंगु ध्यान से सुनते थे। गांव में पुलिस कैम्प होने के बावजूद बिना डरे, पुलिस को पता भी न चले, होशियारी के साथ खाना–पानी लेकर आ जाते थे। गांव में डीएकेएमएस संगठन के कामकाज में भी सक्रिय रूप से भाग लेते थे। बाद में वे डीएकेएमएस संगठन के अध्यक्ष चुने गए। संगठन के कामकाज को सुचारू ढंग से चलाने की कोशिश करते थे। जनता को क्रांतिकारी राजनीति से अवगत कराते और संगठित करते थे। वे अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने की कोशिश करते थे। उन्हें जो भी काम सौंपा जाता वे उसे पूरी लगन

के साथ करते थे। उनके कामकाज और व्यवहार को तथा पार्टी व जनता के प्रति विश्वास को देखते हुए उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई। पार्टी सदस्य के तौर पर कामरेड लिंगु ने आखरी दम तक जनता और पार्टी के लिए काम किया। 11 अगस्त 2011 के दिन उल्टी-दस्त और मलेरिया ने अचानक उनकी जान ले ली। सही समय पर इलाज न मिलने की वजह से वे शहीद हो गए। आइए, कामरेड लिंगु के सपनों को साकार करें।

तिरका के वीर शहीदों को लाल-लाल सलाम!

16 अगस्त 2011 को पूर्व बस्तर डिवीजन के बयनार इलाके के ग्राम तिरका में छापामारों की एक तीन सदस्यीय टीम रुकी हुई थी। कामरेड्स बदरू, गोपि और आकाश – ये तीन साथी कुछ मिलिशिया सदस्यों के साथ मिलकर सुबह का खाना बना रहे थे। एक मुखबिर से पहले से इसकी खबर पाकर सरकारी सशस्त्र बलों ने गांव को चारों ओर से घेर लिया। जिस घर में छापामार ठहरे हुए थे उसकी घेराबंदी कर उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। हमारे साथियों ने इस हमले का डटकर मुकाबला किया। एक तरफ अत्याधुनिक हथियारों से लैस करीब डेढ़ सौ सशस्त्र बल थे तो दूसरी तरफ मामूली किस्म के हथियारों से लैस सिर्फ तीन सशस्त्र साथी और एक मिलिशिया सदस्य। शुरूआत में ही पीएलजीए का एक साथी कामरेड बदरू, जो उस टीम का नेतृत्व कर रहे थे, पुलिस की गोली से गिर पड़े थे। लेकिन एक दूसरे साथी ने कामरेड बदरू की रायफल उठाकर गोली चला दी तो एसटीएफ का एक जवान वहीं ढेर हो गया। और उस साथी ने बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए मरे हुए पुलिस कमाण्डो से इन्सास रायफल छीन ली। लेकिन रिट्रीट के समय वह रायफल खेत में छूट गई। इस बीच गोलियों की बौछार से बचने के लिए बाकी कामरेडों ने घर के अंदर जाकर कुंडी लगा ली और अंदर से ही जवाबी आक्रमण शरू किया। शुरूआत में ही अपने एक जवान के ढेर हो जाने के बाद कुछ देर के लिए तो पुलिस बलों का हौसला पस्त हो चुका था और वे थोड़ा पीछे भी हट गए थे। लेकिन बाद में हमले को तेज करते हुए हजारों गोलियों से उस कच्चे मकान को छलनी कर दिया। बीच–बीच में अंदर फंसे पीएलजीए सदस्यों को आत्मसमर्पण के लिए चिल्लाते भी रहे। लेकिन हमारे बहादुर साथियों ने आखिरी दम तक लड़ाई को जारी रखने की कसम खाकर प्रतिरोध का झण्डा बुलंद रखा। पुलिस बलों ने अपनी कायरता का ओछा प्रदर्शन करते हुए मकान के ऊपर मिट्टी तेल छिड़ककर आग लगा दी। और छत के ऊपर से तीन हथगोले गिरा दिए। इस

तरह कामरेड गोपि, आकाश और रामसाय सलाम लड़ते–लड़ते शहीद हो गए। पूरे चार घण्टे तक यह लड़ाई चलती रही। आग की ज्वालाओं और बमों के टुकड़ों से बुरी तरह घायल होकर दम तोड़ने के बाद ही पुलिस बलों ने मकान के अंदर जाने की हिम्मत दिखाई। इस कायराना कार्रवाई को अपनी बहादुरी के रूप में चित्रित करते हुए अधिकारियों ने बढ़ा–चढ़ाकर प्रचार किया। लेकिन तिरका समेत आसपास के सभी गांवों के लोग इसके गवाह रहे और उन्होंने कामरेड्स बदरू, गोपि, आकाश और रामसाय सलाम की बहादुराना शहादत को तहेदिल से इंकलाबी सलाम पेश किया। आइए, इन तीन नौजवान गुरिल्लों की जीवनी पर नजर डालें।

कामरेड पोटामी बदरू

कामरेड बदरू पोटामी (23) का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन, गंगलूर एरिया के ग्राम कोरसेली के एक गरीब परिवार में हुआ था। उनकी मां का नाम मंगली है। उनके पिता को गांव में बैयबोड़ कहकर बुलाते थे जिनकी कुछ साल पहले बीमारी के कारण निधन हो गया। शुरू से ही यह गांव क्रांतिकारी आंदोलन का मजबूत गढ़ रहा है। इस गांव के कई बेटों और बेटियों ने क्रांतिकारी आंदोलन को अपना जीवन समर्पित किया है। कई साथी जनयुद्ध में शहीद हुए हैं। सहज ही, यह गांव सलवा जुडूम के जुल्मों का भी सबसे ज्यादा शिकार रहा है। इस क्षेत्र में सरकारी जुल्म जब जोरों पर था और आए दिन हत्याएं व गांव–दहन जारी था, कई युवक–युवतियों ने अपना घरबार छोड़कर क्रांतिकारी आंदोलन में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में कदम रखा। ऐसे युवकों में एक थे कामरेड बदरू। वह गांव में पहले सीएनएम और भूमकाल मिलिशिया में काम करने के बाद 2006 के आखिर में पीएलजीए में भर्ती हो गए। कुछ दिनों तक पश्चिम बस्तर डिवीजन में काम करने के बाद उन्हें कम्पनी–1 में सदस्य के रूप में स्थानांतरित किया गया। कम्पनी में आने के बाद उन्होंने एक अनुशासित जन सैनिक की तरह अपनी जिम्मेदारियों को पूरी लगन के साथ निभाया। कई फौजी कार्रवाइयों में उनका जबर्दस्त योगदान रहा। कुरसनार, झाराघाट, वेड़माकोट, कोंगेरा आदि

ऐम्बुशों में भाग लेकर दुश्मन के छक्के छुड़ाने में कामरेड बदरू ने एक बहादुर सिपाही की तरह भाग लिया। दुश्मन के हथियार छीन लेने में भी उन्होंने सूझबूझ और पहलकदमी का प्रदर्शन किया।

कामरेड बदरू बहुत ही मेहनती व विनम्र शख़्स थे। सदा हंसमुख और सभी से मिलजुलकर रहने वाले कामरेड थे। कोई भी जिम्मेदारी उन्हें सौम्पने पर बिना कोई आनाकानी किए उसे पूरा कर देते थे। जनता के साथ उनका व्यवहार भी मिलनसार व प्रेमपूर्वक रहता था। स्थानीय माड़िया जनता की संस्कृति और रीति–रिवाजों को समझते हुए उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे। तिरका की लड़ाई में दुश्मन की पहली गोली उन्हें लगी थी जिससे वह वहीं गिर पड़े थे। आज कामरेड बदरू हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके आदर्शों से हमें हमेशा प्रेरणा मिलती रहेगी।

कामरेड गोपी

कामरेड गोपी का जन्म नारायणपुर जिला कोहकामेट्टा एरिया के कोडनार गांव में हुआ था। उनका परिवार पहले जगदलपुर की ओर से जमीन के लिए यहां आकर बस गया था। उनके माता–पिता ने उनका नाम साइबी रखा था। कोडनार कुरुसनार बेस कैम्प के करीब होने की वजह से 2005 से यह गांव लगातार पुलिस हमले का शिकार होता रहा है। इस गांव से बली, बोटी, सोमलू जैसे बहादुर मिलिशिया कामरेड जनता की मुक्ति के लिए अपनी जान दे चुके थे। गांव के कई लोगों को झूठे केसों में फंसाकर जेलों में ठूंस दिया गया है।

कामरेड साइबी 2005 में मिलिशिया में भर्ती हुआ था। मिलिशिया में रहते हुए रात–दिन संतरी करना, आसपास गश्त करना आदि करके जनता की रक्षा करता था। कैंप के करीब होने की वजह से इस गांव में पुलिस हमेशा हमला करती है। जनता को परेशान करना, गिरफ्तार करना, जेल भेजना, हत्या करना आदि करके जनता को डराने की कोशिश करती है। गांव के पुरुष पुलिस के हमलों के डर से गांवों में नहीं रहते। जंगल में रहने के लिए मजबूर हैं। कामरेड साइबी ने भी अपने मिलिशिया साथियों के साथ पुलिस को हैरान–परेशान करने वाली कई कार्रवाइयों में भाग लिया था। 2007 में

कामरेड साइबी पीएलजीए में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर भर्ती हो गया। भर्ती होने के बाद उन्होंने प्लाटून–1 में कुछ समय तक काम किया। वह पार्टी में आने के बाद पढ़ना–लिखना सीखा। पीएलजीए के अनुशासन को सीखते हुए फौजी तकनीकों को सीखने की कोशिश करता था। वह हर काम में आगे रहता था। बाद में उन्हें कम्पनी–1 में बदला गया। वह वहां जाने के लिए खुशी से तैयार हो गया। उसके बाद अपनी शहादत तक उन्होंने कम्पनी–1 में सदस्य के तौर पर काम किया।

कम्पनी के सदस्य के रूप में उन्होंने कुरुसनार ऐम्बुश, कोंगेरा ऐम्बुश और सुलंगी ऐम्बुश में भाग लिया। इन ऐम्बुशों में कामरेड गोपी ने बहादुरी का उम्दा प्रदर्शन किया। 16 अगस्त 2011 को तिरका गांव में हुई मुठभेड़ में शहीद हो गए। आइए, कामरेड गोपी उच्च आदर्शों को आत्मसात करें।

कामरेड आकाश (बहादुर बोगा)

कामरेड आकाश (18) का जन्म राजनांदगांव जिले के मोहला तहसील, जक्के पंचायत, कुमुड़कट्टा गांव में हुआ था। उनके पिता दयालू बोगा एक गरीब किसान हैं। घर में उनका नाम बहादुर था। तीन भाइयों और चार बहनों में वह दूसरी संतान थे। यह गांव पल्लामाड़ी क्षेत्र में आता है जहां पर रायपुर एल्लायज लिमिटेड नामक कम्पनी की लोहा खदान चलती थी। इस लोहा खदान के कारण इस पंचायत के अलावा आसपास के कई गांवों में नदी–नाले, खेत–खलिहान और जंगल–पहाड़ का भारी विनाश हो रहा था। 2007 से इस खदान को बंद करने के लिए जनता ने एक व्यापक आंदोलन शुरू किया जिसमें इस पंचायत की जनता का सक्रिय योगदान रहा। इस संघर्ष का असर कामरेड बहादुर पर था। 2008 में इस क्षेत्र की महामाया खदान पर पीएलजीए ने एक हमला कर करीब दो टन विस्फोटक पदार्थ जब्त कर लिया था। इस विस्फोटक पदार्थ को इस इलाके से विभिन्न इलाकों में पहुंचाने में युवा बहादुर ने भी भाग लिया था। उस समय वह जन मिलिशिया के सदस्य बन चुके थे। उसके बाद 2009 में उन्होंने छापामार दस्ते में भर्ती होने का निर्णय लेकर स्थानीय पार्टी कमेटी के सामने रखा। उन्हें भर्ती करके प्लाटून–23 सदस्य बनाया गया। भर्ती

होने के बाद उन्होंने अपना नाम 'आकाश' रखा। 2010 की शुरूआत में उन्हें एक उच्च कमेटी सदस्य के सुरक्षा गार्ड के रूप में नियुक्त किया गया। इस दौरान उन्होंने अपनी राजनीतिक व सैन्य क्षमताओं को बढ़ाते हुए एक विश्वसनीय साथी के रूप में खुद को विकसित किया। हालांकि कामरेड आकाश आदिवासी गोण्ड समुदाय के थे लेकिन उन्हें गोण्डी भाषा बिल्कुल नहीं आती थी। उनके घर पर छत्तीसगढ़ी बोली जाती थी। पढ़ाई के दौरान हिंदी सीख ली। और पीएलजीए में भर्ती होने के बाद उन्होंने गोण्डी भाषा को अच्छी तरह सीख लिया। 2010 में वह पार्टी सदस्य बने थे। उच्च कमेटी सदस्य के गार्ड रहते समय कामरेड आकाश ने विभिन्न किस्म की तकनीकी कामों में भाग लिया। उन कामों की गंभीरता और गोपनीयता को समझते हुए उन्होंने फौलादी अनुशासन का पालन किया। 2010 में जानी–मानी लेखिका अरुंधति राय और बीबीसी पत्रकार शुभोजित बागची जब दण्डकारण्य के दौरे पर आए थे उनकी सुरक्षा में लगे पीएलजीए के योद्धाओं में कामरेड आकाश भी शामिल थे। वह अपनी जिम्मेदारी निभाने के साथ–साथ उनसे पूछे गए कई सवालों का जवाब देने में... खासकर पार्टी की राजनीति, पीएलजीए के दैनंदिन जीवन व जनता के साथ सम्बन्धों के बारे में उन्हें अवगत करवाने में कामरेड आकाश ने बहुत ही पहलकदमी दिखाई। वह जिस विषय के बारे में जानते थे उसके बारे में अच्छी तरह बता सकते थे। जो नहीं जानते थे तो उसे भी उतनी ही ईमानदारी से कह देते थे। उन्होंने खासकर पत्रकार शुभोजित के दौरे के दौरान उनका काफी ख्याल रखा था। वह हमेशा छाया की तरह उनका साथ देते थे। कामरेड आकाश की शहादत की खबर सुनकर शुभोजित काफी आहत हुए और उन्होंने एक संदेश में यूं लिखाः ''...यह एक नजदीकी दोस्त और छोटे भाई को खोने जैसा है। वह मेरा बहुत ख्याल रखते थे और बेहद मुश्किल हालात में उन्होंने मेरा बढ़िया साथ दिया। मैं बेहद चिंतित हूं और बुरी तरह परेशान हूं। उनकी जिंदगी और उनके काम दूसरों के लिए प्रेरणादायक होंगे। वह हमारी यादों में हमेशा बने रहेंगे।''

2010 के आखिर में उन्हें कम्पनी–6 में सदस्य के रूप में स्थानांतरित किया गया। कम्पनी में रहते हुए उन्होंने फौजी कामकाज को सीखने में पूरा ध्यान लगाया। कम्पनी के रोजमर्रा के जीवन में सभी कामों में उन्होंने उत्साह के साथ भाग लिया। संतरी, व्यायाम, सामूहिक कामकाज, अध्ययन आदि में वह एक आदर्श कामरेड के रूप में विकसित हुए थे। फौजी कार्रवाइयों के सिलसिले में रेकी, स्काउट और खुफिया कामकाज करने में कामरेड आकाश हमेशा आगे रहते थे। कम्पनी पार्टी कमेटी के लिए कामरेड आकाश एक विश्वसनीय और

अनुशासनबद्ध सदस्य बने थे।

राजनांदगांव के जिस पल्लामाड़ी क्षेत्र में कामरेड आकाश पैदा हुए थे वहां पर 2007 से ही क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार हुआ था। मुख्य रूप से बस्तर व गढ़चिरोली क्षेत्र से पार्टी कार्यकर्ताओं ने वहां जाकर जनता को संगठित करना शुरू किया। और 2010 आते–आते कामरेड आकाश वहां से पार्टी में भर्ती होकर अपनी जिम्मेदारियों के तहत पूर्व बस्तर आए थे। और जब पार्टी ने उन्हें कम्पनी–6 में काम करने को कहा तो उन्होंने खुशी के साथ स्वीकार किया। सर्वहारा अंतरराष्ट्रीयवाद का परचम ऊंचा उठाते हुए उन्होंने बस्तर की धरती पर अपना खून बहा दिया। आकाश अब हमारे बीच नहीं है लेकिन आकाश अनंत है, आकाश सर्वव्यापी है, आकाश का अंत करना असंभव है। आइए, इस नौजवान क्रांतिकारी के खून से लाल हुए सर्वहारा के झण्डे को ऊंचा उठाकर शोषणविहीन समाज के निर्माण की ओर तेजी के साथ कदम बढ़ाएं।

कामरेड रामसाय सलाम

कामरेड रामसाय नारायणपुर जिला के कज्जुम गांव के गरीब किसान परिवार में जन्मे थे। वह 2010 में डीएकेएमएस संगठन में शामिल हो गये। तभी से ग्राम रक्षक दल में भी सदस्य के तौर पर काम करने लगे। क्रांतिकारी जनताना सरकार की रक्षा के लिए 2011 में मिलिशिया प्लाटून में शामिल हो गये। मिलिशिया में रहते हुए मिलिशिया द्वारा किए जाने वाले सभी कामों में बड़ी उत्साह के साथ भाग लेते थे। तिरका गांव में कामरेड बदरू, आकाश और गोपी से मिलने गए थे। उस समय वह निहत्थे थे। फिर भी दुश्मन के हमले का प्रतिरोध करने में वह पीछे नहीं रहे। आखिरी दम तक दुश्मन के सामने अपना सर न झुकाते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

कामरेड रनिता (रामको हिचामी)

उत्तर गढ़चिरोली डिवीजन में माकड़चुवा एक छोटा सा आदिवासी गांव है, जिसमें केवल पांच घर हैं। 20 अगस्त 2011 की सुबह के सात बजे वहां तीन गुरिल्लों की

एक टीम पहुंची थी जबकि करीब डेढ़ सौ कोबरा, सी-60 और पुलिस के दरिंदों ने रात के अंधेरे में ही गांव को घेर रखा था। उस टीम में शामिल थीं कामरेड रनिता। बीच बस्ती में इस टीम के साथ पुलिस वालों का आमना-सामना हुआ। तुरंत रनिता ने अपने कामरेडों को घेरा तोड़कर गांव से निकलने का आदेश दिया। मुठभेड़ शुरू हो गई। एक तरफ थे प्रशिक्षित कमाण्डो बल जिनके पास थे एके-47, एसएलआर, इंसास, मोर्टार, एलएमजी, ग्रेनेड आदि घातक हथियार। उनके सामने थे हमारे तीन कामरेड जिनके पास थे मामूली किस्म के हथियार। सिर्फ कामरेड रनिता के पास थी एक .303 रायफल जो अरसा पहले पुलिस बलों से छीनी हुई थी। इस रायफल के 33 कारतुस थे उनके पास। दो कामरेड फायरिंग करते हुए गांव से निकल जाने में कामयाब हो गए। लेकिन कामरेड रनिता को वहां से निकलने का मौका नहीं मिला। घर के पास ही छोटा सा मकई का खेत था, जिसके अंदर वह जा छिप गईं। वह एक एकड़ से भी कम का खेत था।

हमारे साथियों का पीछा करते हुए जंगलों में जाने वाले पुलिस बल फिर उसी घर के पास आ गए। आने के बाद गांव वालों के साथ मार-पिटाई करने लगे और ध मकियां देने लेगे। उन्हें यह नहीं पता था कि उनके बगल में मौजूद मकई के खेत के अंदर एक गुरिल्ला नारी छिपी हुई है। पुलिस वाले जब खेत के आसपास मंडरा रहे थे तो कामरेड रनिता उनको ठीक से देख पा रही थीं। उन्होंने निशाना साधते हुए अपनी .303 रायफल का मुंह खोल दिया। पहली ही गोली से एक कमांडो औंधे मुंह गिर गया और वहीं पर दम तोड़ दिया। लेकिन कमांडों को यह नहीं समझ आया कि गोली कहां से आयी थी। सभी मरे हुए कमांडो को उठाने के लिए जमा हो गए। कामरेड रनिता ने और एक मौका ताड़कर फिर निशाना साधते हुए एक के बाद एक गोली दागनी शुरू कर दी। एक और कमांडो ढेर हो गया। वहीं दो और बुरी तरह से घायल हो गए। तब जाकर उनको समझ में आया कि मकई के खेत में कोई गुरिल्ला छुपा हुआ है। उसके बाद एक कमांडो ने बुलेटप्रूफ जैकेट, हेलमेट आदि पहनकर खेत में घुसने की कोशिश की। कामरेड रनिता ने बहुत ही सूझबूझ और धैर्य का परिचय देते हुए उसको आगे आने दिया। जब वह काफी नजदीक आ गया तो सीधे माथे में गोली मारी और उसका काम तमाम कर दिया। सी-60 और कोबरा कमांडों का घमंड वहीं पर चकनाचूर हो चला। वे सब उल्टे पांव अपने कवरों में भाग गए। आगे बढ़ने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहे थे। दूर से ही गोलियां बरसाते रहे और रेडियो सेटों पर अपने आकाओं से मदद की

गुहार लगाते रहे। अपने आकाओं को बताते रहे कि सैकड़ों माओवादियों से माकड़चुवा में 3 घंटे से मुठभेड़ जारी है और उनको तुरंत मदद की जरूरत है। करीब 10 बजे तक 6-7 माईनप्रूफ गाड़ियों के अलावा दर्जनों वाहनों में सैकड़ों अतिरिक्त सी-60 कमांडो, कोबरा व जिला पुलिस बल के जवान पहुंच गए। हवा में हेलिकॉप्टर चक्कर काटने लगे थे। माकड़चुवा के आस-पड़ोस के पोटेगांव, हेटी, ताड़गुड़ा आदि जगहों में भी दुश्मन ने अपने बलों को तैनात कर दिया। कुल मिलाकर करीब 600 की संख्या में कमाण्डो बलों ने पूरे इलाके को सैनिक छावनी में तब्दील कर दिया मानों वहां पर बड़ा युद्ध छिड़ गया हो।

अतिरिक्त मदद पहुंचने के बाद साढ़े दस बजे एक बार फिर दुश्मन बलों ने मकई के खेत की तरफ बढ़ने की हिम्मत जुटाई। एक बार फिर गोलियां बरसाते हुए आगे बढ़े लेकिन फिर एक बार उनको धूल चाटनी पड़ी। कामरेड रनिता ने फिर अपनी . 303 रायफल से गोलियां दागीं जिसमें दो कमाण्डो और गंभीर रूप से घायल हो गए। कमांडों को फिर उल्टे पांव भागना पड़ा। तीसरी बार कमांडों ने ग्रेनेडों की बरसात शुरू की। एक के बाद एक लगभग 25 ग्रेनेड फेंके। हरा-भरा मकई का खेत का एक बड़ा हिस्सा जल गया। लेकिन कामरेड रनिता ने रायफल को मजबूती से थामे रखकर खेत के अंदर मौजूद एक गड्ढ़े में अपने को छिपाए रखा जिससे वह बमों की बरसात और गोलियों के तूफान को भी झेल सकीं। दुश्मन बलों ने गांव वालों को जमा कर खूब पीटा और धमकाया। धीरे-धीरे शाम होने लगी थी। भाड़े के कमाण्डो अब सोचने लगे थे कि अगर अंधेरा हो गया तो वे कुछ नहीं कर पाएंगे। गांव के जिस किसान का वह खेत था उस व्यक्ति को 'मुठभेड़' में मार डालने की धमकी देकर मकई के खेत को तुरंत काटने के लिए बोला ताकि छिपी हुई गुरिल्ला को चिन्हित करके गोली मार दी जा सके। जब मकई काटा जा रहा था तो एक कमांडो पेड़ पर चढ़कर लगातार उस किसान की निगरानी कर रहा था। अंत में जब मकई को काट दिया गया तब कामरेड रनिता उनकी नजर में चढ़ गयी तो उसने निशाना लगाते हुए पेड़ के ऊपर से गोलियां दाग दीं। इस तरह गढ़चिरोली जिले के शोषित अवाम की प्यारी बेटी कामरेड रनिता ने दम तोड़ दिया। उनकी लाश के पास रायफल के अलावा 19 कारतूस मिले थे। यानी उन्होंने इस पूरी लड़ाई में सिर्फ 14 गोलियां खर्च कीं।

सुबह 7 बजे से शाम के 3 बजे तक इस अकेली गुरिल्ला पर निरंतर गोलियां बरसती रहीं। जिस माटी से पैदा हुई उसी माटी को अपने लहू के आखरी कतरे तक अर्पित कर कामरेड रनिता ने अपनी जान कुरबान कर दी। उनकी शौर्यपूर्ण शहादत की खबर जंगल की आग की तरह न सिर्फ गढ़चिरोली जिले में, बल्कि समूचे दण्डकारण्य

की जनता में फैल गयी। आइए, इस निरुपम वीरांगना की आदर्शपूर्ण जिंदगी के अन्य पहलुओं पर नजर डालें।

तकरीबन 35 साल की कामरेड रनिता का जन्म गढ़चिरोली जिले के एटापल्ली तहसील के पोटावी जेवेली गांव में आदिवासी हिचामी परिवार में हुआ था। जिले में पार्टी के नेतृत्व में संघर्ष के विस्तार के साथ-साथ कामरेड रनिता भी बड़ी होती गयीं। 18 साल की होते ही वह पार्टी में भर्ती हो गयीं। इस गांव ने अपने कई बेटों-बेटियों को पार्टी व क्रांति को समर्पित किया है। उनके परिवार के कई दूसरे सदस्य भी पार्टी और जन संगठनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मां सुइनी और पिता दल्लू की इस लाड़ली बेटी का नाम घर में रामको था। रामको के तीन भाई व एक छोटी बहन हैं। दल्लू हिचामी गरीबी के चलते अपनी बेटी को नहीं पढ़ा सके। रामको बचपन से ही अपनी मां के साथ झाड़ू बुहारना, पानी लाना, गोबर फेंकना, खाना बनाना आदि घरेलू कामों में हाथ बंटाया करती थीं। जैसे-जैसे वह बड़ी होती गयीं तो घर का सारा काम उनके ऊपर ही आन पड़ा। घरेलू कामों को सुबह-सुबह ही खत्म कर अपने भाइयों के साथ खेत में हल चलाने जाती थीं। रामको छोटे, बड़े सबकी चहेती हुआ करती थीं। मुस्कराहट हमेशा उनके चेहरे पर बनी रहती थी। इसलिए रामको का घर ही गांव के तमाम लड़के-लड़कियों का अड्डा बनता था।

लुटेरी सरकार द्वारा जारी सुधार कार्यक्रमों के सिलसिले में गांव में एक बार प्रौढ़ शिक्षा मिशन शुरू हुआ था। लोगों के नाम तो उसमें दर्ज किये गए थे लेकिन कभी भी स्लेट-पेंसिल, पुस्तकें आदि नहीं दी गयी थीं। पार्टी द्वारा संचालित रात्रि-स्कूल में कामरेड रामको ने पढ़ना-लिखना सीखा। पार्टी में भर्ती होने के बाद उस ज्ञान में और इजाफा हुआ।

दरअसल नई-नई चीजों को सीखना चाहे वह गाना हो, नाच हो या पार्टी का अन्य कामकाज - वह मन लगाकर सीखती थीं। गाय-बकरी चराने के लिए जब सब जंगल जाते तब भी उनकी जुबां पर गाने ही घूमते रहते थे। इसी तरह उन्होंने पार्टी के गीतों व अन्य कामों को भी सीख लिया। 1988-1990 के दरमियान उस इलाके में जनसंगठनों का जबर्दस्त विस्तार हुआ। जन संगठनों के कार्यकर्ता गांव-गांव में गीत-नाचों के जरिये सभाएं करने आते थे। 1991-92 के बीच उसके गांव के जनसंगठन नेताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया और यातनाएं दीं। तब तक कामरेड रामको भी जनसंगठन के कामों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी थीं। इसके चलते गांव के मुखियाओं का दबाव उसके मां-बाप पर आया। उन्हें रोकने की कोशिश की गयी। उन्हें डर दिखाया जाता था कि संगठन में जाने से जेल होगा। उस दौरान गुरिल्ला दस्ता का

भी गांव में कम ही आना-जाना होता था।

1995-96 में दस्ते ने फिर से उनके गांव में जाना शुरू किया। फिर एक बार दंडकारण्य आदिवासी किसान-मजदूर संघ और क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की इकाइयों का गठन किया गया। तब कामरेड रामको केएएमएस की सदस्या बन गयीं।

पारंपरिक तरीके से जबरदस्ती की जाने वाली शादियों के खिलाफ बचपन से ही रामको ने बगावत का झंडा उठा लिया था। उन्होंने न केवल दूसरों के मामले में, बल्कि जब खुद की जबरदस्ती शादी की जाने लगी तो उसके खिलाफ डटकर लड़ा और अपने संघर्ष में सफलता अर्जित की। शादी के बाद महिलाओं के ब्लाउज (चोली) पहनने पर पारंपरिक रूप से आदिवासी रिवाज में पहले प्रतिबंध होता था, ऐसे गलत रिवाजों के खिलाफ किए गए संघर्ष में कामरेड रामको ने भी भागीदारी की। पारंपरिक मुखियाओं के खिलाफ लड़ने के लिए युवतियों को संगठित किया। गरीबी, शोषण, उत्पीड़न, महिलाओं के खिलाफ सामंती कबीलाई रीति-रिवाज आदि को कामरेड रामको अच्छी तरह समझ चुकी थीं। इसलिए वर्ग दुश्मनों और प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ कामरेड रामको दृढ़ता के साथ खड़ी हो गईं।

1997 में कामरेड रामको को केएएमएस की रेंज कमेटी में चुना गया था। महिलाओं की समस्याओं पर कामरेड रामको की समझ को देखते हुए केएएमएस की ओर से उन्हें आंध्रप्रदेश के हैदराबाद शहर में 1997 में प्रस्तावित एक महिला सेमिनार में भेजने का फैसला किया गया था। हालांकि कामरेड रामको को हिंदी या अन्य भाषाएं नहीं आती थीं, फिर भी वह उसके लिए तैयार हुई थीं। 1997 में 'नक्सलबाड़ी के 30 साल' के अवसर पर कोलकाता में एक व्यापक आमसभा हुई थी। कामरेड रामको उसमें जाने के लिए भी सहर्ष तैयार हो गयीं। उन्होंने अपने कई साथियों को भी कोलकाता जाने के लिए तैयार किया। कोलकाता मीटिंग से वापस आते समय रेल चढ़ने के दौरान गिर जाने से वह बुरी तरह घायल भी हुई थीं। और आते-आते पुलिस ने उनके भाई को गिरफ्तार किया था। फिर भी उन्होंने हिम्मत से काम लिया।

कामरेड रामको ने अपने गांव में संगठन को मजबूत करने की पूरी कोशिश की। वह न केवल अपने गांव में, बल्कि आासपास के दूसरे गांवों में भी महिलाओं की मीटिंगों में भाग लेने जाती थीं। इस तरह वह उस इलाके में सभी की चहेती बन गईं। 1999 में कामरेड रामको कसनसूर एरिया के गुरिल्ला दस्ता में भर्ती हो गयीं। वहीं से कामरेड रामको का नाम 'रनिता' के रूप में बदल गया जो जनयुद्ध के इतिहास के पन्नों में स्थाई रूप से अंकित हो गया। कामरेड रनिता ने आंदोलन में राजनीतिक तौर पर दृढ़ता से खड़े होने के बाद एक साथी कामरेड को पसंद कर पार्टी के तौर-तरीकों में उनसे

शादी कर ली।

गुरिल्ला दस्ते में भर्ती होने के बाद 1999 में ही कामरेड रनिता का तबादला टिप्रागढ़ एरिया में किया गया था। उस समय टिप्रागढ़ एरिया की जनता दुश्मन के दमनचक्र का प्रतिरोध करते हुए फिर से अपने आपको संगठित करने लगी थी। वह जिस भी गांव में जातीं महिलाओं को, खासकर युवतियों को केएएमएस में संगठित करने का प्रयास करती थीं। रेंज व एरिया स्तर पर केएएमएस अधिवेशनों का आयोजन कर उन्होंने केएएमएस को मजबूत करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। कोसमी गांव की शहीद कामरेड मैनाबाई नैताम के साथ मिलकर उन्होंने कोसमी गांव में तीखा संघर्ष चलाकर जन विरोधी व महिला विरोधी तत्वों के वर्चस्व को समाप्त कर कोसमी गांव को केएएमएस के मजबूत गढ़ में बदल दिया।

2003 में ग्यारापत्ति में आयोजित 3 हजार लोगों का मोर्चा (जुलूस) और मानपुर में आयोजित 10 हजार लोगों का मोर्चा जिसमें महिलाओं की भारी संख्या में शामिल थीं, के पीछे कामरेड रनिता के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वह एक मजबूत व सुलझी हुई संगठनकर्ता थीं। अपनी बात को मनवाने के लिए वह हमेशा समझाने-बुझाने का तरीका अपनाती थीं।

कामरेड रनिता को 2003 में पार्टी ने एरिया कमेटी सदस्य के रूप में पदोन्नति दी। उनकी राजनीतिक व सांगठनिक योग्यताओं और पार्टी के प्रति प्रतिबद्धता को देखते हुए उन्हें यह पदोन्नति दी गई। उन्होंने पूरी लगन के साथ पार्टी के साहित्य को पढ़ते हुए अपनी राजनीतिक चेतना बढ़ा ली। पार्टी द्वारा दी गयी हर जिम्मेदारी को वह सिर-माथे पर लेती थीं। 2004 में उनको दल की उप कमांडर का कार्यभार सौंपा गया। अपनी मेहनत व लगन से वह जल्द ही एक कमांडर के स्तर पर पहुंच गयीं। बाद में उनको उस दस्ते की कमांडर के रूप में नियुक्त किया गया।

समय-समय पर पार्टी द्वारा चलाए गए भूल सुधार अभियानों में कामरेड रनिता ने एक परिपक्व कम्युनिस्ट के तौर पर भाग लिया। हमेशा अपनी गलतियों से सबक लेकर आगे बढ़ना उनका एक खास गुण था। पार्टी के अन्य सदस्यों के अंदर मौजूद गैर-सर्वहारा रुझानों और पितृसत्तात्मक विचारधारा के खिलाफ उन्होंने वैचारिक संघर्ष चलाया। खासकर 2010-11 में जब गढ़चिरोली डिवीजन में गैर-सर्वहारा रुझानों के खिलाफ एक विशेष भूल-सुधार अभियान लिया गया था, उसमें कामरेड रनिता ने एक आदर्श कम्युनिस्ट के रूप में आलोचनाएं पेश कीं।

डिवीजन में सांस्कृतिक कर्मी के रूप में भी कामरेड रनिता का योगदान महत्वपूर्ण रहा। उनकी मौजूदगी में सीएनएम का कोई कार्यक्रम हो और वह गीत-नृत्य में भाग न

लें ऐसा हो ही नहीं सकता था। जब वह गांव में जाती थी तो युवक-युवतियां रनिता के स्वर में गाने सुनने के लिए जमा हो जाते थे। उनको आशा रहती थी कि रनिता है तो कुछ गाने भी सुनाएगी।

अपने गांव में रहते समय ही कामरेड रनिता ग्राम सुरक्षा दल की सक्रिय सदस्या बनी थीं। उन्होंने कई बार दुश्मन के कैंप पर की गई फायरिंग में भाग लिया। जनविरोधियों तथा पुलिस मुखबिरों को सजा देने में वह कभी पीछे नहीं हटती थीं। एक बार प्लाटून उनके गांव के पास सड़क पार कर रहा था तब अचानक पुलिस से उसकी मुठभेड़ हो गयी। कुछ देर तक फायरिंग चलती रही। उसके बाद सुरक्षित पीछे हटकर प्लाटून उनके गांव जेवली में रुका तब उन्होंने कामरेडों से सुना कि उनका कुछ-कुछ सामान घटनास्थल पर छूट गया था। कामरेड रनिता ने दूसरे दिन सबेरे ही फायरिंग स्थल पर जाकर छूटे हुए सामानों को उठा लाकर प्लाटून के हाथों सौंप दिया।

14 नवंबर 2008 को कुरेनार में दुश्मन के आने की खबर जब उन्हें मिली थी तब उनकी तबियत खराब थी और पैरों में चप्पल तक नहीं थे। फिर भी उन्होंने अपने दस्ते के साथ डेढ़ घंटे तक दौड़ते हुए जाकर दुश्मन पर हमला किया था, जिसमें सीआरपीएफ के दो भाड़े के सैनिक मारे गए थे और एक घायल हुआ था। आखिरी बार हुई माकड़चुवा की मुठभेड़ जिसमें कामरेड रनिता ने वीरगति को प्राप्त किया, में उनकी बहादुरी की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम होगी।

2008 के अगस्त महीने में जब चातगांव एरिया जनातना सरकार का गठन किया जा रहा था तब प्रतिनिधि सभा ने सर्वसम्मति से उन्हें चातगांव एरिया क्रांतिकारी जनतना सरकार की अध्यक्ष के रूप में चुन लिया। पार्टी, पीएलजीए व जन संगठनों के कामकाज को समन्वय करते हुए जिस कुशलता से कामरेड रनिता ने क्रांतिकारी जनतना सरकार का संचालन किया वह अन्य साथियों के लिए अनुकरणीय बन गया है। प्रतिकूल परिस्थितियां होते हुए भी, शोषक सरकार के फर्जी सुधार कार्यक्रमों का पर्दाफाश करते हुए चातगांव एरिया में क्रांतिकारी विकास कार्यक्राम की शुरूआत कर कामरेड रनिता ने लुटेरी सरकार को करारा जवाब दिया। जनता को केन्द्र में रखते हुए अपनाए गए जन विकास कार्यक्रमों के जरिए एक विकल्प प्रस्तुत करने में कामरेड रनिता का योगदान शानदार रहा।

कामरेड रनिता आज हमारे बीच नहीं हैं। उनकी शहादत से पार्टी को जो नुकसान हुआ है उसकी भरपाई आसान नहीं होगी। लेकिन हजारों वीर योद्धाओं द्वारा स्थापित शहादत की महान परम्परा को कामरेड रनिता ने जिस प्रकार आगे बढ़ाया है उससे उनकी मृत्यु हिमालय से भी ऊंची हो गई है। उन्होंने वीरता व बहादुरी की जो मिसाल पेश

की है वह आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गयी है। आज कामरेड रनिता का मतलब बन गया है – सच्ची कम्युनिस्ट, जनता की ईमानदार सेवक, एक आदर्श जन नेता, एक ऐसी वीरांगना जो अकेली होते हुए भी आधुनिक हथियारों से लैस सैकड़ों दुश्मनों को धूल चटा देगी। आइए, इस वीरांगना की प्रेरणादायक शहादत को अपना सिर झुकाकर सलाम करें।

कामरेड अवलम बुधरू

पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगलूर एरिया के ग्राम पिड़िया के निवासी थे कामरेड अवलम बुधरू। बचपन में बाल संगठन में रहने के बाद बड़े होकर डीएकेएमएस का सदस्य बन गया। उनकी सांगठनिक व राजनीतिक क्षमता को देखते हुए डीएकेएमएस का अध्यक्ष चुन लिया गया। गांव की जन समस्याओं को हल करने में उनकी पहलकदमी रही। एक बार बीमार होकर अस्पताल गए थे जहां पुलिस व एसपीओ ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन्हें झूठे केसों में फंसाकर जेल भेजा गया। जेल में मौजूद अमानवीय परिस्थितियों, खाना तक ठीक से नहीं मिलने की स्थिति में वह बीमार होकर रिहा होकर आए थे। आने के कुछ ही दिनों के अंदर, 3 सितम्बर 2011 को उनका देहांत हुआ। जेल जिंदगी ही उनकी मौत का कारण था। इस तरह इस शोषक व्यवस्था ने ही अवलम बुधरू की हत्या की। इसे ध्वस्त करना ही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कामरेड एमला लखू

पश्चिम बस्तर डिवीजन, भैरमगढ़ एरिया के गांव पुलादी (पुल्लुम) में कामरेड एमला लखू (38) का जन्म हुआ था। उनके माता–पिता और बड़े भैया पहले ही चल बसे थे। लखू अपने पीछे बीवी, बच्चे और छोटी बहनें छोड़ गए। छोटी उम्र में वह बाल संगठन में शामिल हुए थे। बाद में डीएकेएमएस सदस्य बने थे। उसके अध्यक्ष के रूप में उन्होंने 8 साल काम किया। वह अपने आसपास के गांवों में लोकप्रिय नेता बने थे। इस इलाके में होने वाले हर जन संघर्ष के पीछे और क्रांतिकारी दिवस के हर आयोजन के पीछे कामरेड लखू का योगदान हुआ करता था। सरकारों की जनविरोधी व दमनकारी नीतियों के खिलाफ जुलूस, रैली, चक्काजाम आदि हर संघर्ष को सफल बनाने में कामरेड लखू की मेहनत और नेतृत्वकारी गुण अहम होते थे। 1998 से 2000 तक वह डीएकेएमएस के डिवीजनल कमेटी सदस्य और रेंज कमेटी अध्यक्ष के रूप में रहे। 2001 से 2003

तक पंचायत स्तर की कमेटी के अध्यक्ष के रूप में काम करते आए थे।

फासीवादी महेन्द्र कर्मा ने 1997–98 में इस इलाके में जन जागरण अभियान–2 चलाया था। उस दौरान कई गांवों पर प्रतिक्रियावादी गुण्डों ने हमले कर जनता के साथ मारपीट, हत्याएं और महिलाओं के साथ बलात्कार किया था। ऐसे समय कामरेड लखू मजबूती से खड़े रहे और अपने क्षेत्र की प्रतिक्रियावादियों के सामने सरेंडर न करने पर जोर देकर जनता को क्रांतिकारी पक्ष में बनाए रखा था। गुण्डों और जमींदारों के खिलाफ हुई कई प्रतिरोधी कार्रवाइयों में लखू ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। 2005 में सलवा जुडूम शुरू होने के बाद से पुलादी गांव पर पुलिस, एसपीओ और अर्द्धसैनिक बलों ने सौ से ज्यादा बार हमला किया। एक दर्जन से ज्यादा लोगों की हत्या की। गांव को तबाह कर दिया। फिर भी लखू ने संघर्ष का झण्डा बुलंद रखा। जनता को दुश्मन के सामने झुकने से रोके रखा। जनता को कामरेड लखू पर बहुत भरोसा था। लखू ने समझाया कि दुश्मन के सामने घुटने टेकने का मतलब है जल–जंगल–जमीन पर हम अपने अधिकार से हमेशा के लिए वंचित होना। पीएलजीए के लिए भी कामरेड लखू एक महत्वपूर्ण सहयोगी थे। कई कार्रवाइयों की योजना बनाने में लखू का योगदान रहा।

वह पार्टी के महत्वपूर्ण सदस्य थे। पार्टी की गोपनीयता और प्रतिष्ठा को उन्होंने हमेशा ऊंचा उठाए रखा। जनता के बीच पानी में मछली की तरह रहते हुए तथा दुश्मन की आंखों में हमेशा धूल झोंकते हुए काम करने के दौरान कामरेड लखू फेफड़ों सम्बन्धी बीमारी से ग्रस्त हो गए। समय पर इलाज नहीं हो पाने के कारण 17 सितम्बर 2011 को उन्होंने अंतिम सांस ली। एक निस्वर्थ जन नेता और आदर्श कम्युनिस्ट के रूप में कामरेड लखू ने जो काम किया वह हमें सदा प्रेरणा देता रहेगा।

कामरेड सुक्का (जिला)

कामरेड मुच्चाकी सुक्का (25) का जन्म बीजापुर जिला के उसूर एरिया के रेंगाम गांव में हुआ था। वह पिता बुधरा और मां देवे दम्पत्ती की पहली संतान थे। माता–पिता ने उनका नाम प्यार से सुक्का रखा था। उनका परिवार 1985 में दन्तेवाड़ा जिला के कटेकल्याण पंचायत के डब्बा गांव से जमीन की तलाश में आकर रेंगाम गांव में बस गया था। जब कामरेड सुक्का 12–13 साल के थे तभी मां चल बसी। उसके दो साल बाद उनके पिता भी गुजर गए। सुक्का को उनकी मौसी ने पाल–पोसकर बड़ा किया।

इस एरिया में 1980 में पार्टी ने कदम रखा। तब उसूर एरिया को सरकार ने 'रक्षित वन' क्षेत्र घोषित किया था। इस इलाके में राजस्व विभाग के अंग निष्क्रिय थे। इस इलाके में बसे अधिकतर गांव कटेकल्याण एरिया से पलयान कर आए परिवारों के हैं। उस समय इस इलाके में वन विभाग के जुल्मों व अत्याचारों से जनता त्रस्त थी। पार्टी ने उन्हें राह दिखाई। पार्टी के नेतृत्व में जनता ने वन विभाग के खिलाफ संघर्ष किया। तबसे जनता जल-जंगल-जमीन के पर अधिकार हासिल करने और जुल्मी व्यवस्था को ध्वस्त कर जनवादी सत्ता को कायम करने के लिए संघर्षरत है। कामरेड सुक्का भी इन्हीं संघर्षों के बीच पले-बढ़े थे। 2004 में उनके गांव में पहली बार ग्राम सुरक्षा दल का गठन हुआ। तब कामरेड सुक्का भी उसमें सदस्य के तौर पर शामिल हो गया।

2008 में कामरेड सुक्का दस्ते में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर भर्ती हो गए। भर्ती होते ही उन्हें उत्तर तेलंगाना के खम्मम जिला के वेंकटापुर एरिया में भेजा गया। कामरेड सुक्का ने बेहिचक दूसरे राज्य में जाने के लिए तैयार हो गए। वहां कामरेड जिला के नाम से जनता में परिचित हुए। वहां पर जनमिलिशिया दस्ते में सदस्य के तौर पर कुछ महीने काम करने के बाद शबरी एरिया में एलओएस में काम किया। बाद में उन्हें डिवीजनल कमेटी सचिव के गार्ड के तौर पर वहां से बदला गया। दिसम्बर 2010 में गार्ड से छुट्टी होने के बाद उन्हें प्लाटून में सेक्शन डिप्युटी कमांडर की जिम्मेदारी दी गई। 2011 में उन्हें वहां से भी बदलकर वेंकटापुर एरिया में जन मिलिशिया दल के कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। 25 सितम्बर 2011 के दिन आंध्र ग्रेहाउण्ड्स के साथ चेन्नापुरम गांव में हुई मुठभेड़ में बहादुरी के साथ लड़ते हुए शहादत को प्राप्त हुए। अपने प्यारे बेटे की मौत की खबर सुनकर जनता पुलिस थाने में जाकर पुलिस के साथ लड़कर उनके पार्थिव शरीर को लेकर आई और 28 सितम्बर के दिन उनके गृहग्राम रेंगाम में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

कामरेड जिला अपनी क्रांतिकारी सफर में जहां भी काम किया वहां पार्टी अनुशासन नियमों को कड़ाई से पालन किया। उनको दी गई जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ाने का प्रयास किया। उन्हें घर में पढ़ने का मौका नहीं मिला था। पार्टी में आने के बाद उन्होंने हिन्दी व तेलगु भाषाओं में पढ़ना-लिखना सीखा। तेलुगु बोलना भी सीखा। जब भी खाली समय मिलता तो पढ़ने के लिए उपयोग करते थे। पत्र-पत्रिकाएं पढ़कर समझने की कोशिश करते और अपने साथियों और जनता को भी समझाते थे। जनता को क्रांतिकारी राजनीति से परिचित कराते, जहां भी जाते वहां जनता के साथ घनिष्ठ संबंध कायम करने में आगे रहते। आइए, कामरेड सुक्काल की शहादत से प्रेरणा लें और शोषण विहीन नव भारत के निर्माण के लिए कदम बढ़ाएं।

कामरेड विजय (सुखानंद)

कामरेड विजय का जन्म 36 वर्ष पहले नारायणपुर जिला के इन्नर गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। वह राउत समुदाय के थे। उनके तीन बच्चे हैं। माता-पिता ने विजय का नाम सुखानंद रखा था। कामरेड विजय 1995 से पार्टी के सम्पर्क में आए। इन्नर गांव में जब दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगठन का गठन हुआ तो उसमें कामरेड विजय भी शामिल हो गए। आसपास के गांवों में भी संगठन बनाने में कामरेड विजय की महत्वपूर्ण योगदान रहा।

जिस समय इस इलाके में पार्टी ने कदम रखा तब सरकारी जुल्म व शोषण का दबदबा था। जंगल विभाग और पटवारियों द्वारा मनमानी वसूली की जाती थी। गांवों में सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे पटेल, गायता, पुजारियों, सरपचों आदि का राज चलता था। रीति-रिवाजों के नाम से गरीबों के ऊपर जुल्म और शोषण करते थे। जनता आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक रूप से शोषण और वंचनाओं की शिकार थी। गांव में उनके द्वारा बनाए गए नियमों में जरा भी चूक होने पर जुर्माना लगाना, सजाएं देना आदि कर जनता को प्रताड़ित किया जाता था। महिलाओं की स्थिति और भी नाजुक थी। उन्हें सरकारी शोषण के साथ पितृसत्तात्मक समाज के दोहरी शोषण का शिकार होना पड़ता था। जंगल विभाग और सरकारी कर्मचारियों के द्वारा यौन शोषण का शिकार होना पड़ता था। रीति-रिवाजों के नाम पर वंचनाओं की शिकार थीं। पार्टी ने उन्हें मुक्ति की राह दिखाई और शोषण व उत्पीड़िन के खिलाफ संगठित किया। इन सबके खिलाफ संघर्ष में कामरेड सुखानंद ने आगे रहते हुए सक्रिय रूप से भाग लिया। और जनता को संगठित करने में अहम भूमिका निभाई।

2002 में कुछ समय के लिए दस्ता इस इलाके में नहीं आने से परगाणा भर के पुराने सियान (पटेल, पुजारी, गायता, सरपंच आदि) पार्टी के आने से पहले जिनके हाथ में सत्ता थी, इस मौके का फायदा उठाकर सरकार से हाथ मिलाकर जन संगठनों खिलाफ सर उठाने लगे। पार्टी और जन संगठनों के खिलाफ अभियान छेड़ दिया। एरिया भर में जन संगठनों के कार्यकर्ताओं की पिटाई करना, जन संगठन से इस्तीफा दिलवाना आदि किया गया। इस दौरान कामरेड विजय को बुरी तरह पीटा गया, जान से मारने की धमकी दी गई, और मारने की कोशिश भी की गई। परन्तु कामरेड विजय उनके धमकियों से न डरते हुए, अपनी जान की परवाह किए बगैर उनके बुरे मंसूबों का पर्दाफाश करते हुए जनता को संगठित कर उनके खिलाफ संघर्ष किया। उन्हें जन अदालतों में रखकर सजाएं दीं। 2003 में कामरेड विजय दण्डकारण्य आदिवासी

किसान-मजदूर संगठन के रेंज कमेटी सदस्य के रूप में चुने गए। कामरेड विजय सदा जनता की सेवा की और जनता के लिए काम किया। संगठन के कार्यों के सिलसिले में उन्हें 'नेगी' के नाम से जनता बुलाती थी। वो जनता के बीच एक लोकप्रिय नेता के रूप में स्थापित हुए थे।

इसलिए लुटेरे वर्गों के लिए कामरेड नेगी आंख की किरकिरी बन गए थे। पुलिस उनको मारने के लिए हाथ धोकर पीछे पड़ी थी। कई बार जनता की मदद से कामरेड नेगी पुलिसिया हमले से बाल-बाल बचे थे। उनके घर पर हमेशा पुलिस की नजर रहती थी। कई बार उनके घर पर हमला किया गया। लेकिन कामरेड नेगी उनकी पकड़ में कभी नहीं आए। उन्हें मारने के लिए पुलिस ने एक घिनौनी चाल चली। अपनी ही उंगलियों से अपनी आखों को फोड़ने की नीति को अपनाते हुए कामरेड नेगी के खुद भाई को गिरफ्तार कर पुलिस थाने में कुछ दिन रखकर डरा-धमकाकर, पैसों का लालच दिखाकर मुखबिर बना लिया। उसकी सूचना पर एक योजनाबद्ध तरीके से 11 अक्टूबर 2011 के दिन सुबह 7 बजे इन्नर गांव को घेर लिया। एक टीम (तीन पुलिस वाले) कामरेड नेगी के घर को घेर लिया। तब नेगी अंदर चाय पी रहे थे। वो निहत्थे थे। पकड़कर घसीटते हुए बाहर निकाला, बुरी तरह पिटाई की और एके-47 से फायरिंग कर उनकी हत्या कर दी। कामरेड नेगी की पत्नी ने मारने से रोकने की कोशिश की। पर उसे भी बुरी तरह पिटाई की गई। अगले दिन पुलिस ने निर्लज्जता के साथ, हमेशा की तरह 'मुठभेड़' की घोषणा की।

कामरेड नेगी एक सच्चे जन नेता थे। वर्ग संघर्ष में उन्होंने दृढ़ता से खड़े होकर अपने गांव और आसपास के गांवों की शोषित जनता को जबर्दस्त प्रेरणा दी। आज जब वो हमसे हमेशा के लिए जुदा हो गए, उनकी कर्मठता, उनका दृढ़ संकल्प और उनका बलिदान हमें हमेशा याद दिलाते रहेंगे कि हमारे कंधों पर उनके अधूरे मकसद को पूरा करने का जिम्मा है।

कामरेड महेश (बोड्डी गंगा)

1910 का महान भूमकाल विद्रोह न सिर्फ बस्तरवासियों को, बल्कि देश की समूची शोषित जनता को शोषण व अत्याचारों के खिलाफ लड़ने की हमेशा प्रेरणा देता है। इस ऐतिहासिक जन विद्रोह का नेतृत्व नेतानार गांव के निवासी गुण्डाधुर ने किया था। भूमकाल संघर्ष को अंग्रेजी शासकों ने दबा दिया था। शोषणविहीन नव भारत का जो सपना गुण्डाधुर समेत तमाम स्वतंत्रताप्रेमियों ने देखा था वो पूरा नहीं हुआ। लेकिन आज बस्तर की माटी में इस संघर्ष की विरासत को जारी रखते हुए भारत की कम्युनिस्ट

पार्टी (माओवादी) के नेतृत्व में क्रांतिकारी आंदोलन जारी है। इत्तेफाक से ही नहीं, बल्कि एक धारावाहिकता के तहत पीएलजीए ने 21 अक्टूबर 2011 को इसी मिट्टी में शत्रु बलों पर हमला कर दिया जिस मिट्टी में गुण्डाधुर पला-बढ़ा था। इस हमले में दरभा थानेदार सहित छह पुलिस जवान खत्म हुए थे और चार अन्य घायल हो गए साथ ही, इस जबरदस्त हमले को कामयाबी दिलाने हेतु कांगेरघाटी एरिया कमांडर-इन-चीफ और एलजीएस कमांडर कामरेड महेश (25) शहीद हो गये। इस हमले की बदौलत दो इंसास रायफलें पीएलजीए के हाथ में आ गईं।

महेश का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन के कोंटा ब्लाक के गांव टेटाराई में हुआ था। पिता बोड्डी मल्ला एवं मां बोड्डी लच्ची की चौथी संतान थे कामरेड महेश । माता-पिता ने उनका नाम गंगा रखा था। उनके एक भाई और दो बहनें हैं। गांव में कुछ दिन पढ़ने के बाद कोंटा की आश्रमशाला में भर्ती हुए थे। 8वीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। कामरेड महेश बचपन से ही क्रांतिकारी आंदोलन से प्रभावित थे। स्कूल की पढ़ाई करते हुए ही उन्होंने क्रांतिकारी गीत सीखे थे। जल-जंगल-जमीन पर जनता का अधिकार, कार्पोरेट कम्पनियों की लूटखसोट, वन, राजस्व व पुलिस विभाग के जुल्म अत्याचारों से मुक्ति आदि के बारे में क्रांतिकारी जन संगठनों की बातें वह ध्यान से सुना करते थे। स्थानीय स्तर पर जारी वर्ग संघर्ष से काफी प्रभावित हुए थे। छात्रों के बीच पार्टी का पर्चा व पत्र बांटते हूए उन्हें क्रांतिकारी आंदोलन की तरफ आकर्षित करते थे। इस तरह वह एक सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। अक्टूबर 2004 में दंतेवाड़ा एसपी के काफिले पर पंदिगुड़ा के पास हमला कामरेड महेश के सूचना से हुआ था। जनवरी 2006 में कोंटा ब्लाक में सलवा जुडूम का विस्तार हुआ था। उस समय महेश कोंटा में 8वीं में थे और पढ़ाई छोड़कर आंदोलन में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में आने को तैयार हो गए। कामरेड महेश को जन संगठन में काम करने का अनुभव नहीं था। इसे पूरा करने के लिए पार्टी ने कुछ दिन तक क्रांतिकारी जनताना सरकार के अंतर्गत गुरूजी का दायित्व दिया था। उन्होंने यह काम अच्छे ढंग से किया था। 2006 के अंत में वह पूर्णकालिन कार्याकर्ता के रूप में आंदोलन में शामिल हुए। कुछ दिन कोंटा दस्ते में काम करने के बाद मई 2007 में पार्टी ने उन्हें दरभा डिविजन स्थानांतरित किया।

दरभा डिविजन में उन्हें प्रेस का काम दिया गया था। उन्होंने स्क्रीन प्रिंटिग का काम बहुत ही ध्यान से सीखा था। जुलाई 2008 से डिविजन से शुरू की गई 'मोयोल गुडरूम' पत्रिका की छपाई की जिम्मेदारी निभाई। मलिंगेर एरिया की जनता में पर्चा आदि बांटने में भी उनका योगदान था। 16 एप्रैल 2009 को लोकसभा चुनावों के मौके पर ग्राम माडेक के पास पीएलजीए ने पुलिस पर हमला किया था। इस हमले में कामरेड महेश ने हिम्मत के साथ भाग लिया था। 2009 के जुलाई माह से उन्हें कांगेरघाटी एरिया में गुरिल्ला दस्ते के कमांडर का दायित्व सौम्पा गया।

दंतेवाड़ा जिले के तोंगपाल, पुसपाल और बस्तर जिला के दरभा, जगदलपूर तथा मलकनगिरी जिले के सीमावर्ती क्षेत्र में मौजूद कांगेरघाटी एरिया में धुरवा, कोया, हल्बा, मुरिया, पोरजा आदि आदिवासी जनता रहती है। जन नायक गुण्ड़ाधुर का जन्म स्थान नेतानार भी इसी क्षेत्र में है। इस क्षेत्र में जन संगठनों के विस्तार का काम करते हुए कामरेड महेश का योगदान रहा। तोंगपाल, पुसपाल और लेदा गांवों के आसपास दुश्मन का नेटवर्क ध्वस्त करने में तथा गोपनीय सैनिकों का खत्म करने में उनकी भूमिका रही है। मिलनसार स्वभाव वाले कामरेड महेश सभी साथियों का चहेता थे। जनता को गोलबंद करने के अलावा जन मिलिशिया को मजबूत बनाने में तथा उन्हें राजनीतिक प्रशिक्षण देने में उनका सक्रिय योगदान रहा। एरिया कमांडर-इन-चीफ की जिम्मेदारी उन्होंने अच्छी तरह निभाई।

आपरेशन ग्रीनहंट को हराने के लक्ष्य से अपनाए गए प्रतिरोधी अभियान के अंतर्गत नेतानार के पास 21 अक्टूबर 2011 को डिविजनल कमांड के नेतृत्व में पीएलजीए सैनिकों ने अत्याचारी पुलिस बलों के पर हमला किया। इसमें दुश्मन के साथ लड़ते हुए कामरेड महेश शहीद हो गए। पीएलजीए के साथियों ने उनकी लाश को उठा लाया। कामरेड महेश के अंतिम संस्कार में सैकडों लोगों ने शामिल होकर श्रद्धांजलि दी। आइए, इस युवा शहीद की कुरबानी को ऊंचा उठाएं और उनके सपनों को साकार करते हुए दण्डकारण्य को आधार इलाके में बदल दें।

कामरेड जैनी कोर्राम

कोहकामेट्टा एरिया का इरकभट्टी गांव क्रांतिकारी आंदोलन के लिए शुरू से केन्द्र के रूप में रहा है। इस गांव ने कामरेड जग्गू, रामदास जैसे बहादुर क्रांतिकारियों को पैदा किया है। माड़ डिविजन में पहली क्रांतिकारी जनताना सरकार भी इसी गांव में बनी थी। कामरेड जैनी (38) का जन्म भी इसी गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। कामरेड जैनी बचपन से होनहार और

निडर स्वभाव की लड़की थीं। अन्याय के आगे कभी सर नहीं झुकाने वाली थीं। जो उसे सही नही लगता उसे बेझिझक व निडर होकर विरोध करती थी।

इरकभट्टी गांव में जब से केएएमएस का निर्माण हुआ तबसे कामरेड जैनी ने संगठन में काम किया। सगठन में रहकर कामरेड जैनी ने हमेशा रूढ़ीवादी परम्पराओं के खिलाफ संघर्ष किया। परम्पराओं के नाम पर महिलाओं के ऊपर हो रहे जुल्मों और वंचनाओं का विरोध किया। जैसे जबरिया विवाह, गोटूल, कड़साड़ों में महिलाओं के साथ लैंगिक अत्याचार आदि का कड़ाई से विरोध किया। विवाह के बाद महिलाओं को ब्लाउज पहनने नहीं देने के विरोध में भी महिलाओं को संगठित कर संघर्ष किया। संगठन के नेतृत्व में जैनी ने चन्दा जमा कर ब्लाउज खरीदकर गांवों में बांटे और ब्लाउज पहनने के रिवाज को शुरू किया। पीढ़ियों से चली आ रहे सामाजिक नियमों के साथ छेड़छाड़ करने पर पितृसत्तात्मक समाज और रूढ़ीवादी बुजुर्ग चुप बैठने वाले नहीं थे। कामरेड जैनी को रोकने के लिए उसके ऊपर कई तरह के दबाव डाले। लेकिन कामरेड जैनी ने निडर होकर उनका सामना किया। अन्याय के आगे कभी नहीं झुकी।

इसके अलावा संगठन के नेतृत्व में कई आर्थिक व राजनीतिक संघर्षो में भी भाग लिया। मुर्गा बाजार, शराब के खिलाफ बड़ी संख्या में महिलाओं को संगठित कर कोहकामेट्टा व सोनपुर सप्ताहिक बाजारों में रैली, जुलूस निकाल कर तोड़फोड़ भी किया गया। उसके बाद मुर्गा बाजार, शराब बाजार में बेचना बंद हो गया। इसके अलावा माड़ डिविजन में बाजार के लिए गांजा की खेती करवाई जा रही थी। इसके खिलाफ भी पूरे इलाके में जन संगठनों के नेतृत्व में जनता को संगठित कर संघर्ष करके गांजा की खेती पर रोक लगाई गई। वनोंपजों के वाजिब दाम, खासकर फूल झाड़ू के लिए नारायणपुर में एक बड़ी रैली निकाली गई थी। पुलिस अत्याचारों आदि के विरोध में हुए संघर्षो में कामरेड जैनी ने आगे रहकर महिलाओं का नेतृत्व किया।

इस तरह उनके कामकाज और पार्टी के प्रति निष्ठा को देखते हुए कामरेड जैनी को 1999 में पार्टी सदस्यता दी गई। 1999 में ही उस गांव में ग्राम राज्य कमेटी का निर्माण हुआ था। उसमें भी कामरेड जैनी चुनी गई। उसके एक साल

बाद 2001 में अपनी पंसद से मुरेनार कोर्राम परिवार में विवाह कर चली गई।

विवाह के बाद भी उसने संगठन काम नहीं छोड़ा। बहुत सी महिलाएं शादी के बाद परिवार और समाज के डर से संगठन में सक्रिय रूप से काम नहीं करतीं। लेकिन कामरेड जैनी ने ऐसा नहीं किया। वहां भी उसने सक्रिय रूप से संगठन के कार्यकलापों में भाग लिया। पहले उसके पति ने भी डीएकेएमएस के रेंज कमेटी सदस्य के तौर पर काम किया था। लेकिन बाद में उसने परिवार और गांव के बुर्जुगों के दबावों से डरकर कमेटी से इस्तीफा दे दिया। कामरेड जैनी के ऊपर भी संगठन का काम न करने के लिए कई तरह से दबाव डाले गए। लेकिन कामरेड जैनी ने उनका विरोध करके संगठन में काम करना जारी रखा।

2005 में पहली बार कलमानार जनताना सरकार का गठन हुआ। कामरेड जैनी जनताना सरकार की अध्यक्ष चुनी गई। जनताना सरकार अध्यक्ष रहकर कामरेड जैनी ने जनता की जिन्दगी को सुधारने के लिए कई क्रांतिकारी विकास कार्यक्रमों को शुरू किया। सामूहिक मछली पालन, सामूहिक खेती, साग–सब्जी के लिए कृषि आदि। जनवादी संस्कृति को विकसित करने के लिए पीढ़ी–पीढ़ियों से चले आ रहे गलत रिवाजों में बदलाव लाने की कोशिश की। जनताना सरकार की रक्षा के लिए मिलिशिया को मजबूत किया। जन विरोधियों को जन अदालतों में रखकर सजा दी। पितृसत्तात्मक समाज में एक महिला का सरकार अध्यक्ष रहकर आगे आकर काम करना गांव के बुजुर्गों के गले नहीं उतरा। वह भी गोटा परगाना के गढ़ में जहां के पूजारियों, पटेल, गायताओं के इशारे में पूरे परगाना की जनता चलती है। उन्होंने इसके खिलाफ कई साजिशें रचीं। पहले उन्हें जनताना सरकार से इस्तीफा देने के लिए दबाव डाला गया। अधंविश्वास और पुलिस आदि का डर दिखाकर पीछे हटने के लिए कहा गया। ऐसे भी नहीं मानने पर उनके ऊपर झूठे आरोप लगाकर उनकी बहुत पिटाई की गई। ऐसा करने पर भी कामरेड जैनी नहीं डरी, पीछे नहीं हटी। जनता के पक्ष में दृढ़ता के साथ खड़ी रही। ऐसा करने वालों को जनता ने जन अदालत में जम कर धुनाई की। इस तरह कॉमरेड जैनी को रोकने के लिए पितृसतात्मक समाज ने कदम–कदम पर रोड़े लगाने की कोशिश की। लेकिन कामरेड जैनी ने उन सबका निडर होकर सामना किया और अपना काम जारी रखा।

11 नवम्बर 2011 को कामरेड जैनी का प्रसव के दौरान मौत हो गई। कामरेड जैनी के मौत से जनता ने एक निडर और सक्षम नेता को खो दिया। जनता ने कामरेड जैनी का अंतिम संस्कार क्रांतिकारी परम्परा से किया।

कामरेड मल्लोजुला कोटेश्वरलु
(रामजी/किशनजी)

24 नवम्बर 2011 का दिन भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में काले दिन के रूप में अंकित हुआ है। भाकपा (माओवादी) को 'देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा' के रूप में प्रचारित करते हुए शोषित जनता के खिलाफ देशव्यापी दमनचक्र व अन्यायपूर्ण युद्ध छेड़ने वाले फासीवादी सोनिया–मनमोहन सिंह–प्रणब–चिदम्बरम–जयराम रमेश शासक गिरोह ने बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ सांठगांठ कर एक षड़यंत्र के तहत कामरेड कोटेश्वर राव को जिंदा पकड़कर बर्बरता से कत्ल कर दिया। पिछले साल 1 जुलाई को पार्टी के प्रवक्ता कामरेड आजाद की हत्या कर चुके इस गिरोह ने फिर एक बार पंजा मारकर अपनी खून की प्यास बुझा ली। हत्या के पहले फासीवादी हत्यारों ने उन्हें बेहद क्रूर यातनाएं दीं, फिर भी वे इस अदम्य क्रांतिकारी को झुका नहीं सके। कामरेड आजाद की हत्या पर मगरमच्छ के आंसू बहाई ममता बनर्जी ने सत्ता में आने के बाद एक तरफ माओवादी पार्टी के साथ 'शांति वार्ता' का ढोंग करते हुए ही दूसरी ओर भारतीय क्रांति के एक और अग्रणी नेता कामरेड कोटेश्वर राव की हत्या कर अपने जन विरोधी व फासीवादी चेहरे पर से मुखौटा हटा लिया। केन्द्रीय खुफिया संस्थाओं, पश्चिम बंगाल व आंध्रप्रदेश की खुफिया संस्थाओं ने बड़ी सोची–समझी साजिश के तहत उनका पीछा किया और एक संयुक्त ऑपरेशन में उनकी कायराना हत्या करके मुठभेड़ की मनगढंत कहानी फैला दी।

पार्टी और जनता के बीच प्रह्लाद, रामजी, किशनजी, बिमल आदि नामों से लोकप्रिय कामरेड कोटेश्वर भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के महत्वपूर्ण नेताओं में से एक थे। पिछले 37 सालों से एक अथक योद्धा व सच्चे जन सेवक के रूप में काम करते हुए अपने सिद्धांतों व उसूलों की खातिर जान कुरबान करने वाले कामरेड कोटेश्वर का जन्म 1954 में आंध्रप्रदेश के उत्तर तेलंगाना क्षेत्र में आने

वाले जिला करीमनगर के पेद्दापल्ली कस्बे में हुआ था। पिता वेंकटैया, जो स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी रहे और मां मधुरम्मा, जो प्रगतिशील विचारों वाली महिला हैं, के लालन–पोषण में पले–बढ़े कामरेड कोटेश्वर के अंदर बचपन से ही देश और देश की मेहनतकश जनता के प्रति प्रेम की भावना बढ़ती रही। पेद्दापल्ली कस्बे में हाईस्कूल की पढ़ाई करने के दौरान 1969 में उभार ले चुके पृथक तेलंगाना आंदोलन में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया था। करीमनगर के एसआरआर महाविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई के दौरान महान नक्सलबाड़ी और श्रीकाकुलम के संघर्षों से प्रेरित होकर वे क्रांतिकारी आंदोलन में कूद पड़े। 1974 से उन्होंने पार्टी में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में काम करना शुरू किया। आपातकाल के अंधेरे दौर में कुछ समय के लिए जेल जाने वाले कामरेड कोटेश्वर ने आपातकाल को हटाने के बाद पार्टी संगठनकर्ता के रूप में अपने गृह जिला करीमनगर की जनता के बीच कामकाज शुरू किया। पार्टी द्वारा दिए गए 'चलो गांवों की ओर' के आह्वान को पाकर गांवों में जाकर उन्होंने किसानों के साथ संपर्क कायम कर लिया। 1978 में 'जगित्याल जैत्रयात्रा' के रूप में मशहूर हुए शानदार किसान आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाने वालों में वे एक थे। उसी सिलसिले में वे भाकपा (मा–ले) की आदिलाबाद–करीमनगर संयुक्त जिला कमेटी के सदस्य के रूप में चुन लिए गए थे। 1979 में जब यह कमेटी दो कमेटियों के रूप में अलग हुई थी तो उन्हें करीमनगर जिला कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी दी गई थी। 1980 में आयोजित आंध्रप्रदेश के 12वें राज्य अधिवेशन में उन्होंने भाग लिया जिसमें उन्हें राज्य कमेटी में चुन लिया गया था और वे उस कमेटी के सचिव चुन लिए गए थे।

1985 तक एपी राज्य कमेटी के नेतृत्व में प्रदेश भर में आंदोलन का विस्तार करने में तथा गुरिल्ला जोन के लक्ष्य से जारी उत्तर तेलंगाना के आंदोलन को विकसित करने में कामरेड कोटेश्वर ने अहम भूमिका निभाई। 1980 में दण्डकारण्य में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार करने और उसे विकसित करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1986 में वे स्थानांतरित होकर दण्डकारण्य आंदोलन में शामिल हो गए जहां उन्होंने फॉरेस्ट कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी उठाई। 1993 में उन्हें पार्टी की केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी (सी.ओ.सी.) के सदस्य के रूप में सहयोजित किया गया।

1994 से उन्होंने खास तौर से बंगाल समेत पूर्वी और उत्तरी भारत में क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार व विकास में योगदान दिया। विशेष रूप से

पश्चिम बंगाल में, जहां नक्सलबाड़ी आंदोलन की अस्थाई पराजय के बाद कई टुकड़ों में बिखर चुकी क्रांतिकारी शक्तियों को एकजुट कर आंदोलन का पुनरनिर्माण करने में उन्होंने बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंगाल की शोषित जनता तथा क्रांतिकारी खेमे के अंदर विभिन्न तबकों से घनिष्ठता कायम कर, बंग्ला भाषा को दृढ़ संकल्प के साथ सीखकर उन्होंने वहां की जनता के दिलों में अमिट छाप छोड़ दी। कई क्रांतिकारी ग्रुपों से एकता कायम करने और पार्टी को मजबूत करने में उन्होंने अथक परिश्रम किया। 1998 में पीपुल्सवार और पार्टी यूनिटी के बीच एकता कायम करने में उन्होंने मजबूती से काम किया। 2001 में आयोजित पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) पार्टी की कांग्रेस में उन्हें फिर से केन्द्रीय कमेटी सदस्य और पोलिटब्यूरो सदस्य के रूप में चुन लिया गया। उत्तर रीजनल ब्यूरो सचिव की जिम्मेदारी लेकर उन्होंने बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब में क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व किया। उसी समय पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) और एमसीसीआई के बीच चली एकता वार्ता में उन्होंने अहम भूमिका निभाई। 2004 में दो पार्टियों के विलय के बाद गठित एकीकृत केन्द्रीय कमेटी और पोलिटब्यूरो में सदस्य बनकर उन्होंने पूर्वी रीजनल ब्यूरो (ई.आर.बी.) के अंतर्गत काम किया। पश्चिम बंगाल राज्य के आंदोलन पर प्रधान रूप से ध्यान केन्द्रित करते हुए वे ई.आर.बी. के प्रवक्ता के रूप में बने रहे।

पार्टी में उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं के संचालन और राजनीतिक शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रमुख भूमिका निभाई। 'क्रांति', 'एर्राजेंडा', 'जंग', 'प्रभात' आदि पार्टी की विभिन्न पत्रिकाओं के संचालन में उनका योगदान रहा। पश्चिम बंगाल से प्रकाशित कई क्रांतिकारी पत्रिकाओं के पीछे उनका खासा योगदान रहा। इन पत्रिकाओं में उन्होंने कई सैद्धांतिक व राजनीतिक लेख लिखे थे। पार्टी के अंदर राजनीतिक शिक्षा के प्रसार के लिए बनी सब–कमेटी में सदस्य रहकर कामरेड कोटेश्वर ने पार्टी के कतारों को मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद विचारधारा पर शिक्षित करने में अहम भूमिका निभाई। क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार में, पार्टी के दस्तावेजों को समृद्ध बनाने में और आंदोलन को विकसित करने में उनकी भूमिका अविस्मरणीय रही। जनवरी 2007 में आयोजित पार्टी की एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस में उन्हें फिर से केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया और आखिर तक उन्होंने पोलिटब्यूरो व पूर्वी रीजनल ब्यूरो में सदस्य के तौर पर काम किया।

पश्चिम बंगाल में सामाजिक फासीवादी सीपीएम सरकार द्वारा लागू जन विरोधी व कॉर्पोरेट–परस्त नीतियों के खिलाफ 2007 से सिंगूर और नंदिग्राम में भड़क उठे जन आंदोलनों, खासकर पुलिसिया अत्याचारों के खिलाफ पश्चिम बंगाल के लालगढ़ इलाके में एक जबर्दस्त उफान के रूप में उठे जन विद्रोह को उन्होंने राजनीतिक मार्गदर्शन दिया जोकि काफी महत्वपूर्ण था। इस दौरान उन्होंने मीडिया के माध्यम से पार्टी के प्रचार–कार्य को भी पहलकदमी के साथ संचालित किया। 2009 में जब चिदम्बरम गिरोह शांति वार्ता और संघर्ष विराम के नाम से देश की जनता को गुमराह कर रहा था, तब उसका पर्दाफाश करने और जनयुद्ध की राजनीति को फैलाने में कामरेड कोटेश्वर ने खासा योगदान दिया। इस तरह, करीब चार दशकों तक बिना रुके जारी उनका क्रांतिकारी सफर 24 नवम्बर 2011 को समाप्त हुआ।

शोषक शासक वर्गों की साजिश यही है कि क्रांतिकारी नेतृत्व का सफाया कर देश की शोषित जनता को सही मार्गदर्शन और सर्वहारा नेतृत्व से वंचित किया जाए। साफ जाहिर है कि देश को मनमाने ढंग से लूटने–खसोटने में तथा यहां के जल–जंगल–जमीन को बड़े व विदेशी पूंजीपतियों के हाथों में सौंपकर अपने हिस्से की दलाली की मोटी रकम को स्विस बैंकों में छुपाने में इन महाचोरों और दलालों के सामने माओवादी आंदोलन ही सबसे बड़ा रोड़ा बना हुआ है। इसीलिए वे आपरेशन ग्रीनहंट के नाम से पिछले दो सालों से चौतरफा व देशव्यापी बर्बर अभियान चला रहे हैं। इसी के तहत हुई है यह निर्मम व अमानवीय हत्या। आज तमाम देशभक्तिपूर्ण व स्वतंत्रताप्रेमी जनता का यह कर्तव्य बनता है कि क्रांतिकारी आंदोलन और क्रांतिकारी नेतृत्व की आंख की पुतली के समान रक्षा की जाए। इस तरह रक्षा करने का मतलब है देश और हमारी भावी पीढ़ियों के भविष्य को बचाना।

57 साल की उम्र में, कठोर गुरिल्ला जीवन में युवाओं से भी होड़ लगाते हुए, जहां भी रहें वहां के कार्यकर्ताओं और जनता में उत्साह का संचार करने वाले कामरेड कोटेश्वर का जीवन खासकर आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है। वे बिना किसी आराम के घण्टों तक अध्ययन और पार्टी के अन्य कामों में भाग लेते थे। लम्बी दूरियों की परवाह न करते हुए, कम सोते हुए, सादा–सीधा जीवन बिताते हुए, ज्यादा मेहनत करने वाले शख़्स थे वे। हर उम्र के लोगों से तथा विभिन्न किस्म की सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले कामरेडों से आसानी से घुलते–मिलते हुए सभी में क्रांतिकारी जोश भर देते थे। इस बात

में जरा भी शक नहीं कि कामरेड कोटेश्वर की मौत से भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को गंभीर नुकसान हुआ है। लेकिन इस सच्चाई को कभी नहीं भूलना चाहिए कि इतिहास का निर्माता जनता है। जनता और जन आंदोलनों ने ही कोटेश्वर राव जैसे साहसिक व समर्पित क्रांतिकारियों को पैदा किया। जगित्याल से जंगलमहल तक उन्होंने जुझारूपन, पहलकदमी व बलिदान का जो संदेश फैलाया, उससे प्रेरणा लेकर मजदूर–किसानों और अन्य तमाम शोषित तबकों की जनता आगे आएगी और क्रांतिकारी आंदोलन को विजय के मुकाम पर पहुंचाएगी। साम्राज्यवादियों, उनके गुर्गे भारत के सामंती व दलाल पूंजीपति वर्गों और सोनिया, मनमोहन सिंह, चिदम्बरम, ममता बनर्जी वगैरह उनके प्रतिनिधियों का नामोनिशान तक मिटा देगी।

कामरेड रवि

कामरेड रवि (26) का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगालूर एरिया के मनकेली गांव में हुआ था। उनका गांव क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए एक केन्द्र रहा है। इस गांव ने कई वीर बेटे और बेटियों को पैदा किया है। गांव में किए गए कई जन संघर्षों का प्रभाव कामरेड रवि के ऊपर बचपन से था। मां मोड़ियम सोमली और पिता बक्का की तीन संतानों में रवि बड़े थे। माता–पिता ने उनका नाम मोड़ियम कोटलू रखा था। उनके पिता की टीबी बीमारी से मृत्यु हो गई। कामरेड कमलू का परिवार बहुत गरीबी में अपना जिन्दगी गुजारा करता था। जमीन बहुत कम थी, इसलिए वनोपजों पर निर्भर होकर जीवन यापन करते थे।

जैसे–जैसे रवि बड़ा होने लगा क्रांतिकारी आन्दोलन की ओर आकर्षित होता गया। बाल संगठन में रहते हुए क्रांतिकारी गीतों को सुनकर गाय चराते हुए अपने साथियों के साथ गुननाता था। जब 2000 में गांव में ग्राम रक्षक दल का गठन हुआ कमलू भी उसमें शामिल हो गया। 2005 में फासीवादी सलवा जुडूम के दौरान मिलिशिया प्लाटून का गठन हुआ तो उसमें सदस्य बनकर अपने गांवों और जनता की रक्षा के लिए रात दिन पहरा देता था। 2005 में सलवा जुडूम गुण्डों ने मनकेली गांव के ऊपर कई बार हमले करके 12

लोगों की निर्मम हत्या कर दी। सलवा जुडूम के इन पाशविक हमलों से रवि के मन में प्रतिशोध की भावना और वर्ग घृणा तीव्र होती गईं। और सितम्बर 2005 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पीएलजीए में भर्ती हो गया।

गंगालूर एलओएस में कुछ समय काम करने के बाद प्लाटून–22 में उन्हें बदला गया। वहां भी उन्होंने उत्साह के साथ काम करता था। पीएलजीए के अनुशासन, पढ़ना–लिखना सीखने की कोशिश करता था। 2009 में उन्हें रीजनल कम्पनी–2 में बदला गया। अक्टूबर 2010 में उन्हें सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी दी गई। अप्रैल 2010 के मुकरम एम्बुश जिसमें 76 सीआरपीएफ वाले मारे गए थे, में गुरिल्ला डॉक्टर के तौर पर उन्होंने घायल कामरेडों की मन लगाकर सेवा की। 7 दिसम्बर 2011 के दिन उनको अचानक पेट दर्द शुरू हो गया और कुछ घण्टों बाद उनकी मौत हो गई। गुरिल्ला डॉक्टरों ने उन्हें बचाने की बहुत कोशिश की लेकिन नहीं बचा पाए। जनता की मुक्ति के लिए अपनी जान देने वाले कामरेड रवि हमारे दिलों में सदा जीवित रहेंगे।

कामरेड माड़वी उंगाल

दक्षिण बस्तर डिवीजन के वेड़मा नामक गांव के एक गरीब किसान परिवार में कामरेड उंगाल का जन्म हुआ था। वेड़मा गांव गोगे पहाड़ों के गोद में बसा है। इस गांव की जिन्दगी भी अन्य गांवों की तरह गरीबी, अशिक्षा, और अन्य मूलभूत सुविधाओं के अभावों में चल रहा है। यह गांव भी मुखियाओं के दबाव, पुलिस, सलवा जुडूम दमन का शिकार रहा है। कामरेड उंगाल अपने माता पिता के पांच संतानों में बड़े बेटे थे। गरीबी, कुपोषित होने की वजह से इनकी तीन छोटी बहनें बीमारियों की शिकार हो गईं। बचपन में ही उनके माता–पिता भी गुजर गए। बचपन से उंगाल अपने भाई के साथ खेतों में काम करता और गाय चराता था।

जब बड़ा हुआ तब गांव के डीएकेएमएस संगठन में शामिल हो गया। बाद में कमेटी में चुना गया। वह सरकारी शोषण और वनोपजों की मूल्य वृद्धि के लिए, जल–जंगल–जमीन पर अदिवासियों के अधिकार के लिए

जनता को संगठित करने लगा। सलवा जुडूम का प्रतिरोध करने के लिए गांव के युवक–युवतियों को कोया भूमकाल मिलिशिया में संगठित करता था। सलवा जुडूम शिविरों और पुलिस कैंपों में सप्लाई को रोकने के लिए सैकड़ों की संख्या में जनता को संगठित कर चिन्तागुपा, चिन्तलनार, जेगुरगोंडा रोड को अनेकों बार गड्डे खोदकर अवरूद्ध किया।

कामरेड उंगाल 2009 दिसम्बर में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर नगारम एलओएस में शामिल हो गया। मार्च 2010 में उन्हें रीजनल कम्पनी में सदस्य के तौर पर बदला गया। घर में उन्हें पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला। पार्टी में आने के बाद पढ़ना–लिखना सीखा। वह आसानी से सभी के साथ घुलमिल जाता था।

6 अप्रैल 2010 को किए गए ऐतिहासिक एम्बुश जिसमें 76 सीआरपीएफ मारे गए थे और उनके कई हथियार छीने थे। उस हमले में कामरेड उंगाल ने हिम्मत के साथ लड़े थे। जिसमें अपने पीएलजीए के 8 बहादुर योद्धाओं ने अपनी जान कुर्बान की थी। उनके लाशों और घायल साथियों को उस जगह से बाहर निकालने में कामरेड उंगाल की अहम भूमिका रही।

2012 में एक महत्वपूर्ण प्रतिरोधी अभियान के सिलसिले में कम्पनी ओड़िशा राज्य गई थी। पार्टी ने आपरेशन ग्रीनहंट के विरोध में 4–5 जनवरी ओड़िशा बंद का आह्वान दिया। उस बंद को सफल करने के लिए 4 जनवरी 2011 के दिन एक एम्बुश की तैयारी के दौरान एक हादसे में कामरेड उंगाल की मौत हो गई। उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लें।

कामरेड फागू (मीटु)

पश्चिम बस्तर डिवीजन के गगांलूर एरिया, पुम्बाड़ गांव में कामरेड फागू का जन्म हुआ था। पुम्बाड़ गांव क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए एक मजबूत गढ़ की तरह है। यह गांव गंगालूर से महज एक घण्टे की दूरी पर है। यह भीषण सलवा जुडूम फासीवादी दमन अभियान के दौरान सभी जुल्मों व अत्याचारों को झेलकर भी दुश्मन के आगे सर झुकाये बैगर पार्टी के पक्ष में दृढ़ता के साथ खड़ा रहा। इस गांव ने प्रतिरोध का परचम हमेशा बुलंद रखा। इसने कई क्रांतिकारियों को पैदा किया है। कामरेड फागू एक गरीब किसान परिवार में जन्मे थे। चूंकि खेती से उनके परिवार का गुजारा नहीं हो पाता था इसलिए बैलाडीला खदान में मजदूरी करने जाना पड़ता था। कामरेड फागू भी होश संभालते ही बैलाडीला की

खदानों में दिहाड़ी मजदूरी करने जाते थे।

2003 में फागू सीएनएम में शामिल हो गए। और 2004 में कमेटी में चुने गए। अपनी कला के द्वारा जनता की समस्याओं और नवजनवादी क्रांति की राजनीति का प्रचार करते थे और जनता को संगठित करते थे। सलवा जुडूम शुरू होने के बाद कामरेड फागू जल–जंगल–जमीन पर अधिकार के लिए हथियारबंद संघर्ष ही एक मात्र रास्ता सोचकर 2005 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गए। भर्ती होने के बाद सीधा उन्हें प्लाटून–6 में भेजा गया। वहां पवन के नाम से 2007 तक काम किया। 2007 में ऐतिहासिक नयागढ़ हमले के लिए ओड़िशा में गए। उस हमले के बाद कामरेड फागू को ओड़िशा के गुमसर डिवीजन में आन्दोलन की जरूरत को देखते हुए बदला गया। वहां उन्हें सीएनएम की जिम्मेदारी दी गई। बिल्कुल अनजान भाषा, वहां का रहन–सहन नया होने के बावजूद कामरेड फागू ने वहां के माहौल के अनुरूप अपने आपको ढालकर वहां की जनता में कामरेड मिट्टू के नाम से लोकप्रिय हो गए। वहां उन्होंने ओड़िया भाषा सीखकर उसमें गाने बनाकर जनता को जागृत किया।

21 जनवरी 2012 के दिन ओड़िशा में गोर्लागुड़ा गांव के पास एक नाले में नहा रहे गुरिल्लों पर पुलिस ने हमला किया। इस मुठभेड़ में कामरेड फागू ने जवाबी फायरिंग करते हुए तीन पुलिस वालों को घायल कर शहीदत को प्राप्त किया। आइए, इस बहादुर योद्धा और सर्वहारा के सपूत के बलिदान को ऊंचा उठाएं।

कामरेड सुक्कू (मंगू पद्दाम)

27 जनवरी 2012 के दिन छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिला, बमरकेला थाना के अन्तर्गत ग्राम परदियापाली के कर्रेमाल जंगल में पीएलजीए का प्लाटून रुका हुआ था। मुखबिर की सूचना पर सरकारी सशस्त्र बलों ने पीएलजीए के डेरा को घेर लिया और अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। छापामार इस हमले का मुकाबला करते हुए पीछे हट रहे थे। तभी महासमुन्द जिला के शोषित जनता का प्यारा नेता कामरेड मोहन को गोली लगी। वह वहीं शहीद हो गए।

कामरेड मोहन का जन्म कांकेर जिला के

आलदंड गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। माता–पिता ने उनका नाम मंगु रखा था। यह गांव परालकोट परगाना में आता है जहां 1825 में आदिवासियों ने ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के खिलाफ गेंदसिंह के नेतृत्व में विद्रोह किया था। कामरेड मंगु जब बड़ा हुआ तब गांव के डीएकेएमएस संगठन में शामिल हो गया। बढ़ते दमन को देखते हुए बाद में मिलिशिया में सदस्य के तौर शामिल हो गया।

2002 में कामरेड मंगु पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गया। कुछ समय के लिए एरिया इनस्ट्रक्टर टीम में रहकर काम किया। बाद में उन्हें प्लाटून–5 में बदला गया। वहां उन्होंने सभी विषयों को ध्यान से सीखने की कोशिश की। जब भी समय मिलता पढ़ाई पे ध्यान देता था। और अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ाने का प्रयास करता था। 2007 में उन्हें कम्पनी–5 में बदला गया। वहां उन्हें प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नति देकर सेक्शन कमांडर और प्लाटून डिप्युटी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। वह अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने का प्रयास करता था। बाद में उन्हें प्लाटून–5 में कमांडर की जिम्मेदारी सौंपा गई।

2010 में पार्टी ने प्लाटून–5 को आन्दोलन के विस्तार के लिए महासमुंद जिला भेजने का प्रस्ताव किया। इसे स्वीकारते हुए कामरेड सुक्कू ने मोहन बनकर विस्तार में जाने वाली कम्पनी के डिप्युटी कमांडर की जिम्मेदारी ली। तभी उन्हें डिवीजनल कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नति दी गई। बाद में वहां एक प्लाटून के कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। 2011 में महासमुंद–बरगढ़ डिवीजन का गठन हुआ। उस कमेटी में कामरेड मोहन को भी शामिल कर लिया गया।

कामरेड मोहन युद्ध में एक सैनिक की शारीरिक, मानसिक सुदृढ़ता की महत्व को समझते हुए उसके लिए रोज कसरत करते थे और अपने साथियों को करने के लिए प्रेरित करते थे। सैनिक कार्रवाइयों की योजनाओं को अमल करने में पहलकदमी के साथ भाग लेते थे। कम्पनी में रहते समय मानपुर डिवीजन में द्वितीयक बलों के साथ महामाया खदान में किए गए हमले में कामरेड सुक्कू ने कमांडर के आदेशों का पालन करते हुए अच्छा योगदान दिया। 2007 में मांदागिरी ऐम्बुश में, विश्रामपुरी थाने पर किए गए हमले में भाग लेकर अपनी अहम भूमिका निभाई थी। 2009 के कोरकोटी ऐम्बुश में कामरेड सुक्कू की अहम भूमिका रही। छिंदपाल गांव के पास किए ऐम्बुश में कामरेड सुक्कू ने सराहनीय

भूमिका अदा की। 9 अक्टूबर 2010 के पड़कीपाली मुठभेड़ में जिसमें पीएलजीए के 6 कामरेड्स शहीद हुए थे, दुश्मन का डटकर प्रतिरोध करते हुए अपने प्लाटून का नेतृत्व किया था। जुलाई 2011 के परदियापाली मुठभेड़ में भी कामरेड सुक्कू ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस तरह कामरेड सुक्कू कई कार्रवाइयों, मुठभेड़ों के दौरान बहादुरी के साथ लड़ते हुए विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाया।

वह हमेशा अपने साथियों और जनता का हौसला बढ़ाते थे। उनको संगठित कर दुश्मन के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करते थे। राजनीतिक तौर पर खुद विकसित होने का प्रयास करते और अपने साथियों को विकसित करने का प्रयास करते थे। कड़ी मेहनत करना, सीधी–सादी जीवनशैली, सदा जनता के लिए सोचने वाले कामरेड मोहन आज हमारे साथ नहीं हैं। लेकिन उनके आदर्श हमेशा हमें प्रेरित करेंगे।

कामरेड श्रीकांत (हरक)

लम्बी बीमारी के बाद, 26 फरवरी 2012 को दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कामरेड श्रीकांत का निधन हुआ। वे करीब 48 साल के थे। वे पिछले 14 सालों से गढ़चिरोली जिले में क्रांतिकारी आंदोलन का प्रत्यक्ष नेतृत्व कर रहे थे। 2004 में उन्हें पहली बार सीने में दर्द हुआ था। डाक्टरी जांच से पता चला था कि उन्हें दिल के हल्के दौरे पड़ चुके थे। बाद में उन्होंने नियमित रूप से दवाइयां लेना शुरू किया। उसके बाद उन्हें गुरिल्ला जोन की कठिन परिस्थितियों और भीषण शत्रु दमन के चलते नियमित जांच करवाने का मौका नहीं मिल पाया। पर्याप्त आराम और अन्य सुविधाएं भी नहीं मिल पाईं। वे एक जुझारू कामरेड थे जिन्होंने अपनी अस्वस्थता की जरा भी परवाह न करते हुए क्रांतिकारी गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लिया। 2011 के बीच से उनके स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई। शत्रु दमन के चलते

इलाज और दवाइयां मिलने में देरी हुई। हालांकि उन्हें बचाने के लिए पार्टी नेतृत्व और पीएलजीए के कामरेडों ने पूरी कोशिश की लेकिन बचा नहीं सके। अपने सभी साथियों और गढ़चिरोली की संघर्षशील जनता को शोक में डुबोकर वे हमसे हमेशा के लिए विदा ले गए।

कामरेड श्रीकांत को घर में माता–पिता ने 'हरक' का नाम दिया था। लेकिन उनके दोस्त और परिचित लोग उन्हें प्यार से 'गुण्डू' या 'गुण्डू भैया' के नाम से पुकारते थे। दरअसल वे इसी नाम से लोकप्रिय थे। उनके माता–पिता उत्तरप्रदेश के मूलनिवासी थे। वे छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के दल्लीराजहरा में बस गए जहां कामरेड श्रीकांत की परवरिश हुई। उनकी पढ़ाई दल्ली और अन्य जगहों में हुई। पढ़ाई के दौरान वे प्रगतिशील व क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित थे। मजदूर संघर्षों का उन पर खासा प्रभाव रहा। उन्होंने स्नातक तक की पढ़ाई पूरी की। वे एक पढ़ाकू छात्र थे। मुंशी प्रेमचंद से लेकर मक्सीम गोर्की तक अनेक देशों के प्रगतिशील व क्रांतिकारी लेखकों की किताबों को उन्होंने पढ़ लिया। इस दौरान मार्क्सवादी सिद्धांत का भी उन्होंने गहराई से अध्ययन किया। नक्सलबाड़ी की राजनीति की प्रेरणा से वे पहले सीपीआई (एम–एल) रेडफ्लैग में शामिल हुए थे। उस पार्टी में सक्रिय रूप से काम करते हुए उसका पूर्णकालीन कार्यकर्ता बने थे। खासकर राजनांदगांव व दुर्ग जिलों में उन्होंने काम किया। सीपीआई (एम–एल) रेडफ्लैग में उन्हें राज्य कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया था।

लेकिन कामरेड हरक अपनी पार्टी की राजनीति और कार्यशैली से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने यह भी देखा था कि शंकर गुहा नियोगी का नेतृत्व वाला छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा भी मजदूर आंदोलन को सही दिशा नहीं दे पा रहा था। और दूसरी तरफ, जहां वे काम कर रहे थे वहां से कुछ ही दूर पर दण्डकारण्य में जारी संघर्ष उन्हें उत्तेजित करता रहा। उन्होंने उस समय की सीपीआई (एम–एल) (पीपुल्सवार) के साथ नाता जोड़ लिया और 1993 में अपने कुछ साथियों को लेकर वे इसमें शामिल हो गए। तब कामरेड हरक को पार्टी के संविधान के मुताबिक डिवीजनल कमेटी सदस्य का दर्जा देते हुए पार्टी में शामिल कर लिया गया। तबसे उन्होंने रायपुर–दुर्ग–राजनांदगांव (आर.डी.आर.) कमेटी के सदस्य के रूप में पार्टी में काम शुरू किया। उन्होंने मुख्य रूप से मजदूरों, युवाओं और छात्रों को संगठित किया। इसके अलावा, सांस्कृतिक क्षेत्र में उनका सराहनीय योगदान रहा। वे खुद एक बढ़िया कलाकार थे। नुक्कड़ नाटक पर उन्हें अच्छी–खासी पकड़ थी। कला के जरिए क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार

करने में वे आगे थे।

1998 में शहरी इलाके में हुए कुछ नुकसानों और वहां उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियों को देखते हुए एसजेडसी ने आर.डी.आर. कमेटी को भंग किया और कामरेड श्रीकांत को गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के सदस्य के रूप में स्थानांतरित किया। तबसे लेकर आखिर तक उनका क्रांतिकारी जीवन पूरा गढ़चिरोली में ही गुजरा। सबसे पहले उन्होंने टिप्रागढ़ इलाके में काम किया। अपने लिए अनजान भाषा व अलग संस्कृति होने के बावजूद उन्होंने स्थानीय जनता के साथ रिश्ता बना लिया। सभी के साथ घुलमिल जाने के अपने स्वभाव के चलते उन्होंने जल्द ही जनता और कैडरों सभी का विश्वास जीत लिया। वर्ष 2000 के बाद में उन्हें गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के सचिवालय सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2003 में आयोजित दण्डकारण्य स्पेशल जोन के तीसरे अधिवेशन के पहले प्लेनम में उन्हें एसजेडसी के वैकल्पिक सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2005 में उन्हें एसजेडसी सदस्य के रूप में सहयोजित किया गया। उस समय उन्हें थोड़े समय के लिए मैदानी इलाके में सांगठनिक काम की जिम्मेदारी दी गई थी। उन्होंने दल्ली, मानपुर, चौकी आदि इलाकों में काम किया। वहां पर बेरोजगार युवाओं को गोलबंद करते हुए पल्लामाड़ क्षेत्र में किए गए एक जुझारू जन संघर्ष का मार्गदर्शन किया। 2006 में दुश्मन ने गढ़चिरोली संघर्ष के एक और महत्वपूर्ण नेता व एसजेडसी सदस्य कामरेड विकास की फर्जी मुठभेड़ में हत्या कर दी। उसके बाद कामरेड श्रीकांत को फिर से गढ़चिरोली जिले में काम संभालना पड़ा। इस बीच आंदोलन के विस्तार को देखते हुए गढ़चिरोली डिवीजन को दो डिवीजनों – उत्तर व दक्षिण में बांटा गया। सितम्बर 2006 में आयोजित डीके के चौथे अधिवेशन में उन्हें फिर से स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2007 में आयोजित पार्टी की एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस में उन्होंने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। कांग्रेस में हुई सैद्धांतिक व राजनीतिक बहसों में उन्होंने सक्रिय भागीदारी ली। 2007 में उन्हें पश्चिम सबजोनल ब्यूरो के प्रभारी के रूप में चुन लिया गया। 2009 में जब सबजोनल ब्यूरो की जगह पर रीजनल कमेटियों का गठन हुआ, तब उन्हें पश्चिम रीजनल कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी दी गई। और उसी समय उन्हें एसजेडसी सचिवालय के सदस्य की जिम्मेदारी भी सौम्प दी गई।

कामरेड श्रीकांत राजनीतिक व सैद्धांतिक रूप से एक सक्षम नेता थे। मार्क्सवाद के मूल सिद्धांतों पर उनकी पकड़ मजबूत थी। क्रांतिकारी लाइन को

ऊंचा उठाकर संशोधनवादी व दक्षिणपंथी अवसरवादी विचारों, व्यवहार और रुझानों का उन्होंने हमेशा दृढ़ता से विरोध किया। वे जितनी तेजी से किताबों को पढ़ लेते थे उतनी ही तेजी से लिखते भी थे। कमेटी के प्रस्तावों, समीक्षाओं, रिपोर्टों के साथ–साथ पर्चे, लेख वगैरह वह नियमित रूप से लिखा करते थे। 2006 से उन्हें डीके एसजेडसी का मुखपत्र 'प्रभात' के सम्पादकमण्डल सदस्य की जिम्मेदारी भी दी गई। उन्होंने 'प्रभात' के लिए भी कई लेख लिखे थे। उनकी लेखन–शैली सरल व सुबोध हुआ करती थी। 2009 में एसजेडसी द्वारा प्रकाशित शहीदों की जीवनियों की किताब का उन्होंने सम्पादन किया। कमेटी की बैठकों में वे अपने विचारों को बेबाकी से तथा सुस्पष्ट रूप से प्रकट करते थे। किसी बिंदु पर अगर उन्हें मतभेद या आलोचना हो तो बिना किसी संकोच के कमेटी में रखते थे। बहसों और विचारों के आदान–प्रदान में वे जनवादी तौर–तरीकों से जरा भी विचलित नहीं होते थे। जनवादी केन्द्रीयता को लागू करने में वे हमेशा आगे रहते थे।

कामरेड श्रीकांत की एक और खासियत यह है कि वे हमेशा जमीन से जुड़े रहे। गांवों में संगठन सदस्यों और कार्यकर्ताओं से लेकर पार्टी के अंदर नए–पुराने हर साथी के साथ उनका रिश्ता स्नेहपूर्वक हुआ करता था। छत्तीसगढ़ के मैदानी व शहरी इलाकों से गड़चिरोली व माड़ के दूरदराज के गांवों तक वे जहां भी गए, वहां की जनता का प्यार व विश्वास उन्होंने जीत लिया। अस्वस्थता के चलते घूमने–फिरने में तकलीफ होने पर भी वे अपने साथियों को नियमित रूप से आवश्यक दिशानिर्देश दिया करते थे। अपने आखिरी दिनों में भी जब वे बिस्तर से ठीक से उठ नहीं पा रहे थे, उन्होंने गढ़चिरोली आंदोलन की समस्याओं पर एक आलेख तैयार किया। वे हमेशा आंदोलन के भविष्य के बारे में सोचा करते थे।

एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित कार्यभारों को पूरा करने के लिए कामरेड श्रीकांत ने जनयुद्ध को तेज करने और पीएलजीए को मजबूत बनाने में अपनी तरफ से भरपूर कोशिश की। गढ़चिरोली जिले में जब सी–60 कमाण्डों का आतंक बढ़ने लगा और सरकारी दमन के चलते जनता बुरी तरह परेशान थी तब दुश्मन के बलों का सफाया करने के लक्ष्य से विशेष रूप से कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान चलाए गए थे। इन अभियानों को सफल बनाने में वे जी–जान से जुट गए थे। खासकर 2008–09 में कई फौजी कार्रवाइयों को सफल बनाने में उनका प्रत्यक्ष व परोक्ष योगदान रहा। वे एक प्रेरणादायक नेता

थे। जनयुद्ध के मोर्चे में पीएलजीए या जनता द्वारा हासिल हर छोटी सफलता पर वे अपनी खुशी प्रकट करते थे और उनका अभिनंदन करते थे। विफलताओं में भी उनका हौसला बनाए रखने और उससे सही शिक्षा लेने को प्रोत्साहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे।

साथियो! अब कामरेड श्रीकांत नहीं रहे। लेकिन वे जो आदर्श स्थापित कर गए वो हमेशा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे। आज दुश्मन ने हम पर एक बहुत बड़ा युद्ध छेड़ दिया है ताकि हमारी पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन का जड़ से सफाया किया जा सके जिससे कि देश के तमाम प्राकृतिक संसाधनों को साम्राज्यवाद के हवाले किया जा सके। दुश्मन हमारे नेतृत्व को खासतौर पर निशाने पर ले रहा है जिसमें उसे कुछ हद तक सफलता मिल भी रही है। राजसत्ता द्वारा चलाए जा रहे तीखे दमनचक्र के चलते ही कामरेड श्रीकांत को बेहतर इलाज नहीं मिल पाया जिससे अंततः उनकी मृत्यु हुई। आज हम एक कठिन दौर से गुजर रहे हैं। ऐसे में कामरेड श्रीकांत का इस तरह चले जाना दण्डकारण्य आंदोलन के लिए, खासकर गढ़चिरोली जिले में जारी संघर्ष के लिए बहुत बड़ा नुकसान है। इस नुकसान की भरपाई हम जन संघर्षों और जनयुद्ध को तेज करके ही कर सकेंगे। कामरेड श्रीकांत समेत हजारों वीर शहीदों ने जिस शोषणविहीन व समतामूलक समाज का सपना देखा उसे पूरा करने का जिम्मा हम पर है। हम हिम्मत व दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ेंगे। कुरबानियों से नहीं डरेंगे। अंतिम जीत हमारी ही होगी।

कामरेड प्रमोद (हेमला सुक्कू)

बीजापुर जिला गंगालूर एरिया के गुण्डापुर गांव में हेमला सुक्कू का जन्म हुआ था। पिता कन्नाल और मां बुधरी दम्पति की सात संतानों में वह दूसरी संतान थे। माता–पिता उनका नाम सुक्कू रखा था। सुक्कू बचपन से होनहार और चंचल स्वभाव का था। बाल संगठन में रहते हुए गांव के बच्चों के साथ गांव के चारों ओर घूम–घूमकर पहरा देता था।

जब थोड़ा बड़े हुए तो वह सीएनएम में शामिल हो गया। वह अपनी सुरीली आवाज में क्रांतिकारी गीतों को गाकर जनता को सुनाया करता। कई सभाओं में सांस्कृतिक प्रोग्राम में शामिल होकर गीतों व नाटकों के माध्यम से क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार किया था। सलवा जुडूम के दौरान उनके गांव के कई परिवार जनविरोधियों के बहकावे में आकर पार्टी के विरोध में खड़े हो गए। उस

समय सुक्कू का परिवार पार्टी और जनता के पक्ष में दृढ़ता के साथ खड़ा रहा। कामरेड सुक्कू ने भी अपने परिवार के साथ क्रूर दमन के बीच पार्टी पक्ष में हिम्मत के साथ खड़े रहकर काम किया।

17 साल की उम्र में 2007 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर दस्ते में भर्ती हो गया। और गंगालूर एरिया के नैमेड़ जनमिलिशिया दल में सदस्य के तौर पर काम किया। कामरेड सुक्कू ने कई कार्रवाइयों में पहलकदमी और हिम्मत के साथ भाग लिया। 2008 में उन्हें डिवीजन एक्शन टीम सदस्य के तौर पर वहां से बदला गया। तबसे लगभग चार साल कामरेड सुक्कू ने डिवीजन एक्शन टीम में काम किया। उन्होंने कई कार्रवाइयों में भाग लेकर उन्हें सफल करने में अपनी अहम भूमिका निभाई। वह उन्हें दी गई हर जिम्मेदारी को पूरा करने की कोशिश करते थे। 2011 में उन्हें एसी सदस्य के तौर पदोन्नति देकर उस टीम के कमांडर की जिम्मेदारी दी गई। उन्होंने अपना नाम 'प्रमोद' के रूप में बदल लिया। कामरेड प्रमोद व्यक्तिगत अनुशासन का कड़ाई से पालन करते थे। अपने साथियों को भी पालन करने के लिए कहते थे।

उनकी शहादत तब हुई जब वे 13 मार्च 2012 के दिन दंतेवाड़ा कस्बे में एक प्रतिक्रियावादी राजनेता व सलवा जुडूम का सरगना तामो राजकुमार का सफाया करने के लिए गए थे। कार्रवाई के समय उनका स्टेनगन जवाब दे गया। वे उसे फिर लोड करके फायर करने की कोशिश करते रहे। इतने में राजकुमार के सशस्त्र गार्ड ने फायरिंग की जिससे कामरेड प्रमोद वहीं शहीद हो गए। कामरेड प्रमोद ने अपनी छोटी सी गुरिल्ला जिंदगी में अनुशासन, साहस और पहलकदमी को जो उम्दा प्रदर्शन किया वह काबिले तारीफ है। दुश्मन को उसकी मांद में घुसकर मारने के मामले में कामरेड प्रमोद हमारे लिए एक आदर्श हैं। आइए, कामरेड प्रमोद के बहादुरी भरे बलिदान को बंद मुट्ठियों का सलाम पेश करें और उनके अधूरे कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ें।

कामरेड गुण्डेटि शंकर (शेषन्ना)

उत्तर तेलंगाना स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य और वरिष्ठ नेता कामरेड गुण्डेटि शंकर (शेषन्ना) अब नहीं रहे। 17 मार्च 2012 की रात जब वह दण्डकारण्य क्षेत्र के एक गांव में पास गहरी नींद में थे, जहरीले सांप ने उन्हें डंस दिया। उन्हें बचाने के लिए साथियों और पास के गांव की जनता ने पूरी कोशिश की पर कामयाबी नहीं मिली। 18 मार्च की शाम साढ़े सात बजे उन्होंने साथियों

और जनता के समक्ष अपनी अंतिम सांस ली। आखिरी दम तक वह अपनी साथियों से बातें करते रहे और वहां पर अनुपस्थित साथियों को एक–एक का नाम लेकर लाल सलाम पेश करते रहे। उनकी इस दुखद मृत्यु ने सभी को शोक में डुबो दिया। भारतीय क्रांति में आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आंदोलन का महत्वपूर्ण स्थान है। फिलहाल यह आंदोलन अस्थाई पराजय की स्थिति में है जिसे फिर से खड़ा करने के लिए पार्टी ने महत्वपूर्ण प्रयास शुरू किए हुए हैं। कामरेड शेषन्ना की मृत्यु से इसे बड़ा झटका लगा है। खासकर आदिलाबाद जिले के आंदोलन को जहां पर वह प्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व दे रहे थे, उनकी मृत्यु से भारी नुकसान हुआ है। कामरेड शेषन्ना हमारी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं में एक थे जिन्होंने सैद्धांतिक, राजनीतिक, फौजी और सांगठनिक मोर्चों में खासा अनुभव हासिल किया।

47 वर्षीय कामरेड शेषन्ना का जन्म करीमनगर जिला, गोदावरीखनि शहर की एक मजदूर बस्ती में हुआ था। उनके पिता गुण्डेटि राजैया सिंगरेणी कोयला खदान में मजदूर थे। माता–पिता ने उनका नाम शंकर रखा था। परिवार में शंकर ही बड़ा लड़का था। क्रांतिकारी आंदोलन में कदम रखने के बाद उन्होंने अपना नाम शेषन्ना बदल लिया। 80 के दशक में सिंगरेणी खदान मजदूरों का जुझारू आंदोलन चला था। क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार पूरे कोयला खदान के क्षेत्र में फैल गया था। उस समय कामरेड शेषन्ना 12वीं की पढ़ाई कर रहे थे। उस समय पार्टी के पुकार उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़कर पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में काम करना शुरू किया। 18 साल की उम्र में 1983 में उन्होंने आदिलाबाद जिले के चेन्नूर गुरिल्ला दल में सदस्य के रूप में काम करना शुरू किया। तबसे लेकर 29 वर्षों तक वह क्रांतिकारी आंदोलन में लगातार कर काम करते रहे।

सबसे पहले उन्होंने चेन्नूर इलाके में शहीद कामरेड पल्ले कनकन्ना के साथ मिलकर काम किया था। 1983 के आखिर में उनका मंगी गुरिल्ला दस्ते में तबादला कर दिया गया। वहां पर उन्होंने 1987 तक काम किया। इस दौरान उन्होंने अपनी सांगठनिक कौशल को बढ़ा लिया। 1987 में पार्टी ने उन्हें निर्मल कस्बे में संगठक के रूप में में भेज दिया। बहुत जल्द ही निर्मल के छात्र–नौजवानों

और आरटीसी के मजदूरों में उन्होंने अपनी पहचान बनाई। हालांकि कुछ ही समय बाद एक मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर फर्जी केस में वरंगल जेल भेज दिया।

1987 से 1991 तक उन्होंने जेल में बिताया। इस दौरान उन्होंने मार्क्सवादी अध्ययन को जारी रखा। पार्टी के दस्तावेजों के साथ–साथ दूसरी मा–ले पार्टियों के दस्तावेजों का भी अध्ययन किया। इस अध्ययन के जरिए उन्होंने सैद्धांतिक विषयों पर अच्छी पकड़ बना ली। जेल के अंदर कम्यून चलाने और जेल में बंद राजनीतिक कैदियों को राजनीतिक कक्षाएं चलाने में उनका योगदान रहा। जेल में कैदियों के अधिकारों के लिए किए गए संघर्ष में उनका योगदान रहा। उस समय जेल में बंद शहीद नेता श्याम और महेश से उन्हें निरंतर मार्गदर्शन मिलता था। 1991 में रिहा होने के बाद वह फिर मंगी छापामार दस्ते में शामिल हो गए। अक्टूबर 1992 में उन्हें कमाण्डर की जिम्मेदारी दे दी गई।

1992 में आदिलाबाद जिले में सरकारी दमन बड़े पैमाने पर बढ़ाया गया। इस दमन को हराने के लिए चलाए गए प्रतिरोधी संघर्ष में कामरेड शेषन्ना का महत्वपूर्ण भूमिका रही। उस दौरान कुछ नेता आंदोलन को छोड़कर भाग गए थे। उस समय आंदोलन में उत्पन्न समस्याओं को हल करने के लिए जिला प्लीनम का आयोजन किया गया। जिले के कुछ नेतृत्वकारी कामरेडों में व्यक्तिगत कामकाज, नौकरशाही जैसे गलत रुझान बढ़ गए थे। इसके खिलाफ चलाए गए आंतरिक संघर्ष में कामरेड शेषन्ना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तबसे जिला आंदोलन के नेता के रूप में उनका विकासक्रम शुरू हो गया। 1993 में जिले में गठित पूर्वी सब–डिवीजनल कमेटी में उन्हें सदस्य के रूप में चुन लिया गया। जनवरी 1995 में आयोजित आदिलाबाद जिले के तीसरे अधिवेशन में उन्हें जिला कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। जिला कमेटी सदस्य के रूप में उन्होंने मंगी, इंद्रावेल्ली और सिंगापुर गुरिल्ला दस्तों का मार्गदर्शन किया।

उत्तर तेलंगाना आंदोलन में आदिलाबाद जिला आंदोलन का एक खास स्थान है। 1980 में इंद्रावेल्ली इलाके में आदिवासियों का विद्रोह उठ खड़ा हुआ था। सरकार ने उसका दमन करने के लिए आदिवासियों का नरसंहार किया था। इस संघर्ष ने समूचे आंध्रप्रदेश का ध्यान आकृष्ट किया था। उसके बाद विभिन्न जन संघर्ष सामने आए। अकाल की समस्या को हल करने में नाकाम सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जिले के आदिवासियों ने कई अकाल हमले किए। 1990 में जमींदारों की जमीनों पर कब्जा करने का संघर्ष बड़े पैमाने

पर सामने आया जिसमें हजारों एकड़ जमीन पर किसानों ने कब्जा किया। दुश्मन के सशस्त्र बलों पर कई फौजी कार्रवाइयां हुईं। इन सभी से सरकार हिल उठी। अर्धसैनिक बलों को बड़े पैमाने पर लाकर दमन लादा गया। फर्जी मुठभेड़ों में नौजवनों की हत्याएं शुरू कीं। इस सबके बीच भी कामरेड शेषन्ना ने आंदोलन का साहस के साथ नेतृत्व किया।

फौजी कार्रवाइयों को सफल बनाने में भी कामरेड शेषन्ना ने पहलकदमी के साथ भाग लिया। 1996 में सिरपुर (यू) पुलिस थाने पर गुरिल्लों ने भाग लिया था। इस कार्रवाई का कामरेड शेषन्ना ने उप कमाण्डर के रूप में नेतृत्व किया। इस हमले में कुल 10 पुलिस वाले मारे गए और सभी हथियार जब्त कर लिए गए। इस हमले ने पूरे प्रदेश भर में कई और हमलों के लिए प्रेरणा दी। उस समय से कामरेड शेषन्ना ने फौजी मोर्चे पर ध्यान केन्द्रित करना शुरू किया। 1999 जिले में गठित पहली प्लाटून का उन्हें कमाण्डर बनाया गया था। उसके बाद आदिलाबाद जिले में हुई कई फौजी कार्रवाइयों में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई। नरसापुर पुलिस थाना, गोलेटी व इंद्रारम सीआईएसएफ कैम्प, बेल्लमपल्ली रेलवे स्टेशन आदि पर किए गए हमलों में उन्होंने भाग लेकर एक अच्छे कमाण्डर के रूप में सबका विश्वास जीत लिया।

वर्ष 2000 के आखिर में आयोजित आदिलाबाद जिला चौथे अधिवेशन में उन्हें जिला कमेटी सचिव के रूप में चुन लिया गया। उसके बाद जनवरी 2001 में आयोजित उत्तर तेलंगाना स्पेशल जोन के दूसरे अधिवेशन में उन्हें एसजेडसी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। तबसे लेकर अपनी आखिरी सांस तक वह इसी जिम्मेदारी पर बने रहे।

पीएलजीए के गठन के बाद उन्हें फौजी मोर्चे का काम सौम्पा गया। एसएमसी मेम्बर के रूप में पीएलजीए बलों का प्रत्यक्ष नेतृत्व किया। पुरानी भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) की 9वीं कांग्रेस में उन्होंने प्रतिनिधि के रूप में भाग लेकर सक्रिय भूमिका निभाई।

2000 के बाद से उत्तर तेलंगाना आंदोलन पर दुश्मन का हमला और ज्यादा बढ़ा। गुरिल्ला दस्तों की पक्की सूचना पाकर ग्रेहाउण्ड्स बलों ने हमले करने शुरू किए। इस स्थिति में आदिलाबाद जिले में कामरेड शेषन्ना के नेतृत्व में पीएलजीए बलों ने प्रतिरोध करना शुरू किया। 2001 के आखिर में उटनूर मण्डल के दम्मन्नपेट के जंगल में जब मिलिटरी कैम्प चल रहा था तो पुलिस बलों ने हमला किया। पहले से इसकी जानकारी लेकर गुरिल्ला बलों ने कामरेड

शेषन्ना के नेतृत्व में ऐम्बुश किया जिसमें दो पुलिस वाले मारे गए। अगस्त 2003 में सिंगरेणी क्षेत्र में अकेनपल्ली के जंगलों में पुलिस ने गुरिल्ला दल पर हमला किया था। उस दल के साथ कामरेड शेषन्ना थे। दल ने पुलिसिया हमले का वीरतापूर्वक प्रतिरोध किया। कई अन्य मुठभेड़ों में कामरेड शेषन्ना ने पुलिस व ग्रेहाउण्ड्स बलों का जमकर मुकाबला किया। कई फौजी प्रशिक्षण कैम्पों में कामरेड शेषन्ना ने प्रशिक्षक के तौर पर भाग लिया। 2003 में सम्पन्न उत्तर तेलंगाना स्पेशल जोनल प्लीनम के बाद उन्हें निजामाबाद जिले की जिम्मेदारी दी गई। मार्च 2006 से जब आदिलाबाद और निजामाबाद जिलों को मिलाकर संयुक्त डिवीजन का गठन किया गया तब उन्हें उसके प्रभारी की जिम्मेदारी दी गई।

उत्तर तेलंगाना आंदोलन के पुनरनिर्माण कार्य कामरेड शेषन्ना की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आदिलाबाद जिले में जब दुश्मन का हमला बड़े पैमाने पर बढ़ गया तब वहां से कैडरों को अस्थाई तौर पर रिट्रीट करवाया गया। तब उन्हें खम्मम जिले की जिम्मेदारी दी गई। 2008 से 2010 तक उन्होंने खम्मम जिले के सचिव के रूप में कामरेड महेश के नाम से काम किया। कंचाल मुठभेड़ के बाद खम्मम जिले में आंदोलन काफी कमजोर हो चुका था। तब कामरेड शेषन्ना ने अपने समृद्ध अनुभव की बदौलत खम्मम जिले को फिर से मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों से वहां पर कैडर की भर्ती शुरू हो गई। दण्डकारण्य आंदोलन के साथ समन्वय करते हुए दोनों जोनों के बीच हर पहलू में एकता बढ़ाने के लिए वह प्रयासरत रहे। इस दौरान सिंगरेणी ओपनकास्ट खदानों और पोलवरम भारी बांध के खिलाफ जन आंदोलनों का निर्माण करने में उनका योगदान रहा। हाल ही में सरकार ने आदिलाबाद जिले के कव्वाल के जंगल को अभयारण्य घोषित कर वहां के दर्जनों को विस्थापित करने का आदेश जारी किया। इसके खिलफ आदिवासियों को संगठित कर आंदोलन का निर्माण करने में उनकी पहलकदमी रही।

कामरेड शेषन्ना एक संगठक, एक प्रशिक्षक, एक कमाण्डर, एक शिक्षक के साथ–साथ एक कवि व लेखक भी थे। उन्होंने आंदोलन की जरूरत को देखते हुए कई रचनाएं कीं। खासकर शहीदों की जीवनियों को कथनात्मक शैली में लिखकर उनके आदर्शों को जनता के बीच ले जाने में उनका खासा योगदान रहा। सरकारों की जन–विरोधी और साम्राज्यवाद–परस्त नीतियों के खिलाफ उन्होंने कई लेख लिखकर कई अखबारों और प्रगतिशील पत्रिकाओं का भेजे थे

जो प्रकाशित हुए थे। उन्होंने अपनी क्रांतिकारी जिंदगी में असंख्य कविताएं भी लिखीं। कामरेड शेषन्ना कैडरों और नेतृत्व के साथ स्नेहपूर्वक और कामरेड्री पद्धति से बरताव करते थे। कठिन परिस्थितियों में भी जनता और क्रांति की जीत पर अटूट विश्वास के साथ काम करते थे। कामरेड शेषन्ना की मृत्यु से उत्तर तेलंगाना आंदोलन ने एक साहसिक योद्धा और एक अनुभवी क्रांतिकारी खो दिया। आज शेषन्न भले हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अपने तीन दशकों के क्रांतिकारी व्यवहार से उन्होंने हमें प्रेरणा दी वह हमें आगे बढ़ाती रहेगी।

कामरेड सुनीता (स्वरूपा)

गंभीर अस्वस्थता के चलते 18 मार्च 2012 को कामरेड सुनीता की दुखद मृत्यु हुई। उनकी उम्र करीब 47 वर्ष थी। पिछले तीन दशकों से वे जनता की सेवा में लगी हुई थीं। इस लम्बी यात्रा में उन्होंने कई दिक्कतों और बाधाओं का दृढ़ता से सामना किया और आखिर तक क्रांति का लाल पताका बुलंद रखा। जब उनकी मृत्यु हुई उस समय वे पश्चिम बस्तर के गंगलूर इलाके में टेलर टीम (कपड़ा सिलाई करने वाली यूनिट) की प्रभारी के रूप में कार्यरत थीं। कामरेड सुनीता एक स्नेहिल साथी थीं। उनके चेहरे पर बच्चों जैसी मासूमियत रहती थी। साथ ही, किसी भी मुश्किल का सामना कर सकने का साहस भी उनमें साफ दिखाई देता था।

आंध्रप्रदेश के दक्षिणी तेलंगाना में मेदक जिले के गांव वेलदुर्ति में उनका जन्म हुआ था। वे एक गरीब किसानी परिवार की बेटी थीं। माता–पिता ने उनका नाम स्वरूपा रखा था। दो बहनों और तीन भाइयों में वह दूसरी थीं। गरीबी के चलते वह पढ़ाई नहीं कर पाई थीं। पिछड़ेपन के चलते माता–पिता ने बचपन में ही उनकी शादी एक रिश्तेदार से कराई थी। लेकिन पारिवारिक झगड़ों के कारण वह शादी जल्दी ही टूट गई।

उस समय उनके मामा उन्हें अपना घर ले गए थे। हमारी पार्टी के महान शहीदों में से एक कामरेड उडुतला श्रीनिवासुलु ही उनके मामा थे। आपातकाल के पहले क्रांतिकारी राजनीति की प्रेरणा से पोस्टल और टेलिग्राफ विभाग में

कर्मचारियों का एक संगठन निर्मित हुआ था। कामरेड श्रीनिवासुलु उस संगठन के नेता थे। वे एक शिक्षक भी थे जिन्होंने कई पार्टी कार्यकर्ताओं को मार्क्सवादी शिक्षा दी थी। पार्टी में राजनीतिक व सैद्धांतिक मोर्चों में उन्होंने अच्छा–खासा योगदान दिया था। 1995 में बीमारी के चलते उनकी मृत्यु हुई।

चूंकि कामरेड श्रीनिवासुलु दंपत्ति को बच्चियां नहीं थीं, इसलिए उन्होंने स्वरूपा की सगी बेटी की तरह देखभाल की। उनका परिवार पूरा पहले से क्रांतिकारी राजनीति को आत्मसात कर चुका था और स्वरूपा ने भी इस राजनीति में प्रवेश किया। पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने के बाद वे स्वरूपा से 'सुनीता' बन गईं।

1983 में वे कामरेड आनंद की जीवनसंगिनी बनी थीं। आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले के नरसरावपेट गांव के कामरेड आनंद का असली नाम मुरली था। जिस समय आनंद और सुनीता की शादी हुई थी, तब आनंद हमारी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के कुरियर के रूप में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वाह कर रहे थे। सुनीता ने भी उनके साथ प्रदेश की सीमाओं को पार कर आनंद के साथ भूमिगत हो गईं। पार्टी की जरूरतों के मुताबिक उन दोनों ने तमिलनाडु, कर्नाटका, ओड़िशा और महाराष्ट्र में पार्टी के लिए डेन (गुप्त मकान) का संचालन किया। जरूरत के हिसाब से कामरेड सुनीता ने कई भाषाएं सीख लीं। क्रांतिकारी अंदोलन के उस समय के नेता कोंडापल्ली सीतारामैया उन्हीं के डेन में रहकर काम करते थे। शहीद नेता कामरेड्स आई.वी. साम्बशिवराव (प्रकाश मास्टर), नल्ला आदिरेड्डी (श्याम) आदि कई महत्वपूर्ण नेता उनके डेन में रहकर काम किया करते थे। कई महत्वपूर्ण बैठकों के लिए उनका घर मंच बना था। ऐसे बड़े नेताओं और अहम कामों के लिए डेन चलाना कोई मामूली बात नहीं है। इसके लिए फौलादी अनुशासन, गुप्त कार्यपद्धति, बलिदानी भावना, साहस, सूझबूझ, सेवा की भावना, मितव्ययता आदि गुणों का होना जरूरी है। आमतौर पर शहरों और कस्बों में ही डेन चलाया जाता है, जहां पर उपभोक्तावादी संस्कृति हमें दबोच लेने को हरदम तैयार रहती है। लेकिन इन दोनों की जोड़ी ने सर्वहारा संस्कृति को बुलंद रखकर ऐसी संस्कृति का विरोध किया। डेन में अमूमन महिला साथियों पर यह सुनिश्चित करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी रहती है कि अड़ोस–पड़ोस के लोगों को हमारी गतिविधियों पर कोई शक न आए। कामरेड सुनीता ने इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाया।

अपने मिलनसार और प्रेमपूर्ण स्वभाव से उन्होंने कई पार्टी नेताओं का विश्वास व स्नेह हासिल किया। मुख्य रूप से शहीद कामरेड प्रकाश मास्टर और

कामरेड श्याम के साथ उनका रिश्ता काफी गहरा और आत्मीयतापूर्ण था। डेन की जिंदगी में आने वाली तमाम किस्म की दिक्कतों और परेशानियों का उन्होंने धैर्य के साथ सामना किया। क्रांति के हितों को सर्वोपरि मानते हुए उन्होंने बच्चे पैदा करने की इच्छा भी त्याग दी।

इस तरह करीब दस सालों तक डेन की जिम्मेदारियों का निर्वाह करने के बाद 1994 में कामरेड्स आनंद और सुनीता दण्डकारण्य आ गए ताकि जनयुद्ध के मोर्चे में प्रत्यक्ष काम किया जा सके। पार्टी ने उन्हें कुछ समय के लिए टिप्रागढ़ इलाके में रखने का फैसला किया था। उसी समय, 28 अगस्त 2012 को सिंदसूर गांव के पास पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में कामरेड आनंद शहीद हो गए।

जान से भी प्यारे अपने प्रिय साथी के इस तरह चले जाने से वे काफी आहत हुई। तब पार्टी ने उनसे पूछा था कि वे कहां काम करना पसंद करेंगी। उनका जवाब था कि जहां उनके जीवनसाथी का खून बहा, उसी दण्डकारण्य में काम करेंगी। उनकी आकांक्षा को देखते हुए उच्च कमेटी ने उन्हें बालाघाट डिवीजन में टांडा गुरिल्ला दस्ते में भेज दिया। उस समय बालाघाट डिवीजन के पार्टी नेतृत्व में पितृसत्ता सम्बन्धी कई समस्याएं सामने आई थीं। कुछ पुरुष कामरेडों के अंदर मौजूद कट्टर पितृसत्तात्मक विचारों के चलते कुछ महिला कामरेडों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा। उनमें सुनीता भी शामिल थीं। अपने जीवनसाथी को खोने के दुख से उबरने से पहले ही सामने आई इन समस्याओं से उन्हें मानसिक तौर पर काफी परेशानी उठानी पड़ी। उसी समय, यानी कामरेड आनंद की शहादत के ठीक एक साल बाद उनके मामा कामरेड उडुतला श्रीनिवासुलु का गंभीर बीमारी के चलते निधन हुआ। इस खबर ने उन्हें भी ज्यादा कष्ट पहुंचाया। इन तमाम कारणों से उनकी तबियत बुरी तरह बिगड़ गई। 1996 में वे इलाज के लिए इलाके से बाहर चली गईं।

उसके बाद दण्डकारण्य के जोन नेतृत्व और केन्द्रीय नेतृत्व को बालाघाट में हुए परिणामों की जानकारी मिली। उच्च नेतृत्व ने फैसला लिया कि मानसिक रूप से परेशान होकर बाहर जाने वाले कामरेडों से फिर से सम्पर्क करना चाहिए और पार्टी की ओर से हुई गलतियों से उन्हें अवगत कराना चाहिए। उस समय कामरेड सुनीता आंध्रप्रदेश में रहकर अपना इलाज करवा रही थीं। शहीद कामरेड्स श्याम, संजीव समेत कई नेतृत्वकारी साथियों ने सुनीता को चिट्ठियां लिखीं और मिलकर बात की। जनवरी 1998 में शहीद कामरेड महेश उनसे मिलकर पार्टी की ओर से हुई गलतियों पर खेद व्यक्त किया था। उसके बाद वे पार्टी के कामकाज में पहले की तरह सक्रिय हो गईं।

उस दौरान वे आंध्रप्रदेश में कुछ महीनों के लिए गुरिल्लों के एक कैम्प में रही थीं। उस कैम्प में पार्टी के राज्य कमेटी सदस्य कामरेड लिंगामूर्ति (कृष्ण) भी मौजूद थे। उस कैम्प में कुछ दिन बिताना कामरेड सुनीता की जिंदगी में एक महत्वपूर्ण मोड़ बताया जा सकता है। उस कैम्प में मौजूद कई कामरेडों के स्नेहपूर्वक बरताव ने उनके घावों पर मलहम का काम किया। उनके निष्कपट बरताव और सभी से घुलमिल जाने के उनके मिलनसार व्यक्तित्व ने कामरेड कृष्ण को आकर्षित किया। 1994 में अपनी जीवनसंगिनी कामरेड पद्मा को एक फर्जी मुठभेड़ में खो चुके कामरेड कृष्ण ने कामरेड सुनीता में अपनी जिंदगी में आने का न्यौता दिया। कामरेड सुनीता ने इस न्यौते को स्वीकार किया। और इन दोनों के इस फैसले को पार्टी ने स्वागत किया। इस तरह 1998 में कामरेड्स सुनीता और कृष्ण एक दूसरे की जिंदगी का हिस्सा बन गए।

उसके बाद कामरेड सुनीता नल्लामला क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गईं। वहां पर 'निर्मला' के नाम से वे लोकप्रिय हो गईं। पहले उन्होंने महानंदी गुरिल्ला दस्ते में सदस्य के रूप में काम किया। उसके बाद वहीं पर एरिया कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी लेकर काम किया। नल्लामला की कठिन भौगोलिक धरातल में उन्होंने साढ़े तीन सालों तक काम किया। वहां पर जनता, पार्टी नेतृत्व और कैडरों का विश्वास व प्यार जीत लिया।

आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में कामरेड कृष्ण विशिष्ट स्थान रखने वाले कामरेड थे। कठोर वर्ग संघर्ष में लम्बे समय तक दृढ़ता से खड़े रहकर उन्होंने क्रांतिकारी जनता, बुद्धिजीवियों और तमाम उत्पीड़ित तबकों पर अमिट छाप छोड़ी थी। वे कार्यकर्ताओं से बेहद प्यार करते थे। उनके दिलों में वे हमेशा के लिए बस गए। कामरेड्स कृष्ण और निर्मला में एक दूसरे के प्रति गजब की समझदारी थी। शादी के कुछ दिन बाद कामरेड कृष्ण की तबियत बुरी तरह खराब हो चुकी थी। उस समय कामरेड सुनीता ने उनका काफी ख्याल रखा। मुश्किलों से घिरे कामरेडों को अपने करीब लाकर प्यार बांटने के स्वभाव के चलते इन दोनों की जोड़ी कई साथियों के लिए स्नेहिल जोड़ी बन गई। 2001 के आखिर में कामरेड सुनीता को पेट दर्द शुरू हुआ था। इलाज के लिए वे नल्लामला जंगलों से बाहर चली गईं। उसी समय उनकी जिंदगी में फिर एक बार भारी झटका लगा। 27 मार्च 2002 को कृष्णा नदी में नाव पलट जाने से कामरेड कृष्ण की दृखद मृत्यु हुई। उस समय कामरेड सुनीता किसी हमदर्द के घर पर थीं जहां उन्हें जी भर रोने का भी मौका नहीं था। कुछ दिन बाद जब वे फिर से नल्लामला इलाके में गईं तभी साथियों से अपना दुख बांट लेने का

मौका मिला।

उस समय नल्लामला क्षेत्र में सरकारी दमन तीव्र हो रहा था। उनकी तबियत भी अनिश्चित रहने लगी थी। इसलिए आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी ने उन्हें वहां से स्थानांतरित किया। दो साल तक वे शहीद नेता कामरेड आजाद (चेरुकूरि राजकुमार) की प्रत्यक्ष देखरेख में रहीं। लेकिन बाहर रहना उन्हें पसंद नहीं आया। अस्वस्थता के बावजूद गुरिल्ला जोन के अंदर ही रहते हुए कुछ न कुछ काम करने की इच्छा थी उनकी। तब तक दण्डकारण्य में बढ़ते जनयुद्ध की जरूरतों को पूरा करने के लिए कई सहायक विभागों का निर्माण होने लगा था। जन सैनिकों की वर्दियां सीने के लिए टेलरों (दर्जियों) की जरूरत काफी बढ़ गई। इसे ध्यान में रखकर उन्होंने बाहर सिलाई का काम सीख लिया। उस समय उनका पेट दर्द गंभीर रूप से बढ़ गया जिससे उन्हें आपरेशन करवाना पड़ा था। इसके बाद भी उन्होंने सिलाई का काम सीखना जारी रखा और फरवरी 2004 में टेलर के रूप में दण्डकारण्य में कदम रखा।

करीब आठ महीनों तक उन्होंने माड़ क्षेत्र में काम किया। वहां के दूसरे कामरेडों को प्रशिक्षित भी किया। उसके बाद उन्हें दक्षिण रीजियन स्थानांतरित किया गया। वहां पर पांच कामरेडों के साथ रीजनल स्तर की टेलर टीम का निर्माण किया गया। इस टीम का कामरेड सुनीता ने नेतृत्व किया। उसके बाद 2007 में उन्हें पश्चिम बस्तर डिवीजन भेजा गया। पश्चिम बस्तर के गंगलूर एरिया टेलर टीम का उन्होंने नेतृत्व किया। आखिर तक वे इसी जिम्मेदारी में रहीं। अगस्त 2011 में उनके स्तन में दर्द शुरू हुआ था। चूंकि वे समझ नहीं पाईं, इसलिए एंटीबयोटिक्स लेना शुरू किया। लेकिन दर्द जब बेहद बढ़ा था तो उन्हें अस्पताल ले जाया गया। डाक्टरों ने निर्धारित किया कि उन्हें स्तन कैंसर है जोकि दूसरे चरण में पहुंच चुका है। इलाज शुरू भी हुआ, लेकिन वे बच नहीं पाईं। इलाज के दौरान ही उन्होंने आखिरी सांस ली।

जनता और साथियों के प्रति वे जिस प्रकार प्यार व स्नेहपूर्वक बरताव करती थीं, वह काबिलेतारीफ था। हर कामरेड के दुख–दर्द को वे अपना दुख–दर्द समझकर उनका सहयोग करती थीं। आखिरी दिनों में उन्होंने काफी तनहाई महसूस की। मुश्किल परिस्थितियों में भी वे आंदोलन में मजबूती से डटे रहती थीं। साथ ही, दूसरे साथियों का भी साहस बंधाती थीं। वह एक हंसमुख स्वभाव की कामरेड थीं जिससे उनसे मिलने वाले सभी कामरेड खुश रहते थे।

जब वे बालाघाट में थीं तब उन्होंने गुरिल्ला जीवन में अनुभव कम होने के

बावजूद पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ों में हिम्मत का प्रदर्शन किया। चार–पांच बार जब वे मुठभेड़ों में फंसी थीं, अपना किट सहित साथियों से मिलकर सुरक्षित रिट्रीट कर गईं। अपने साथियों से वे जितना प्यार करती थीं, उतना ही दुश्मन से नफरत करती थीं। जब वे दक्षिण रीजियन पहुंची थीं, उसी समय सलवा जुडूम शुरू हुआ था। जनता पर अकथनीय हिंसा और अत्याचार हुए थे। 2009 से आपरेशन ग्रीनहंट के हमले शुरू हुए थे। कामरेड सुनीता जहां काम करती थीं, वहां की जनता से मिलकर उसका ढाढ़स बंधाती थीं। दुश्मन के हमलों से न डरते हुए प्रतिरोध करने की बात करती थीं। दुश्मन के बलों पर जनता और पीएलजीए द्वारा की जाने वाली हर साहसिक कार्रवाई पर और हासिल हर कामयाबी पर वे अपनी खुशी प्रकट करती थीं।

कामरेड सुनीता ने पार्टी में आने के बाद ही पढ़ना–लिखना सीख लिया। लिखना मुश्किल लगने से भी वे शहीदों की यादें लिखा करती थीं। अपने जीवनसाथी कामरेड आनंद और कृष्ण की स्मृति में उन्होंने उन्होंने जो रचनाएं कीं वे दिलों को छू लेने वाली हैं। कामरेड श्याम की याद में उन्होंने एक कविता लिखी। वे अपने साथियों को नियमित पत्र लिखा करती थीं।

कामरेड सुनीता का क्रांतिकारी जीवन आज की पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण है। तमाम मुश्किलों और परेशानियों की परवाह न करते हुए उन्होंने आखिरी दम तक क्रांति के पथ पर अपना सफर जारी रखा। वे एक आदर्श कम्युनिस्ट थीं जिन्होंने अपने पद और स्तर के बारे में सोचे बगैर जनता और पार्टी की निस्वार्थ तथा भरसक सेवा की।

आइए साथियो, कामरेड सुनीता के आदर्शों को ऊंचा उठाए रखें। अपने तीस लम्बे सालों की क्रांतिकारी जिंदगी में उनके द्वारा प्रदर्शित उच्च मूल्यों और उच्च क्रांतिकारी चेतना को आत्मसात कर लें। उनके सपनों को साकार करने के लिए मजबूती से कदम बढ़ाएं।

कामरेड गोन्से मंगली

26 मार्च 2012 को दक्षिण बस्तर डिवीजन के भेज्जी थाने के निकट पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने सीआरपीएफ बलों पर हमला किया। इस हमले में एक जवान मारा गया और एक अन्य घायल हुआ। इस दौरान दोनों तरफ से हुई भीषण गोलीबारी में पीएलजीए के दो जांबाज योद्धा शहीद हो गए। बटालियन–1 के एलएमजी पर्सन कामरेड कुरसम पाकलू ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। सेक्शन कमाण्डर कामरेड गोन्से मंगली बुरी तरह घायल हुई थीं। इलाज के दौरान अगले दिन 27 मार्च की रात के

10 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। इन दोनों की साथियों का अंतिम संस्कार पीएलजीए ने जनता के समक्ष किया।

दक्षिण बस्तर डिवीजन, जगुरगोण्डा एरिया के ग्राम ताड़िमेटला में कामरेड गोन्से मंगली का जन्म हुआ था। वह 28 साल की थीं। वह एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार की बेटी थीं। जब वह बड़ी हुईं गांव में केएमएएस संगठन में शामिल होकर महिलाओं की समस्याओं, पितृसत्तात्मक शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ महिलाओं को संगठित कर संघर्ष किया। विभिन्न संदर्भों में जगुरगोण्डा, चिन्तलनार के आसपास के गांवों में प्रचार टीमों के साथ घूमकर जनता को संगठित किया। 2003 में छत्तीसगढ़ विधानसभा को हुए चुनावों के दौरान पूरे एरिया में घूम–घूमकर बहिष्कार का प्रचार किया। चुनाव के लिए आए सशस्त्र बलों का प्रतिरोध करने के लिए की गई फौजी कार्रवाइयों में भी भाग लिया। कोसरोण्डा के पास बीएसएफ और सीआरपी बलों पर किए गए ऐम्बुश में कामरेड मंगली ने साहस के साथ भाग लिया था।

कामरेड मंगली जन संगठन में काम करते हुए जनवरी 2004 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर जेगुरगोण्डा दस्ते में शामिल हो गईं। केएएमएस आर्गनाइजर के साथ रहकर नागारम, बोड़केल, बासागुड़ा एलओएस के इलाकों में दो साल काम किया। वह गांव की युवतियों व महिलाओं के साथ दोस्ती करती और उन्हें संगठन, पार्टी और संघर्ष में शामिल होने के लिए तैयार करती थीं। युवतियों को जुल्म, शोषण के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करती थीं। इसके अलावा विभिन्न आर्थिक व राजनीतिक संघर्षों में बड़ी संख्या में महिलाओं को गोलबंद करती थीं। जहां संगठन नहीं था वहां संगठन का निर्माण किया। संगठन की सदस्यता बढ़ाने का प्रयास किया। इस तरह कामरेड मंगली जनता के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर जनता की चहेती बन गईं।

अक्टूबर 2005 में पार्टी ने गुरिल्ला कम्पनी–2 का निर्माण करने का निर्णय लिया। इस कम्पनी के लिए दक्षिण बस्तर से भेजे गए सदस्यों में कामरेड मंगली भी एक थीं। कम्पनी–2 का गठन होने के बाद गंगालूर सलवा जुडूम शिविर पर किए गए हमले में कामरेड मंगली ने भाग लिया। 9 फरवरी 2006 एनएमडीसी पर किया गया हमला, मुरकीनार पुलिस कैम्प, विंजरम, एर्राबोर शिविर आदि हमलों में कामरेड मंगली

ने पीएलजीए सदस्य के तौर पर भाग लेकर हमलों को सफल करने में अपना योगदान दिया।

अगस्त 2006 में कम्पनी–3 का गठन हुआ था। कम्पनी–3 में कामरेड मंगली को सेक्शन डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। कम्पनी–3 द्वारा किए गए महत्वपूर्ण फौजी कार्रवाइयों – आसिरगुड़ा, उरपलमेट्टा, ताड़मेटला, तोंगगुड़ा, बट्टीगुड़ा, बण्डा–2, तेमेलवाड़ा, मिनपा, पालोड़ी, किष्टारम आदि हमलों में सेक्शन डिप्यूटी कमांडर के तौर पर अपने सेक्शन का नेतृत्व किया। हमलों को सफल करने के लिए साहस के साथ लड़ते हुए दर्जनों शत्रु बलों को खत्म कर हथियारों को जब्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कामरेड मंगली अपनी राजनीतिक व सैनिक समझदारी को बढ़ाते हुए अपने सेक्शन को भी राजनीतिक रूप से विकसित करने का प्रयास करती थीं।

2009 में गठित पहली गुरिल्ला बटालियन में कामरेड मंगली को सेक्शन कमांडर के तौर पर शामिल किया गया। बटालियन द्वारा किए गए सिंगनमड़गु ऐम्बुश और ऐतिहासिक ताड़िमेटला–मुकरम ऐम्बुश में वीरता के साथ लड़ते हुए 76 सीआरपी जवानों को खत्म करने और उनके हथियारों को छीनने में उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। दरभा डिवीजन में अवधेश गौतम के घर पर किए गए हमले के दौरान थाने से पुलिस को आने से रोकने के लिए बनाई गई टीम का नेतृत्व कर पुलिस को रोककर हमले में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मोरपल्ली–तिम्मापुरम–ताड़मेटला गांवों पर कोया कमांडो, कोबरा कमांडो बलों ने हमला कर भयानक आगजनी, लूटपाट, हत्या, अत्याचार कर भारी आतंक मचाया था। उन बलों पर पीएलजीए ने तिम्मापुरम के पास हमला कर चार को मारकर, 9 को घायल किया। और तीन एसएलआर को जब्त कर लिया। इस हमले में कामरेड मंगली हमला शुरू करने वाली कम्पनी में थीं। साहस के साथ लड़ते हुए महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। गौरतलब है कि इस अग्निकांड में खुद मंगली का गांव और घर भी जला दिया गया था।

अपनी 9 सालों की क्रांतिकारी जिन्दगी में 7 सालों तक कामरेड मंगली ने फौजी क्षेत्र में रहकर काम किया। कई फौजी कार्रवाइयों में भाग लेकर अनमोल अनुभव हासिल किया। फौजी तकनीकों में निपुणता हासिल की। घर में उन्हें पढ़ने–लिखने का मौका नहीं मिला था। पार्टी में आने के बाद पढ़ना–लिखना सीख लिया। पार्टी की पत्रिकाओं, सर्कुलरों और दस्तावेजों को खुद पढ़ती और अपने साथियों को पढ़कर बताती थीं। मिलिटरी ग्राउण्ड में सभी तरीके के आइटमों को सीखने का प्रयास करती थीं। पीएलजीए की अनुशासन का पालन करती थीं। पीएलजीए के अंदर पितृसत्तात्मक सोच के विरुद्ध वह हमेशा संघर्ष करती थीं। गलत सोच की खुलकर आलोचना करती

थीं। 2010 में वह अपने कम्पनी में एक साथी कामरेड से विवाह किया था। कामरेड मंगली के आदर्शों को आत्मसात करते हुए उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लेंगे।

कामरेड कुरसम पाकलू

कामरेड पाकलू (22) पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगालूर एरिया के मनकेली गांव में एक गरीब किसान परिवार में जन्मे थे। मां मंगली और पिता कुरसम कोय्या की तीन संतानों में कामरेड पाकलू बड़े थे। उनके पिता नहीं रहे। मां ने ही पाल–पोसकर बड़ा किया था।

कामरेड पाकलू 2005 से चले फासीवादी सलवा जुडूम से बहुत प्रभावित हुए थे। उनके गांव मनकेली पर सलवा जुडूम के गुण्डों ने सरकारी सशस्त्र बलों के साथ मिलकर दर्जनों बार पाशविक हमले किए और घरों को जलाए और लोगों की हत्याएं कीं। सलवा जुडूम के जुल्मों व अत्याचारों से मुक्ति का एक ही रास्ता संघर्ष है सोचकर 2005 में, यानी सोलह साल की उम्र में कामरेड पाकलू जन मिलिशिया में शामिल हो गए थे। मिलिशिया सदस्य के रूप में उन्होंने पुलिस पर हैरान–परेशान करने वाली कई कार्रवाइयों में भाग लिया। मनकेली गांव से बीजापुर सिर्फ 8 किलोमीटर की दूरी पर है। इसलिए पुलिस व अर्द्धसैनिक बलों के हमले इस गांव पर कभी भी हो सकते थे। धान कटाई आदि कामों में किसानों को सुरक्षा देने की जिम्मेदारी मिलिशिया की है। कामरेड पाकलू ने इसमें अपना योगदान दिया। एक बार कामरेड पाकलू और उनके चाचा दोनों संतरी में थे तब धोखे से आए पुलिस वालों ने उन्हें दबोच लिया। पुलिस की हिरासत में उन्हें निर्मम यातनाएं दी गईं। फिर भी कामरेड पाकलू ने अपना मुंह नहीं खोला। पार्टी से सम्बन्धित एक भी राज उन्होंने दुश्मन के सामने नहीं उगली। दुश्मन की अमानवीय यातनाओं को सहकर कामरेड पाकलू ने संघर्ष का परचम बुलंद रखा। करीब एक साल तक उन्हें झूठे केसों में फंसाकर जेल में रखा गया। 2006 के आखिर में उन्होंने जेल की प्रहरियों को चकमा देकर भाग चले आए और आते ही क्रांतिकारी आंदोलन में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में शामिल हो गए।

सबसे पहले उन्हें गंगालूर एलओएस में रखा गया था। वहां एक साल तक काम करने के बाद उनके रहन–सहन और कामकाज को देखते हुए पार्टी ने उन्हें डिवीजन सप्लाई दल में भेजने का निर्णय लिया। वहां भी कामरेड पाकलू ने अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाई। बाद में 2009 में आन्दोलन की जरूरत के मुताबिक उन्हें बटालियन–1 में बदला गया। फौजी क्षेत्र में भी कामरेड पाकलू उन्हें दी गई सभी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से निभाने की कोशिश की। सिंगनमडगू, मुकरम, भेज्जी जैसे अनेकों कार्रवाइयों में शामिल होकर उन्हें सफल करने में अपने हिस्से की भूमिका अदा की। 26 मार्च की लड़ाई में भी उन्होंने अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपनी जान कुरबान की। वह जहां भी रहते सभी के साथ मिलजुलकर रहते थे। आइए, कामरेड पाकलू के उच्च आदर्शों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ने का संकल्प लें।

कामरेड कोवासी गोविन्द (लच्छु)

कामरेड गोविंद की शहादत 31 मार्च 2012 के दिन जहरीला सांप के डंसने से हुई। उनकी उम्र 28 साल थी। उन्हें बचाने के लिए जनता ने जंगली दवाइयों से इलाज किया लेकिन नहीं बचा पाए।

कामरेड गोविंद 2002 से पार्टी में पेशवर क्रांतिकारी के तौर पर भर्ती हुए थे। तब से लगभग 10 साल की लंबी क्रांतिकारी जिन्दगी में उन्होंने कई अनुभव हासिल किए थे। ऐसे सीनियर और अनुभवी कामरेड की असमयिक मृत्यु जनता और पार्टी के लिए बेहद दुखदायी है।

कामरेड लच्छु का जन्म दन्तेवाड़ा जिला के जवगा गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। पांच भाई-बहनों में लच्छु दूसरे नम्बर के थे। माता बोड्डो और पिता बोटी के परिवार का गुजारा मुश्किल हो रहा था। जमीन नहीं थी। खेत मजदूरी करके परिवार का गुजारा करते थे। बाद में पिता उन्हें बीजापुर जिला के भैरमगढ़ ब्लाक केसूर गांव में लेकर आए। यहीं पर उनका बचपन बीता। केसूर गांव पहले क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए एक मजबूत गांव था। लच्छु शहीद कामरेड भीमन्ना से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने लच्छु को बचपन से क्रांतिकारी राजनीति से अवगत कराया था। जब बड़े हुए गांव के डीएकेएमएस में शामिल हो गए और कमेटी में चुने गए। और रेंज कमेटी सदस्यों के साथ विभिन्न प्रचार आन्दोलनों में भाग लेते थे और जनता को संगठित करते थे। वैसे ही जरूरत पड़ने पर सैनिक कार्रवाइयों में भी भाग लेते थे। एक-दो जगहों में ऐसी कार्रवाइयों का खुद लच्छु ने नेतृत्व किया। बाद में उन्हें मिलिशिया की जिम्मेदारी

सौंपी गई। उनके कामकाज को देखते हुए पार्टी ने उन्हें पेशेवर क्रांतिकारी बनने का आह्वान किया। उन्होंने बेझिझक स्वीकार कर लिया और पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गए।

वह लच्छु से गोविंद बनकर जनता और पीएलजीए के बीच लोकप्रिय हो गए। 2003 में उन्हें नेशनलपार्क एरिया में बदला गया। वहां उन्होंने सीएनएम में सदस्य के तौर पर काम शुरू किया। गोविंद के अन्दर ऐसी कला थी जिससे सभी आकर्षित हो जाते थे। इसलिए जनता उन्हें बहुत प्यार करती थी। 2004 में उन्हें फरसेगढ़ दल में डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। 2006 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नति दी गई। 2008 में गोविंद को फरसेगढ़ एलओएस कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। 2011 के आखिर में डिवीजन डीएकेएमएस की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इस प्रकार कामरेड गोविंद ने अपनी क्रांतिकारी जिन्दगी में विभिन्न जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाया। उन्हें जो भी काम सौंपा गया बेहिचक उन्हें किया या पूरा करने की कोशिश की। जनता से घनिष्ठ संबंध स्थापित किया। मेहनती और सहनशील, सदा खुश रहने वाले कामरेड थे गोविंद। वह अपने साथियों की सभी कामों में मदद करते थे। सलवा जुडूम जैसे फासीवादी दमन के बीच भी जनता के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखे और हिम्मत के साथ उसका सामना किया। कामरेड गोविंद की शहादत की खबर से समूचे नेशनलपार्क इलाके की जनता में शोक फैल गया। उनके अंतिम संस्कार में आसपास के गांवों से लगभग 450 लोगों ने भाग लिया और उन्हें श्रद्धांजलि दी। और उनके सपनों को पूरा करने की शपथ ली।

कामरेड शिवाजी

कामरेड शिवाजी का जन्म बीजापुर जिला के परकेल गांव में हुआ था। माता–पिता ने उनका नाम प्यार से वेको विज्जो रखा था। उनके पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गई। उनकी मां ने दूसरी शादी कर ली। दो भाई मेहनत करके बहुत ही गरीबी में अपनी जिन्दगी गुजार रहे थे। उनका परिवार 30 वर्ष पहले गीदम उस पार से जमीन के लिए परकेल गांव में आकर बस गया था।

2005 से सलवा जुडूम अभियान शुरू हो

गया। उसकी कहर परकेल गांव पर भी पड़ा। 2006 में उनके गांव में हमला करके पूरे घरों लूटा और जला दिया, फसलों को नष्ट कर दिया गया। इन हमलों के दौरान शिवाजी मिलिशिया में भर्ती हो गया। हमलों से डरकर परकेल और पुसवाया की पूरी जनता कुटरू सलवा जुडूम शिविरों में चली गई। सिर्फ तीन–चार परिवार ही बचे थे। इन सबने जंगलों में शरण ले ली। उसी दौरान दिसम्बर 2006 में कामरेड शिवाजी पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पीएलजीए में भर्ती हो गया। जाटलूर एरिया में जन मिलिशिया दल में रहकर सलवा जुडूम गुण्डों का प्रतिरोध करते हुए जनता की मदद करते थे। जनता की रक्षा करते हुए जनता को सलवा जुडूम शिविरों में जाने से रोकते, प्रतिरोध के लिए तैयार करते थे। जुडूम गुण्डों के हमलों के समय आगे रहकर उनका प्रतिरोध करते उन्हें दौड़ा–दौड़ाकर भगाने में आगे रहते थे। 2006 मार्च में पेंटा गांव के सलवा जुडूम गुण्डा के घर पर हमला करने की घटना में कामरेड शिवाजी ने एक टीम का नेतृत्व किया। वहां के पूरा सामान जब्त करके जनता को बांट दिया गया। उस हमले के बाद वापस आते समय परकेल गांव के पास पुलिस से मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में पांच मिलिशिया सदस्य शहीद हो गए। इस मुठभेड़ में भी कामरेड शिवाजी ने पुहलस बलों का निडरता के प्रतिरोध किया।

2007 मार्च महीने में उन्हें जन मिलिशिया दल से एलजीएस में भेजा गया। 2008 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई। 2009 में कम्पनी–9 में बदला गया। उन्हें जहां भी और जो भी काम सौंपा जाता खुशी से करने के लिए तैयार हो जाता था। 2011 में उन्हें प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नोति दी गई। कई फौजी कार्रवाइयों में उन्होंने निडरता से भाग लिया। कई हमलों को सफल करने में अपने हिस्से की भूमिका निभाई।

2012 के टीसीओसी अभियान को सफल करने के लिए वह इन्द्रवती एरिया में आए थे। कई जगह दुश्मन पर हमले की कोशिश की गई। ग्रीन हंट अभियान के विरोध में पार्टी ने 16 मई को 'भारत बंद' का आह्वान दिया। इस बंद को सफल करने के लिए जनता को लेकर भैरमगढ़ रोड पर पोस्टर और बैनर डाल रहे थे। रात 11 बजे पुलिस ने आकर फायरिंग की। इस फायरिंग में कामरेड शिवाजी घायल हो गए। 16 मई के दिन 6.30 बजे अंतिम सांस ली। 17 मई के दिन उनका अंतिम संस्कार किया गया। 23 मई को उनकी याद में जाड़का गांव में संस्मरण सभा आयोजित की गई। इस सभा में आसपास के गांवों से 11 सौ जनता ने भाग लिया। जनता ने कामरेड शिवाजी के आदर्शों को याद करते हुए उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया।

कामरेड सोमारी

कामरेड सोमारी का जन्म दरभा डिवीजन, मलिंगेर एरिया के गुप्पड़ी गांव में हुआ था। यह गांव सुकमा जिला व ब्लाक के तहत आता है। पिता कोसा कोवासी और मां पोज्जे कोवासी की सात संतानों में कामरेड सोमारी दूसरी संतान थीं। माता–पिता ने उनका नाम जोगी रखा था। बचपन में ही उनके पिता गुजर गए थे। मां ने उन्हें पाल–पोसकर बड़ा किया। बड़ी बहन के विवाह होने के बाद परिवार का बोझ सोमारी पर आ पड़ा। वह अपनी मां के साथ मेहनत करके अपने छोटे भाई–बहनों को पालने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली।

दिसम्बर 2004 से मंलिगेर इलाके में माओवादी आन्दोलन का विस्तार हुआ। सुकमा, कोआकोण्डा, कटेकल्याण ब्लाकों के बहुत से गांवों में पार्टी का विस्तार हुआ। जनता जन संगठनों में गोलबंद होने लगी। इसी दौरान गुप्पड़ी गांव में भी जन संगठनों का निर्माण हुआ। गांव में जब भी दस्ता जाता कामरेड सोमारी पानी लेकर दस्ते के पास आ जाती थीं। 2007 में वह केएएमएस में शामिल हो गईं। विभिन्न जन समस्याओं को लेकर हुए जन आन्दोलनों भाग लेती थीं। क्रांतिकारी दिवसों के मौकों पर गांव की महिलाओं को इकट्ठा कर मीटिंगों में लेकर जाती थीं। जनता और महिलाओं की मुक्ति के लिए नवजनवादी क्रांति ही सही मार्ग है सोचकर उन्होंने मार्च 2008 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने का प्रस्ताव पार्टी के सामने रखा। कामरेड सोमारी अन्य तीन कामरेडों के साथ जनता के सामने आखिरी दम तक जनता के लिए काम करने का संकल्प लेकर पीएलजीए में भर्ती हो गईं। कामरेड सोमारी ने अपने परिवार के मना करने पर उन्हें समझा–बुझाकर जनयुद्ध में कदम रखा।

आने के बाद उन्होंने मलिंगेर एलजीएस में सदस्य के तौर पर काम किया। पीएलजीए सदस्य के तौर पर वह उस इलाके में एलजीएस द्वारा की गई कार्रवाइयों में हिम्मत के साथ भाग लिया करती थीं। एस्सार कम्पनी के पाइप लाइन को ध्वस्त करने, किरंदुल में गाड़ियों में आग लगाने आदि कार्रवाइयों में भाग लिया था। पालनार के पास हुई मुठभेड़ में भी कामरेड सोमारी हिम्मत के साथ डटी रहीं। 2009 के लोकसभा चुनाव के दौरान माड़ेक के पास सशस्त्र बलों

पर किए गए हमले में असाल्ट टीम की सदस्य के तौर पर भाग लिया था। उस हमले में एलजीएस कमांडर कामरेड लोकेश शहीद हुए थे। उनके शव को लाने के लिए गोलियों की बौछार के बीच कामरेड सोमारी ने बहादुरी के साथ लड़ते हुए महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

घर में उन्हें पढ़ने का मौका नहीं मिला था। दस्ते में आने के बाद जल्द ही पढ़ना–लिखना सीख गईं। पार्टी द्वारा गोंडी में प्रकाशित पत्रिकाओं को खुद पढ़ती और दूसरों को भी बताती थीं। वह अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ाने की लगातार कोशिश करती थीं। जनता से दोस्ती करती और उन्हें राजनीति बताकर संगठित करने का प्रयास करती थीं। 2010 में उन्हें एलजीएस डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। उसके बाद डिवीजनल पार्टी कमेटी ने उन्हें कांगेरघाटी एलजीएस डिप्यूटी कमांडर के तौर वहां बदलने का निर्णय लिया।

पूसपाल इलाके में, यानी बस्तर–ओडिशा सीमा के गांवों में कोया, धुरवा, भूमिया, हल्बा आदिवासी जनता रहती है। कामरेड सोमारी ने उनके बीच उनकी भाषा को सीखते हुए वहां की जनता के साथ दोस्ती करके उनको संगठित करने का प्रयास किया। जनता की सेवा करते हुए उनसे नई–नई चीजों को सीखने का प्रयास करती थीं। इस तरह वह वहां की जनता की चहेती बन गईं। पार्टी ने कामरेड सोमारी को जुलाई 2011 में एरिया इनस्ट्रक्टर टीम की जिम्मेदारी सौंपी। कामरेड सोमारी ने उस टीम की कमांडर के तौर पर कांगेरघाटी एरिया की मिलिशिया को फौजी प्रशिक्षण देकर मजबूत करने का प्रयास किया। मिलिशिया को राजनीतिक तौर पर संगठित कर जनयुद्ध के महत्व को समझाया करती थीं।

2012 के टीसीओसी अभियान के दौरान 20 अप्रैल के दिन एक कार्रवाई के दौरान कामरेड सोमारी बुरी तरह घायल हो गईं। पार्टी ने उन्हें बचाने की बहुत कोशिश की। लेकिन इलाज के दौरान 3 मई 2012 के दिन शहीद हो गई। उनके पार्थिव शरीर को कटेकल्याण इलाके में लाकर अंतिम संस्कार किया गया। उनके अंतिम संस्कार में लगभग एक हजार जनता शामिल हुई। कामरेड सोमारी दरभा डिवीजन से पेशेवर क्रांतिकारी बनने वालों में पहली कामरेड थीं। कामरेड सोमारी की शहादत से पार्टी ने एक उभरते हुए कमांडर को खो दिया। उनके बलिदान से प्रेरणा लेते हुए जनयुद्ध को तेज कर उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लेंगे।

कामरेड दिनेश धुर्वा (राहुल)

कामरेड राहुल (22) का जन्म गढ़चिरोली डिवीजन, धनोरा तहसील के कोसमी गांव के एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था। पतिराम और मीना दम्पति की पांच संतानों में वह तीसरी संतान थे। माता–पिता ने उनका नाम दिनेश रखा था। कामरेड राहुल ने ग्यारापत्ति गांव में 9वीं तक की पढ़ाई की थी। स्कूल में रहते समय उनका पार्टी से कोई सम्पर्क नहीं था। उनके परिवार से कुछ कामरेड पार्टी में काम कर रहे हैं। उनसे प्रभावित होकर वह पार्टी में आया था। कामरेड राहुल अप्रैल 2007 में पीएलजीए में भर्ती हो गया। एक साल टिप्रागढ़ दस्ता में काम करने के बाद उन्हें गोंदिया डिवीजन में बदला गया। वहां कुछ छोटी–छोटी समस्याएं आने से न समझ पाने की वजह से वापस घर आ गया था। तीन महीने घर में रहने के बाद अपनी गलती समझकर दुबारा पार्टी में आने का निर्णय लिया। कुछ समय टिप्रागढ़ प्लाटून में काम करने के बाद पार्टी ने उन्हें 2010 में चातगांव एरिया में बदला। उन्होंने पोटेगांव एलओएस में रहकर काम किया। वहां के जंगल, रास्तों पर अच्छी पकड़ बनाकर पायलेट की जिम्मेदारी निभाई। वह अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ाने की लगातार कोशिश करते थे। जनता के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए उनसे दोस्ती करते थे। बाद में उन्हें छात्रों और डीएकेएमएस की सांगठनिक जिम्मेदारी सौंपी गई। पार्टी उन्हें एरिया कमेटी सदस्य के तौर पदोन्नति देने का फैसला कर चुकी थी। उसी समय, 23 मई 2012 को चुडियल–कर्रेमरका में दस्ता के डेरा पर पुलिस ने हमला किया। उस हमले में कामरेड राहुल शहीद हो गए। आइए, कामरेड राहुल की शहादत को लाल–लाल सलाम पेश करें।

कामरेड तीजू (रामलाल यादव)

26 मई 2012 को मध्यप्रदेश के बालाघाट जिला, बैहर तहसील, पालागोंदी गांव के पास पचामादादर के जंगल में पुलिस व कमाण्डो बलों ने पीएलजीए के एक अस्थाई कैम्प पर कातिलाना हमला किया। एक मुखबिर की सूचना पर वहां

मौजूद पार्टी नेतृत्व की हत्या करने की साजिश के तहत बड़ी संख्या में घेराबंदी कर यह हमला किया गया। इस हमले का मुकाबला कर पार्टी नेतृत्व की रक्षा करते हुए दो बहादुर कामरेडों ने अपनी जान कुरबान कर दी। कामरेड सगुना

और कामरेड तीजू ये दोनों कामरेडों ने पराक्रम का उम्दा प्रदर्शन करते हुए अपना खून बहाया। जहां कामरेड सगुना वहीं मौके पर ही शहीद हो गईं, वहीं कामरेड तीजू को बुरी तरह घायल स्थिति में वहां से साथियों ने उठा लाया था। उन्हें बचाने की पूरी कोशिश करने के बावजूद जख्म गहरे और संगीन होने के कारण कुछ घण्टों बाद उन्होंने दम तोड़ दिया। कामरेड सगुना बालाघाट की माटी में पैदाइश थीं, वहीं कामरेड तीजू दण्डकारण्य के मानपुर डिवीजन से भर्ती होकर गए थे। कामरेड तीजू का जन्म राजनांदगांव जिले के मानपुर तहसील, गांव खुर्सेकला में एक गरीब यादव परिवार में हुआ था। उनकी मां मेहतरिन बाई और पिता मानसिंह यादव हैं। घर पर उनका नाम रामलाल था। 2006 में जब इस क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार हुआ उस समय गठित डीएकेएमएस में उन्होंने सदस्यता ली। 2007 में वह पीएलजीए में भर्ती हुए थे। उसके बाद उन्होंने अपना नाम विनोद बदला था। मदनवाड़ा एलओएस में कुछ समय तक सदस्य के रूप में काम करने के बाद उन्हें कुछ समय के लिए डीवीसी सदस्य के गार्ड के रूप में नियुक्त किया गया। 2008 में उन्हें पार्टी ने महाराष्ट्र राज्य कमेटी के अंतर्गत गोंदिया–बालाघाट डिवीजन में बदली करने का फैसला किया तो उन्होंने खुशी से मान लिया। तबसे उन्होंने अपना नाम तीजू के रूप में बदल लिया। तबादला होने के बाद उन्होंने वहां पर कुछ समय के लिए फौजी फ्रंट में काम करने के बाद उच्च कमेटी सदस्य के गार्ड के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने इस भूमिका को अच्छी तरह निभाया। आखिर में दुश्मन ने जब चारों ओर से घेरकर ताबड़तोड़ हमला किया तब कामरेड तीजू बहादुरी का परिचय देते हुए उनसे जमकर लोहा लिया। इसी दौरान बुरी तरह घायल होने पर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। साथियों ने कामरेड तीजू को अश्रुपूर्ण विदाई देते हुए अंतिम संस्कार किया। अइए, इन दोनों कामरेडों की शहादत को लाल–लाल जोहार पेश करें।

जोलाराव शहीदों को लाल सलाम!

31 मई 2012 के दिन शाम 4 बजे मुखबिर की सूचना पर छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिला, मैनपुर डिवीजन के जोलाराव गांव के नजदीक दस्ता के मुकाम को सैकड़ों की संख्या में सशस्त्र बलों ने घेरकर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। ग्रेनेडों व मोर्टार के गोलों की बरसात कर दी। इसका बहादुरी के साथ प्रतिरोध करते हुए तीन महिला कामरेड्स – समीरा, अमीला और अरुणा ने शहादत को प्राप्त किया। कामरेड समीरा गोब्रा एरिया कमेटी की सचिव थीं और अमीला व अरुणा एरिया कमेटी सदस्य के रूप में कार्यरत थीं। आइए, इन बहादुर शहीदों की प्रेरणास्पद जीवनियों पर नजर डालें।

कामरेड समीरा

कामरेड समीरा का जन्म आंध्रप्रदेश के नलगोंडा जिला, मुनुगोड मंडल के इप्पर्ती गांव के एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था। उनकी उम्र 27 साल थी। वह पिछले 12 सालों से क्रांतिकारी आन्दोलन में काम कर रही थीं। समाज में महिलाओं की जिंदगी बदलनी है तो संघर्ष ही एक मात्र रास्ता मानकर 2001 में वह जनयुद्ध में कूद पड़ीं। दुबली–पतली, सांवली, हमेशा हंसते रहने वाली समीरा की आंखों में अपने आशय के प्रति दृढ़ संकल्प की झलक मिलती थी। कोई भी काम सौम्पने से मजबूत इरादों के साथ पूरा करना उनकी आदत था। नलगोण्डा जिले में कुछ महीनों तक काम करने के बाद उन्हें आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी सचिव की सुरक्षा के लिए बने दस्ते में भेजा गया। यह दस्ता नल्लामला क्षेत्र में काम करता था। समीरा को दस्ते में आने के बाद दो–दो मोर्चों पर लड़ना पड़ा। एक मोर्चा दुश्मन के खिलाफ तो दूसरा अपनी अस्वस्थता के खिलाफ। वह अक्सर मलेरिया का शिकार हो जाया करती थीं। सुरक्षा दस्ते में बोझिल कामों की कोई कमी नहीं होती थी। फिर भी उन्होंने बीमारियों से जूझते हुए ही अपनी सभी जिम्मेदारियों को पूरा करने की कोशिश की। तमाम बुरी स्थितियों में भी उनके चेहरे पर से मुस्कान नहीं

मिटती थी। पार्टी की राजनीतिक लाइन पर अपनी समझदारी बढ़ाते हुए वह एसी सदस्य के रूप में विकसित हो गईं।

उन्हें घर पर ज्यादा पढ़ने–लिखने का मौका नहीं मिला था। फिर भी पार्टी में आकर पढ़ाई सीखी और छोटी–छोटी कविताओं के जरिए अपनी भावनओं को शब्द रूप दिया करती थीं। जरूरतों के हिसाब से डाक्टरी काम भी करना सीख लिया। 2003 में उन्होंने अपने एक सुपरिचित कामरेड को पसंद कर उनसे शादी कर ली। इन दोनों ने एक आदर्श जोड़ी के रूप में रहते हुए अपनी–अपनी जिम्मेदारियां निभाईं। 2006 में पार्टी के कामकाज के मुताबिक कुछ समय तक बाहर शहरों में रहना पड़ा। शहरी जीवन की आदी न होने के बावजूद उन्होंने वहां की परिस्थितियों में खुद को ढाल लिया। बाद में उन्हें दण्डकारण्य स्थानांतरित करते हुए पार्टी ने निर्णय लिया, जिसका कामरेड समीरा ने तहेदिल से स्वागत किया। कम्युनिस्टों के लिए सीमाएं मायने नहीं रखतीं। समीरा ने भी यही अपने व्यवहार में दिखाया।

2007 में उन्होंने अपने जीवन साथी के साथ दण्डकारण्य के पूर्व बस्तर डिवीजन में कदम रखा। वहां पर बेनूर इलाके में जनता के बीच काम शुरू किया। जल्द ही उन्होंने गोण्डी भाषा सीख ली। जनता के बीच सांगठनिक कामकाम का उन्हें कोई खास अनुभव नहीं था। फिर भी नेतृत्व का सहयोग लेते हुए तथा जनता से सीखते हुए उन्होंने खुद को एक बेहतर संगठक के रूप में विकसित किया।

2009 में दण्डकारण्य आंदोलन का विस्तार करने के लक्ष्य से मैनपुर डिवीजन में उन्हें स्थानांतरित किया गया। वहां नई राज्य कमेटी के नेतृत्व में काम करते हुए बहुत जल्द ही जनता के साथ घुलमिल गईं। छत्तीसगढ़ी भाषा को सीखकर जनता की चहेती बन गईं। कामरेड समीरा को जनता अपनी सगी बेटी की तरह प्यार करती थी। छोटे उन्हें अपनी दीदी की तरह प्यार करते थे। जनता की समस्याओं को लेकर संघर्षों का निर्माण करने में कामरेड समीरा पहलकदमी के साथ काम करने लगी थीं। 2011 में अपने गोब्रा इलाके में 28 जुलाई के मौके पर शहीद स्मारक का निर्माण करवाकर दसियों हजार जनता को गोलबंद करने में कामरेड समीरा का खासा योगदान रहा। जनता और कैडरों के साथ घुलमिलकर काम करने वाली कामरेड समीरा ने जनता की मुक्ति के लिए लड़कर जनता के बीच ही अपनी जान दी। आइए, कामरेड समीरा के उच्च आदर्शों को आत्मसात करें और उनके सपनों को साकार करें।

कामरेड अमीला

कामरेड अमीला का जन्म कांकेर जिला, दुर्गकोंदुल ब्लाक के मरकाचुव्वा गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। वह बचपन से क्रांतिकारी गीतों से बहुत प्रभावित थीं। जब वह बड़ी हुईं चेतना नाट्य मंच में शामिल हो गईं। 2006 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पीएलजीए में भर्ती हो गईं। उन्होंने कम्पनी–5 में एक साल काम किया। वहां भी उन्होंने सांस्कृतिक टीम में रहकर गीतों व नाटकों के द्वारा क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार किया।

2007 में वह मैनपुर इलाके में बदली होकर गईं। जनता को जनयुद्ध में शामिल करने के लिए नए इलाके में उन्होंने पूरे जोश के साथ काम किया। वहां भी उन्होंने सीएनएम की जिम्मेदारी लेकर गांवों में क्रांतिकारी गीतों के माध्यम से विभिन्न समस्याओं पर जनता को जनयुद्ध में संगठित किया। कामरेड अमीला जनता की लाडली बेटी थीं। मुठभेड़ के समय वह अलग होकर एक घर में जा छिपी थीं। पुलिसिया दरिंदों ने घर से पकड़कर बर्बरतापूर्ण तरीके मारपीट कर उनकी सिर में गोली मारकर हत्या कर दी।

कामरेड अरुणा

कामरेड अरुणा का जन्म नारायणपुर जिला के बेनुर एरिया कल्लेपाड़ गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। मां बचपन में ही चल बसी पिताने उन्हें पाला था। बचपन से वह अपने पिता के कामों में हाथ बंटाती थी।

जब वह बड़ी हुई क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन में काम किया। महिलाओं के ऊपर हो रहे शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ महिलाओं को संगठित कर संघर्ष में लाया। 2003 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने का मन बनाकर अपने साथ अपने

भाई और दो युवतियों को भी भर्ती होने के लिए तैयार किया और पार्टी के सामने प्रस्ताव रखा। पार्टी ने उन्हें और कुछ समय गांव में रहकर काम करने को कहा। उसके बाद दो साल तक गांव में रहकर काम किया। वर्ग समाज को मिटाये बिना महिलाओं की मुक्ति संभव नहीं सोचकर कामरेड अरुणा 2005 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गईं। भर्ती होने के दिन उनके गांव में मीटिंग हुआ। उस मीटिंग में उन्होंने आखरी दम तक जनता के लिए काम करने का संकल्प लिया। अपने प्रतिज्ञा के मुताबिक वह आखरी सांस तक जनता के लिए काम किया।

क्रांति के संदेश को देश के कोने–कोने में फैलाने के लिए और जनता को जनयुद्ध में संगठित करने के लिए खासकर महिलाओं को संगठित करने की जिम्मेदारी लेकर गरियाबंद इलाके के गोब्रा दल में एरिया कमेटी सदस्य के रूप में शामिल हो गई। कामरेड अरूणा बचपन से शारीरिक तौर पर, स्वास्थ्य रूप से कमजोर थी। लेकिन अपने कामों में उन्होंने कभी अपनी शारीरिक कमजोरी और स्वास्थ्य को बाधा बनने नहीं दिया। भर्ती होने से पहले पिता ने अरुणा से कहा था – तुम इतनी कमजोर हो पार्टी में कैसे काम कर पाओगी?' अरुणा ने पिता को समझया 'मेरे से जितना होगा उतना ही करूंगी।' और वैसे ही काम किया।

कामरेड् समीरा, अमीला और अरुणा ने जिस शोषणविहीन समाज का, जिसमें महिला की मुक्ति संभव हो, सपना देखा था, उसे सच बनाने का बीड़ा अब हमारे कंधों पर है। उसके लिए कमर कसकर उनकी महान कुरबानियों की राह पर चलना ही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सारकिनगुड़ा शहीदों को लाल सलाम!

सोनिया–मनमोहन–चिदम्बरम–प्रणब मुखर्जी–जयराम रमेश के शासक गिरोह की अगुवाई में पिछले तीन सालों से 'आपरेशन ग्रीनहंट' के नाम से लुटेरे शासक वर्गों द्वारा जनता पर अन्यायपूर्ण युद्ध जारी है। इसके तहत जून 28–29 की दरमियानी रात छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिला, ऊसूर विकासखण्ड, बासागुड़ा पुलिस थाने से थोड़ी ही दूर पर स्थित गांव सारकिनगुड़ा में अत्यंत पाशविक हमला किया गया। बीजापुर और सुकमा जिलों से एक साथ निकले सशस्त्र बलों ने वहां पर एक घोर नरसंहार को अंजाम दिया। सीआरपीएफ–कोबरा, राज्य पुलिस बलों और कोया कमाण्डो के करीब एक हजार लाइसेंसी हत्यारे इस

इलाके के गांवों पर टूट पड़े थे। फसलों और त्यौहारों के बारे में चर्चा करने के लिए गांव के बीचोबीच इकट्ठे हुए तीन गांवों के लोगों को चारों ओर से घेरकर अंधाधुध और एकतरफा ढंग से की गई गोलियों की बौछार से कई लोगों

ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। कई अन्य घायल हो गए। रात भर गांव में उत्पात मचाने वाले भाड़े के सशस्त्र बलों ने कुछ अन्य लोगों को घरों में घुसकर गोली मार दी। महिलाओं पर यौन हमलों के अलावा कई घरों में लूटपाट भी मचाई। खून से लथपथ घायल लोग जब पानी के लिए तरस रहे थे तो निर्दयी हत्यारों ने न सिर्फ उन्हें पानी देने से मना किया, बल्कि देने की कोशिश करने वाले उनके परिजनों को घर से बाहर निकलने से गोली मार देने की धमकियां दीं।

मारे जाने वालों में सारकिनगुड़ा के 6, कोत्तागुड़ा के 9 और राजुपेटा गांव के दो – कुल 17 लोग शामिल हैं। कुल 11 लोग घायल बुरी तरह हो गए। मृतकों में सात किशोर थे जिनकी उम्र 12 से 18 के बीच थी। घायलों में भी किशोर, बूढ़े और महिलाएं शामिल हैं। इस हत्याकाण्ड के अलावा उस रात सरकारी सशस्त्र बलों ने 12 महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया। बाकी लोग डर के मारे तितर–बितर हो गए। अगले दिन 29 जून की सुबह सुकमा जिला के कोंटा विकासखण्ड, जेगुरगोण्डा पुलिस थाना अंतर्गत ग्राम सिमिलिपेंटा में मड़काम लच्चाल को सरकारी सशस्त्र बलों ने पकड़कर गोली मार दी। इसी गांव में कामरेड सोड़ी दूला, जो मिलिशिया सदस्य थे, ने पुलिस बलों से वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हो गए। यही एक मात्र घटना थी जिसमें दोनों ओर से गोलियां चलीं। बाकी 18 लोग निहत्थे ग्रामीण थे जिनको पकड़कर गोली मार दी गई। इस जघन्य हत्याकाण्ड पर परदा डालने के लिए हमेशा की तरह मुठभेड़ का झूठ गढ़कर मीडिया के जरिए यह प्रचार किया गया कि ये सभी लोग उस समय मारे गए थे जब माओवादियों ने उन पर घात लगाकर हमला किया था। घटनास्थल से कुछ हथियारों और विस्फोटक समग्रियों को जब्त करने की फर्जी घोषणा भी की गई। माओवादियों की ओर से की गई गोलीबारी में सीआरपीएफ

सारकिनगुड़ा हत्याकाण्ड में मारे गए लोगों की सूची

क्र.	नाम	लिंग	उम्र	गांव	माता का नाम	पिता का नाम
1	इरपा नारायण	पु.	45	कोत्तागुड़ा	बंडी	मुत्ता
2	मड़कम नागेश	पु.	32	''	शांता	मल्ला
3	मड़कम सुरेश	पु.	27	''	''	''
5	इरपा दिनेश (गांधी)	पु.	25	''	–	–
6	मड़कम रामविलास	पु.	18	''	नागी	बुच्चा
7	मडकम दिलीप	पु.	19	''	मुत्ती	मुत्ता
8	काका सम्मैया	पु.	35	''	लच्छी	दूला
9	काका अंनिता	म.	12	''	सिन्नक्का	रामा
10	माड़वी आयतू	पु.	28	सारकिनगुड़ा	देवे	भीमा
11	कुंजाम मल्ला	पु.	22	''	मंगली	ऊरा
12	हापका मीटू	पु.	18	''	सन्नी	सुकराम
13	सारके रामन्ना	पु.	22	''	सिन्नक्का	पोट्टी
14	हापका छोटू	पु.	15	''	–	–
15	कोरसा बिच्चेम	पु.	18	''	गुट्टो	गुट्टा
16	इरपा धर्मैया	पु.	95	राजूपेटा	–	भीमा
17	इरपा सुरेश	पु.	18	''	–	चंदू
18	सोड़ी दूला	पु.	–	जोन्नागूड़ेम	–	–
19	मड़कम लच्चाल	पु.	–	सिमिलिपेंटा	–	–

के छह जवानों के घायल होने की एक और मनगढ़ंत कहानी फैलाई गई ताकि झूठ को सच में दिखाया जा सके। स्थानीय लोगों के अलावा घटनास्थल का मुआयना करने वालों का भी साफ कहना है कि वहां पर मुठभेड़ हुई ही नहीं थी, बल्कि वे क्रासफायर में, यानी अपनी ही गोलियों से घायल हुए होंगे।

अगले दिन केन्द्रीय गृह मंत्री चिदम्बरम, जो आपरेशन ग्रीनहंट के सीईओ

के रूप में काम कर रहे हैं, ने यह कहकर कि 'यह ठोस पूर्व सूचना के आधार पर किया गया सुनियोजित हमला था', अपने हत्यारे बलों की पीठ थपथपाई। इसके तुरंत बाद बासागुड़ा के आसपास के गांवों के लोगों ने सड़कों पर आकर घोषणा की कि यह एक नरसंहार था, कि सभी मृतक आम ग्रामीण थे और कि चूंकि वहां पर कोई माओवादी था ही नहीं, इसलिए मुठभेड़ होने का सवाल ही नहीं उठता। मीडिया में प्रकाशित तस्वीरें देखने पर हर कोई आसानी से समझ सकता है कि मृतक कौन हैं। लेकिन चिदम्बरम, रमनसिंह, ननकीराम, विजयकुमार, अनिल नवानी, रामनिवास, लांगकुमेर आदि नेता और अधिकारीगण ने जोकि गोबेल्स के ठेठ भारतीय अवतार हैं, इसे सही मुठभेड़ साबित करने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगाया। हर तरफ से प्रकट हो रहे विरोध और जनाक्रोश को देखते हुए प्रदेश कांग्रेस पार्टी ने इस घटना पर जांच के लिए एक कमेटी नियुक्त की। उसने यह कहकर कि 'मारे जाने वालों में माओवादियों से ज्यादा आम ग्रामीण शामिल थे' और रमन सरकार ने केन्द्र को गलत रिपोर्ट भेज दी, यह दिखलाने की कोशिश की कि इसमें केन्द्र सरकार की कोई भूमिका नहीं थी। चिदम्बरम ने इसे 'पूरी तरह पारदर्शी कार्रवाई' होने का ढोंगी दावा करते हुए कहा है कि अगर इसमें कोई निर्दोष आदमी मारा गया हो तो उसके लिए उसे खेद है। और अंततः उसने यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि चूंकि यह हमला राज्य बलों की योजना के तहत हुआ था, इसलिए इस पर जांच करवाने या न करवाने का फैसला राज्य सरकार को ही लेना है। इधर रमनसिंह सरकार ने रस्मी तौर पर उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश के द्वारा जांच का आदेश दिया जैसा कि उसने पहले कई बार किया था। देश की जनता को अच्छी तरह मालूम है कि ऐसी जांचों से कुछ होने वाला नहीं है और इससे दोषियों को सजा मिलने की उम्मीद बांधना बेमानी ही होगा।

इस पर हर तरफ से हो रही निंदा पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री रमनसिंह ने यह कहकर कि माओवादी आम जनता को ढाल की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं, अपने फासीवादी हत्याकाण्ड को जायज ठहराने की कुचेष्टा की। गृहमंत्री ननकीराम कंवर ने अपने फासीवादी चरित्र का भद्दा प्रदर्शन करते हुए कहा है कि 'माओवादियों के साथ जो भी होगा वह माओवादी ही है'। इसका मतलब है उन्हें किसी को भी मार डालने का अधिकार है। कार्पोरेट घरानों के सुर में सुर मिलाने वाले मीडिया ने वही घिसा–पिटा राग आलापना शुरू किया कि माओवादियों और सरकार के बीच हो रहे संघर्ष में निर्दोष आदिवासी पिसते जा रहे हैं। कुछ और अवसरवादी इस कहानी को प्रचारित कर रहे हैं कि चूंकि

यहां पर यह समझना मुश्किल हो जाता है कि कौन माओवादी है और कौन नहीं, इसलिए रात के अंधेरे में सरकारी सशस्त्र बलों ने गलती से इस कार्रवाई को अंजाम दिया होगा।

जैसा कि शुरू में ही बताया गया, यह नरसंहार शासक वर्गों द्वारा जनता पर जारी युद्ध का हिस्सा है। जनवरी 2009 में किए गए सिंगारम नरसंहार से शुरू कर वेच्चापाड़, सिंगनमडुगु, पालचेलमा, गोमपाड़, गुमियापाल, कोकावाड़ा, ताकिलोड़, ओंगनार आदि कई जगहों पर किए गए आदिवासियों के कत्लेआमों के सिलसिले की अटूट कड़ी ही है यह। 2005–07 के बीच चले सलवा जुडूम के दौरान भी ऐसे कई हत्याकाण्डों को अंजाम देने का इतिहास रहा है रमन सरकार का। सलवा जुडूम के दौरान की गई 500 से ज्यादा हत्याओं, 99 यौन अत्याचारों और 103 गांव–दहन के मामले सर्वोच्च अदालत में लम्बित हैं, जिससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि वास्तविक तबाही कितनी ज्यादा हो सकती है। आदिवासियों का सफाया कर, उन्हें अपने निवास स्थलों से खदेड़कर, यहां की सारी प्राकृतिक सम्पदाओं को टाटा, एस्सार, जिंदल, मित्तल, नेको, वेदांता, रियो टिंटो, डी बियर्स, बीहेचपी जैसी दलाल पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों की कार्पोरेट कम्पनियों के हवाले करने की साजिश का हिस्सा ही हैं ये हत्याकाण्ड।

इस हत्याकाण्ड के कुछ दिन पहले पुलिस अधिकारियों ने अखबारों में यह घोषणा की थी कि जून 2012 में वे एक बड़ी रणनीतिक आपरेशन शुरू करने जा रहे हैं। आदिवासियों के विकास की रट लगाते नहीं थकने वाले और फासीवादी आपरेशन ग्रीनहंट को मानवीय मुखौटा पहनाने की मूर्खतापूर्ण प्रयास करने वाले केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री जयराम रमेश ने भी में सुकमा जिले का दौरा किया था। केन्द्रीय गृह सचिव आर.के. सिंह भी चिंतलनार का दौरा कर चुका था। सीआरपीएफ के डीजी विजयकुमार ने सुकमा और चिंतलनार का दौरा किया था। जाहिर सी बात है, ये सभी इस भारी हत्याकाण्ड के सूत्रधार थे। यह एक सुनियोजित हत्याकाण्ड था जिसका फैसला चिदम्बरम और रमनसिंह ने लिया था। यह सशस्त्र बलों द्वारा गलती से या जल्दबाजी में की गई कार्रवाई कतई नहीं थी।

आम जनता को मारकर, आतंक का तांडव मचाकर क्रांतिकारी आंदोलन को खत्म करना असंभव है। ऐसे कत्लेआमों से दुश्मन जनता के दिलों को आक्रोश और नफरत से भर रहा है। जनता के दिलों की आग इस व्यवस्था को जलाकर राख कर देगी, इसे कोई नहीं रोक सकता।

कामरेड विजय (मड़काम हिड़मा)

13 जुलाई 2012 के दिन हुए एक दर्दनाक हादसे में कामरेड विजय बुरी तरह घायल हुए थे। वे एक ट्रेक्टर को चलाते हुए जब एक काम से जा रहे थे, तब ट्रेक्टर एक पेड़ से टकराया था। इससे कामरेड विजय को छाती और पेट में गहरी चोटें आईं थीं। साथियों ने उन्हें बचाने की पूरी कोशिशें कीं पर वह नहीं बच सके। तीसरे दिन रात के 8 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। कामरेड विजय करीब 27 सालों से क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़े हुए थे। शहादत के समय तक वे दण्डकारण्य में दक्षिण रीजिनल कमेटी सदस्य और दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सचिव के रूप में आन्दोलन का प्रत्यक्ष नेतृत्व कर रहे थे। उनकी दुखद मृत्यु की खबर ने पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जनताना सरकार, जनसंगठनों और दण्डकारण्य की समूची शोषित जनता को शोक में डुबो दिया। जगह–जगह उनकी स्मृति में सभाएं और रैलियां आयोजित की गईं। सभी ने आन्दोलन और पार्टी में उनकी सेवाओं और योगदान को याद कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि पेश की। आइए, शोषित अवाम के इस वीर सेनानी के प्रेरणादायी क्रांतिकारी जीवन के कुछ अहम पहलुओं पर नजर डालें और उनके उच्च आदर्शों को आत्मसात करें।

बस्तर की जनता में 'विजय' के नाम से लोकप्रिय कामरेड मड़काम हिड़मा का जन्म 1965 में दन्तेवाड़ा जिला कुवाकोण्डा ब्लाक के नीलवरम गांव में हुआ था। मध्यम वर्गीय आदिवासी मुरिया परिवार में पैदा हुए कामरेड विजय छह संतानों में चौंथी संतान थे। बैलाडीला के पहाड़ों में जब लोहा खदानें शुरू हुईं तो इस क्षेत्र के हजारों आदिवासियों को विस्थापन की मार झेलनी पड़ी थी। एक तरफ विस्थापन, दूसरी तरफ जमीन की कमी के चलते इस क्षेत्र के कई आदिवासी परिवारों ने दक्षिण का रुख किया। सैकड़ों परिवारों की तरह कामरेड विजय का परिवार भी 1975 के आसपास नीलवरम छोड़कर जेगुरगोंडा इलाके में स्थित करंगड गांव में आ बसा। वहां के दोरला समुदाय के लोगों से मिलजुलकर जंगल काटकर खेती करना शुरू किया। उस समय कामरेड विजय की उम्र सिर्फ दस साल थी।

उस समय जनता फारेस्ट वालों के जुल्म और शोषण से बुरी तरह परेशान थी। एक तरफ फारेस्ट वालों का दमन–उत्पीड़न था, तो दूसरी तरफ राजस्व विभाग वाले भी जनता को लूटने–खसोटने में पीछे नहीं थे। रिश्वतखोरी व पट्टा दिलवाने के नाम पर अवैध वसूली जोरों पर चलती थीं। आदिवासी जंगलों का छान मारकर काफी मेहनत–मशक्कत करके वनोपजों को जमाकर हाट–बाजारों में कौड़ियों के दाम बेचकर मुश्किल से अपना पेट पालते थे। उसी समय 1980 में इस इलाके में तत्कालीन भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के गुरिल्ला दलों ने कदम रखा।

1984 में इस क्षेत्र में बासागुड़ा दल के नाम से एक गुरिल्ला दल का गठन हुआ था। जो पामेड़, जेगुरगोंडा, उसूर और बासागुड़ा क्षेत्रों में जनता को संगठित करता था। यह दल करंगड़ गांव भी जाया करता था। वहां के नौजवान गुरिल्ला दल से खुशी से मिलते थे जिनमें कामरेड विजय भी एक थे। 1985–86 तक गांव–गांव में डीएकेएमएस का निर्माण होने लगा था। करंगड़ गांव में भी संगठन बना था जिसमें कामरेड विजय को कार्यकारिणी में चुन लिया गया था।

शुरू से ही कामरेड विजय संगठन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। बोड़केल और चिन्तलनार में मापतौल में गड़बड़ी करने वाले लुटेरे व्यापारियों के खिलाफ 1986 में जनसंघर्ष किया गया था जिसमें कामरेड विजय ने अपने गांव की जनता का नेतृत्व किया। तेन्दुपत्ता मजदूरी बढ़ाने के लिए ठेकेदारों के खिलाफ किए गए संघर्ष में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही। इस क्रम में 1988 के प्रारंभ में संगठन के रेंज कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया था। संगठन को जिला स्तर पर विकसित करने में भी कामरेड विजय का योगदान रहा। रेंज कमेटी सदस्य के तौर पर जेगुरगोंडा क्षेत्र के सभी गांवों में जन संगठनों का निर्माण करने, विस्तार करने और उन्हें मजबूत बनाने में कामरेड विजय का महत्वपूर्ण योगदान रहा। रेंज भर में वन भूमि को कब्जा करने, जनविरोधी मुखियाओं और क्रूर कबीलशाहों के खिलाफ चलाए गए जन संघर्षों में उनकी प्रमुख भूमिका रही। उनके अपने गांव करंगड़ में पंतुलु वड्डे द्वारा नरबलि दी जाने पर जनता को गोलबंद कर उसका पर्दाफाश करने में कामरेड विजय आगे रहे। जन अदालत लगाकर पंतुलु को सजा दे दी गई थी। इस घटना ने पूरे इलाके में नरबलि देने वाले पुजारियों को खबरदार कर दिया।

अगस्त 1988 में चिंतलनार स्थित जनविरोधी व सामंती ठाकुरों के घरों पर करीब 500 जनता ने गुरिल्ला दलों के नेतृत्व में एक जोरदार हमला किया था। वहां के ठाकुर सूदखोरी, जोर जबर्दस्ती, गुण्डागर्दी और शोषण के लिए बदनाम थे। क्षेत्र की जनता में इनके प्रति जबर्दस्त गुस्सा था। इसलिए पार्टी ने इन पर

राजनीतिक व आर्थिक रूप से हमला करने का फैसला लिया था। इस हमले में लाखों रूपये की सम्पत्ति और 16 हथियार जब्त कर लिए गए थे। इस हमले के लिए जनता को लामबंद करने में रेंज कमेटी के सदस्य के तौर पर कामरेड विजय ने अग्रणी भूमिका निभाई।

इस दौरान आंदोलन पर सरकारी दमन बढ़ गया। अक्टूबर 1988 में दुश्मन ने गांव पर हमला कर कामरेड विजय को गिरफ्तार किया था। जगदलपुर सेंट्रल जेल में 9 महीना रहकर वे जमानत पर रिहा हुए। इसके तुरंत बाद उन्होंने संगठन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद, यानी जून 1990 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर पार्टी में भर्ती हो गए। उस समय तक वह शादीशुदा थे और उनकी दो बच्चे और एक बच्ची थीं जिसमें से दो बच्चों की मौत हो गई। उन्होंने अपनी पत्नी को भी क्रांतिकारी आंदोलन में आने के लिए प्रोत्साहित किया था जिससे कुछ साल के अंतराल में वह भी पार्टी में शामिल हो गईं। पार्टी ने कामरेड विजय को कोन्टा क्षेत्र के गुरिल्ला दल में शामिल किया। इस तरह उनके गुरिल्ला जीवन की शुरूआत हुई।

अगस्त–सितम्बर 1990 में शोषक–शासक वर्गों ने बस्तर के क्रांतिकारी संघर्ष को कुचलने के लिए पहली बार जन जागरण अभियान शुरू किया था। इसका विस्तार दक्षिण और पश्चिम बस्तर के इलाकों में हुआ था। यह एक अमानवीय व भयानक अभियान था जिसमें सैकड़ों आदिवासियों को उठा ले जाकर क्रूर यातनाएं दी जाती थीं। कम से कम दस लोगों की इस अभियान के अंतर्गत निर्मम हत्या की गई थी।

इस अभियान के चरित्र व उद्देश्य को समझकर पार्टी ने जल्द ही जवाबी मुहिम छेड़ दी। इस अभियान को हराने के लिए उस समय की अविभाजित बस्तर डिवीजनल कमेटी के नेतृत्व में प्रतिरोधी कार्रवाइयों को तेज किया गया। उस दौरान नेतीकाकिलेर के पास एक एम्बुश कर एसएएफ के तीन जवानों को मौत के घाट उतारकर चार अन्य को घायल किया गया। एटेगट्टा के पास और एक एम्बुश कर सात पुलिस वालों का सफाया कर उनके हथियार छीन लिए गए थे। इसी सिलसिले में वेदरे गांव के जनविरोधी मुखियाओं को पकड़कर दण्डित किया गया था। किष्टारम एरिया से जन जागरण की सभा में जनता को ले जा रहे सीपीआई के तहसील स्तर के नेता सोड़ी अंदाल को पकड़कर सजा दी गई थी। बासागुड़ा कस्बे में सीपीआई और कांग्रेस के नेतृत्व में प्रस्तावित जन जागरण की सभाओं को जनता के सक्रिय समर्थन से विफल कर दिया गया था। सीपीआई का जिला स्तर का नेता और दन्तेवाड़ा से विधायक रहे नंदाराम सोड़ी को उसके गृहग्राम वेड़मा (पालनार) में जनता के बीच खड़ा करके गलती मनवाई गई। इस

तरह उनके तमाम बुरे मंसूबों पर पानी फेरा गया था। इन तमाम घटनाओं में कामरेड विजय की सक्रिय भागीदारी रही।

1992 में गठित कोन्टा एरिया कमेटी (एसएसी) में कामरेड विजय को सदस्य चुन लिया गया था। कोन्टा एरिया में आन्दोलन के विस्तार और विकास से कामरेड विजय की भूमिका को अलग करके नहीं देखा जा सकता। जमींदारों के खिलाफ संघर्ष करने में तथा उनसे जमीनें छीनकर गरीब व भूमिहीन आदिवासी किसानों को बांटने में उनका जबर्दस्त योगदान रहा। पेद्दा केड़वाल में बुर्दा वड्डे (मड़काम जोगा), भण्डारपदर में काया कोसाल, तोंडामर्का में माड़वी राजाल, टेट्टेमड़गु में मड़काम नंदाल, पालोड़ी में कुटाल, गगनपल्ली में भूतपूर्व विधायक सोयम जोगैया, कोन्टा का गोपाल राव और मंगलगुड़ा के जमींदारों आदि के खिलाफ संघर्ष करके उनसे दर्जनों एकड़ जमीनें छीन लेने में कोन्टा एरिया की जनता को कामरेड विजय ने सक्षम नेतृत्व प्रदान किया। सैकड़ों गरीब परिवारों को जमीनें उपलब्ध करवाकर न सिर्फ उनके जीवन में बदलाव लाया गया, बल्कि पार्टी के प्रति उनका समर्थन भी जुटाया गया। इस तरह कामरेड विजय ने जनता के दिलों में अमिट छाप छोड़ दी।

1995 में गांव स्तर पर शोषित जनता की राजसत्ता के अंगों का निर्माण ग्राम राज्य कमेटी (जीआरसी) के रूप में शुरू करने का फैसला किया गया था। इसके अंतर्गत दक्षिण बस्तर के कोन्टा एरिया में सबसे पहले ग्राम राज्य कमेटियों का निर्माण शुरू हुआ। दर्जनों गांवों में जनता ने अपनी सत्ता के संगठनों का निर्माण शुरू किया। जनता के बीच सहकारिता के आधार पर श्रम टीमों का गठन करने में कामरेड विजय आगे रहे।

जनता के जीवनस्तर को सुधारने के लिए जीआरसी की अगुवाई में दर्जनों तालाब निर्मित किए गए थे जिससे जनता की सामूहिक जरूरतें पूरी हुईं। कई खेतों को दूसरी फसल के लिए पानी उपलब्ध हुआ। जनता की माली हालत को बेहतर बनाने के लिए तालाबों में मछली पालन शुरू कर जीआरसी के नेतृत्व में उसे कई गांवों में फैलाने पर जोर दिया गया। जनता के स्वास्थ्य को सुधारने के लिए स्वास्थ्य शिविर चलाकर इलाज करवाया गया। बीमारियों की रोकथाम के लिए गांवों में साफ–सफाई को बढ़ावा दिया गया। कुल मिलाकर कहा जाए तो जीआरसी के नेतृत्व में वर्ग संघर्ष को जारी रखते हुए जन कल्याण के क्षेत्र में कई कदम उठाकर कामरेड विजय ने पार्टी को अनमोल अनुभव मुहैया कराया।

कोंटा एरिया में एसएसी/एसी सदस्य के रूप में काम करने के बाद उन्होंने एरिया कमेटी सचिव की जिम्मेदारी निभाई थी। वर्ष 2000 में पार्टी के दक्षिण बस्तर डिवीजन का अधिवेशन सम्पन्न हुआ था जिसमें डिवीजन को

दक्षिण और पश्चिम बस्तर डिवीजनों के रूप में विभाजित करने का निर्णय लिया गया। इस अधिवेशन में कामरेड विजय को दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सदस्य के तौर पर चुन लिया गया था। तबसे लेकर अपनी आखरी सांस तक डिवीजनल कमेटी में रहकर उन्होंने डिवीजन आन्दोलन का सुचारू रूप से नेतृत्व किया।

उनके विकासक्रम को देखते हुए 2009 में गठित दक्षिण रीजिनल कमेटी में उन्हें सदस्य चुन लिया गया। दिसम्बर 2011 में उन्हें दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सचिव के रूप में चुन लिया गया। इसके अलावा वह शुरू से दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगठन में भी विभिन्न जिम्मेदारियां निभाते रहे। कुछ समय के लिए उस संगठन का जोनल उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने नेतृत्व किया था।

वर्ष 2001 में जीआरसी की जगह पर आरपीसी (क्रांतिकारी जन कमेटी) के रूप में पुनरगठन की प्रक्रिया शुरू हुई। इसके तहत दक्षिण बस्तर डिवीजन में आरपीसी का व्यापक रूप से निर्माण कर क्रांतिकारी जन सरकारों का शासन कायम करने में कामरेड विजय ने जनता का सक्षम नेतृत्व किया। आरपीसी की अगुवाई में शाखा कमेटियों के जरिए विभिन्न विभागों का काम किस रूप में रहेगा, यह उन्होंने व्यावहारिक तौर पर जनता को दिखलाया। जन मिलिशिया को मजबूत किए बगैर जन सरकारों का अस्तित्व नहीं रहेगा, इस सच्चाई को गहराई से समझकर उन्होंने मिलिशिया प्लाटूनों का निर्माण कर आरपीसी के कार्यक्रमों को सुचारू रूप से संचालित किया। गांव स्तर की क्रांतिकारी जन सरकार से शुरू कर पहले एरिया स्तर पर और बाद में डिवीजन स्तर पर जन सरकार की स्थापना करने में कामरेड विजय का योगदान अविस्मरणीय रहा।

जून 2005 में केन्द्र व राज्य सरकारों की सुनियोजित साजिश के तहत बस्तरिया जनता का कट्टर दुश्मन महेन्द्र कर्मा के नेतृत्व में सलवा जुडूम के नाम से एक फासीवादी दमन अभियान शुरू किया गया। सीआरपीएफ के कई अतिरिक्त बटालियनों के अलावा विशेषकर नगा और मिजो बटालियनों को भी तैनात किया गया। क्रांतिकारी आन्दोलन का समूल उन्मूलन करने की मंशा से शुरू किए गए इस अभियान के दौरान जनता पर मध्य युगीन बर्बरता से भी बढ़कर अत्याचार, जुल्म और कत्लेआम किए गए। भैरमगढ़, गंगालूर, कुटरू और फरसेगढ़ इलाकों में सैकड़ों मकान जला दिए गए। सम्पत्ति लूटी गई। बेकसूर आदिवासियों को जंगली जानवरों की तरह शिकार कर मार डाला गया। जगह–जगह पर राहत शिविर के नाम से बंदी शिविरों का निर्माण कर जनता को हजारों की संख्या में उनमें धकेल दिया गया था।

जनवरी 2006 तक सलवा जुडूम का विस्तार दक्षिण में कोन्टा क्षेत्र तक हो चुका था। वहां के दर्जनों गांवों पर सलवा जुडूमी गुण्डों, सरगनाओं, पुलिस और अर्द्ध सैनिक बलों ने संयुक्त रूप से हमले कर सैकड़ों घरों को जलाकर राख कर दिया। बच्चे, बूढ़े और महिलाओं समेत दर्जनों लोगों को मौत की नींद सुला दी। महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार की सैकड़ों घटनाएं हुईं। दोरनापाल, कोन्टा, विंजरम, पोलमपल्ली आदि गांवों में शिविर खोलकर हजारों जनता को बंदी बनाकर रखा गया। पूरे गांव वीरान हो गए।

बर्बर सलवा जुडूम को परास्त करने के लिए पार्टी की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी ने विशेष प्रतिरोधी अभियान छेड़ दिया। कड़ा मुकाबला और करारे प्रहार के बिना जुडूम की दरिंदगी को रोकना संभव नहीं है, इस समझदारी से जुडूम के नेताओं व गुण्डों तथा पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों पर सुनियोजित कार्यनीतिक जवाबी हमले शुरू किए गए।

बैलाडीला के पहाड़ों में स्थित एनएमडीसी के बारूद डिपो पर हमला कर 20 टन बारूद व अन्य सामग्री जब्त करने की कार्रवाई के लिए दक्षिण बस्तर से जन मिलिशिया को इकट्ठा कर भेजने में कामरेड विजय की भूमिका रही। दरभागुड़ा के पास जुडूम के गुण्डों को ले जा रहे ट्रक को बारूदी सुरंग से उड़ाकर दर्जनों का सफाया करने की कार्रवाई के लिए व्यूह रचना करने वालों में कामरेड विजय शामिल थे। एर्राबोर शिविर में मौजूद एक सौ से ज्यादा एसपीओ पर हमला कर कइयों को मार गिराने की साहसिक जन कार्रवाई में कामरेड विजय की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कोन्टा के पास सिकवरगुड़ेम में सात और मणिकोन्टा में 15 एसपीओ को गिरफ्तार कर जन अदालत में पेश कर जनता के फैसले पर उन्हें सजाएं दी गईं। भाजपा सरकार को झकझोर देने वाली इन कार्रवाइयों का राजनीतिक रूप से कामरेड विजय ने नेतृत्व किया था। विंजरम स्थित सलवा जुडूमी शिविर के एसपीओ पर तीन सौ जनता को लेकर किए गए हमले का कामरेड विजय ने खुद नेतृत्व किया। सलवा जुडूम के शुरूआती दौर में नगा पुलिस बल आतंक का पर्याय बन चुके थे। उनके जुल्मों पर रोक लगाने के उद्देश्य से कोत्ताचेरूवु के पास एम्बुश की योजना बनाने में कामरेड विजय की भूमिका रही।

इस तरह दक्षिण बस्तर में सलवा जुडूम के विस्तार को रोककर उसे ध्वस्त करने में कामरेड विजय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जन मिलिशिया को सक्रिय करके व्यापक जनता को प्रतिरोधी संघर्ष में उतारकर जुडूम पर पलटवार करने में उनकी भूमिका अहम रही। जब जुडूम के अत्याचारों से डरकर जनता राहत शिविरों में जाने लगी थी ऐसे कई परिवारों को हिम्मत बताकर तथा उन्हें सुरक्षित

इलाकों में भेजकर जनता की रक्षा करने में कामरेड विजय ने अथक प्रयास किया। दुश्मन के बंदी शिविरों में गए हुए लोगों को समझा–बुझाकर और विभिन्न तरीकों से पार्टी का संदेश पहुंचाकर उन्हें फिर से गांवों में लाने के लिए उन्होंने धैर्यपूर्वक काम किया। उनकी कोशिशें रंग लाईं कई परिवार शिविर छोड़कर फिर से अपने गांवों में आ गए।

2009 में दोबारा सत्तारूढ़ हुई यूपीए सरकार ने विभिन्न राज्य सरकारों के साथ तालमेल से एक अत्यंत फासीवादी देशव्यापी दमन अभियान आपरेशन ग्रीन हंट शुरू किया। इसके तहत दक्षिण बस्तर क्षेत्र के सिंगनमड़गु, गोमपाड़, सूर्पणगुड़ा, गोल्लागुड़ा, पुजारीकांकेर, तिम्मापुरम, ताड़मेटला, मोरपल्ली आदि गांवों में पाशविक हमले कर दर्जनों की संख्या में निर्दोष आदिवासियों का कत्लेआम किया गया। बेकसूरों को मारकर उन्हें इनामी नक्सली के रूप में चित्रित करना एक आम बात बन गई। सैकड़ों और हजारों की संख्या में पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों, खासकर कोबरा कमांडो को भेजकर गांवों में जब आतंक का तांडव मचाया जा रहा था, तब पीएलजीए ने जनता के सक्रिय सहयोग से इसका माकूल जवाब दिया। वह दक्षिण बस्तर ही था जहां पर कोबरा कमांडों को मार गिराने में पीएलजीए ने पहली बार सफलता हासिल की। फौजी तौर पर दुश्मन का मुकाबला करने के साथ–साथ उसका राजनीतिक तौर पर पर्दाफाश करने में भी कामरेड विजय हमेशा आगे रहे। मार्च 2011 में चिंतलनार इलाके में कोया कमांडो और अन्य बलों ने अमानवीय हमला किया था। इस हमले का पीएलजीए ने तिम्मापुरम के पास बहादुराना ढंग से प्रतिरोध किया। इस कार्रवाई के पीछे कामरेड विजय की भूमिका रही। चिंतलनार क्षेत्र में दुश्मन द्वारा बरती गई बर्बरता का समूचे देश की जनता के सामने पर्दाफाश करने में भी वे आगे रहे। 6 अप्रैल 2010 को मुकरम–ताड़मेटला के पास पीएलजीए द्वारा किए गए ऐतिहासिक एम्बुश, जिसमें 76 सरकारी सशस्त्र बल मारे गए थे, की योजना बनाने वालों में कामरेड विजय भी एक थे। उस हमले की कामयाबी के लिए सेकण्डरी व बेस फोर्स को लामबंद करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। अपनी शहादत से चंद हफ्ते पहले सारकिनगुड़ा में सरकारी बलों द्वारा मचाए गए नरसंहार की निंदा करते हुए सच्चाइयों को जनता के सामने रखने में उनकी सक्रिय भूमिका रही।

कामरेड विजय का ढाई दशकों का क्रांतिकारी जीवन तमाम शोषित व उत्पीड़ित जनता के लिए, खासकर आदिवासियों के लिए अनुकरणीय है। वह एक सर्वहारा नेता थे जोकि अत्यंत दबे–कुचले आदिवासियों के बीच से उभरे थे। वह एक अग्रणी नेता थे जिन्होंने बस्तरिया जनता के सामने न सिर्फ वैकल्पिक जन राजसत्ता और जनोन्मुखी विकास का नमूना पेश किया था, बल्कि उसे

कार्यान्वित करके भी दिखाया।

कामरेड विजय को पेशेवर क्रांतिकारी बनकर गुरिल्ला दस्ते में शामिल होने के बाद ही पढ़ना–लिखना सीखने का मौका मिला। पार्टी की पत्रिकाएं, दस्तावेज, सर्कुलर के साथ–साथ महान मार्क्सवादी शिक्षकों की रचनाएं भी पढ़ने में सक्षम हो गए। वह हमेशा अपने साथियों और उच्च कमेटियों के साथियों से सीखते हुए अपनी राजनीतिक व सैद्धांतिक क्षमताओं को बढ़ाने की कोशिश करते थे। वह एक आदर्श कम्युनिस्ट क्रांतिकारी थे जिन पर तमाम कतारों और समूची जनता को भरोसा था। कामरेड विजय पिछले कई सालों से गंभीर अस्वस्थता का शिकार रहे। दमन की कठोर परिस्थितियों के बीच उन्हें इलाज की सुविधा भी बहुत कम ही मिल पाती थी। फिर भी वह इसकी जरा भी परवाह न करते हुए आखरी सांस तक मजबूती से डटे रहे।

कामरेड विजय की असमय मृत्यु से न सिर्फ दक्षिण बस्तर को बल्कि दण्डकारण्य आन्दोलन को बड़ा नुकसान हुआ। लेकिन कामरेड विजय के उच्च आदर्शों और जुझारू जीवन से प्रेरणा पाकर समूचे दण्डकारण्य में सैकड़ों, हजारों विजय पैदा होंगे। देश को सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के बंधनों से आजाद कर शोषणविहीन नवभारत के निर्माण की राह पर वे तब तक आगे बढ़ते रहेंगे जब तक कि अंतिम 'विजय' हासिल नहीं की जाती।

कामरेड मड़काम हंदा

दक्षिण बस्तर डिवीजन, दन्तेवाड़ा जिला के रंगाइगुड़ा गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में कामरेड मड़काम हंदा (23) का जन्म हुआ था। वह शादीशुदा थे। बचपन से कामरेड हंदा अपने माता–पिता के साथ खेतों में काम करता थे और गाय चराते थे। अगर गांव में मीटिंग की खबर मिलती तो बहुत खुश होते थे और तुरन्त आ जाते थे। क्रांतिकारियों की बातों को ध्यान से सुनते थे।

जनवरी 2006 में कामरेड हंदा पीएलजीए में भर्ती हुए थे। दोरनापाल जन मिलिशिया दल का सदस्य बनकर उन्होंने सलवा जुडूम के दौरान दोरनापाल, पोलमपल्ली, दब्बातोटा, कांकेरलंका, कोर्रापाड़ आदि गांवों में प्रतिक्रियावादी मुखियाओं के खिलाफ किए गए संघर्ष में भाग लिया। देवरपल्ली में सीआरपीएफ और पुलिस बलों पर किए गए ऐम्बुश में कामरेड हंदा ने

भाग लिया जिसमें दो जवान मारे गए थे। जून 2006 में उन्हें एलजीएस सदस्य के रूप में जिम्मेदारी दी गई। उस दौरान 16 जुलाई 2006 में एर्राबोर 'राहत' शिविर पर हमला कर 33 एसपीओ को मार गिराया गया था जिसमें जनता और पीएलजीए ने 500 की संख्या में भाग लिया था। इस कार्रवाई में कामरेड हंदा भी शामिल थे। फरवरी 2007 में पोलमपल्ली के पास किए गए ऐम्बुश में भी उनका योगदान रहा जिसमें 5 एसपीओ मारे गए और 4 घायल हुए थे। बंडा-1 ऐम्बुश में भी उनका हाथ रहा।

2008 में उन्हें केरलापाल इलाके में स्थानांतरित किया गया। वहां पर उन्हें एलओएस के डिप्यूटी कमाण्डर की जिम्मेदारी दे दी गई। बड़ेसेट्टी में किए गए ऐम्बुश में भी उन्होंने भाग लिया। फरवरी 2009 में उन्हें एसी सदस्य के रूप में पदोन्नति दी गई और एलजीएस कमाण्डर बनाया गया। 2008-09 में हुए विधानसभा और लोकसभा चुनावों के मौके पर गोगुण्डा में एक हजार पुलिस वालों को लगाने के बावजूद जनता ने एक भी वोट नहीं दिया। चुनाव बहिष्कार के लिए जनता को गोलबंद करने में कामरेड हंदा का भी योगदान रहा।

केरलापाल इलाके में मुखबिरों और अन्य जन विरोधियों को जनता की अदालत में पेश कर जनता के फैसले के मुताबिक सजाएं देने में कामरेड हंदा की भूमिका रही। जुलाई 2009 में उन्हें केरलापाल एरिया कमाण्डर-इन-चीफ की जिम्मेदारी दी गई। साथ ही, उन्हें डिवीजनल कमाण्ड के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया। जनता और कार्यकर्ताओं को कामरेड हंदा पर पूरा भरोसा था। सुकमा में कुख्यात कोया कमाण्डो बलों के दरिंदा कमाण्डर इस्माइल खान को मार गिराने की कार्रवाई में भी कामरेड हंदा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

2011 में जब वह अपनी जीवनसंगिनी से मिलने अपना गांव रंगाईगुड़ा गए थे तब मुखबिर की सूचना पर पुलिस बलों ने गांव को घेर लिया। घेरा को तोड़ने के प्रयास में कामरेड हंदा एक और साथी कामरेड पोड़ियम राजू के साथ शहीद हो गए। आइए, कामरेड हंदा और कामरेड राजू के सपनों को साकार बनाने के लिए मजबूती से कदम बढ़ाने का प्रण लें।

कामरेड पुनेम लच्छु

कामरेड लच्छु का जन्म बीजापुर जिला, भैरमगढ़ ब्लाक के ग्राम पुल्लुम में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। लच्छु चार भाई-बहनों में बड़े बेटे थे। उनकी शादी हुई थी। पत्नी 2010 में बीमारी से चल बसी। उनके दो बच्चे हैं। पुल्लुम गांव क्रांतिकारी आन्दोलन का एक मजबूत केन्द्र रहा है। लच्छु बचपन से बड़े होनहार और चंचल स्वभाव के थे।

लच्छु ने पिनकोण्डा गांव में प्राथमिक पढ़ाई पूरी की। वहां छात्र संगठन के अध्यक्ष के तौर पर काम किया। पार्टी पत्र-पत्रिकाओं को पढ़कर अपनी राजनीतिक चेतना को बढ़ाता था। बाद में 7वीं तक की पढ़ाई भैरमगढ़ में की। वहां भी पार्टी द्वारा दी गई सभी कामों को कुशलतापूर्वक करता था। 9वीं तक की पढ़ाई नेलसनार में की। 2005 में फासीवादी सलवा जुडूम शुरू होने के बाद उनकी पढ़ाई छूट गई। वह गांव में आ गया। सलवा जुडूम के पाशविक हमलों के वीभत्सकांड को अपनी आंखों से देखा और अनुभव किया। उनके गांव पर सलवा जुडूम के गुण्डों ने कई बार हमला किया। घरों को जला दिया, फसलों को नष्ट कर दिया। जो लोग उनकी पकड़ में आए उपकी पिटाई की, मार डाला, सलवा जुडूम शिविरों में घसीटकर यातनाएं दीं। बाकी जनता ने जंगलों में शरण ले ली। स्कूल छूटने के बाद क्रांतिकारी जनताना सरकार ने उन्हें जनताना सरकार में डॉक्टर की जिम्मेदारी सौंपी। क्रांतिकारी जनताना सरकार के डॉक्टर के तौर पर कामरेड लच्छु ने रात-दिन जनता की सेवा की। सलवा जुडूम की वजह से अंग्रेजी दवाइयां नहीं मिलती थीं तो जंगली जड़ी-बूटियों के बारे में जानकार लोगों से जानकारी लेकर जनता का इलाज करते थे। बाद में कामरेड लच्छु जनताना सरकार कमेटी सदस्य के तौर पर चुने गए और स्वास्थ्य विभाग की जिम्मेदारी ली। स्वास्थ्य विभाग के इंचार्ज के तौर पर कामरेड लच्छू ने सलवा जुडूम की कठिन परिस्थितियों में भी जब जनता खाना-पानी के लिए तरस रही थी, जंगल में कंद-मूल, फल जो भी मिला वो खाकर, जहां-तहां का पानी पीकर, जंगलों में जहां रह रही थी वहां की साफ-सफाई नहीं होने से कई बीमारियों की शिकार थी। खासकर महिलाएं, बच्चे क्योंकि पहले से ही गरीबी की वजह से कुपोषित हैं। ऊपर से ये परिस्थितियां। दूसरी ओर दवाइयों का अभाव, ऐसी परिस्थिति में जितना उनसे हो सका हिम्मत के साथ जनता को बचाने की कोशिश की। बीमारियों से बचने के लिए सावधानियां बरतने की सलाह देते थे।

इसके साथ ही सलवा जुडूम गुण्डों और सशस्त्र बलों के हमलों से जनता की रक्षा के लिए प्रतिरोधी कार्रवाइयों में भी वह हिम्मत के साथ भाग लेते थे। कामरेड लच्छु ने ऐसे 10-15 एम्बुशों में भाग लेकर हिम्मत के साथ लड़ा था।

2006 में कुछ समय के लिए चेतना नाट्य मंच संगठन के अध्यक्ष के तौर पर भी उन्होंने काम किया। जन समस्याओं, सलवा जुडूम, क्रांति के ऊपर बने गीतों को गाकर विभिन्न समस्याओं पर नाटक तैयार करके कला के माध्यम से जनता में प्रचार

किया। जनता को क्रांति के महत्व के बारे में बताया। सलवा जुडूम को हराने के लिए, जल-जंगल-जमीन पर अधिकार के लिए, लुटेरी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए जनता को संगठित किया। 2009 में उन्हें सैन्य खुफिया विभाग की जिम्मेदारी दी गई। इस जिम्मेदारी को भी कामरेड लच्छु ने पूरी तन्मयता से करने की कोशिश की। हमेशा दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखकर, आसपास का समाचार इकट्ठा कर हमले की स्थिति में जनता को सूचित कर सर्तक करते और पार्टी को समाचार देते थे। पार्टी व पीएलजीए की जरूरत के लिए रात हो या दिन कितनी भी तकलीफ क्यों न हो, या जोखिमभरा काम हो हिम्मत के साथ जाकर पूरा करके आते थे। ऐसे ही एक काम से कामरेड लच्छु और कमलू जा रहे थे। पुलिस ने उन्हें रास्ते में गिरफ्तार कर लिया और दो घण्टे तक क्रूर यातनाएं दीं। पुलिस की क्रूर यातनाओं को सह लिया, परन्तु अपनी मुंह से पार्टी की एक भी राज नहीं खोली। आखिर में उन्हें पोदुम और पुल्लुम गांवों के बीच में पेड़ से बांधकर गोली मारकर हत्या कर दी।

कामरेड लच्छु एक सच्चे कम्युनिस्ट थे जिसने अपनी जान दे दी लेकिन दुश्मन के आगे कभी सर नहीं झुकाया। सदा जनता के लिए काम किया। वह एक बहु प्रतिभाशाली कामरेड थे जिसने डॉक्टर, सैनिक, सांस्कृतिक योध्दा, खुफिया कर्मी आदि जिम्मेदारियों को बड़ी लगन और कुशलता के साथ निर्वाह किया।

कामरेड सुखराम कौडो

उत्तर बस्तर डिवीजन के रावघाट एरिया के कोसरोंडा गांव के मध्यम किसान थे कामरेड सुखराम कौडो। उनकी उम्र लगभग 50 साल थी। उनके छह बच्चे हैं। पार्टी जब इस इलाके में आई तब से कामरेड सुखराम पार्टी परिचित थे। पार्टी को वे प्यार से देखते, गांव में दस्ता जाने पर आते और प्यार से बातें करते थे। गांव के डीएकेएमएस संगठन में सदस्य के तौर पर काम रहे थे। गांव की जनता के साथ भी उनका व्यवहार मिलनसार था। संगठन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। रावघाट खदान के विरोध में किए जा रहे आन्दोलन में कामरेड सुखराम भाग लेते रहे। रावघाट लौह खदान को शुरू करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारें हाथ धोकर पीछे पड़ी हैं। जनता के विरोध के बावजूद बड़ी संख्या में सशस्त्र बलों को तैनात कर, नए-नए थानों, कैम्पों को खोलकर जनता पर दमन व हत्याकाण्डों को तेज कर रही हैं। ऐसे एक दिन आध ी रात को सीआरपी बलों ने कामरेड सुखराम को उनके घर से उठाकर जंगल में ले जाकर गोली मार हत्या कर दी और मुठभेड़ की घोषणा की।

कामरेड सुखराम का अपराध इतना ही था कि उन्होंने अपने जल-जंगल-जमीन को बचाने का बीड़ा उठाया। विकास का ढिंढ़ोरा पीटने वाली शोषक सरकारों की नजरों

में ऐसे ही लोग 'आंतरिक सुरक्षा के सबसे बड़े खतरे' हैं। इसीलिए उन्होंने सुखराम की निर्मम हत्या की। शोषक-लुटेरे सोच रहे होंगे कि सुखराम जैसों का खून बहाकर वे रावघाट, चारगांव आदि पहाड़ों में कार्पोरेट लूटखसोट का रास्ता साफ कर सकेंगे। लेकिन यह खून व्यर्थ नहीं जाएगा, वह सैलाब बनकर उनकी व्यवस्था को डुबो देगा। आइए, कामरेड सुखराम के अधूरे मकसद को पूरा करने तक विश्राम नहीं करने की कसम खाएं।

कामरेड सुन्दाय

गड़चिरोली जिला के कोरची तहसील टिप्रागढ़ एरिया के भीमनकोज्जी गांव के मध्यम किसान परिवार में कामरेड सुन्दाय का जन्म हुआ था। क्योंकि उनका गांव पहले से क्रांतिकारी आन्दोलन का गढ़ रहा है इसलिए कामरेड सुन्दाय पर भी इसका प्रभाव बचपन से ही रहा। बड़ी होने के बाद वह केएएमएस में काम करने लगी।

बाद में वह गांव की केएएमएस कमेटी में चुनी गई। उसके बाद उनके माता-पिता ने उनकी शादी गांव के ही नेताम परिवार में कर दी। शादी के बाद भी संगठन के कामकाज में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी। महिलाओं की समस्याओं को लेकर, पितृसत्ता के विरुद्ध, गांव के मुखियाओं के दबावों के विरुद्ध आवाज उठाती थी। सभी आन्दोलनों में आगे रहकर महिलाओं का नेतृत्व करती थी।

1991-92 के दमन अभियानों के दौरान भी कामरेड सुन्दाय पीछे नहीं हटी। आन्दोलन के पक्ष में दृढ़ता के साथ खड़ी रही। इसी दौरान गांव से आधा किलो मीटर की दूरी पर क्रांतिकारी गुरिल्लों ने एक एम्बुश किया था। जिसमें 7 पुलिस वालों को मारकर हथियार छीन लिए गए थे। उस हमले के बाद पुलिस बलों का कहर भीमनकोज्जी गांव पर बरपा था। बड़ी संख्या में पुलिस बलों ने गांव के ऊपर हमला करके जनता की बुरी तरह से पिटाई की। और गांव के सारे पुरुषों को पकड़कर जेल में डाल दिया। गांव में सिर्फ बच्चे और महिलाएं ही बचीं। खेतों और घर के काम सब महिलाओं को ही संभालने पड़ते थे। सिर्फ गांव वालों को जेल में डालने तक ही पुलिस की कार्रवाई सीमित नहीं हुई। रोज रात चार बजे आकर गांव को घेर लेते थे और गांव से किसी को बाहर जाने नहीं देते थे। ऐसे में भी कामरेड सुन्दाय ने हिम्मत नहीं हारी। गांव की महिलाओं को संगठित कर पुलिस के खिलाफ संघर्ष किया।

कामरेड सुन्दाय 30 वर्ष की उम्र में अपने पीछे चार बच्चों को छोड़कर मलेरिया से शहीद हो गई। सुन्दाय को भीमनकोज्जी और उसके आसपास के गांवों की जनता हमेशा याद करती है।

कामरेड बत्ती

उत्तर गड़चिरोली के कोरची तहसील, टिप्रागढ़ एरिया के नारकसा गांव के एक मध्यम किसान परिवार में कामरेड बत्ती का जन्म हुआ था। कामरेड बत्ती बचपन से क्रांतिकारी गतिविधियों के बीच पली बढ़ी थी। जैसे-जैसे बड़ी होती गई क्रांतिकारी आन्दोलन के बारे में समझने लगी। और बड़ी होने के बाद क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन में काम करने लगी। जल्द ही उनके माता-पिता ने उनकी शादी बोटेझरी गांव के पुड़ो परिवार में कर दी। शादी के बाद भी वह संगठन के कामकाज में सक्रिय रूप से भाग लेती रही। वहां कामरेड बत्ती केएएमएस की कमेटी सदस्य के रूप में चुनी गई। कमेटी में रहते हुए कामरेड बत्ती ने गांव की महिलाओं को संगठित किया। उन्हें विभिन्न संघर्षों में शामिल किया। कई राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याओं पर जैसे सामन्ती पितृसत्ता के खिलाफ, अंधविश्वास, तेन्दुपत्ता आन्दोलन, पुलिस दमन आदि मुद्दों पर संघर्ष किया। दो बच्चों की मां बनी, तब भी वह पीछे नहीं हटी। 1991-92 में सरकार ने क्रांतिकारी आन्दोलन को दबाने के लिए भारी दमन अभियान छेड़ दिया था। संगठन सदस्यों को गिरफ्तार करना, लापता करना, फर्जी मुठभेड़ों में हत्या करना, झूठे केसों में फंसाकर जेल भेजना, टाडा जैसे काले कानूनों के तहत बरसों जेल में सड़ने की कड़ी सजाएं देना आदि करके जनता को संघर्ष करने से रोकने की नाकाम कोशिश की गई थी। ऐसे समय में भी कामरेड बत्ती हिम्मत के साथ पार्टी और जनता के पक्ष में खड़ी रही। इस लुटेरी व्यवस्था को खत्म किए बिना महिला मुक्ति संभव नहीं है, इस बात को अच्छी तरह समझ चुकी थी कामरेड बत्ती। इसलिए आखरी दम तक उन्होंने क्रांति के लिए काम किया।

आज देश में लाखों लोग चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में बिना इलाज के छोटी-छोटी बीमारियों से बेमौत मारे जा रहे हैं। ऐसे ही कामरेड बत्ती भी टीबी बीमार की शिकार बनी। कामरेड बत्ती ने जनता और क्रांति के हितों को सर्वोपरि मानते हुए जिस प्रकार काम किया वह हमें हमेशा प्रेरित करता रहेगा... इस बीमारू व्यवस्था को जड़ से बदलने का कर्तव्यबोध करता रहेगा।

कामरेड शिरवंती

गड़चिरोली जिला, धानोरा तहसील, टिप्रागढ़ इलाके के कोसमी गांव में एक आदिवासी मध्यम किसान धुर्वा परिवार में कामरेड शिरवंती जन्मी थीं। उनकी उम्र 30 साल थी। एक दिन रात घर में अकेली सोई हुई थी तब उनके साथ गुण्डा गिरोह ने

सामूहिक बलात्कार कर उनकी हत्या कर दी।

कामरेड शिरवंती बचपन से क्रांतिकारी आन्दोलन से बहुत प्रभावित थीं। कोसमी शुरू से क्रांतिकारी गांव है। जब गांव में दस्ता आता था तब वहां आना-जाना करती थीं। जैसे ही थोड़ी बड़ी हुई माता-पिता ने उनकी शादी का रिश्ता पक्का किया। शिरवंती ने माता-पिता की बात मान ली और गांव में ही नेताम परिवार में शादी कर ली। शादी के बाद वह कुछ समय के तक महिला मण्डल के सदस्य के रूप में काम करती रहीं। जब उस गांव में क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन बना तब उस संगठन में सदस्य के रूप में शामिल होकर काम करने लगीं। संगठन के कामकाज में वह कभी पीछे नहीं रहीं। पार्टी व संगठन उन्हें जो भी काम सौंपते मन लगाकर पूरा करती थीं। संगठन में उनके सक्रिय कामकाज को देखते हुए बाद में उन्हें केएएमएस कमेटी में चुन लिया गया। गांव में महिलाओं को महिला संगठन में संगठित करती और संगठन की मीटिंग करती, आमसभाओं में बड़ी संख्या में महिलाओं को लेकर जाती थीं। गांव में महिलाओं की समस्याओं को हल करने में आगे रहती थीं। शराब के खिलाफ आन्दोलन, गांव में रीति-रिवाजों के नाम पर महिलाओं को वंचित व अपमानित करने वाले नियमों को मनवाने के लिए बुजुर्गों द्वारा किए जा रहे दबावों के खिलाफ, अंधविश्वासों के खिलाफ, माहवारी के समय महिलाओं को अलग झोपड़ी में रखने के रिवाज के खिलाफ - ऐसी कई समस्याओं को लेकर महिलाओं को संगठित कर संघर्ष करने में वह आगे थीं। बाद में कामरेड शिरवंती पंचायत स्तर की केएएमएस कमेटी अध्यक्ष चुनी गई।

22 अप्रैल 2008 को सी-60 कमांडो बलों ने 500 की संख्या में रात को आकर गांव को चारों ओर से घेर लिया। सबेरे घरों के ऊपर हमला करना शुरू किया। गांव के बच्चों और बूढ़ों तक को नहीं बक्शा। सबकी बुरी तरह पिटाई की गई। उसी हमले में कामरेड मैनाबाई की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। उस हमले में पुलिस बलों के साथ घण्टों तक गांव की सभी महिलाएं हिम्मत के भिड़ गई थीं। उसमें कामरेड शिरवंती की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। मैनाबाई की हत्या के बाद भी कामरेड शिरवंती ने हिम्मत नहीं हारी, मोर्चे पर डटी रहीं। इसलिए कामरेड शिरवंती के ऊपर जालिमों की नजर थी। कायरतापूर्ण तरीके से उसका सामूहिक बलात्कार कर हत्या करके शराब के शीशों को लाश के पास रखकर चले गए। क्योंकि कामरेड शिरवंती को शराब से बहुत नफरत थी। शराब पीने वालों से चिढ़ती थीं। शराब के खिलाफ उन्होंने बहुत आन्दोलन भी किया था।

कामरेड शिरवंती जनता की एक ईमानदार सेवक और सुदृढ़ नेता थीं। उनकी हत्या कर दुश्मन ने सोचा होगा कि इससे महिलाओं की संघर्षशील चेतना खत्म हो जाएगा।

लेकिन कामरेड शिरवंती सिर्फ एक व्यक्ति नहीं थीं, वह महिलाओं की सामूहिक व संगठित शक्ति का प्रतीक थीं। वह भले ही भौतिक रूप से अब नहीं है, नारी मुक्ति के लिए उठने वाली हर मुट्ठी में वह ताकत के रूप में समा जाएगी। आइए, कामरेड शिरवंती के कातिलों को जन अदालत में सजा देने का ऐलान करें।

कामरेड दसरत कुंजाम

गड़चिरोली जिला के कोरची तहसील टिप्रागढ़ एरिया के अरमुलकसा गांव के गरीब किसान परिवार में कामरेड दसरत का जन्म हुआ था। मां चुकारो कुजांम के 10 बेटों में कामरेड दसरत दूसरा बेटा था। मां-बाप ने उनका नाम चमरू रखा था। कामरेड चमरू अपने गांव में चौथी तक की पढ़ाई की थी। घर की माली हालत खराब होने की वजह से उन्हें पढ़ाई छोड़ना पड़ा और अपने पिता के साथ खेतों में काम करना पड़ता था। थोड़े बड़े होते ही उनके मामा की लड़की से उनकी शादी हो गई। शादी के बाद चमरू कोसमी गांव में रहने लगा। वहां मेहनत मजदूरी करके अपनी जिन्दगी गुजारने लगा।

उस समय इस इलाके में जंगलात विभाग, पेपरमिल ठेकेदारों के शोषण और जुल्मों से जनता त्रस्त थी। 1989 में पार्टी ने टिप्रागढ़ एरिया में कदम रखा। पार्टी के आने से जनता को सहारा मिला जनता बहुत खुश हुई। पार्टी के नेतृत्व में सरकार और जंगलात विभाग, पेपरमिल ठेकेदारों के खिलाफ आन्दोलन छेड़ दिया गया। गांव-गांव में किसान-मजदूर संगठनों का गठन होने लगा। कोसमी गांव में भी जब संगठन का गठन हुआ तब कामरेड चमरू भी संगठन में शामिल हो गए और संगठन में सक्रिय रूप से काम करने लगे। 1990-92 में सरकार ने क्रांतिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए सशस्त्र बलों को उतारकर भारी दमन अभियान छेड़ दिया था। उस समय कामरेड चमरू को भी जेल जाना पड़ा था। जेल से छूटकर आने के बाद फिर संगठन के कार्यो में सक्रिय रूप से काम करने लगे। भयानक दमन के बीच भी हिम्मत के साथ पार्टी के पक्ष में खड़े रहे और जनता को संगठित किया। अपने गांव और एरिया में संगठन को मजबूत करने की कोशिश की। 2003 में शराब के विरोध में हजारों की संख्या में जनता ने छत्तीसगढ़ के मानपुर में बड़ी रैली निकाली थी और शराब भट्टियों के ऊपर हमले करके तोड़-फोड़ किया था। इसमें कामरेड चमरू की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

2007 में जब क्रांतिकारी जनताना सरकार का गठन हुआ तो कामरेड चमरू भी कमेटी में चुने गए। न्याय विभाग के अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाली। न्याय विभाग में रहकर कई छोटी, बड़ी व जटिल समस्याओं को वर्ग दिशा-जन दिशा के आधार पर सुलझाने की कोशिश की। इस लुटेरी न्याय व्यवस्था में गरीबों को कभी न्याय नहीं

मिला। जो आर्थिक व राजनीतिक तौर पर सक्षम हैं उन्हीं को न्याय मिलता है। देश में करोड़ों लोग सालों साल कोर्ट-कचहरियों के चक्कर काटकर, पूरा घरबार बर्बाद करने पर भी न्याय नहीं मिलता। ऐसी लुटेरी व्यवस्था को ध्वस्त कर जनता की जनवादी सत्ता जहां सबको न्याय मिले, का निर्माण भ्रूण रूप में दण्डकारण्य में हो रहा है। उसका हिस्सा बने कामरेड चमरू ने जनता की कई समस्याओं को जनवादी तरीके से सुलझाने की कोशिश की। ऐसी ही एक जन अदालत कर वहां समस्याओं को सुलझाकर आए कामरेड चमरू को अचानक तेज बुखार हुआ और 4-5 घण्टे के अन्दर ही जान चली गई। कामरेड चमरू ने सदियों से चली आ रही शोषण, उत्पीड़न व अपमान भरी जिन्दगी को बदलकर शोषण व उत्पीड़न से मुक्त समतामूलक समाज का सपना देखा था। उसका भ्रूण रूप क्रांतिकारी जनताना सरकार में भागीदारी कर अपनी सेवाएं दीं। आइये, उनके सपनों को साकार करने का संकल्प लें।

कामरेड शंकर कोवाची

कामरेड शंकर का जन्म एटापल्ली तहसील के गट्टा एरिया के मुरेवड़ा गांव में हुआ था। वह बचपन से क्रांतिकारी आन्दोलन के बीच बढ़ा था। जब भी गांव में दस्ता जाता खाना-पानी लेकर गांव वालों के साथ आ जाता था। और अपने साथ गांव के बच्चों को भी लेकर आता था। क्रांतिकारी गानों और बातों को ध्यान से सुनता था। जब तक वहां से दस्ता नहीं जाता वह वहां से नहीं हिलता था।

2005 में वह मिलिशिया में भर्ती हो गया। मिलिशिया में बड़े उत्साह के साथ काम करता था। गांव में दस्ता आने पर उसकी सुरक्षा के लिए आसपास के गांवों में पेट्रोलिंग करना, संतरी करना, सामान ढोना आदि कामों में आगे रहता था। मिलिशिया के साथ प्रचार व प्रतिरोधी कार्रवाइयों में भाग लेता था।

जनता अपने जल-जंगल-जमीनों के लिए 30 सालों से माओवादी पार्टी के नेतृत्व में संघर्ष कर रही है। संघर्ष करके कई उपलब्धियां भी हासिल की हैं। लेकिन लुटेरे शासक वर्ग इन उपलब्धियों से जनता को वंचित कर यहां के जल-जंगल-जमीन पर कार्पोरेट घरानों का कब्जा कायम करने के लिए बड़े पैमाने पर दमन अभियान चला रहे हैं। 2009 में बेशेवड़ा (दमकोड़मेट्टा) खदान को शुरू करने के लिए जनता के

विरोध के बावजूद मशीनों को लाकर काम शुरू किया गया था। तब बड़ी संख्या में मिलिशिया ने मशीनों को तोड़-फोड़कर काम बंद करवाया। इन कार्रवाइयों में भी कामरेड शंकर ने उत्साह के साथ भाग लिया। 2011 में जब दोबारा शुरू करने की कोशिश की गई जनता और मिलिशिया ने फिर तोड़-फोड़कर उनको वहां से भगाया। इसमें भी कामरेड शंकर ने भाग लिया।

इसी दौरान कामरेड शंकर अपने खेतों की रखवाली के लिए खेत में सोया था कि अचानक बीमार होकर शहीद हो गए। आइए, कामरेड शंकर को भूमकाल जोहार अर्पित करें।

कामरेड कोरसा लखमू

कामरेड कोरसा लखमू (40) का जन्म बीजापुर जिला रेगड़गट्टा गांव के गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। 2005 के सलवा जुडूम दमन अभियान के दौरान उनके हमलों से डरकर जनता इधर–उधर भागने लगी। तब भी कामरेड लखमू अपने गांव, जमीन को छोड़कर नहीं गया। यहीं रहकर सलवा जुडूम का प्रतिरोध किया। बाद में सलवा जुडूम का मुकाबला करने के लिए जब कोया भूमकाल मिलिशिया का गठन हुआ तब उसमें कामरेड लखमू भी शामिल हो गया। सलवा जुडूम का प्रतिरोध करते हुए खेती कर अपना जीवन यापन कर रहे थे। सलवा जुडूम के डर से इधर–उधर भागने वाली जनता को गांव में वापस लाने में इनकी अहम भूमिका रही।

इनका गांव चेरपाल कैम्प से महज 2 किलोमीटर की दूरी पर है। 2005 से उन्हें आत्मसमर्पण करवाने के लिए पुलिस और सलवा जुडूम गुण्डे हाथ धोकर पीछे पड़े थे। लेकिन लखमू कभी उनके हाथ नहीं आए। जंगल में छुप–छुपकर काम करते रहे। लेकिन एक बार वह पुलिस के एम्बुश में फंस गए और पुलिस ने उन पर अंधाधुंध फायरिंग कर उनकी हत्या कर दी। जनता ने आदिवासी परम्परा के मुताबिक उनका अंतिम संस्कार किया।

कामरेड दानू

कामरेड दानू का जन्म भामरागढ़ तहसील के मुरुमबुशी गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। इस गांव के सभी परिवार बहुत ही गरीबी में अपनी जिन्दगी गुजार रहे हैं। वर्षा पर आधारित खेती होती है यहां। सिंचाई और अन्य खेती की सुविधाएं और साधन भी नहीं हैं। जंगल पर निर्भर होकर जिन्दगी चलती है। इसलिए

पौष्टिक आहार की कमी से कुपोषण व खून कमी होने से कई लोग छोटी-छोटी बीमारियों का शिकार होकर बेमौत मारे जा रहे हैं। आसपास में स्वास्थ्य सुविधाएं भी नहीं हैं। सरकार आदिवासियों के विकास का ढिंढोरा पीटते नहीं थकती। विकास के नाम लाखों-करोंडों रूपए डकारे जा रहे हैं। यह है उसके विकास का खोखलापन का एक उदाहरण। कामरेड दानु भी ऐसे ही लोगों में शामिल था जो उल्टी-दस्त से शहीद हो गया।

कामरेड दानु बचपन से क्रांतिकारी गतिविधियों के बीच पला-बढ़ा था। बाल संगठन में काम करते हुए बड़े होने के बाद डीएकेएमएस में शामिल हो गया। गांव में जब भी दस्ता जाता उनके पास जो भी रूखा-सुखा होता वो लाकर देता था। गांव में ग्राम रक्षक दल के सदस्य के तौर पर भी काम किया। बाद में वे पंचायत स्तर की डीएकेएमएस कमेटी के सदस्य के तौर पर चुने गए। संगठन के हर काम में कामरेड दानु पहलकदमी के साथ आगे रहकर नेतृत्व करते थे। उनको दी गई जिम्मेदारी को निभाया करते थे। संगठन द्वारा लिए गए फैसलों को अमल करते थे। जो भी प्रचार प्रोग्राम लेने पर कामरेड दानु एक टीम लेकर पोस्टर, पर्चा डालने के लिए जाते थे। इस तरह उसने जनता के दिलों में जगह बना ली। उनकी मौत से एक उभरते हुए जन नेता को खो दिया गया। आइए, कामरेड दानू के सपनों को सच बनाएं।

कामरेड बत्ती दुग्गा

कामरेड बत्ती का जन्म उत्तर बस्तर डिवीजन के घुमर गांव के एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था। वह अपने माता-पिता की पांच संतानों में दूसरी संतान थीं। माता-पिता ने उनका नाम श्यामा रखा था। श्यामा ने अपने गांव में 7वीं तक की पढ़ाई की थी। बचपन से कामरेड श्यामा क्रांतिकारी आन्दोलन से प्रभावित थीं।

2005 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पीएलजीए में भर्ती हो गईं। कामरेड बत्ती के नाम से जनता और पीएलजीए में लोकप्रिय हो गईं। उन्होंने कुछ समय एलजीएस में सदस्य के तौर पर काम किया। कामरेड बत्ती राजनीतिक और मिलिटरी विषयों को बहुत ही दिलचस्पी के साथ सीखने की कोशिश करती थीं। सभी कामों में पहलकदमी के साथ भाग लेती थीं। उन्हें जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाती मन लगाकर

करती थीं। अपने साथियों को प्राथमिक शिक्षा सिखाने के लिए शिक्षक बन जाती थीं। और पार्टी द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं को खुद नियमित पढ़ती और अपने साथियों को पढ़कर सुनाती थीं। बाद में उन्हें 2007 में गठित कम्पनी-5 में सदस्य के तौर पर बदला गया। तबसे कामरेड बत्ती ने कम्पनी-5 में सदस्य के तौर पर कई छोटी-बड़ी फौजी कार्रवाइयों में भाग लिया।

2009 में कामरेड बत्ती किसी काम से सिविल में पड़गाल गांव के एक घर में रुकी थीं। मुखबिर की सूचना पर बीएसएफ और एसपीओ गुण्डों ने घर को घेर कर उन्हें पकड़ लिया और सामूहिक बलात्कार करके निर्मम हत्या कर दी। कामरेड बत्ती ने उनकी यातनाओं को सहकर भी पार्टी की गोपनीयता की रक्षा की। आइए, इस युवा छापामार की कुरबानी को ऊंचा उठाकर उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लें।

कामरेड लच्छन धुर्वा

उत्तर बस्तर डिवीजन के रावघाट एरिया के कोसरोण्डा गांव के मध्यम किसान परिवार में लच्छन का जन्म हुआ था। उनकी उम्र 25 साल थी। उन्होंने 7वीं तक पढ़ाई की थी। बाद में माता-पिता ने पढ़ाई छुड़वाकर शादी करा दी और परिवार का भार बेटे को सौंप दिया। उनके तीन बच्चे हैं।

कामरेड लच्छन 2003 में डीएकेएमएस संगठन में शामिल हो गए। संगठन में रहकर कई जन संघर्षों में भाग लिया। जनता को आन्दोलन के लिए संगठित किया। खासकर रावघाट खदान के खिलाफ जनता को संगठित कर कई आन्दोलन किए। इसलिए पुलिस ने 2007 में उन्हें गिरफ्तार कर झूठे केसों फंसाकर जेल भेज दिया। 9 फरवरी 2009 को जेल से रिहा होकर घर आये थे। 22 सितम्बर 2009 को पुलिस ने उनको घर से उठा ले गई और जंगल में गोली मारकर हत्या कर दी। कामरेड लच्छन को मारकर दुश्मन ने अपनी कायरता का नंगा प्रदर्शन किया। लच्छन की हत्या का जनता ने पुरजोर विरोध किया और उनके सपनों को साकार बनाने की शपथ ली।

कामरेड डोलू गावडे

35 वर्षीय कामरेड डोलू गावडे गढ़चिरोली जिले के कसनसूर रेंज मुसुरमगुड़ा गांव के निवासी थे। वह मध्यम वर्ग के किसानी परिवार में पैदा हुए थे। हालांकि गढ़चिरोली जिले में क्रांतिकारी आंदोलन का तीन दशकों का इतिहास है, लेकिन यह गांव मुसुरमगुड़ा 1995 तक संगठित नहीं हो पाया था। जब आसपास के गांव

आंदोलन में शामिल होने लगे तो उससे उत्साहित होकर कामरेड डोलू ने अपने गांव के नौजवानों को इकट्ठा कर जन संगठनों की नींव रखी। आंदोलन में उनकी सक्रियता को देखते हुए पार्टी ने उन्हें 2005 में पार्टी सदस्यता दी और 2006 के आखिर में गठित ग्राम पार्टी कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी दी। 2007 में इस गांव में क्रांतिकारी जन कमेटी (आर.पी.सी.) यानी क्रांतिकारी जनताना सरकार का गठन हुआ। जनता का अपार विश्वास हासिल कर चुके कामरेड डोलू को जनता ने अपनी आरपीसी के अध्यक्ष के रूप में चुन लिया। इस दौरान इस इलाके में पुलिसिया दमन भी तेज होता रहा। संगठन से जुड़े कई कार्यकर्ताओं को पुलिस ने पकड़कर जेल में डाल दिया। इस दौरान कामरेड डोलू ने दुश्मन की आंखों में धूल झोंकते हुए अपनी गतिविधियों को जारी रखा। 2009 में पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। 3–4 महीनों के बाद वह जेल से रिहा हुए। नवम्बर 2009 में वह मजदूरी के काम पर गए थे जहां ट्रैक्टर पलट जाने से उनकी दुखद मृत्यु हुई। एक पिछड़े गांव को क्रांतिकारी आंदोलन के मजबूत गढ़ में बदलने में कामरेड डोलू की भूमिका काफी महत्वपूर्ण थी। कामरेड डोलू की मृत्यु से इस इलाके की जनता ने एक कर्मठ व विश्वसनीय नेता खो दिया। आइए, कामरेड डोलू के दृढ़ संकल्प को आत्मसात करें और शहीदों के अरमानों को पूरा करने की राह पर मजबूती से कदम बढ़ाएं।

कामरेड एमला सुक्कू

पश्चिम बस्तर डिवीजन, गंगालूर एरिया के आवनार गांव में कामरेड एमला सुक्कू (45) का जन्म हुआ था। इनकी कुल पांच संतानें थीं। यह कामरेड भूमकाल मिलिशिया में काम कर रहे थे। घर का कामकाज सम्भालते हुए ही संतरी आदि काम करते थे। 4 फरवरी 2007 को जब कामरेड सुक्कू महुआ बीन रहे थे तब सलवा जुडूम के गुण्डों ने पकड़ लिया। उन्हें बेहद क्रूरता से यातनाएं देकर ध ाारदार हथियारों से काटकर फेंक दिया। गौरतलब है कि कामरेड सुक्कू का एक बेटा कामरेड जिला उस समय पीएलजीए में भर्ती होकर काम कर रहा था। उसके बाद एक अन्य घटना में कामरेड जिला भी शहीद हो गए। इस तरह इस परिवार में बाप–बेटे दोनों ने दुश्मन के हाथों जान गंवाकर शहीद बने हैं। आइए, इनकी कुरबानी को और आदर्श को बुलंद करें।

कामरेड एमला पाण्डे

पश्चिम बस्तर डिवीजन, भैरमगढ़ एरिया, पुल्लुम गांव में कामरेड पाण्डे

पली–बढ़ी थीं। बचपन से ही पाण्डे क्रांतिकारी राजनीति से प्रभावित थीं। गांव में गुरिल्ला दस्ता आने से मिलने जरूर जाती थीं और उनके लिए भोजन–पानी की व्यवस्था करती थीं। बाद में वह केएएमएस सदस्य बन गईं। बीमारी के चलते उनके पिता चल बसे थे। मां और भाई–बहनों के साथ घर पर रहते हुए जन संगठन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं।

फरवरी 2008 में एसपीओ, सीआरपीएफ और नगा पुलिस बलों की मिलीजुली फौज ने एक मुखबिर की सूचना पर रात के अंधेरे में गांव को उस समय घेर लिया जब गांव के लोग एक बैठक में शामिल थे। मीटिंग पर अंधाध ुंध फायरिंग करने से कामरेड पाण्डे को गोली लगी और कुछ समय बाद शहीद हो गईं। आइए, कामरेड पांडे के अधूरे मकसद को पूरा करने का संकल्प लें।

कामरेड मंगली

पश्चिम बस्तर डिवीजन, भैरमगढ़ तहसील, मिरतुल एरिया के उरेपाड़ गांव में कामरेड मंगली (35) का जन्म हुआ था। वह एक मध्यम परिवार की थीं। उनकी शादी पुल्लुम गांव में हुई थी। वह गांव की केएएमएस यूनिट की सदस्य बनी थीं। सलवा जुडूम के भीषण दमन के बीच भी वह हिम्मत से डटी रहीं। उपरोक्त घटना में जिसमें कामरेड पाण्डे शहीद हुई थीं, कामरेड मंगली भी वहीं पर थीं। पुलिस व अर्द्धसैनिक बलों ने उन्हें घेरकर पकड़ लिया। थाना ले जाकर उनके साथ सामूहिक बलात्कार कर गोली मार दी। परिवार वालों को लाश भी नहीं दी गई। इस तरह कामरेड पाण्डे और कामरेड मंगली दोनों एक ही घटना में शहीद हो गईं। जनता ने इन दोनों की संघर्षशील विरासत को जारी रखने की कसम खाई।

कामरेड कुंजाम लखमू

कामरेड कुंजाम लखमू (27) का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन, भैरमगढ़ एरिया, मिरतुल थाना क्षेत्र के तिम्मेनार गांव में हुआ था। यह गांव बैलाडीला पहाड़ से सटा हुआ है। बचपन में ही कामरेड लखमू के माता–पिता चल बसे थे। लखमू शादीशुदा थे और उनकी दो बेटियां हैं। 2002 से वह डीएकेएमएस के अध यक्ष के रूप में काम करते रहे। अप्रैल 2006 में कामरेड लखमू एक दिन पेट की खातिर बांस काटकर बचेली हाटबाजार में बेचने गए थे तब पुलिस, एसपीओ और गुण्डों ने पकड़कर लापता कर दिया।

कामरेड लखमू हर काम जिम्मेदारीपूर्वक निभाते थे। दुश्मन से बिल्कुल नहीं डरते थे। जब जुडूम के जुल्म–अत्याचार जोरों पर हो चले थे तब उन्होंने अपने गांव की जनता को सरेंडर नहीं करने हेतु हिम्मत बताई। सरकारी दमन और कार्पोरेट लूटखसोट की योजनाओं के खिलाफ की गई विभिन्न प्रतिरोधी कार्रवाइयों में भी कामरेड लखमू ने साहस के साथ भाग लिया। लखमू जैसे जन नेताओं की हत्या कर जनता को हमेशा के लिए गुलाम बनाकर रखने का सपना कभी साकार नहीं होगा। शहीदों के अधूरे कार्य को पूरा करने हजारों, लाखों जनता संघर्ष का झण्डा बुलंद रखेगी।

कामरेड कोवासी लखमा

पश्चिम बस्तर डिवीजन के केसामुण्डे गांव का निवासी था कामरेड कोवासी लखमा। उनके माता–पिता जमीन की तलाश में कटेकल्याण ब्लाक के तुर्रेम गांव से केसामुण्डे से यहां आए थे। बचपन में ही लखमा बाल संगठन का सदस्य बना। वह गांव के ग्राम रक्षा दल का कमाण्डर बना था। जब वह बांस कटाई करने के लिए गया था पुलिस ने गोली चलाकर हत्या कर दी। हत्या के बाद लाश को पुलिस भैरमगढ़ थाना ले गई। गांव की जनता ने दो दिनों तक पुलिस के साथ लड़कर लाश को अपने कब्जे में ले लिया। बाद में गांव लाकर पूरे सम्मान के साथ लखमा का अंतिम संस्कार किया गया।

कामरेड भीमा

पश्चिम बस्तर डिवीजन, गंगालूर एरिया के अवकेम गांव में कामरेड भीमा (23) का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम बुधु और मां का नाम बण्डी है। गरीबी के चलते 7–8 सालों तक दूसरे के यहां नौकर के रूप में रहे। बाद में अपने भाई के पास रहने लगे। तब डीएकेएमएस में सदस्य बन गए। 2002 में उन्होंने पार्टी में भर्ती होने का फैसला लिया।

भर्ती होने के बाद में उन्हें माड़ डिवीजन स्थानांतरित किया गया। उन्हें कम्पनी–1 में सदस्य बनाया गया। 2007 में कौंडे के पास इंद्रावती नदी के किनारे मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने छापामारों पर हमला किया था। इस हमले में कामरेड भीमा को गोली लगने से शहीद हो गए। अवकेम से आकर माड़ के पहाड़ों में क्रांति का संदेश जन–जन तक पहुंचाने और जनयुद्ध को आगे बढ़ने में योगदान देने वाले कामरेड भीमा की शहादत सभी के लिए प्रेरणादायक है।

कामरेड मुचाकी बुधू

पश्चिम बस्तर डिवीजन, बीजापुर थाना क्षेत्र के गांव गोडला पुसनार में कामरेड मुचाकी बुधू का जन्म हुआ। मां हिड़मे और पिता उंगाल की पहली संतान थे बुधू। वे पहले दंतेवाड़ा जिला, कटेकल्याण ब्लाक के तेलेम गांव के रहने वाले थे। जमीन की तलाश में पुसनार आकर बस गए। यहां भी बेहद गरीबी में जीना पड़ा। 6–7 साल की उम्र में बुधू बाल संगठन में शामिल हो गए। बचपन से ही वह सोचा करते थे कि बड़े होकर छापामार दस्ते में शामिल होना है। नाच, गानों से उन्हें बड़ा शौक था। 2005 में सलवा जुडूम के शुरू होने के बाद पुलिसिया दमन के चलते भागमभाग में उनके पिता बीमार होकर गुजर गए। जब उनके पिता का देहांत हुआ तो सरकारी दमन के चलते दुकान जाकर सफेद कपड़ा खरीदना भी नामुमकिन हो गया था। ऐसे में केला के पत्तों को ओढ़ाकर अंतिम संस्कार किया गया। उसके बाद उनकी मां ने दूसरी शादी कर ली। तब कामरेड बुधू पर ही परिवार की पूरी जिम्मेदारी आ गई। घर में मुश्किल स्थिति के बावजूद बुधू ने मिलिशिया में अपनी जिम्मेदारी निभाई। मिलिशिया प्लाटून में पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में उन्हें शामिल किया गया। दुश्मन के हमले में कामरेड बुधू शहीद हो गए।

कामरेड जयमति कोर्राम

कामरेड जयमति कोर्राम का जन्म नारायणपुर जिला के चनका टेमरूगांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। कामरेड जयमति क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन में काम करते हुए मिलिशिया में शामिल हो गईं। मिलिशिया में रहकर क्रांतिकारी जनताना सरकार की रक्षा करते हुए, उत्पादन के कामों में भी भाग लिया करती थीं। गरीब जनता की मदद करती थीं। 2008 में गश्त के लिए आई बेनुर पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर ले गई और झूठे केसों में फंसाकर जगदलपुर जेल भेज दिया। जेल में मौजूद अमानवीय हालात के चलते उनकी मौत हो गई।

कामरेड जयमति की मौत की खबर सुनकर उनके परिवार ने उनके शव को घर लाकर अंतिम संस्कार किया। उनकी उम्र 20 साल थी। जेल में रहकर भी आत्मसमर्पण किए बिना पार्टी और जनता के पक्ष में दृढ़ता के साथ खड़ी रहीं। आइए, उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लें।

कामरेड संदीप

(प्लाटून–17 के कमाण्डर कामरेड रमेश और सेक्शन डिप्यूटी कमाण्डर कामरेड संदीप की शहादत 5 मार्च 2007 को उत्तर बस्तर डिवीजन के केशकाल एरिया में हुई थी। कामरेड रमेश की जीवनी 'प्रभात' के अक्टूबर–दिसम्बर 2008 के अंक में छपी थी लेकिन कामरेड संदीप की जीवनी को हम अभी तक प्रकाशित नहीं कर पाए, जिसके लिए हमें बेहद खेद है। पेश है कामरेड संदीप के जीवन का संक्षिप्त परिचय। – सम्पादक)

कामरेड संदीप (23) का जन्म कांकेर जिला, पखांजूर तहसील, कोयलीबेड़ा इलाके के ग्राम कड़मे में हुआ था। मां लालाबाई गावड़े और पिता रतन गावड़े की पांच संतानों में कामरेड संदीप बड़े थे। माता–पिता ने उनका नाम संजय रखा था। संजय ने अपने गांव में पांचवीं तक की पढ़ाई पूरी की थी। बड़े होने के बाद डीएकेएमएस में शामिल हो गये। गांव में एकता बनाए रखने में कामरेड संदीप की महत्वपूर्ण भूमिका रही। संगठन के कामकाजों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। गांव–गांव में घूमकर क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार करते थे। विभिन्न जन समस्याओं पर जनता को संगठित करते थे।

जुलाई 2005 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में पीएलजीए में भर्ती हुए थे। उस समय उनकी शादी होने वाली थी। पूरी तैयारियां हो चुकी थीं। लेकिन कामरेड संदीप ने शादी कर गृहस्थी बसाने का विचार छोड़कर जनता के लिए काम करने का फैसला लिया। भर्ती होने के बाद परतापुर दस्ते में कुछ समय काम किया। 2007 में पार्टी ने उन्हें केशकाल इलाके में प्लाटून–17 के सदस्य के रूप में भेजने का निर्णय लिया। तबसे लेकर अपनी शहादत तक वहीं रहकर काम किया। कामरेड संदीप सभी कामों में आगे रहते थे। वह कम बोलते थे। सीध ाा–सादा रहनसहन, हंसमुख और मिलनसार स्वाभाव के थे। वहीं उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई और सेक्शन डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई।

5 मार्च 2007 को एक कार्रवाई के सिलसिले में वह अपने कुछ साथियों के साथ तोड़सी गांव में डेरा डाले हुए थे। मुखबिर की सूचना पर धनोरा पुलिस ने हमला किया। उस हमले में वीरता से लड़ते हुए प्लाटून कमांडर कामरेड रमेश के साथ कामरेड संदीप भी शहीद हो गए। उनकी शहादत की खबर उनके गांव में पंहुचते ही गांव पूरा शोक में डूब गया। जनता ने उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया।

दामनजोड़ी – नाल्को शहीदों को लाल सलाम!

12 अप्रैल 2009 को ओड़िशा के कोरापुट जिला, दामनजोड़ी स्थित नाल्को कम्पनी की बाक्साइट खदानों पर पीएलजीए ने एक शानदार हमला किया था। इस हमले में सीआइएसएफ के 11 जवानों को मार गिराकर उनसे 11 इंसास रायफलें छीन ली गईं। इसके अलावा दो हजार कारतूस और ढाई टन विस्फोटक पदार्थ भी पीएलजीए ने अपने कब्जे में ले लिए। इस हमले को सफलता दिलाने के लिए चार बहादुर कामरेडों ने अपनी जानें कुरबान कर दीं। कामरेड्स राजू, कीर्ति, सुकराम और रघु ने शहादत को प्राप्त कर इतिहास में 'दामनजोड़ी शहीदों' के रूप में दर्ज हो गए। कामरेड सुकराम और रघु का जीवन परिचय जो शहीदों की जीवनियों पर प्रकाशित पिछली किताब में छूटा था, इसमें शामिल कर रहे हैं। – सम्पादक

कामरेड मंगू (रघु)

दण्डकारण्य के पश्चिम बस्तर डिवीजन के पिड़िया एरिया के चिन्नागोट्टोड़ गांव के एक बेहद गरीब परिवार में कामरेड रघु का जन्म हुआ था। वह अपने माता–पिता की चौथी संतान थे। घर पर उनका नाम रघु था। जब वह छोटे थे तभी उनके पिता की गंभीर बीमारी के चलते मृत्यु हुई थी। गरीबी के चलते उनका इलाज नहीं हो पाया था। मां मजदूरी करके घर चलाती थीं। गांव में क्रांतिकारी गतिविधियां जारी थीं जिससे सहज ही रघु उसकी ओर आकर्षित हो गए। बाल संगठन का सदस्य बनकर जन संगठनों द्वारा आयोजित हरेक कार्यक्रम में वह सक्रिय रूप से भाग लेते थे। इस तरह धीरे–धीरे वह पार्टी के करीब आ गए और 16 दिसम्बर 2006 को उन्होंने पिड़िया दस्ते में सदस्य बनकर हाथ में बंदूक थाम ली।

कामरेड मंगू की अनुशासनप्रियता, पहलकदमी और सक्रियता को देखकर उन्हें मई 2007 में रीजनल कम्पनी–1 में स्थानांतरित किया गया। कम्पनी द्वारा की गई सभी कार्रवाइयों में कामरेड मंगू ने भाग लिया।

एओबी में ठेकेदारों और जमींदारों पर किए गए कई हमलों में तथा जमींदारों

की सम्पत्तियों को जब्त कर जनता में बांटने की कार्रवाइयों में कामरेड रघु ने उत्साह के साथ भाग लिया। बैलाडीला से विशाखा जाने वाली एस्सार कम्पनी की पाइपलाइन को ध्वस्त करने की कार्रवाइयों में भी उनकी भागीदारी रही। अगस्त 2007 में उन्हें कम्पनी के कमिस्सार कामरेड सूर्यम के गार्ड के रूप में नियुक्त किया गया था। गार्ड की जिम्मेदारी को उन्होंने निष्ठापूर्वक पूरा किया।

15 फरवरी 2008 में ओड़िशा के नयागढ़ जिला मुख्यालय पर 'आपरेशन रोपवे' के नाम से संचालित ऐतिहासिक कार्रवाई में कामरेड रघु ने अपने को दी गई जिम्मेदारी के अनुसार एक संतरी बंकर पर कब्जा करने में बड़े जोश के साथ भाग लिया। दूसरे दिन गोसामा के पहाड़ों में हुई जोरदार लड़ाई में उन्होंने बहादुरी के साथ भाग लिया। मई 2008 में उन्हें सीआरसी कम्पनी–2 में बदला गया। बंडा के दूसरे ऐम्बुश, तेमेलवाड़ा ऐम्बुश, पूजारीकांकेर में कैम्प किए हुए बीएसएफ वालों पर किए गए ऐम्बुश, एओबी में गोविंदपल्ली कार्रवाई आदि कई फौजी कार्रवाइयों में उनकी भागीदारी रही। 2007 और 2008 में आयोजित मिलिटरी प्रशिक्षण शिविरों में उन्होंने छात्र के रूप में भाग लेकर पुरस्कार जीते थे। कम्युनिकेशन का काम सीखकर कम्पनी द्वारा की गई कई कार्रवाइयों में उन्होंने स्काउट की जिम्मेदारी निभाई।

कामरेड रघु को कुव्वी, ओड़िया और तेलुगु भाषाएं नहीं आती थीं। लेकिन कम्पनी में काम करते–करते उन्होंने इन भाषाओं को सीखने की कोशिश की। जहां भी जनता से मुलाकात होती थी उनसे अपनी टूटी–फूटी भाषा से ही बातें करते थे। नए, पुराने सभी साथियों के साथ वह स्नेहपूर्वक व्यवहार करते थे। सभी कामरेड उनसे प्यार करते थे। आइए, कामरेड रघु के अरमानों को मंजिल तक पहुंचाने का प्रण लें।

कामरेड पूनेम सुकराम

कामरेड पूनेम सुकराम का जन्म छत्तीसगढ़ राज्य के बीजापुर जिला, पश्चिम बस्तर डिवीजन, गंगालूर एरिया के ग्राम मेट्टापाड़ में हुआ था। एक गरीब आदिवासी परिवार में तीसरी संतान के रूप में वो पैदा हुए थे। बचपन में ही उनके सिर पर से मां का साया उठ चुका था। मेट्टापाड़ एक ऐसा गांव हैं जहां पर क्रांतिकारी आंदोलन का प्रभाव ज्यादा है। कामरेड सुकराम बचपन में ही क्रांतिकारी जन संगठनों की गतिविधियों से प्रभावित थे और सहज ही वह बाल संगठन का सदस्य बने थे। गांव में आयोजित हर गतिविधि में उनकी सक्रिय

भूमिका हुआ करती थी। इस तरह उनके अंदर राजनीतिक चेतना विकसित होती होती गई।

फासीवादी सलवा जुडूम के आतंक का शिकार होने वाले गांवों में मेट्टापाड़ भी एक है। जुडूम के गुण्डों और खाकी वर्दीधारी लाइसेंसी गुण्डों ने मिलकर इस गांव को जला दिया था जिसमें कामरेड सुकराम का घर भी शामिल था। इस आतंक को अपनी आंखों से देखने वाले सुकराम के अंदर दुश्मन के प्रति वर्गीय नफरत भड़क उठी। इसके बाद वह मिलिशिया में शामिल होकर दिन रात गांव की पहरेदारी व गश्त करते हुए जनता की रक्षा करते रहे। सलवा जुडूम को रोकने और हराने के लक्ष्य से गंगालूर स्थित सरकारी राहत शिविर पर हमला कर 8 एसपीओ को मार गिराने की कार्रवाई में कामरेड सुकराम ने भाग लिया था।

मेट्टापाड़, पूम्बाड़ और कमका गांवों में आने वाले सलवा जुडूम के गुण्डों को पकड़कर जन अदालत में पेश करने में कामरेड सुकराम का योगदान रहा। इन गांवों पर हमले करने के लिए आने वाले पुलिस बलों को हैरान–परेशान करने की कई घटनाओं में कामरेड सुकराम की भागीदारी रही। फरवरी 2008 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर गंगलूर दस्ते में शामिल हो गए। उनके साहस, सक्रियता और अनुशासन को देखकर डीवीसी ने उन्हें प्रधान बलों में स्थानांतरित करने का फैसला लिया। इसका अनुमोदन कर सुकराम कम्पनी का सदस्य बनकर राज्यों की सीमाओं को लांघकर कूच कर गए।

मई 2008 में गठित सीआरसी कम्पनी–2 में सदस्य बनकर उन्होंने उस कम्पनी द्वारा की गई हर कार्रवाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जून 2008 में बंडा के पास किए गए ऐम्बुश में उन्हें असाल्ट टीम में रखा गया था। कमाण्डर के आदेशों का पालन करने में वह आगे रहते थे। छत्तीसगढ़ विधानसभा के चुनावों के मौके पर पुजारीकांकेर में डेरा डाले हुए बीएसएफ बलों पर की गई गोलीबारी में तथा अलबाका में मुखबिर सतीश का सफाया करने में कामरेड सुकराम की भागीदारी रही।

2009 में ओड़िशा के मलकनगिरी जिले में जनविरोधी सप्तधारा परियोजना के विरोध में गोविंदपल्ली आउटपोस्ट पर किए गए हमले में कामरेड सुकराम की सक्रिय भूमिका रही।

दामनजोड़ी हमले में कामरेड सुकराम रिजर्व टीम में रहे थे। विस्फोटकों के गोदाम को तोड़ने का आदेश कमाण्डर से पाकर कामरेड सुकराम आगे बढ़े थे। उनके पास कोई हथियार नहीं था। हाथ में सब्बल लेकर आगे बढ़ने के दौरान

दुश्मन की तेज गोलीबारी में वह गिर पड़े। मौके पर ही उनकी जान चली गई।

सुकराम एक मेहनती, साहसिक, अनुशासित और मजबूत इरादों वाले कामरेड थे। ग्राउण्ड में पीटी, ड्रिल वगैरह करने में तथा नई–नई फौजी तकनीक को सीखने में उन्हें काफी दिलचस्पी थी। कामरेड सुकराम की शौर्यपूर्ण जीवनी पीएलजीए के कतारों को हमेशा प्रेरित करती रहेगी।

कामरेड मंगली

कामरेड मंगली का जन्म दण्डकारण्य के कांकेर जिला, अंतागढ़ तहसील, केशकाल एरिया के ग्राम कोंगेरा के एक गरीब परिवार में हुआ था। बचपन में ही उनके माता–पिता गुजर गए थे। उन्होंने सातवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। स्कूल में पढ़ाई और खेल–कूद में वह आगे रहती थीं। पढ़ाई बंद करने के बाद उनका परिचय छापामार दस्ते से हुआ। दस्ता जो राजनीतिक बातें बताता था उसे सुनकर उन्होंने निश्चय कर लिया कि हम गरीबों की जिंदगी बदलनी है तो संघर्ष ही एक मात्र रास्ता है। इस तरह 2004 में वह केशकल दस्ते की सदस्य के रूप में भर्ती हो गईं। उस समय वह मात्र 16 साल की थीं।

एक साल केशकाल दस्ते में काम करने के बाद 2005 में पार्टी ने उन्हें हथियार तैयार करने वाले विभाग में स्थानांतरित किया। उस समय फासीवादी सलवा जुडूम शुरू हो चुका था। उसमें भी उन्होंने जिम्मेदारीपूर्वक काम किया। 2006 में उनका उत्तर बस्तर के बारदा दस्ते में तबादला किया गया। वहां भी उनका काम संतोषजनक रहा। दस्ते में शिक्षिका बनकर उन्होंने नए सदस्यों को पढ़ना–लिखना सिखाया। किसी भी काम को वह पक्के इरादे से पूरा करती थीं।

2007 में सीआरसी की पहली कम्पनी में उनका तबादला किया गया। उसमें रहते हुए अगस्त 2007 में विशाखा जिले के कोंडरू गांव के पास ग्रेहाउण्ड्स बलों पर किए गए ऐम्बुश में कामरेड मंगली ने भाग लिया। इसमें दो भाड़े के जवान मारे गए थे। उसके बाद नवम्बर महीने में नागावली नदी को पार कर कोरापुट–श्रीकाकुलम जिलों से होकर नयागढ़ तक की गई लम्बी यात्रा में कामरेड मंगली भी शामिल थीं। अनजान होने पर भी कुव्वी भाषा को सीखते हुए लोगों के साथ घुलते–मिलते हुए पहाड़ों, नदियों, जंगलों और मैदानों को पार

करते हुए कामरेड मंगली अपनी कम्पनी के साथ आगे बढ़ती गईं।

ऐतिहासिक नयागढ़ हमले में तथा वहां से पीछे हटने के बाद गोसामा के पास दुश्मन के बलों के साथ हुई घमासान लड़ाई में उन्होंने अनुपम शूरता का प्रदर्शन किया। वहां से पिट्ठू में सैकड़ों गोलियां भरकर दो–दो रायफलें कंधे पर लेकर शबरी नदी के किनारे तक कामरेड मंगली ने कूच किया। उम्र में वह छोटी थीं पर उनके अंदर साहस और पराक्रम कूट–कूटकर भरे हुए थे।

2008 में ग्रेहाउण्ड्स बलों के दिलों में हड़कम्प मचाते हुए पीएलजीए ने गुनुकुराई के पास एक ऐम्बुश किया। इसमें कामरेड मंगली ने भी भाग लिया। इस ऐम्बुश में कम्पनी कमाण्डर कामरेड रणदेव बुरी तरह घायल हुए थे। उस समय कामरेड रणदेव को मदद पहुंचाने के लिए कामरेड मंगली हिम्मत के साथ आगे बढ़ी थीं। कुछ देर बाद कामरेड रणदेव की मृत्यु हुई। उस दौरान दुश्मन की गोली लगने से खुद मंगली भी घायल हो गईं। लेकिन बहुत जल्द ही ठीक होकर वह फिर से जंगे मैदान में उतर पड़ीं।

उसके बाद 2008 में ही किया गया एक और ऐतिहासिक हमला बलिमेला ऐम्बुश में भी कामरेड मंगली ने भाग लिया। इसमें 38 ग्रेहाउण्ड्स मारे गए थे। 2009 में नयागढ़ में डम्प किए हुए हथियारों को ले आने वाली टीम में भी कामरेड मंगली शामिल थीं। इस टीम ने कई मुश्किलों को सहकर यह काम पूरा किया।

इस तरह हर लड़ाई में कामरेड मंगली ने प्रेरणादायक भूमिका निभाई। 24 दिसम्बर 2009 को ओड़िशा के नारायणपटना इलाके में डैगुड़ा के पास दुश्मन पर किए गए ऐम्बुश में वीरतापूर्वक लड़ते हुए कामरेड मंगली शहीद हुईं। कामरेड मंगली ने शोषित जनता की मुक्ति के लिए मुस्कराते हुए अपनी जान कुरबान की। उनकी जिंदगी पीएलजीए के तमाम कतारों के लिए आदर्श है। आज मंगली नहीं हैं, पर वह आसमान का तारा बनकर हमें राह दिखा रही हैं। आइए, उस रास्ते पर चलते हुए कामरेड मंगली समेत हजारों शहीदों के सपनों को साकार करें।

कामरेड महेश धुर्वा

कामरेड महेश धुर्वा उत्तर बस्तर डिवीजन, रावघाट इलाके के ग्राम काकबरस के निवासी थे। वह एक मध्यम किसान थे। घर में उनके एक बड़े भाई, एक छोटी बहन, बीवी और नन्हे बच्चे रहते हैं। वह एक मेहनती किसान थे और जबसे इस गांव में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार हुआ तभी से कामरेड महेश उससे प्रभावित हुए। इस क्षेत्र में रावघाट और चारगांव में खदानें खोलकर

सरकार जनता के जीवन को अस्तव्यस्त करने पर तुली हुई है। इसके खिलाफ चलाए गए जन आंदोलन में कामरेड महेश का योगदान रहा। गांव में बने डीएकेएमएस में वह सक्रिय सदस्य बन गए। सांस्कृतिक गतिविधियों में दिलचस्पी के करण वह सीएनएम में भी सदस्य बन गए। बाद में उन्हें सीएनएम का अध्यक्ष चुन लिया गया। जब जनताना सरकार का गठन हुआ तब उन्हें सीएनएम के पंचायत स्तर की इकाई के अध्यक्ष के रूप में चुन लिया गया।

कामरेड महेश ने सीएनएम को मजबूत बनाने का भरपूर प्रयास किया। साम्राज्यवादी संस्कृति के खिलाफ जनता में उन्होंने काफी प्रचार किया। संगठन द्वारा आयोजित सभा–सम्मेलनों में वह अच्छे ढंग से भाषण दिया करते थे। जनता का वह एक प्यारा नेता थे। इसीलिए दुश्मन ने उनकी हत्या करने की साजिश रची। 20 जनवरी 2010 को जब वह जन संगठन के काम पर जा रहे थे तब सिकसोड़ गांव के पास पुलिस और बीएसएफ ने उन्हें पकड़ लिया। बाद में उन्हें कई दिनों तक लापता किया। परिवार सदस्यों और ग्रामीणों ने थाने में जाकर पुलिस वालों इस बारे में पूछा तो उन्होंने महेश को पकड़ने की बात से इनकार किया। कई दिन बाद, फरवरी महीने में उनकी हत्या कर लाश को एक नदी के पास फेंक दिया। बाद में पुलिस ने खुद ही अज्ञात लाश को बरामद करने की घोषणा की। लेकिन आसपास के गांवों के सभी लोगों ने इसे पुलिसिया हत्या करार देते हुए इसकी घोर निंदा की। कामरेड महेश के अधूरे लक्ष्य को पूरा करने की शपथ ली।

कामरेड मन्सु धुर्वा

कामरेड मन्सु धुर्वा 13 साल का बच्चा था जो 7वीं कक्षा में पढ़ाई करता था। कांकेर जिले के कोइलीबेड़ा विकासखण्ड, ग्राम मरकानार के एक गरीब आदिवासी परिवार का बड़ा बेटा था। पुलिस ने 15 नवम्बर 2009 को उसे उस समय गोली मारी जब वह मेंढकी नदी पर मछली पकड़ने के लिए गया हुआ था। उस समय स्कूल की छुट्टी थी। अपने खेतों, जंगलों या नदियों के आसपास में घूमना भी पुलिस की नजरों में इतना बड़ा गुनाह बन गया कि उसे गोली मार दी जाए। और हमेशा की तरह इसे भी मुठभेड़ का नाम दिया गया और इस नन्हे बच्चे को इनामी नक्सली घोषित किया गया। आपरेशन ग्रीनहंट की बर्बरता का एक और शिकार बना मन्सु धुर्वा।

हजारों शहीद बड़ी बहादुरी के साथ जनता के लिए अपनी जिंदगी न्यौछावर कर चुके हैं; आइए, हम उनका झण्डा बुलंद रखें तथा उनके खून से सींचे हुए रास्ते पर आगे बढ़ते जाएं!

"हर आदमी एक न एक दिन जरूर मरता है, लेकिन हर आदमी की मौत की अहमियत अलग-अलग होती है... जनता के लिए प्राण न्यौछावर करना थाइ पर्वत से भी ज्यादा भारी अहमियत रखता है, जबकि फासिस्टों के लिए तथा शोषकों व उत्पीड़कों के लिए जान देना पंख से भी ज्यादा हल्की अहमियत रखता है।"

- माओ त्सेतुङ